परिचायिका

लेखक

डॉ० भीमनाथ झा

प्राध्यापक

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय

दरभंगा

प्रकाशक

भवानी प्रकाशन

पटना-६

□ प्रकाशक :
भवानी प्रकाशन
मुरल्लहपुर, पटना-८००००६

□ परिवर्धित द्वितीय संस्करण—२२००

□ अप्रैल १९८५

□ मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
पटना-८००००६

Rs. 150/-

श्री मदन भाइके सादर
जे एक तरहें बलजोरी हमरासँ ई पोथी लिखबा लेलनि

लेखकीय

ठीक सात वर्ष पहिने 'परिचायिका' छपल छल। बजारमे तँ ओ एक-डेढ़ वर्ष टिकलैक, मुदा कृपालु पाठक ओकरा बहुत दिन धरि मन रखने रहलाह—छात्रलोकनिक कानमे एकर नाम बादो धरि पड़ैत रहलैक। मुदा एम्हर, एकर नाम ओकर कानकें छुअब छोड़ि रहल छल प्रायः।

हम तँ बहुत पहिने एकरा छोड़ि चुकल रही। पहिल खेप जखन ई तैयार भेल तँ हमर लेखकीय मनकें ततेक संकोच भेलैक जे पोथीक संग अपन नाम देबाक साहस हम नहि जुटा सकलहुँ। रचयिताक नीचाँ—'मध्यम पाण्डव' गेल रहैक।

एहि सात वर्षमे बड़ परिवर्तन भेलैक अछि। कतिपय विद्वानलोकनिक ध्यान एहन वस्तुक बजार दिस गेलनि। फलतः एक-सँ-एक विलक्षण वस्तुक पथार लागऽ लागल! मुदा, कृपालु पाठकक आभारी छियनि, विशेषतः छात्रलोकनिक, जे तैयो सुनलाहा 'परिचायिका'क चर्चा चला देथि। ताहिसँ हमर संकोचभंजन सेहो भेल।

श्री मदन मिश्रजीक सहजोर तगेदाक प्रसादात् जेना-तेना ई लिखा गेल रहय तथा 'वैदेही पुस्तक भण्डार, पटना' एकरा छपने रहय—सीमित संख्यामे।

तहिना, एकर लेखकोक सीमा रहनि—छनिहें, पोथियोक सीमा रहैक—छैके। लेखकक सीमा ई जे अपनामे समीक्षा लिखबाक अपेक्षित योग्यताक अभाव, पोथीक सीमा ई जे आलोचना-पक्षसँ सूचना-पक्ष बेसी प्रबल हो, लेखकीय मतक अपेक्षा इतिहासकार आ आलोचक लोकनिक विचारक उल्लेख हो। एकर कारण ई जे प्रस्तुत पोथी विशुद्ध आलोचनाक नहि थिक, विद्वान लोकनिक हेतु नहि थिक। ई तँ मैथिलीक ओहन छात्र लोकनिक हेतु थिक जकरा कमसँ कम परिश्रममे बेसीसँ बेसी चाहिऐक। प्रथम संस्करणमे एकर उद्देश्य स्पष्ट करैत कहल गेल छल—'परिचायिका' मैथिलीक किछु प्रमुख साहित्यकारसँ मोटामोटी परिचय करयबाक एक विनम्र प्रयास थिक। हुनकालोकनिक व्यक्तित्व-कृतित्वक समालोचना करब, ओहिपर स्वतन्त्र विचार देब लेखकक उद्देश्य एहि ठाम नहि रहल अछि, इतिहासकार किंवा समालोचक वर्ग द्वारा देल गेल मतसँ, यथासम्भव हुनकेलोकनि शब्दमे, पाठककें परिचित करा देब एहि लेखकक अभीष्ट रहलैक अछि, जाहिसँ मैथिली साहित्यसँ नहियो परिचय रखनिहार लोक किछु विख्यात कृतिकार ओ कृतिक साहित्यिक महत्त्वक विषयमे सामान्य अवगति प्राप्त कऽ लेअय।

उद्देश्य एहू संस्करणमे यैह रहलैक अछि। किन्तु, ई प्रथम संस्करणक पुनर्मुद्रण मात्र नहि थिक। एहि सात वर्षमे जे विवेचित साहित्यकारक पोथी अयलनि अछि, लेखकीय क्षमतामे जे विकास भेलनि अछि, तकरा जोड़ि देल गेल अछि। शुरूसँ आधा पोथी तँ फेरसँ लिखल गेल अछि। सात गोट आर साहित्यकारकें शामिल कयल गेल अछि—पहिने चौवन टा शीर्षक छल, एहिमे एकसठि टा अछि। परिवर्तन दुनू संस्करणकें एक ठाम रखलापर स्वतः परिलक्षित होयत।

किन्तु, त्रुटिक सेहो एहिमे कोनो कमी नहि अछि—गनयबाक काज नहि, विद्वान आ सचढ़ पाठककें भेटल चल जयतनि।

क्रम वयसानुसार राखल गेल अछि। एतसक आधार विभिन्न ठाम प्रकाशित हुनकालोकनिक जन्मतिथि मानल गेल अछि। कोनो कारणें जँ से ओतऽ अशुद्ध रहि गेल छैक तँ ओ दोष एहूमे आबि गेलैक अछि। पहिल संस्करणक किछु दोषक एहिमे निराकरण कऽ देल गेल अछि।

यद्यपि साहित्यकार लोकनिक व्यक्तित्व-कृतत्वक फराक-फराक, स्वतन्त्र रूपें, एहिमे विचार कयल गेल अछि, किन्तु पाठक जँ कने गम्भीरतापूर्वक एकर अध्ययन करथि तँ विभिन्न विधा (कविता, कथा, उपन्यास, आलोचना आदि)क क्रमिक विकासक विषयमे सेहो मुख्य-मुख्य ज्ञातव्य बातसँ ओ अवगत भऽ सकैत छथि।

जतेक गोटेक विषयमे एहिमे कहल गेल अछि, ताहिसँ कतोक बेसी, प्राचीनसँ लऽ कऽ आधुनिक काल धरि, साहित्यकारक संख्या अछि, हुनकालोकनिक अवदान समान रूपसँ साहित्यकें अलंकृत कयलक अछि, ओहोसभ समान महत्त्वक थिकाह। हुनका लोकनिक चर्च एहि ठाम नहि होयबाक पाछाँ ई कारण कथमपि नहि थिक जे हुनकालोकनिक चर्च नहि होयबाक चाही।

किन्तु, सभसँ पहिने, आ सभसँ प्रमुखतासँ चर्च होयबाक चाही ओहि आदरणीय इतिहासकार ओ विद्वान लोकनिक, जनिका लोकनिक ग्रन्थ अथवा निबन्धक एहिमे उपयोग कयल गेल गेल अछि। ओहि सभ परमादरणीय विद्वान साहित्यकार ओ समालोचक महानुभावक सम्मुख (दिवंगत लोकनिक स्मृतिमे) हम हृदयसँ अभारी छी, कारण बिना हुनका लोकनिक विचारक उल्लेख कयने कृति आ कृतिकारक परिचय प्रामाणिक नहि भऽ पबैत।

भवानी प्रकाशन पटनाक प्रति, विशेषतः श्री परमानन्द झाक प्रति कृतज्ञ छियनि जे एकर द्वितीय आ परिवर्धित संस्करण प्रकाशित करबा दिस प्रवृत्त भेलाह।

पटना छुटियो गेलापर पटनाक मित्र नहि छुटलाह अछि, छुटबो नहि करताह। श्री मोहन भारद्वाज, श्री कुलानन्द मिश्र आ श्री पूर्णेन्दु चौधरीक सहयोग एहूमे लेबहि पड़ल। मुदा, ताहि लेल आभार प्रदर्शित करऽ जयबनि, तखन ओसभ बुझताह? श्री महारुद्र झाक तत्परता हमरा बड़ उपयोगी भेल अछि।

अपनेकें ई पोथी केहन उपयोगी भऽ सकत, से तँ हम नहि जनैत छी, मुदा अपने लोकनिक सहयोगसँ एकर नाम किछु दिन आर जीवित रहि जाइक तँ सेहो हमरा लेल कोन कम?

रामनवमी
३०-३-१९८५

—भीमनाथ झा

क्रम

□

सिद्ध-संप्रदाय

सिद्ध संप्रदायक समय, भारतवर्षमे, आठमसँ एगारहम शताब्दीक मध्य मानल जाइत अछि। एहि दीर्घ अवधिमे चौरासी टा सिद्ध विशेष प्रसिद्ध भेलाह। कहल जाइछ जे हिनकालोकनिमे बाइस-तेइस गोटे मिथिला तथा मगध प्रान्तक निवासी छलाह। सिद्धलोकनि अपन विशेष मतक प्रचार करबाक हेतु, जनताक बीच अपनाकेँ लोकप्रिय बनयबाक हेतु, तत्रस्थानीय बोलीमे लोकप्रिय पदक रचना सेहो करैत छलाह। मिथिला आ मगध प्रान्तक सिद्धगण, निश्चय, एही जनपदक भाषामे पद-रचना कयने होयताह। हिनकालोकनिक साहित्य मैथिलीक प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य थिक। यद्यपि हिनकालोकनिक परिचय अज्ञात अछि, भाषा सेहो बहुत साफ नहि अछि, वर्णनक सिलसिलो नहि अछि, तेँ किछु विद्वान, पहिने, हिनकालोकनिकेँ मिथिला प्रान्तक मानबाक लेल तैयार नहि छलाह, किन्तु हिनका-लोकनिक भाषाक स्वरूप आ विषयक चयन पर विचार कयला उत्तर यैह बुझना जाइछ जे ई सभ एही प्रान्तक छल होयताह आ आब तँ ई तथ्य निर्विवाद भऽ गेल अछि।

एहि प्रान्तक किछु प्रसिद्ध सिद्धलोकनिक नाम थिक—सरहपाद, सबरपाद, लुइपाद, कान्हापाद, भुसुकपाद, शान्तिदेव, कुकरीपाद, बिनपाद, जयनन्दी आदि।

चर्यापद—सिद्धलोकनिक पद-रचना चर्यापदक नामसँ प्रसिद्ध अछि। मैथिलीक उपलब्ध सभसँ प्राचीन कृति चर्यापदक महत्त्व डॉ० जयकान्त मिश्रक निम्न उक्तिसँ विशेष स्पष्ट होइछ—"The Chivas are important in the history of Maithili literature for constituting the link betwee.i the Sanskrit Udbhat poetry and the Apabaramsa or vernacular Pada writing (a short poem of about ten lines having a refrain and a raga indicated in which it is to be sung).

सिद्धलोकनिक रचना यद्यपि काव्यक प्रचारक लक्ष्यसँ नहि भेल छल, भेल छल हिनकालोकनिक मतक जनसाधारणमे प्रचारक उद्देश्यसँ, मुदा आगाँक कविगणक हेतु एहिसँ एकटा मार्ग अवश्य प्रशस्त भेल, हुनकालोकनिकेँ कविता-रचनाक एकटा दृष्टि भेटलनि, पद-रचनाक बनल-बनाओल शिल्प भेटलनि, एकटा साँचा हाथ लागि गेलनि। डॉ० आनन्द मिश्र कहैत छथि—"मिथिलामे दर्शनक क्षेत्रमे बड़ महत्त्वपूर्ण कार्य भेल अछि तथा एतय आस्तिक एवं नास्तिक सभ दर्शनपर पूर्ण विचार भेल अछि। एहि क्रममे जे साहित्य हमरालोकनिकेँ उपलब्ध अछि ओ थिक 'सिद्ध-साहित्य'। सिद्धलोकनि अपन मतविशेषक प्रचार करबाक हेतु एहि ठामक भाषाकेँ माध्यम बनाय गीत अथवा दोहा सबहुक रचना कयलनि। राग-ताललयाश्रित गीत होयबाक कारणेँ एकर प्रचार-प्रसार अवश्य भेल होयत। मतविशेषक प्रभाव समाजपर कतबा पड़लैक तकर विवेचन एतऽ अभीष्ट नहि, मुदा एकर पश्चात् जे भाषामे गीतक रचना भेल ओ सभटा रागताललयाश्रिते भेल। एहिसँ ई स्पष्ट अछि

जे जनताक रुचि रागतालयुक्त गीत दिस छलैक तथा ओहने रचनाकें समाज प्रश्रय देलकैक।"

प्राक्-विद्यापति-युगक ई महत्त्वपूर्ण रचना बहुत दिन धरि अन्धकारक गर्तमे पड़ल रहल। म० म० हरप्रसाद शास्त्री १९१६ ई०मे नेपाल जा कऽ एहि गौरव-शाली रचनाक अनुसन्धान कयलनि। ओ अनुसन्धानसँ प्राप्त सामग्री कें 'बौद्धगान ओ दोहा' शीर्षकसँ प्रकाशित करौलनि। ओ तँ प्रकाशित करौलनि एकरा बंगलाक प्राचीनतम साहित्य मानि कऽ, मुदा बादक विद्वानलोकनि अनेक तर्कक आधारपर एकरा मैथिलीक आदिकालीन साहित्य सिद्ध कयलनि।

'बौद्धगान ओ दोहा'मे तीन प्रकारक रचना अछि—(१) चर्याचर्य विनिश्चय (२) दोहाकोष, तथा (३) डाकार्णव।

'दोहाकोष' अपभ्रंशमे अछि, किन्तु चर्याचर्यविनिश्चय, जे 'चर्यापद'क नामसँ प्रसिद्ध अछि, तथा 'डाकार्णव' निर्विवाद रूपें मैथिलीक आदिकालीन साहित्य थिक। एहि तथ्यकें महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डॉ० के० पी० जायसवाल, म० म० डॉ० उमेश मिश्र, डॉ० सुभद्र झा, पं० शिवनन्दन ठाकुर, प्रो० रमानाथ झा तथा डॉ० जयकान्त मिश्र स्वीकार कयने छथि।

कोन रचना कोन भाषाक थिक, से निश्चय करबा लेल प्रधानतः दूटा तथ्यक अन्वेषण करब आवश्यक होइछ। पहिल तँ ई जे विवेच्य रचनाक रचयिता कोन ठामक छलाह। दोसर, ओहि रचनाक भाषाक शब्दावली, व्याकरण तथा शैली आदि कोन भाषासँ साम्य रखैछ।

उक्त तथ्यक आलोकमे ई निर्विवाद भऽ चुकल अछि जे चर्यापदक रचयिता सिद्धलोकनि छलाह जे विदेह तथा विदेहक सन्निकट प्रान्तक वासी छलाह। एहि प्रान्तक भाषा निश्चय मैथिली रहल होयत, तें एकरो भाषा मैथिली थिक। सिद्ध-लोकनि मैथिल छलाह, से वर्णरत्नाकरो प्रमाणित करैत अछि।

दोसर तथ्य अछि ध्वनि। चर्यापदक भाषाक ध्वनि तथा मैथिली भाषाक ध्वनिमे अत्यन्त समता छैक। मैथिलीमे आनुनासिक ध्वनि तथा 'स'क अधिकता भेटैत अछि। एहूमे तकर प्राचुर्य अछि।

व्याकरणोक दृष्टिएँ ई मैथिलीएक आदिकालक ग्रन्थ प्रमाणित होइत अछि। मैथिलीमे करणकारकमे 'ए', सम्बन्धकारकमे 'क, एर, केर, कार, अर'क प्रयोग होइत छल तथा आइयो 'क, केर, केरि'क प्रयोग होइछ। कारकान्तमे चन्द्रविन्दुक प्रयोग करण विभक्तिमे देखल जाइछ। एहि प्रकारक प्रयोग वर्णरत्नाकरमे सेहो भेटैछ।

सर्वनामक मैथिली-स्वरूप यथा हओ, हाउँ, स्वयं—अपने, तोँ, तोहर, आदि एहिमे प्रयुक्त भेटैछ। एहि स्वरूपक प्रयोग वर्णरत्नाकर, कीर्त्तिलता, विद्यापति-पदावली आदिमे सेहो पाओल जाइछ।

क्रिया—अछ, थाक (अछि, थिक) छाड़िअ, करिअ, खेलए आदि। ई सभ मैथिलीए भाषाक आदिरूप थिक।

लिंग—स्त्रीलिंग संज्ञाक संग स्त्रीलिंग क्रिया एवं स्त्रीलिंग विशेषणक प्रयोग भेटैत अछि जे मैथिलीक प्रकृति थिक।

क्रिया विशेषण—अइसन, जइसन। वर्णरत्नाकरमे एकर अव्याहत प्रयोग भेटैत अछि।

लोकोक्ति—बड़द बिकायल गाय बाझि रहल, हाक पाड़ह, जे-जे आयल ते-ते गेला, आदि मिथिलाञ्चलेक वाग्धाराक अनुकूल अछि।

शब्दावली—आजि, तेतलि, साखु, उपाड़ि, भात, आवेश, एत, काल आदि शब्द विशुद्ध मैथिलीक थिक।

चर्यापदमे गोपक जीवनसँ सम्बद्ध वस्तुक विशेष विवरण अछि। मिथिलामे धार अधिक अछि। पशुपालनमे एहिसँ सुविधा होइछ, तें गोपजातिक एहि ठाम अधिकता अछि। एहूसँ सिद्ध होइछ जे ई वस्तु मिथिलेक्षेत्रक थिक।

एकर पदमे जेहन सांस्कृतिक वैशिष्टयक वर्णन अछि, से मिथिलाञ्चलेक संस्कृति भऽ सकैत अछि। एक पदमे कहल गेल अछि 'सिद्धिरस्तुमइ पढ़मे पढ़िमऽ'। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे अक्षरारम्भ 'सिद्धिरस्तु' सँ कराओल जाइछ।

चर्यापदमे तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितिक चित्रण भेटैछ। खेती-गृहस्थीक विशेष महत्त्व, विवाहादिक महत्त्व ओ विधि-व्यवहार ताहू दिन लगभग ओहने छल, जेहन आइ-कालिह अछि। लोकक जीवन सुखी छल, पशुपालनक व्यवस्था उत्तम छल।

चर्यापदमे दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताकें लौकिक रूपमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। दृष्टान्त रूपमे सरहपादक निम्न पद देखल जा सकैछ—

कायणा बड़ि खाण्टि मण केड़ुआल
सद्गुरु वअणे धर पतवाल
चीअ थिर करि धरहु रे नाइ
आन उपाये पारण जाइ
नौ वाही नौका टाणअ गुणें
मेलि मेलि सहजे जाउण आणें
वाटत भअ खाण्ट विवलआ
भव उलीलें विषअ बोलिआ
कुल लइ खर सोन्ते उजाअ
सरह भणइ गअणें समाअ

कवित्वक दृष्टियें सेहो एकर महत्त्व गौण नहि अछि। एहिमे अलंकारक प्रयोग यत्र-तत्र देखबामे अबैछ। श्रृंगार रस, विशेषतः रतिभाव एकर अनेक पदमे ध्वनित होइछ। एकर पद सभमे संगीतक प्रवीणता भेटैछ। एहिमे चौबीस प्रकारक राग-रागिनीक प्रयोग भेल अछि।



ज्योतिरीश्वर

एखन धरि उपलब्ध मैथिलीक सभसँ प्राचीन गद्य-ग्रन्थ थिक 'वर्णरत्नाकर' जकर रचयिता थिकाह ज्योतिरीश्वर ठाकुर। ज्योतिरीश्वरक नामक संग 'कविशेखराचार्य' उपाधि भेटैत अछि। अतः एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ई महान कवि सेहो छलाह। कविताक हिनक कोनो स्वतंत्र ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि। जे तीन टा ग्रन्थ प्राप्त अछि से थिक—(१) वर्णरत्नाकर (२) धूर्तसमागम तथा (३) पंचशायक।

हिनक समयक प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतभेद अछि। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, पं० बबुआजी मिश्र, प्रो० रमानाथ झा तथा डॉ० जयकान्त मिश्रक मत एक-दोसरसँ भिन्न अछि। १९८० ई०मे, मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रो० आनन्द मिश्र आ पं० गोविन्द झाक सम्पादनमे वर्णरत्नाकरक एक आओर प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित भेल अछि, जकर भूमिकामे ओहोलोकनि हिनक समयक प्रसंग विस्तारसँ विचार कयलनि अछि।

प्राचीन कविलोकनि आत्मप्रचारसँ दूर रहनिहार छलाह, तेँ अपन प्रसंग विशेष किछु कहब आवश्यक नहि बुझैत छलाह। अतः आब हुनकालोकनिक समय-निर्धारणमे बड़ कठिनता होइछ। ओहिमे किछु गोटे ग्रन्थक आदि वा अन्तमे अपन प्रसंग किछु तन्तु छोड़ि गेल छथि, तकरे आधारपर आइ-कालिह हुनकालोकनिक परिचय तकबाक प्रयास होइत अछि। ज्योतिरीश्वर सेहो 'संस्कृत धूर्तसमागम'क प्रस्तावना-वाक्यमे लिखने छथि "...रामेश्वरस्य पौत्रेण तत्रभवतः पवित्रकीर्तेर्धीरेश्वरस्यात्मजेन महाशासनश्रेणिशिखरग्रामत्पलीजन्मभूमिना कविशेखराचार्यज्योतिरीश्वरेण निजकुतूहलविरचितं धूर्तसमागमनाम प्रहसनमभिनेतुमादिष्टोऽस्मि।"

ई पाली मूलक छलाह। हिनक पिताक नाम धीरेश्वर तथा पितामहक नाम रामेश्वर छलनि। ई कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरिसिंहदेवक कालमे भेल छलाह। वर्णरत्नाकरक मैथिली अकादमी संस्करणक भूमिकाक अनुसार 'ज्योतिरीश्वर जहिया धूर्तसमागम लिखलनि तहिया हरिसिंहदेव वर्तमान तँ रहथि, किन्तु राज्याच्युत भऽ चुकल छलाह। अतः एकर रचना शाके १२४५क बाद भेल होयत। जँ धूर्त-समागमक रचना-कालमे हिनक वयस तीस वर्ष मानी तँ हिनक जन्म १२४६—३०=१२१६ शाके (अर्थात् १२९४ ई०)मे भेल होयत ओ हिनक अवसान ओइनिवार राज्यक स्थापनासँ पूर्व शाके १२७० (अर्थात् १३४८ ई०)क आस-पास मानल जा सकैत अछि।' डॉ० जयकान्त मिश्रक अनुसार हिनक समय १२८० सँ १३४० ई० धरि अछि।

वर्णरत्नाकर—अद्यावधि वर्णरत्नाकरक दू गोट प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित भेल अछि। पहिल, १९४० ई मे रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल द्वारा डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी आ पं० बबुआजी मिश्रक संयुक्त संपादनमे तथा दोसर, १९८० ई०मे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रो० आनन्द मिश्र आ पं० गोविन्द झाक संयुक्त संपादनमे।

जेना नामेसँ स्पष्ट अछि, एहि ग्रन्थमे अनेक वस्तुक वर्णन कयल गेल अछि। प्रायः तेँ कतहु-कतहु एकरा वर्णन-रत्नाकर सेहो कहल गेल अछि।

एहि ग्रन्थक अनुसन्धान म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक १८९५ सँ १९०० ई०क अभ्यन्तर दू बेर नेपाल-यात्राक क्रममे हुनक शिष्यद्वय पं० राखालचन्द्र काव्यतीर्थ एवं विनोद बिहारी काव्यतीर्थ मिथिलामे कयलनि। एकर प्रायः दू गोट पाण्डुलिपि छल। उपलब्ध अछि मात्र एक गोट पाण्डुलिपि, जे बंगालक रायल एशियाटिक सोसाइटीमे सुरक्षित अछि। ओ तिरहुतामे लिखल छैक जकर किछु अंश दोषावह छैक, किछु अस्पष्ट ओ खण्डित, मुदा किछु अंश स्पष्ट। अद्यावधि मुद्रित ग्रन्थ एही पाण्डुलिपिक आधार पर अछि।

पाण्डुलिपि ७७ पातक छल, मुदा संग्रहक समय १७ पात (पात १ सँ ९ धरि तथा ११, १२, १४, १५, १७, १९, २६ एवं २७) हेरा गेल छल। बेसी पातक एक पीठमे पाँच पंक्ति अछि, किन्तु कोनो पातमे चारि पंक्ति आ कोनोमे छओ पंक्ति सेहो अछि। ई सात भागमे विभाजित अछि, जकरा कल्लोल कहल गेल अछि। 'कल्लोल' अध्यायक सूचक थिक। एकर नाममे जेँ कि 'रत्नाकर' शब्द अछि, तेँ अध्यायसूचक शब्दकेँ 'कल्लोल' (तरंग) कहब युक्तिसंगत बुझि पड़ैत अछि। वर्ण्य-विषय निम्न प्रकारक अछि—

प्रथम कल्लोल—नगरवर्णना। एहिमे रत्नादि, वस्त्र, नीक-नीक वस्तु, द्यूतगृह, वैद्य, ज्योतिष, नृत्य-गीत आदिक वर्णन अछि।

द्वितीय कल्लोल—नायकवर्णना। एहिमे शृंगार रसक सामग्री, नायक, नायिका, सखी आदिक विस्तारपूर्वक वर्णन कयल गेल अछि।

तृतीय कल्लोल—आस्थान-वर्णना। आस्थान अर्थात् राजमहलक वर्णनक संग-संग एहि कल्लोलमे राजाक दैनिक जीवन-यापन-प्रणालीक सांगोपांग वर्णन, राजदरबार, शयनगृह, स्नानगृह, प्रभात, मध्याह्न, संध्या, वर्षाराति, अंधकार, चन्द्रमा ओ मेघ आदि प्राकृतिक उपादानक वर्णन कयल गेल अछि।

चतुर्थ कल्लोल—ऋतुवर्णना। एहिमे छवो ऋतुक अतिरिक्त चौसठियो कला, षोड़श महादान, रत्न, वस्त्र, अभिषेक, ज्योतिर्विद्, द्यूत, वेश्या, कुट्टनी, कामावस्था आदिक वर्णन कयल गेल अछि।

पंचम कल्लोल—प्रयाणकवर्णना। एहिमे शिकार, वन, पहाड़, ऋषि आश्रमक वर्णन अछि।

षष्ठ कल्लोल—भट्टादिक वर्णना। एहि मध्य काव्य, संगीत, नृत्य आदिक वर्णन अछि।

सप्तम कल्लोल—कलावर्णना। एहिमे श्मशान, मरुभूमि, सागर, तीर्थस्थान, नदी, नाव, पहाड़ आदिक वर्णन अछि।

मुद्रित प्रतिमे आठमो कल्लोल अछि जकर नामकरण 'राजपुत्र-कुलवर्णना' कयल गेल अछि। एहिमे आयुध, देश, राज्य, विवाह, अष्टनायिका, वणिक्पुत्र, चोर, दुर्ग, नौका, वैद्य, भोजन आदिक वर्णन कयल गेल अछि।

सभक वर्णन सांगोपांग कयल गेल अछि। दृष्टान्त रूपमे चतुर्थ कल्लोलमे वर्णित वर्षावर्णना द्रष्टव्य—'मेघक गर्ज आकाशक मेचकता विद्युल्लताक तरंग

कदम्बक सौरभ विषधरक संचार दद्दुरक कोलाहल धाराक संपात आदित्यक तुच्छता पृथ्वीक सौहित्य कर्दमक संचार औषधीक उपचार नदीक समृद्धि विरहीक उत्कंठा यतीक चतुर्मास्या पथिकक दुःसञ्चार अगम्य तीर्थ वैदेशिकक विलम्ब कन्दर्पक प्रेमाधिक्य युवतीक सौहृद्य एवम्विध सर्व्वगुणसम्पूर्ण वर्षा देखु ।"

मोटामोटी देखला उत्तर वर्णन-क्रम अनियोजित बुझि पड़ैत अछि, किन्तु वर्णन-प्रणाली तेहन सुघर एवं सुगठित अछि जे एकर मूल अखंडित रूपकें सुनियोजित होयबाक प्रमाण दैत अछि। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जीक कहब छनि जे "It lies both in the profusion of its details, and in the fact that it includes discriptions of almost all things worth describing in human life."

वर्णरत्नाकारक महत्त्व एहु लऽकऽ अछि जे ई मैथिली भाषा-साहित्यक आदि गद्य-ग्रन्थ थिक। जखन कि आन प्रायः सभ समृद्ध साहित्यक आरम्भिक कृति पद्यमे भेटैत अछि, हमरालोकनिक सर्वप्राचीन उपलब्ध ई ग्रन्थ गद्यमे अछि। एकर अध्ययनसँ मध्यकालीन मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधिक जानकारी प्राप्त होइत अछि। ई काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक। जे वर्णन अछि, से सांगोपांग। रचयिताक उद्देश्य रहल अछि वर्णनक सूची प्रस्तुत करब जाहिसँ समसामयिक एवं भविष्यक कविकें काव्य-रचनामे सुविधा भेटैक। एके वस्तुक विभिन्न रीतिएँ वर्णन कयल गेल अछि। एके ठाम विविध सामग्रीक संचयन भेल अछि। अतः डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एकरा 'मैथिलीक प्रथम भाषाकोश' कहैत छथि।

किन्तु, कोशक शुष्कता एहि ग्रन्थमे नहि भेटत। एहिमे कविशेखराचार्यक कविहृदयक सर्वत्र स्फुट प्रवाह परिलक्षित होयत, कतहु उकरू नहि, कतहु नबियाहटि नहि, सर्वत्र सरसता, मनोहारिता, उपमा-उत्प्रेक्षादि अलंकारसँ भरल। अनुप्रासक झंकार तथा ध्वन्यर्थक व्यंजनाक ठाम ठाम सफल प्रयोग एहिमे दर्शनीय अछि। सभ रसक सुन्दर परिपाक, यथा नायक-नायिकाक वर्णनमे शृंगार श्मशान-वर्णनमे भयानक आ वीभत्स एवं कुट्टनीक वर्णनमे हास्यक प्रवाह मनकें मुग्ध करयवला अछि।

ज्योतिरीश्वरक परवर्ती कविसभक रचनामे एकर प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होइछ, पद्यमे तँ सहजें, नाटकोमे। विद्यापतिक पदावली पर्यन्तमे ठाम ठाम एकर प्रभाव देखबामे अबैछ।

धूर्तसमागम — ई प्रहसन थिक। एकर दू गोट रूप प्राप्त अछि — एक संस्कृत-प्राकृतमे, दोसर मैथिली-गीत युक्त संस्कृत-प्राकृतमे। प्रो० रमानाथ झा दोसरो रूपकें मैथिली-कृति नहि मानैत छथि, किन्तु डॉ० जयकान्त मिश्र एकरा मैथिली-कृति स्वीकार करैत कीर्तनियाँ नाटकक आदिरूप एकरा मानलनि अछि।

एकर संस्कृत-प्राकृतवला रूप तँ पहिनेसँ उपलब्ध छल, किन्तु मैथिली धूर्तसमागमक अनुसन्धान डॉ० जयकान्त मिश्र १९५७ ई० मे नेपाल जा कऽ कयलनि। ई खंडित अछि। एहिमे एगारह गोट मैथिली गीत अछि। एकर गीतसभ कवित्वक दृष्टिएँ उत्कृष्ट नहि कहल जा सकैछ। हास्यरससँ ओतप्रोत

एहि प्रहसनमे एक संन्यासीक कथा अछि जे स्वयं गणिका-विलासी अछि। ओकर शिष्यो लम्पट छैक। दुनू भिक्षाटन लेल विदा होइत अछि। कोनो कारणें गुरु-शिष्यमे विवाद भऽ जाइत छैक, जकर मध्यस्थता करबाक हेतु असज्जाति मिश्र नामक एक धूर्त अबैत अछि। तीनू धूर्त धूर्तता करबासँ बाज नहि अबैछ। असज्जाति मिश्र बान्हल जाइछ। अन्तमे विदूषक ओकरा मुक्त करैछ। डॉ० प्रेम-शंकर सिंहक अनुसार "एहिमे लोकरूढ़ि एवं दैनन्दिन जीवनक प्रचलित विभिन्न लोकव्यवहारक सुन्दर चित्र अछि। प्रत्येक पात्रक नाम सेहो तद्वत् गुणानुरूप एवं हास्यसँ युक्त अछि। गीतमे किछु तँ संस्कृतक श्लोकक पद्यानुवाद मात्र अछि तथा शेष स्वतन्त्र भावकें लऽकऽ लिखल गेल अछि। प्रवेश-गीतक माध्यमे पात्रक व्यवहार एवं स्वभावक परिचय भेटैछ। ई जनजीवनक तत्कालीन स्थितिपर प्रकाश दैछ।" एकर भाषा वर्णरत्नाकरक भाषासँ भिन्न बुझि पड़ैछ। तें, प्रो० रमानाथ झा एकरा ज्योतिरीश्वरक कृति मानबामे शंका प्रकट कयने छथि।

जे हो, ज्योतिरीश्वर मैथिली साहित्यक सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थकार छथि, ताहिमे सन्देह नहि। किन्तु, हिनक ग्रन्थक भाषा, ओकर प्रवाह, वर्णन-कौशल आदिसँ ज्ञात होइत अछि जे हिनका समयमे अबैत-अबैत मैथिली भाषा परिपक्व भऽ गेल छल आ एहि भाषामे रचना ओहिसँ पूर्वोमे अवश्य होइत छल होयतैक। एहि प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक ई उक्ति अक्षरशः सत्य प्रतीत होइत अछि — "It is quite obvious from the maturity of style and composition of Jyotirisvara's Vernacular works that the literary use of the vernacular by Jyotirisvara was neither the first nor the only one. But so long as other older Maithili specimens are not discovered they must continue to be considered as the earliest conscious literature in Maithili."

विद्यापति

मैथिली-साहित्यक ई विशाल प्रासाद जँ कोनो एक टा स्तम्भपर ठाढ़ अछि तँ ओ निस्सन्देह विद्यापति थिकाह। मैथिली साहित्यक एहि विशाल वटवृक्षक जे सीर सभसँ गहीँर धरि गेल अछि, तकर नाम विद्यापति थिक। जँ विद्यापति-रूपी सूर्यक आविर्भाव मैथिली काव्य-गगनमे नहि भेल रहैत तँ रात्रिक व्याप्ति आर कतेक सय वर्ष बेसी भऽ जाइत, से के कहि सकैछ? वस्तुतः ई कविकोकिलक काकलीएक प्रभाव छल जे मैथिली काव्योपवनमे वसन्तक साम्राज्य व्याप्त भऽ गेल।

विद्यापति जाहि युगमे भेलाह से संक्रान्ति युग छल। मुसलमानी शासन दिल्लीमे जड़ि जमा चुकल छल। सम्पूर्ण राष्ट्र ओकर प्रभाव-क्षेत्रमे आबि रहल छल। किन्तु, मिथिला बाँचल छल। तकर कारण ई छल जे एहि ठामक लोककेँ राजनीतिसँ ओतेक रुचि नहि, सभ सांस्कृतिक एकतामे आबद्ध छल। ओही समयमे कर्णाटवंशीय अन्तिम नरेश हरिसिंहदेव द्वारा पाँजिक व्यवस्था (१३२६ ई०) आरम्भ कयल गेल। ई आइयो भले जर्जरे भऽ गेल हो, विद्यमान अछिए। मिथिलाक सांस्कृतिक पुनरुद्धार भेल। एहि पुनरुद्धारमे विद्यापतिक पूर्वज महत्त्वपूर्ण योगदान देने छलाह।

किछु वर्षक बाद मिथिलोमे मुसलमानी शासनक स्थापना भेल। से तँ भेल, किन्तु मिथिलाक सांस्कृतिक स्वरूप अपरिवर्तित रहल। एकर श्रेय जाहि किछु महापुरुषकेँ देल जाइत छनि ताहिमे विद्यापति अग्रगण्य छथि। कारण, ई अपन संस्कृत-अवहट्ठ-मैथिली-रचना द्वारा जनमानसमे अपन संस्कृतिक प्रति समर्पणक भाव जाग्रत कयलनि। विद्यापतिक शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, वर्षकृत्य, गयापत्तलक आदि रचना मिथिलाक धार्मिक संस्कार ओ कौलिक व्यवहारकेँ सुरक्षित रखबामे सहायक सिद्ध भेल। किन्तु, मैथिल एकताकेँ एकसूत्रमे आबद्ध रखबामे हिनक मैथिली पदावलीकेँ सर्वाधिक श्रेय प्राप्त छैक। विद्यापति तत्कालीन सामाजिक संघटनक रक्षा अपन व्यवहार-गीत द्वारा तथा धार्मिक भावनाक रक्षा भक्तिपदक माध्यमसँ कयलनि।

विद्यापतिक पूर्वज अनेक पीढ़ीसँ राज्याश्रयी छलाह। ओलोकनि विद्वत्ताक बलपर राज्याश्रयण प्राप्त कयने छलाह। एहिसँ ई सिद्ध होइछ जे हिनक कुल विद्वानक कुल तँ छले, राज्य पोषित सेहो छल, तेँ प्रतिष्ठितो अवश्य छल।

जन्म - विद्यापति स्वयं अपन जन्मक सम्बन्धमे कतहु नहि कहने छथि। तेँ, अन्य सामग्रीक आधारपर, प्रकारान्तरसँ, हिनक जन्म-समयक निर्धारण कयल गेल अछि। एहि प्रसंग विभिन्न विद्वानमे मतभेद अछि।

सर्वप्रथम ओहि सूत्र सभक विषयमे विचार कयल जाइछ, जाहि आधारपर हिनक जन्म-कालक निर्धारण कयल गेल अछि। ओ सूत्रसभ निम्नलिखित अछि—

(१) दरभंगा राज-पुस्तकालयमे सुरक्षित विद्यापति द्वारा लिखित श्रीमद्भागवतक प्रतिलिपि। एकरा विद्यापति राजबनौलीमे ल० सं० ३०९मे लिखलनि।

(२) कवि (विद्यापति) द्वारा 'लिखनावली'क रचना कालक उल्लेख ल० सं० २९९ मे भेल अछि।

(३) अवहट्ठक एक गीतमे महाराज शिवसिंहक सत्तारूढ़ होयबाक तिथि ल० सं० २९३ लिखल भेटैत अछि। एहिमे ल० सं०क अतिरिक्त शाके-संवतक उल्लेख सेहो छैक—१३२४ अर्थात १४०२ ई०।

(४) कीर्तिलताक द्वितीय पल्लवमे असलान द्वारा गणेश्वर ठाकुरक हत्याक समय लिखल गेल अछि ल० सं० २५२।

अवहट्ठ-गीतक आधारपर ल० सं० (लक्ष्मण संवत्)क प्रारम्भक पता लगाओल गेल अछि। एहि आधारपर सिद्ध अछि जे ल० सं० शक संवत् १०३१, अर्थात् ११०९ ई० सँ प्रारम्भ होइत अछि।

चन्दाझा 'पुरुष-परीक्षा'क अनुवादक भूमिकामे लिखने छथि जे जनश्रुतिक आधारपर ज्ञात होइछ जे विद्यापति महाराज शिवसिंहसँ दू वर्षक जेठ छलाह। शिवसिंह पचासम वर्षमे राजा भेलाह। विद्यापति ओहि समयमे बावन वर्षक रहल होयताह। राजा शिवसिंह १४०२ ई० मे सत्तासीन भेल छलाह। एहि आधारपर विद्यापतिक जन्म निश्चित होइत अछि १३५० ई० मे। डॉ० सुभद्र झा, प्रो० रमानाथ झा तथा पं० शशिनाथ झा एही मतक समर्थक छथि, किन्तु म० म० डॉ० उमेश मिश्र तथा डा० जयकान्त मिश्र हिनक जन्म-काल १३६० ई० मानलनि अछि।

मृत्यु—हिनक मृत्युक सम्बन्धमे सुप्रसिद्ध पद—'विद्यापतिक आयु अवसान, कातिक धवल त्रयोदशि जान'—आनो आधारसँ सिद्ध होइछ।

ई ज्ञात होइछ जे राजा शिवसिंह तीन वर्ष नओ मास धरि राज्य कयलनि। तकर बाद, मुसलमानक संग युद्ध करैत ओ निपत्ता भऽ गेलाह। ओ १४०२ ई०मे सत्तासीन भेल छलाह तथा १४०६ ई० धरि राजा रहलाह। विद्यापति राजा शिवसिंहक निपत्ता भेलाक बत्तीस वर्षक बाद हुनका स्वप्नमे देखने छलाह। अर्थात् ताबत धरि विद्यापति जीवित छलाह। ओ स्वप्न देखने छल होयताह १४३८ ई० मे। तकर आगाँ वर्ष हिनक देहान्त भेल होयतनि, अर्थात् १४३९-४० ई० मे।

डॉ० सुभद्र झाक अनुसार हिनक निधन १४४८सँ ६१ ई०क बीचमे भेलनि। डॉ० उमेश मिश्रक अनुसार १४६६ ई० मे, डॉ० जयकान्त मिश्रक अनुसार, १४४८ ई०मे तथा पं० शशिनाथ झाक अनुसार १४५० ई०मे ई दिवंगत भेलाह; तथ्य जे हो, मुदा ई दीर्घजीवी भेलाह, ताहिमे सन्देह नहि।

भनिता—विद्यापति जाहि-जाहि राजाक दरबारमे रहलाह, ताहि सभ राजाक लेल गीतक रचना कयलनि। सभसँ बेसी गीत ई शिवसिंहक लेल लिखलनि, जे हिनक समवयस्क छलथिन। हिनक गीतक भनितामे राजाक संग रानीक नामक सेहो उल्लेख अछि। एहि क्रममे सभसँ बेसी लखिमा, तखन मोदवती, सोरमदेवी मेधादेवी, सुखमादेवीक नामक उल्लेख भेटैत अछि। एकर अतिरिक्त देवसिंह-हासिनी देवी, अर्जुन सिंह कमला देवी, राघवसिंह मोदवती तथा सोनमति, बैजलदेव-चन्दलदेवी आदिक नाम हिनक गीतक भनितामे भेटैछ। किछु आनो भनितायुक्त पद विद्यापतिक नामसँ प्राप्त अछि, यथा, रमापति, दामोदर, जयराम, कविराज आदि, किन्तु ओहि पदसभक जाँच, हेतु अनुसन्धान अपेक्षित अछि।

उपनाम—विद्यापति अपन जीवने-कालमे बड़ प्रसिद्ध भऽ गेल छलाह। हिनक अनेक पदवी अथवा उपनाम भेटैत अछि, यथा—अभिनव जयदेव, सुकवि-कण्ठहार, महाराज पण्डित, राजपण्डित, सरस कवि, नव कविशेखर, कवि-कण्ठहार, कविवर, सुकवि, नव जयदेव। कविकोकिल तँ हिनक नामक पर्याय भऽ गेल अछि। ई सभ उपनाम गुणबोधक थिक। एहिसँ विद्यापतिक काव्यात्मक विशेषताक तथा लोकप्रियताक परिचय ज्ञात होइत अछि।

कृति—संस्कृत, अवहट्ट तथा मैथिली—एहि तीन भाषामे विद्यापतिक रचना भेटैत अछि। ई सभसँ अधिक लिखलनि संस्कृतमे, जाहिमे छोट-पैघ मिलाकऽ हिनक एक दर्जन ग्रन्थ अछि। अवहट्टमे दू गोट ग्रन्थ तथा मैथिलीमे पुस्तक तँ नहि, केवल पद प्राप्त अछि, जकर संख्या सात-आठ सय धरि एखन गेल अछि। एकर अतिरिक्त एक टा नाटक अछि।

संस्कृत-कृति भूपरिक्रमा, विभागसार, दान-वाक्यावली, पुरुष-परीक्षा, शैवसर्वस्वसार ओ शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराण-संग्रह, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, मणिमंजरी, लिखनावली, गयापत्तलक, वर्षकृत्य तथा व्याडिभक्तितरंगिनी।

अवहट्ट-कृति—कीर्त्तिलता तथा कीर्त्तिपताका।

नाटक—गोरक्षविजय। एहिमे कथोपकथन एवं निर्देश संस्कृत आ प्राकृतमे अछि। मैथिलीक प्रयोग गीतमे तँ अछिए जे आनो ठाम भेटैछ। प्रो॰ रमानाथ झा एकरा संस्कृत-प्राकृत नाटक मानैत छथि, किन्तु डॉ॰ जयकान्त मिश्र भाषा-नाटक।

मैथिली—मैथिलीमे हिनक लिखल पदसभ, जे विद्यापति-पदावलीक नामसँ प्रसिद्ध अछि, अनेक स्रोतसँ प्राप्त भेल अछि। यैह पदावली हिनक कवि-व्यक्तित्वकेँ कालजयी बना देने अछि। विद्यापति-पदावली अनेक व्यक्ति आ अनेक संस्था द्वारा प्रकाशित भेल अछि। एहिमे मुख्य अछि शिवनन्दन ठाकुरक विद्यापतिक विशुद्ध पदावली, पुस्तक भण्डार द्वारा प्रकाशित रामवृक्ष बेनीपुरीक विद्यापति-पदावली, डॉ॰ सुभद्र झाक विद्यापति-गीत-संग्रह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना द्वारा प्रकाशित विद्यापति पदावलीक तीन खण्ड, मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित पं॰ गोविन्द झाक विद्यापति-गीतावली। एकर अतिरिक्त आरो अनेक संकलन छपल अछि।

विद्यापतिक पदसभ निम्नलिखित स्रोतसँ प्राप्त भेल अछि—

(१) नेपाल तड़िपत—ई नेपाल सरकारक दरबार पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि। ई सभसँ पुरान मानल जाइत अछि। डॉ॰ सुभद्र झाक अनुसारेँ ई सोलहम शताब्दीक पाण्डुलिपि थिक, मुदा लिपि-विशेषज्ञक अनुसार अठारहम शताब्दीक। एहिमे २८८ गोट पद अछि, जाहिमे २६१ टा पद विद्यापतिक भनितासँ युक्त अछि। एकर फोटो स्टेट प्रति पटना विश्वविद्यालय तथा पटना कालेजक पुस्तकालयमे अछि। एहि आधारपर दू गोट संग्रह डॉ॰ सुभद्र झा एवं बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना द्वारा प्रकाशित भेल अछि।

(२) रामभद्रपुर तड़िपत—ई दरभंगा जिलाक रामभद्रपुर गाममे पाओल गेल छल। सम्प्रति एकर मूल प्रति लुप्त भऽ गेल अछि। एकर फोटो-प्रति बिहार

राष्ट्रभाषा परिषदमे उपलब्ध अछि। एहिमे बीचक पन्ना उड़ल अछि। प्राप्त पाण्डुलिपिमे ४४८ गोट पद अछि। शिवनन्दन ठाकुर एकरे आधारपर ८४ पदक विद्यापतिक विशुद्ध पदावलीक संग्रह कयने छलाह।

(३) तरौनी तड़िपत—तरौनी (दरभंगा)क स्व॰ लोकनाथ झाक ओहि ठाम श्रीमद्भागवतक संग पदावलीयोक तड़िपत सुरक्षित छल। मोहनी मोहन दत्त एकरा प्राप्त कयलनि, हुनकासँ ई नगेन्द्रनाथ गुप्तकेँ भेटलनि। ओ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे एकरा जमा कयलनि, मुदा बादमे ओतऽ ई लुप्त भऽ गेल। नागेन्द्रनाथ गुप्तक अनुसार ओहिमे ३५० पद छल, किन्तु ओ २३६ मात्र पदक संकलन कयलनि। तेँ, निश्चित पद-संख्या कहल नहि जा सकैछ। किछु पदक भनितामे विद्यापतिक नहि, आन कविक नाम अछि।

(४) रागतरंगिणी—लोचनकृत रागतरंगिणीक प्राचीन हस्तलेख आब लुप्त भऽ गेल अछि। राजप्रेस, दरभंगासँ प्रकाशित एकर आदिसंस्करणमे विद्यापतिक एकाबन गोट पद अछि। रागतरंगिणीक रचना संगीतशास्त्रकेँ दृष्टिमे राखि कऽ कयल गेल अछि।

(५) वैष्णव पदावली—ब्रजबुलि-साहित्यमे अनेक पद्य-संग्रह प्राप्त अछि, जाहिमे विद्यापतिक पद सेहो संकलित अछि। राधामोहन ठाकुरक पादामृत-समुद्रमे ६४ पद, गोकुलानन्द सेनक पदकल्पतरुमे १६१ पद, दीनबन्धुदासक संकीर्तनामृतमे १० पद तथा अज्ञात व्यक्ति द्वारा संकलित कीर्तनानन्दमे ५८ गोट पद विद्यापतिक नामसँ संकलित अछि।

(६) लोककंठसँ उपलब्ध पद—जार्ज ग्रियर्सन ८४ टा पद प्रकाशित करबौलनि। चन्दाझाक सहायतासँ नगेन्द्रनाथ गुप्त ६११ टा पद उपलब्ध कयलनि। एकर अतिरिक्त अन्यो किछु स्रोतसँ पदसभ प्राप्त भेल अछि।

"विद्यापतिक काव्य साहित्यक मुख्य विशेषता थिक गेयधर्मिता, निर्दोष आवेगात्मक भावाभिव्यक्ति, संक्षिप्तता भावक विविधता, पौराणिक आख्यान तथा संस्कृत-रीतिक पालन एवं भनिताक प्रयोग।"

विद्यापति जनसाहित्यक निर्माण कयलनि तथा मानव-हृदयक मूलभूत वासनाकेँ अत्यन्त सूक्ष्मतासँ यथावत् चित्रण कयलनि। ई रागतालसमाश्रित कोमलकान्त पदावलीक रचना कयलनि जाहिमे माधुर्यगुण परिपूर्ण अछि। ई संस्कृत-काव्यरीतिक भाषा-साहित्यमे अत्यन्त मनोहर तथा सफल प्रयोग कयलनि।

हिनक सम्पूर्ण पदावलीकेँ, अध्ययनक सुविधाक हेतु, मोटामोटी चारि भागमे बाँटल जा सकैछ—(१) श्रृंगारिक गीत (२) भक्तिगीत (३) व्यवहार-गीत, तथा (४) कूटपद।

हिनक सम्पूर्ण श्रृंगारिक पदावलीकेँ दू भागमे बाँटि कऽ बूझल जा सकैत अछि। प्रथमतः ओहन श्रृंगारिक पद जाहिमे गोपीलोकनिक संग, विशेषतः राधाक संग, श्रीकृष्णक प्रणयलीलाक वर्णन अछि। द्वितीयतः ओहन श्रृंगारिक पद जाहिमे नरनारीक सहज आकर्षणमूलक प्रेम आ विलासक, विविध भाव आ अवस्थाक, स्वाभाविक चित्रण अछि। राधाकेँ खण्डिता भेलाक पश्चात् सखीक उक्ति कृष्णक प्रति द्रष्टव्य—

हृदय मोहर जानि न भेला। प्रक रतन जानि मर्म देला।
कएल माधव, एमे अकाजे। हाथि मेडाउलि सिंह-समाजे।
राखह माधव मोरि विनती। देहे परिहरि पर-युवती।
चुम्बने नयन-काजर गेला। दसने अधर खण्डित भेला।
पीन पयोधर नखरे मन्दा। जनि महेसर-शेखर चन्दा।
न मुख वचन, न मन थीरे। काम्प थनहन सबे सरीरे।
घर गुरुजन दुरजन शंका। लओलह माधव, मोहि कलंका।
भन विद्यापति तवे दूती भोरि। बेतन गोपए बेकत चोरि।

हिनक भक्तिगीतके सेहो तीन कोटिमे विभाजित कयल जा सकैछ। पहिल कोटिक गीतमे शिवविषयक नचारी ओ महेशवानी अबैछ। दोसर कोटिक गीतमे अबैछ शक्ति, गंगा आ विष्णुक स्तुति तथा तेसर कोटिमे शान्तिपदकें राखल जा सकैछ। भक्तिपदमे हिनक गोसाउनिक गीत तँ मिथिलाक कोनो उत्सवक मंगलाचरणे भऽ गेल अछि—

जय-जय भैरवि असुरभयाउनि पसुपति-भाविनि माया।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाउनि अनुगत गति तुअ पाया।
वासर-रइनि सवासने सोभित, चरन चन्द-मनि चूड़ा।
कतओक दैत मारि मुहे मेरल, कतन उगिलि करु कूड़ा॥
सामर वदन नयन अनुरंजित, जलद जोग फुल कोका।
कटकट विकट ओठ-फुट-पाँड़रि लिधुर-फेन उठ फोका॥
घन-घन-घनन घुघुरु कटि बाजए, हन हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक पुत्र बिसरु जनु माता॥

हिनक व्यवहारक गीतकें सेहो दू भागमे बाँटल जा सकैछ। पहिलमे भिन्न-भिन्न समयक अनुकूल गीत, यथा-फागु, चैत, बारहमासा, चौमासा, पावस-प्रसंग आदि। दोसर प्रकारक गीतमे भिन्न-भिन्न अवसरक उपयुक्त—यथा योग, उचिती, कोबर, कुमार आदि अबैत अछि।

विद्यापतिक कूटपद सेहो भेटैत अछि।

हिनक प्रसंग डॉ० सुभद्र झा एक ठाम कहने छथि 'विद्यापति प्रीति-सत्ताक प्रबल समर्थक छथि। आध्यात्मिक तत्वें विवेचित हिनक पदावलीक गीतसभ सेहो एकरे पुष्टि करैछ।'

इतिहास-प्रसिद्ध अछि जे ई बिसपी (मधुबनी जिला)क निवासी छलाह, जे गाम हिनका महाराज शिवसिंहक दिससँ पुरस्कार-स्वरूप प्राप्त भेल छलनि। किंवदन्ती ईहो अछि जे स्वयं महादेव उगना नाम राखि हिनक नोकर बनि सेवा कयने छलाह तथा गंगा हिनका अपन कोरमे लेबाक हेतु धार छोड़िकऽ हिनका लग उपस्थित भेलि छलीह। एहि किंवदन्तीमे सत्यता जे हो, किन्तु ई बात तँ आब प्रमाणित भऽ चुकल अछि जे हिनक काव्यमे ओहन किछु तत्त्व अवश्य अछि जे ओकरा कथमपि मरऽ नहि देतैक अछि तथा आइयो ओ ओहने चिरनवीन बुझि पड़ैत अछि। यावत ई मिथिला, ई सभ्यता रहत, ता धरि विद्यापतिक पद रहत आ जा धरि हिनक पद रहत, ता धरि ई स्वयं रहताह। कीर्त्तिर्यस्य स जीवति।

गोविन्ददास

गोविन्ददास, विद्यापतिक बाद, आदि कालक सभसँ महत्त्वपूर्ण कवि छथि। विद्यापतिसँ मैथिलीमे शृंगार आ भक्तिक धार जे प्रवाहित भेल, ताहिमे यद्यपि अनेको कवि फूह-फाहसँ अपन योगदान देलनि किन्तु गोविन्ददास रसक अनवरत मूसलधार वृष्टि कऽ ओहि धारमे बाढ़ि आनि देलनि। हिनको ख्याति, विद्यापतिए जकाँ, मिथिलाक सीमाकें टपि सम्पूर्ण बंगालमे पसरि गेल।

हिनको समय बहुत दिन धरि अनिर्णीत रहल। एखनहुँ एहिपर ऐकमत्य नहि भ' सकल अछि। बंगाली विद्वान बहुत दिन धरि हिनका बंगलाक कवि मानैत रहलाह, किन्तु आब सिद्ध भ' गेल अछि जे ई मैथिल छलाह। अपन विषयमे ईहो किछु नहि लिखने छथि। पंजीमे एकसँ अधिक गोविन्ददासक नाम भेटैत अछि, तें ई निश्चय करब कठिन जे एहिमेसँ महाकवि गोविन्ददास के थिकाह। गोविन्ददासक भनितामे नरसिंह सँ लऽ कंसनारायण धरिक नाम भेटैत अछि। ताहिसँ एतबा तँ सिद्ध होइत अछि जे ईहो राज्याश्रित कवि छलाह। किन्तु हिनक बहुतो गीत एहन अछि जाहिमे कोनो राजाक उल्लेख नहि अछि। एहिसँ ईहो स्पष्ट होइछ जे ई स्वतन्त्रो रूपसँ, बिन राज्याश्रयक, काव्यरचना कयने छलाह।

हिनक परिचय आ समयक प्रसंग विद्वा लोकनिक मत निम्नलिखित अछि—

कवीश्वर चन्दा झा पंजीक आधारपर हिनक परिचय देने छथि "शुचिकर झा—एपुत्रः शिवदास झा, एपुत्रा गंगादास-गोविन्ददास-हरिदास-रामदासाः। गंगादासस्य पुत्रः चानशर्मा चन्द्रशेखरोपनामा एपुत्रः शोभनाथ शर्मा एपुत्रौ टेकनाथ शर्मा धुरपीशर्मा च। टेकनाथशर्मणो दौहित्रः महाराजलक्ष्मीश्वर सिंहः।'

प्रो० रमानाथ झा हिनका कुजौलीवार मूलक कात्यायन गोत्रीय श्रोत्रिय ब्राह्मण मानने छथि तथा एहि वंशक उतेढ़ देखबैत एहि वंशक अनेक व्यक्तिक सम्बन्ध मिथिला राजपरिवारसँ सिद्ध कयने छथि।

डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि 'He was a contemporary of Maharaja Sundara Thakur (1663/4-1670/1) and belonged to the mother's family of the late Maharaja Rameshvra Singha Bahadur (1888-1929)." ई चारू भाइ कवि छलाह तथा हिनक तेसर अनुज रामदास अपन आनन्दविजय नाटिकामे अपन अग्रज गोविन्ददासकें विद्यागुरु स्वीकार कयने छथि। आनन्दविजय महाराज सुन्दर ठाकुरकें समर्पित अछि।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक अनुसार गोविन्ददास विद्यापतिक लगले परवर्ती-कालमे भेलाह। एकर पाछाँ हिनक तर्क छनि जे विद्यापति भैरवसिंहक आज्ञासँ दुर्गाभक्ति तरंगिणी लिखलनि। गोविन्ददास सेहो एक गीतक भनितामे भैरवसिंहक उल्लेख कयने छथि। गोविन्ददास विद्यापतिकें अपन गुरु रूपमे स्वीकार कयने छथि। अतः दूनू कवि समसामयिके थिकाह।

डॉ० रामदेव झाक अनुसार कंसनारायणक समकालिक, 'नलचरित'-रचयिता, दिघवय-सम्भहपुर मूलक तथा पंजीमे कवि आ महामहोपाध्याय उपाधि-धारी विशिष्ट मन्त्रि (मंत्री), गोविन्दे ई गोविन्ददास थिकाह।

श्री नरेन्द्रनाथ दासक अनुसार गोविन्ददास कायस्थ कुलोद्भव श्रीधर दासक वंशपरम्परामे अबैत छथि।

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' उचिते कहलनि अछि जे 'गोविन्ददास कोनहु काल-खण्डक होथु, कोनहु अभिजन ओ कुल-परिवारक होथु, ओ छथि मैथिलीक महाकवि; जनिक स्थान विद्यापतिक परम्पराक कोनहु कविसँ न्यून नहि। ओ अपन शैलीक अनन्य कवि छथि। श्रुतिमाधुर्य, वर्णन विन्यास ओ लीलारसक उपन्यासमे हुनक स्थान मैथिलीअहिमे नहि, कोनो उत्तर भारतीय भाषामे अनुपम मानल जायत। हुनक पदमे शब्दशास्त्रीय पाण्डित्य, तार्किकता, आलंकारिता आ भक्ति-अनुरक्ति सभ तत्त्व परिलक्षित अछि। 'रसना-रोचन श्रवण विलास' उच्चारणमे मुख-सुखद ओ श्रवणमे श्रुतिसुखद एहि समन्वित पदसौकुमार्यके अनिवार्य रूपे काव्यतत्त्वमे प्रवेश कयनिहार, ओकरा सफलतासँ प्रदर्शित कयनिहार कोनो आन कवि हठात् दृष्टिगोचर नहि होइत छथि।'

गोविन्ददास अपन एक पदमे विद्यापतिक स्मरण करैत लिखने छथि—

कविपति विद्यापति मतिमाने
जाक गीत जग-चीत चोराओल
गोविन्द गौरि सरस रस गाने

तथा—

विद्यापति-पद-कमल-सरोरुह निस्पन्दित मकरन्दे
तसु मझु मानस मातल मधुकर पिवइते करु अनुबंधे

एहि पाँती सभसँ ई प्रमाणित होइत अछि जे ई विद्यापतिसँ विशेष प्रभावित छलाह। ईहो शृंगार आ भक्ति दुनू प्रकारक पद, विद्यापतिए जकाँ, रचने छथि। किन्तु, दुनूमे मौलिक अन्तर अछि। जतऽ विद्यापतिकेँ मुख्यतः शृंगारिक कवि मानल जाइत छनि ततऽ गोविन्ददासकेँ मुख्यतः भक्तकवि। हिनक शृंगारिक पद सभमे सेहो कृष्णभक्तिक छाप अछि। एकर कारण प्रायः ई थिक जे हिनके समयमे बंगालमे चैतन्यदेव भेल छलाह। चैतन्यदेव जाहि रूपमे श्रीकृष्णक प्रति सर्वस्व समर्पण-भाव प्रकट कयलनि, से छल राधाभाव। अर्थात्, अपनाकेँ राधा मानि कऽ ओ श्रीकृष्णकेँ अपन प्रेमी मानने छलाह। वस्तुतः एहन परिस्थितिमे शृंगारक उदय होयब स्वाभाविके। किन्तु एहि शृंगारमे समर्पण-भाव छैक, एकर मूलमे भक्तिभाव छैक। एहि सम्प्रदायसँ प्रभावित गोविन्ददासक पदसभक आवरण तँ अछि शृंगारक, किन्तु ओकर आत्मा अछि भक्तिक। यैह कारण थिक जे हिनक पद सभक जे संकलन स्वनामधन्य डॉ० अमरनाथ झा कयलनि, तकर नाम ओ रखलनि 'शृंगार भजनावली'। एकर तात्पर्य जे गोविन्ददासक पद सभ तँ भजन थिक, अर्थात् भक्तिभाव-मूलक थिक, किन्तु से भक्ति प्रकट भेल अछि शृंगारक माध्यमसँ। उक्त 'शृंगार-भजनावली' जकर संकलयिता आ सम्पादक डॉ० अमरनाथ झा छलाह, सर्वप्रथम प्रो० रमानाथ झाक 'साहित्य-पत्र'मे प्रकाशित भेल। बादमे पुस्तकाकार सेहो बहार भेल।

शृंगार-भजनावलीक अतिरिक्त गोविन्ददासक गीतक दू गोट आओर संकलन मुख्य अछि। प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा संपादित 'गोविन्द गीताञ्जलि'मे गोविन्ददासक समस्त उपलब्ध पद संकलित कयल गेल अछि, जकर कुल संख्या ३४० अछि। सम्पादक हिनक पदकेँ 'श्री राधाकृष्ण-रसलीला-पदावली' कहलनि अछि। सभ पदक ऊपर रागक नाम तथा शीर्षक देल गेल अछि, जे पदक भावकेँ ध्वनित करैत अछि। दोसर संकलन, जकर नाम 'गोविन्ददास-भजनावली' थिक, मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित अछि, जकर सम्पादक पं० गोविन्द झा थिकाह। एहिमे कविक १३० पदक अर्थ देल गेल अछि।

विद्यापतिसँ हिनकामे एक अन्तर ई अछि जे जतऽ विद्यापतिक पद प्रसादगुण युक्त अछि, अर्थात् सहज रीतिएँ अर्थ लागि जाइत अछि, ततऽ हिनक पद शब्दालंकारसँ ततेक बोझिल भऽ गेल अछि जे अर्थानुसन्धानमे कठिनता उत्पन्न कऽ दैछ। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "शब्दक एहन विन्यासी कवि मिथिला भाषामे दोसर नहि भेल तथा पदकेँ ललित श्रुति मधुर अर्थानुग्राही एवं समता-संयुक्त बनएबामे यदि शब्दकेँ तोड़हु पड़लन्हि, ओकर स्वरूप विकृतो करए पड़लन्हि तथा अपन हृदयक भाव झाँपलो भए गेलन्हि, तथापि गोविन्ददास अर्थक प्रसादक हेतु शब्दविन्यास नहि दूरि कएलन्हि।"

हिनक पदक दुरूहताक कारणक तहमे जाइत डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कहैत छथि—"हिनक रचनामे जे दुरूहता अछि, तकर प्रधान कारण थिक नैयायिक कविक कठोर परन्तु सूक्ष्म कल्पनाशक्ति। आशयक गाम्भीर्य, ध्वनिक सूक्ष्मता, व्यंग्यक दूरत्व सेहो प्रायः अधिक ठाम हिनक गीतमे अर्थक दुरूहताक कारण बनि गेल अछि, से सभ नैयायिकक सूक्ष्म विवेचनक अभ्यासक परिणाम कहल जा सकैत अछि।"

गोविन्ददासक पद जेहने काव्य कलाक दृष्टिएँ उत्कृष्ट, तेहने भाव पक्षक दृष्टिएँ स्वच्छ प्रांजल। हिनक शृंगारिक पद, जकरा ब्रजबुलिवला लोकनि रहस्यात्मक भाव बोधयुक्त विशिष्ट भक्ति-पक्षक पद मानैत छथि, राधाकृष्णक विराट् लीला-रूप समक्षमे राखि दैत अछि। प्रेमक कतेको प्रकार मानल गेलैक अछि; यथा—मान, विरह, अभिसार, संवाद आदि, ताहि सभ पक्षपर प्रचुर सामग्री, सेहो उत्कृष्ट कोटिक, कवि द्वारा लिखल गेल अछि।

राधाक अंग-प्रत्यंगकेँ विभिन्न फूलसँ समता देखबऽवला कविक 'कुसुम-वदना'क किछु पाँती द्रष्टव्य थिक—

कानन कुसुम तोड़ल किए गोरी
कुसुमहि सब तन निरमित तोरी
आनन हेम सरोरुह भास
सौरभ श्याम भ्रमर मिलु पास
नयन युगल निल उतपल जोर
सहज सोहाओन श्रवणक ओर

हिनक 'नवधा-भक्ति' (भक्ति-भाव प्रदर्शित करबाक नओ प्रकारक विधि)क

प्रसंग एक प्रसिद्ध पद निम्नलिखित अछि—

भजहु रे मन नन्द-नन्दन अभय चरणारविन्द ।
दुलभ मानुष जनम सत्संग तरह ए भवसिंधु ॥
शीत-आतप-बात-बरषा ए दिन-यामिनि जागि ।
विफल सेवन कृपन दुर्जन चपल सुख सभ लागि ।
ई धन यौवन पुत्र परिजन एतेक अछि परतीति ।
कमलदल जल जीवन टलमल भजहु हरिपद नीति ।
श्रवण कीर्त्तन स्मरण वंदन पादसेवन दास ।
पुजन ध्यान आत्मनिवेदन गोविंददास अभिलाष ॥

विद्यापति आ गोविन्ददासक अन्तर स्पष्ट करबा लेल डॉ० जयकान्त मिश्र दू गोट संस्कृत महाकविक संग एहि दुनू गोटेक तुलना करैत कहैत छथि—"Vidyapati is like Kalidas—having eminently prasadgun (the quality of pleasing)—and Govindasa is like Magha—hard to construes."

हिनक कविताक विशेषता सभकें समटैत डा० सुकुमार सेन कहने छथि—"He drew largely upon classical lyric poetry for treatment in vernacular. All the simple and complex figures of speech and other devices known in Sanskrit Rhetoric were utilised by our poet But the greatest achievement ··· is metrical perfection added to musical assonance and rhythmic movement."

गोविन्ददास स्वयं अपन कविताक प्रसंग कहने छथि—

रसना रोचन श्रवण-विलास
रचइ रुचिर पद गोविन्ददास

वास्तवमे गोविन्ददासक पद रुचिर होइत अछि, कारण ओ सुनबामे सुखद ओ स्वादमे मधुर होइछ। से होइतो, हिनक पदक प्रचार मिथिलामे ओतेक नहि भेल, जतेक विद्यापतिक। तकर कारण दू टा। पहिल तँ ई जे विद्यापतिक पद प्रसाद गुणयुक्त छल, सोझ छल, किन्तु हिनक पद क्लिष्ट। तेँ, सर्वसाधारणक जीह पर ओ नहि चढ़ि सकल। दोसर, गोविन्ददास चैतन्यदेवक 'मधुर रस'क रसी छलाह, जे मिथिलाक हेतु ओतेक आकर्षणक केन्द्र-बिन्दु कहियो नहि रहल। तथापि, हिनक साहित्यिक महत्त्व तँ अक्षुण्ण अछिए। प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क शब्दमे "मैथिलीक साहित्याकाशमे विद्यापति ओ गोविन्द दास सूर्य-चन्द्रमा जकाँ प्रतिभा-भास्वर छथि। एकक परिधि जँ सुविस्तृत अछि, प्रभाव-प्रताप जँ प्रखरतर अछि, तँ दोसरक स्वर-ध्वनि सीमित रहितहु अशेष आह्लादक अछि, भाव-प्रवाह विशेष प्रकान्त स्वादु-शीतल अछि। विद्यापतिकें गुरु-गौरव प्रदान कयनिहार गोविन्द दासक शिष्यताक महत्ता कम कमनीय नहि। कोनहु अंशमे गुरुक पद-पद्धतिकें कोमलतम रूप प्रदान करबामे, प्रकृतिक अनुकरणकें कलाक अभिधान दिऐबामे, रसशृंगारकें भाव-भक्तिमे परिणत करबामे, गोविन्द दासक शिष्यत्व विशेषत्व प्राप्त कय लेल। 'अनुलेखार्थ स्मृति रन्धगच्छत्' एहि कालिदासीय उक्तिक चरितार्थता हिनक सम्यक् अध्ययनसँ सिद्ध होइछ।"

———

उमापति

उमापति उपाध्याय मैथिली साहित्यमे कविसँ बेसी नाटककारक रूपमे विख्यात छथि। हिनक दू गोट उपाधि प्रसिद्ध अछि—'कविपण्डितमुख्य' आओर 'सुमति'। प्रथम उपाधिसँ ई द्योतित होइछ जे ई कवि आ पण्डितमे मुख्य छलाह, अर्थात् अग्रगण्य कवियो छलाह, मान्य विद्वानो। दोसर उपाधि हिनक शिष्टता, सौजन्य आ सामाजिक मान्यताक परिचायक छल। ई कोइलख (मधुबनी) गामक निवासी छलाह।

हिनक कविताक पोथी कोनो उपलब्ध नहि अछि। उपलब्ध अछि एकमात्र कृति, से थिक नाटक, जकरा कीर्तनियाँ नाटक कहल जाइछ, नाम थिक ओकर 'पारिजात-हरण'। पारिजात-हरणक गद्य-पद्य संस्कृत आ प्राकृतमे अछि, बीच-बीचमे गीत अछि मैथिलीमे, जकर संख्या एकैस अछि।

अन्य प्राचीन कवि जकाँ हिनको समय विवादास्पद रहल। एखनहुँ धरि विभिन्न विद्वान लोकनिक बीच ऐक्यमत्य नहि भेल अछि। प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' हिनक समयक प्रसंग प्रचलित विभिन्न मतकें सूत्रबद्ध करैत 'पारिजातहरण'क भूमिकामे लिखैत छथि—"डा० ग्रियर्सन मिथिलेश—हरिहरदेव दूहूक एकवाक्यता करैत कर्णाटवंशीय महाराज हरिसिंहदेव (१३०५-२४)क आश्रयमे हिनक स्थिति मानैत छथि। पण्डित चन्दनाथ झा अपन भूमिकामे नेपालस्थित सप्तरी परगनाक अन्तर्गत मकमानीक हिन्दूपति (१७म शताब्दी) अभिधानधारी एक माण्डलिक राजाक आश्रित पण्डित रूपमे उमापतिक परिचय दैत कहैत छथि जे—एतय मैथिल विद्वानकें प्रश्रय भेटैत छल ओ एही सप्तरीमे विद्यापति सेहो 'लिखनावली'क रचना कयने छथि। बाबू भोलालालदास 'यवनवनच्छेदन-कुठारकरवालेन, विष्णोर्दशमावतारेण हरिहरदेवन' आदि विशेषण-विशेष्यक सार्थकता विजयनगरम् राज्यक संस्थापक हरिहरदेव-बुक्कदेव (१४ श०)क संग कहैत हिन्दूपति-पदें हुनकहि आश्रयक संकेत दैत छथि। डा० श्री जयकान्त मिश्रक मतें उक्त हिन्दूपति बुन्देलखण्डक नरेश महाराज छत्रसालक प्रपौत्र गढ़मण्डलक राजा हिन्दूपति (१७ श०) छथि, जनिक राजगुरु उमापति उपाध्याय छलाह। केओ 'हम अति बूढ़ नदी मरखाहि'क किवदन्तीक आधार पर गुरु गोकुलनाथक समयमे हिनक स्थिति मानैत महाराज राघवसिंह (१७०४-१७४०; अठारहम शताब्दी)क समय स्थिर करैत छथि। एहि विवादास्पद प्रश्नक जटिलता तखन आरो बढ़ि जाइछ जखन 'केटेगोरस केटेगोरम' केर सूची निबंधक अनुसार उमापति नामक चौदह गोट कविक उल्लेख भेटैछ।" अपन मान्यताकें विभिन्न प्रमाणसँ पुष्ट करैत श्री 'सुमन' आगाँ कहैत छथि—"पारिजात-हरणक किछु क्रियापद एवं नामपदसँ चौदहम शताब्दीक मैथिली अवहट्ट रचनाक साम्य भेटैछ। तखन की क्षति जे उमापतिकें हरिसिंहदेवक सभासदक मान्यता देल जाय?"

डा० रामदेव झाक अनुसार 'सोलहम शताब्दीक तेसर चरण आ सतरहम शताब्दीक प्रथम तीन चरणक मध्य—आगाँ-पाछाँ किछु वर्ष छोड़िकऽ—उमापतिक

जीवनकाल रहल होयतनि। कोनहु स्थितिमे उमापतिक जीवन-कालकें १५७० ई० सँ पूर्व ओ १६७० ई०क पश्चात् नहि खीचल जा सकैत अछि। ओना दू-चारि वर्षक अन्तर जँ हो तँ से नगण्य थिक।'

पारिजात-हरण—ई उमापतिक एकमात्र उपलब्ध लघुकाय नाटक थिक, जाहिमे एकैस गोट मैथिली गीत, उनैस गोट संस्कृत-श्लोक तथा संवाद संस्कृत ओ प्राकृतमे अछि। मैथिली-गीत आ संस्कृत-श्लोक पाण्डित्यपूर्ण तँ अछिए जे कविक विलक्षण सर्जनात्मक प्रतिभासँ मंडित सेहो अछि। एकर "कथानक हरिवंशपुराणक १२४-३५ अध्यायक आधारपर अछि; भागवत (१० स्कं० उत्त०) मे सेहो एहि अंशक कथासूत्र भेटैछ। पौराणिक घटनामे जतऽ इन्द्रक संग प्रद्युम्न युद्धमे जाइत छथि ततऽ नाटकमे कृष्णक संग अर्जुन दैत छथि।" डा० जयकान्त मिश्र कीर्तनियाँ नाटक मध्य एकर बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान देने छथि।

एकर कथावस्तु अत्यन्त छोट अछि।

नारद स्वर्गसँ पारिजात नामक फूल आनि कृष्णकें उपहार दैत छथि। ओ रुक्मिणी कें दऽ दैत छथिन। एहिपर छोटकी महारानी सत्यभामा कुपित भऽ जाइत छथिन। हुनक प्रेमक वशीभूत श्रीकृष्ण स्वर्ग जाकऽ इन्द्रसँ युद्ध कऽ, पारिजात वृक्षक हरण कऽ आनि सत्यभामाकें अर्पित करैत छथिन। बस, कथानक एतबे टा अछि। सम्पूर्ण नाटकमे एकरे पल्लवित कयल गेल अछि।

मोटामोटी पढ़ला उत्तर यद्यपि ई वीररस-प्रधान नाटक बुझैना जाइछ, किन्तु कथानकक मूल भावनापर दृष्टिपात कयने स्पष्ट भऽ जाइछ जे ई शृंगाररस-प्रधान नाटक थिक।

एहि नाटकक महत्त्व एकर मैथिली गीत लऽकऽ विशेष अछि। उमापतिक गीत सूक्ष्म कल्पना ओ परिपक्व कवित्वक परिचायक थिक। द्रष्टव्य—

हरि सों प्रेम आस कय लाओल, पाओल परिभव ठामे
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ, आतप भेल परिनामे
सखि हे! मन जनु करिअ मलाने
अपन करम फल हम उपभोगव तोहें किअ तेजह पराने
पुरुष पिरित रिति हुँनि जन्वो बिसरल तइयो न हुनकर दोसे
कतेक जतन धरि जओ परिपालिअ साप न मानय पोसे
कबहु नेह पुनु नहि परगासब केवल फल अपमाने
वेरि सहस्र दश अमिअ भिजविअ कोमल न होअ पखाने
गुरु उमापति हरि होएत परसन मन होएत अवसाने
सकल नृपतिपति हिन्दूपति जिउ महारानि विमाने

एहि गीतसभपर दृष्टिपात कयलासँ ज्ञात होइछ जे "उमापतिक काव्य भाव ओ भाषा दुहूमे पाण्डित्यपूर्ण अछि। रचनाशैलीमे विद्यापतिक अनुकरण रहितहुँ, विद्यापतिक भाषामे जे सरलता अछि, अथवा ओहिमे जे भावनाक उद्दाम प्रवाह अछि, तकर निर्वाह उमापति नहि कऽ सकलाह अछि।" यैह कारण थिक जे विद्यापतिक पद जतऽ सकल-साधारणक जीहपर विराजमान अछि, ततऽ उमापतिक पद पण्डितक मण्डलीमे घुरियाकऽ रहि गेल अछि।

उमापतिक गीत भनहि जनसाधारणक बीच लोकप्रिय नहि रहओ, किन्तु विद्वान रसिक मण्डलीक बीच रसक बरिसाते आनि दैछ। विरहिणी नायिकाक वियोग-व्यथाक एहन सूक्ष्म विश्लेषण साहित्यमे तकलहुँ भेटत वा नहि। सामान्य अवस्थामे जेहे वस्तु उद्दीपनक साधन बनैछ, सैह सभ विरहिणीक लेल अरुचिकरे नहि अपितु प्राण-घातक भऽ गेल अछि। नायिकाक ओहन अवस्थाक कौशल-पूर्वक वर्णन कऽ दूती नायकक सुपुरुषत्व कें चुनौती दैछ—

कि कहब माधव तनिक विशेषे। अपनहुँ तन धनि पाव कलेशे।
अपनुक आनन आरसि हेरी। चानक भरम कांपि कत बेरी।
भरमहु निय कर उरपर आनी। परसे तरस सरसीरुह जानी।
चिकुर-निकर निय नयन निहारी। जलधर जाल जानि हिय हारी।
अपन वचन पिक-रव अनुमाने। हरि हरि तेहु परि तेजय पराने।
माधव आबहु करिअ समधाने। सुपुरुष निठुर न रहए निदाने।
सुमति उमापति भन परमाने। माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने।

तहिना, नायिकाक मान-मोचन करबा लेल नायकक उक्ति नारी-मनोविज्ञानक सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि—

अरुण पुरब दिस बहलि सगर निशि गगन मलिन भेल चन्दा
मुन्दि गेलि कुमुदिनि तइओ तोहर धनि मून्दल मुख-अरविन्दा
कमल वदन कुवलय दुहु लोचन अधर मधुरि निरमाने
सगर शरीर कुसुम तुअ सिरजल किए तुअ हृदय-पखाने
असकति कर कंकण नहि पहिरसि हृदय भार भेल भारे
गिरि सम गरुअ मान नहि मुंचसि अपरुप तुअ बेबहारे
अबगुन परिहरि हरषि हेरु धनि मानक अवधि विहाने
हिमगिरि-कुमरि चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने

परिजातहरणक गीतसभक विशेषता प्रो० सुमनक निम्नलिखित पंक्तिमे एकके ठाम जगजियार भऽ गेल अछि—"प्रत्येक गीत प्रसंगोपात्त रहितहुँ रसोज्ज्वल मुक्तक गीत कहल जायत। रसविन्यासक संगहि गेयधर्मितासँ गीतसभ ओतप्रोत अछि, रसोपयुक्त राग-संगीतसँ युक्त अछि। वसन्तरागमे उद्यान एवं प्रेमवर्णन, मालव ओ विभासमे मान-विरह, आशावरीमे भक्ति-प्रार्थना, विरह-अभिनिवेशमे केदारराग सर्वथा रसोपयुक्त भेल अछि। एकर अतिरिक्त राजविजय, ललित, मल्हार, बड़ारी, नट, पंचम—एतबा रागक प्रयोग एहिमे भेटैछ। एहिमे संगीतक संगहि नृत्यकलाकें सेहो उच्च स्थान देल गेल अछि।...भाषाक दृष्टिएँ कवि-पण्डित उमापतिक रचना अत्यन्त परिमार्जित, अलंकृत, संगहि सरस सुबोध।"

पारिजातहरणक विशिष्ट साहित्यिक मूल्यक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्रक ई कथन द्रष्टव्य—*'It is ore of the best Maithili plays of the 'Regular' type. It is remarkable for its literary merits and provides a very good entertainment. The poet is well-constructed events follow one another in a neccessary connection."*

पारिजातहरणक अतिरिक्त उमापतिक किछु मैथिली-पद प्राप्त अछि, सेहो काव्यकलाक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। □

मनबोध

मनबोधक स्थान मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण अछि, तकर कारण जे ई विद्यापतिक परम्पराकेँ भंग कऽ, श्रृंगार-प्रधान गीतक विपरीत, कथाकाव्यक माध्यमे मैथिलीक भण्डारकेँ भरलनि। शिल्पक स्तरपर, भावक स्तरपर तथा वर्णन-चमत्कारक स्तरपर हिनक कविताक प्रयोग सफल सिद्ध भेल अछि। हिनक प्रसिद्ध रचना 'कृष्णजन्म' अछि, जाहि आधारपर मध्ययुगीन कविमे हिनक स्थान अग्रगण्य अछि।

जहिना विद्यापतिक पद लोक-कंठमे अपन स्थान बना अमर भऽ गेल, तहिना 'कृष्णजन्म'क चौपाइ सभ सेहो स्त्रीगण-पुरुषक कण्ठमे बैसि अपन कविकेँ अमर कऽ देलक। विद्यापतिक पश्चात् सर्वसाधारणक बीच जतेक लोकप्रिय मनबोध भेलाह, ततेक हिनक पूर्ववर्ती आन कोनो कवि नहि भऽ सकलाह। आइयो गाम-घरक बूढ़-पुरान स्त्रीगण-पुरुषक जीहपर कृष्णजन्मक अनेक चौपाइ विराजमान अछि।

एतेक लोकप्रिय रहितो, हिनक परिचय ओ समय सुनिश्चित नहि अछि। हिनको प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतवैभिन्य देखल जाइछ।

म० म० डा० उमेश मिश्र हिनक परिचयक सम्बन्धमे दू गोट विवरण देलनि अछि।

१. ई मंगरौनीक रहनिहार छलाह। ई पलिवार जमदौली मूलक योग्यवंशक सोनमणि झाक, जे पैघ ज्योतिषी रहथि, बालक छलाह।

२. दोसर मतक अनुसार पगुलबाड़ बड़िआम मूलक जमसम-निवासी चान झाक ई बालक छलाह आ हिनक नामान्तर भेल छलनि। पंजीमे 'भापाकवि भोलन'क उल्लेख भेटैत अछि।

प्रो० रमानाथ झाक अनुसार मनबोध नरौने मलिछाम मूलक जटेश झाक बालक छलाह। ग्रियर्सन साहेबक मतेँ हिनक निधन १७८८ ई० मे भेलनि। अतः हिनका अठारहम शताब्दीक मानल गेल अछि।

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क शब्दमे "कवि मनबोध पलिबाड़ मूलक ज्योतिर्विद सोनमणि झाक बालक छलाह। महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन, अठारहम शताब्दीक पूर्व भाग हिनक समय मानल जाइछ।"

'कृष्णजन्म'क अतिरिक्त हिनक एक आओर पोथी 'दानलीला'क उल्लेख भेटैत अछि, किन्तु ई पोथी अद्यावधि अनुपलब्ध अछि। कहल जाइछ जे ई श्रृंगार रसक काव्य छल।

कृष्णजन्म – 'कृष्णजन्म' एक आख्यान-काव्य थिक जकर कथानक गोकुल-मथुरा-द्वारकाक परिधिमे घुमैत कृष्णक जन्म, तखन कंसक वध आ तकर बाद जरासन्धक संहार धरि सीमित अछि। सम्पूर्ण ग्रन्थ एकें छन्द चौपाइमे रचित अछि। एकर कथा भागवत ओ हरिवंश पुराणसँ लल गेल अछि। एहिपर हरिवंशक छाप

ततेक गाढ़ अछि जे कतोक विद्वान एकर मौलिकतेपर संदेह व्यक्त कऽ देलनि। किन्तु, पद ततेक रमनगर अछि, कथा ततेक छटासँ कहल गेल अछि जे ई सर्वथा मौलिकक स्वाद दैत अछि।

उपलब्ध 'कृष्णजन्म' मे अठारह अध्याय अछि, मुदा पढ़ला उत्तर स्पष्ट होइत अछि जे दस अध्यायक बाद ओ छटा, ओ चमत्कारक अभाव अछि जाहि हेतु मनबोध प्रसिद्ध छथि। तेँ, ई संदेह कयल जाइछ जे एगारहमसँ अठारह अध्यायक अंश, मनबोधक नामपर, कोनो आन कविक जोड़ल अछि।

एकर रचना महाकाव्यक रूपमे नहि भऽकऽ पौराणिक कथाक रूपेँ भेल अछि। महाकाव्यमे सर्ग होइत अछि, किन्तु कृष्णजन्ममे अध्याय अछि। तहुँ एकरा महाकाव्य कहब समीचीन नहि। एहि 'काव्यकलाक अलंकार-चमत्कार नहि, लोकजीवनक सहज संस्कार अछि।' तेँ एकरा पौराणिक कथाकाव्य कहब अधिक समीचीन होयत।

मनबोधकेँ भाषाकवि कहल जाइत छनि। कृष्णजन्ममे जे भाषा प्रयुक्त भेल अछि तकरा निस्सन्देह लोकभाषा कहल जा सकैछ। "तत्कालीन साहित्यिक संस्कृत एवं अवहट्ठ, जे संयुक्ताक्षरक प्रयोगक कारणेँ, कर्णकटु प्रतीत होमय लागल छल से घसि कय, कोमल उच्चारणसँ मजि-चिकनाकय, लोककंठक अनुकूल बनि गेल अछि। यथा कुमारी-कुम्मरि-कूमरि, हस्ती-हत्थी-हाथी, अर्जुन-अज्जुन-अरजुन, दुग्ध-दुद्ध-दुध, कार्य-कज्ज-काज, दर्व-दप्प-दाप आदि। उदाहरणस्वरूप, तेसर अध्यायक ई प्रसिद्ध चौपाइ देखल जा सकैछ—

कतओक दिवस जखन बिति गेल। हरि पुनु हबगर गोड़गर भेल।
से कोन ठाम जतय नहि जाथि। कय बेरि अंगनहुँसँ बहराथि।
द्वार उगरसँ धरि धरि आनी। हरखथि हँसथि जसोमति रानी।
कय बेरि आगि हाथसँ छीनु। कय बेरि पलका तकला बीनु।
कय बेर साप धरय पुनि जाथि। कय बेरि चून दही बदि खाथि।
कौसल चलथि मारिकहुँ चाल। जसोमतिकाँ भेल जिबक जंजाल।

कृष्णजन्ममे तद्भव शब्दक प्रयोगक अतिरिक्त मिथिलाक लोकोक्ति ओ मोहाबराक प्रयोग सेहो पर्याप्त भेल अछि। यथा—लाजक लेल मुख हेरलो न होय, एहिसँ सुखद साप बरु खाय, जुड़ायल कान, विधाता बंक, सबदुक जिव पनिछाय, आदि। 'बाभन पोथी छत्री तीर' 'नेरु हेरयने जेहने धेनु गाय' आदि कहबी सम्पूर्ण काव्यग्रन्थमे जीवन्तता आनि देने अछि। तत्कालीन चिन्तनकेँ कतहु व्यंग्यसँ तँ कतहु तीक्ष्ण कटाक्षसँ एहिमे उभारल गेल अछि।

यैह कारण थिक जे कृष्णजन्म मिथिलामे पर्याप्त लोकप्रिय भेल। विद्यापतिक पद जकाँ ईहो पोथी सकलसाधारणक जीहपर विराजमान भऽ गेल। एहि लोकप्रियताक जड़िमे अछि कृष्ण सन लोकप्रिय चरितक बालकालक वर्णन जे वात्सल्यसँ ओतप्रोत अछि, तथा सहज-सरल भाषाक प्रयोग एवं मिथिलाक सामाजिक-धार्मिक संस्कारक सफल चित्रण। भाषाक सहजताक निर्वाह करितो कवि एहिमे अलंकारक पर्याप्त प्रयोग कयलनि अछि। अन्यो काव्यगुणसँ ई कृति परिपूर्ण अछि।

मैथिली साहित्य मे वात्सल्य रसक वर्णनक अभाव अछि। वर्तमानो काल मे कम कवि भेलाह अछि जे वात्सल्य रसक नीक जकाँ परिपाक कऽ सकलाह अछि। तेहना स्थितिमे, मनबोधक महत्त्व आओरो बढ़ि जाइछ। मैथिलीमे तँ प्रायः मनबोधेसँ एहि रसक धारा आरम्भ होइत अछि। नेनाक लालन-पालन करब, ओकर चंचलताकेँ भोगब, ओहिसँ आनन्द उठायब, ओकरा उच्छृंखल बनवासँ रोकब, अपन एक-एकटा व्यवहारसँ ओकर चरित्र-निर्माण करब, नीकक शिक्षा देब, अधलाहसँ परहेज करब सिखायब, ओकर मनपर कोनो तीव्र दबाब नहि देब—ई सभ तेहन तत्त्व अछि जे बालकक भविष्यक निर्माणमे सहायक होइत अछि। काव्य मे एकरा उतारब आ पुनि तकरा लोकप्रिय बनायब—कविक असाधारण सामर्थ्यक काज थिक। एहू दृष्टिएँ मनबोधक काव्य-प्रतिभाक वैशिष्ट्यक आकलन कयल जा सकैत अछि। देखैत छी जे मनबोधक काव्य-दृष्टि बाल-मनोविज्ञानक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म विन्दु धरि प्रवेश कऽ गेलनि अछि।

कृष्णक बाल-स्वाभावक वर्णन करैत काल कवि कथाक सूत्रकेँ छोड़ैत नहि छथि तथा लगले-लागल कृष्णक ईश्वरत्वक भान पाठककेँ करा दैत छथि। कवि सावधान रहैत छथि जे पाठक वर्णनक रसानुभूति करैत एतेक दूर धरि नहि चलि जाय जे ओकरा मूल कथे विस्मृत भऽ जाइक। तेँ, यमलार्जुन—उद्धारक प्रकरण कृष्णक बाल-लीलाक बीचेमे कवि राखि देलनि अछि—

भेलहि निसंक समय हरि पआल
भरि-भरि पाँज उखरि ओंघराओल
गुड़कल-गुड़कल भिड़कल जाय
जतय अछल दुइ बिर्छ अकाय
जमला अर्जुन कमला नाथ
जुगुति उपाड़ल छुइल न हाथ
खसल महातरु हँसल मुरारि
भेल अघात जगत परचारि

कृष्णजन्मक भाषाक प्रसंग डा० ग्रियर्सन कहने छथि—"*The poem is deserving of special attention as an example of the Maithili of the last century affording a connecting link between the old Maithili of Vidyapati and the modern Maithili of Harshnath Jha and the other writers of the present day.*"

एकर समर्थनमे प्रो० सुमनक एहि उक्तिकेँ देखल जा सकैछ—"कविक काव्य-प्रबन्ध पूर्वरंगक संगीतक इंगितपर नहि, छन्दबन्धसँ उन्मुक्त वातावरणमे विकसित-लक्षित होइछ। एहि दृष्टिएँ आधुनिक मैथिलीपर जतेक प्रभाव ज्योतिरीश्वर-विद्यापतिक नहि, गोविन्ददास-रामदासक नहि, उमापति-नन्दीपतिक नहि, ततेक मनबोधक पड़ल अछि।"

तेँ डा० जयकान्त मिश्रक ई मान्यता जे—'*In the history of Maithili literature Manabodha occupies a very important place*' अक्षरशः सत्य अछि।

□

लोचन

लोचन, जनिक पूरा नाम लोचन झा छलनि, मैथिली साहित्यमे प्रसिद्ध छथि अपन एकमात्र कृति 'रागतरंगिणी' लऽकऽ। 'रागतरंगिणी' संगीत शास्त्रक पोथी थिक, जाहिमे राग-ताल आदिक ज्ञान कराओल गेल अछि, किन्तु एकर विशेष महत्त्व एहि लऽकऽ भऽ जाइत अछि जे विद्यापति समेत संकलयिताक पूर्ववर्ती कविलोकनिक मैथिली पदक संकलन एहिमे कयल गेल अछि तथा स्वयं लोचनोक आठ गोट गीत अछि, जे हुनक काव्य-प्रतिभाक दिग्दर्शन करबैत अछि।

एहि पोथीक आधार पर लोचनक प्रसंग निम्नांकित तथ्य ज्ञात होइत अछि।

एहि ग्रन्थमे महाराज महेश ठाकुरसँ लऽकऽ नरपति ठाकुर धरिक प्रशस्ति-श्लोक अछि। अतः ई नरपति ठाकुरक समकालीन सिद्ध होइत छथि। चन्दा झा स्वयं लोचन द्वारा तैयार कयल गेल रागतरंगिणीक दू गोट प्रतिलिपि देखने छलाह। पहिने जे देखने छलाह, ताहिसँ सिद्ध होइछ जे ओ १७०२ ई०क थिक। बादमे जे पाण्डुलिपि ओ देखने छलाह, जे प्रायः पहिले छल, से १६०७ शाके (१६८५ ई०)क लिखल छल। अनुमानतः रागतरंगिणीक रचना काल यैह थिक। डॉ० 'श्रीश' हिनक समय १६२५-८५ मानैत छथि।

ई संगीत शास्त्रक प्रकाण्ड पण्डित छलाह, तेँ ने एहि शास्त्रक ग्रन्थक निर्माण कयलनि।

ई अनुसन्धाता सेहो अवश्य छल होयताह, नहि तँ विद्यापतिसँ लऽकऽ अनेक कविक जे पद एहिमे भेटैत अछि, से नहि भेटैत। संगीत-मर्मज्ञक संग काव्य-मर्मज्ञ सेहो ई छलाह, तकर प्रमाण थिक पदक शुद्धता।

ई स्वयं निष्णात कवि छलाह। हिनक आठ गोट पद जे एहिमे संगृहीत अछि, से हिनक विशिष्ट कवित्व प्रतिभाक निदर्शन करबैत अछि।

हिनक महत्ताक प्रमाण ईहो थिक जे विद्यापति-गोविन्ददास जकाँ हिनको बंगाली विद्वान अपन कवि सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि। हिनक मैथिलत्व आब निर्विवाद प्रमाणित भऽ चुकल अछि।

रागतरंगिणी - एकर अद्यावधि पाँच संस्करण प्रकाशित भेल अछि। पहिल – बो० एस० सुखथंकर द्वारा बंबईसँ १९१० ई० मे, दोसर—दत्तात्रेय केशव जोशी द्वारा पूनासँ १९१८ ई० मे, तेसर - दरभंगा राजप्रेस द्वारा बलदेव मिश्रक संपादन मे १९३४ ई० मे, चारिम –पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विकास-कोष द्वारा डॉ० सुधाकर झाक संपादनमे १९६६ ई०मे, पाँचम – मैथिली अकादमी, पटना द्वारा डॉ० शशिनाथ झाक सम्पादनमे १९८१ ई०मे। पहिल दू संस्करणमे मैथिली पद नहि देल गेल अछि।

'रामलोचनशरण-जयन्ती-स्मारक-ग्रन्थ'मे उल्लिखित अछि जे मिथिलेश महिनाथ ठाकुरक अनुज उत्तम कुमार नरपति ठाकुरक आज्ञासँ लोचन द्वारा संगीत-विषयक ग्रन्थ रागतरंगिणी लिखल गेल।

रागतरंगिणीमे कुल एक सय तीन टा गीत संकलित अछि, जाहिमे उनतीस गोट कविक अनठानबे टा गीत अछि, शेष पाँच गीतक कवि अज्ञात छथि। ओ उनतीसो कवि थिकाह – विद्यापति, भवानीनाथ, अमृतकर, गजसिंह, सिंहभूपति, चन्दकला, कंसनरायन, गोविन्दकवि, लछमीनरायेन, जसोधर, जीवनाथ, दस-अवधान, सदानन्द, भीषम, चतुर्भुज, श्याम-सुन्दर, हरिदास, गंगाधर, श्रीनिवास मल्ल, पूरनमल्ल, प्रीतिनाथ नृप, चतुरानन, कुमुदी, तरनाङ्गी, लखनचन्द राय, जयकृष्ण, धरणीधर, मधुसूदन तथा लोचन।

रागतरंगिणीमे पाँच तरंग अछि। पहिलमे पुरुषराग-स्वरूप-कथन, दोसरमे रागिनी-स्वरूप-कथन, तेसरमे उत्पत्ति ओ नाद-निरूपण एवं तिरहुत देशमे विख्यात राग, चारिममे तिरहुति-देशीय संकीर्ण-राग-विवरण, तथा पाँचममे स्वर-प्रकरण, वीणा-वाद्यक विषय ओ श्रुति-विभाग आदि वर्णित अछि।

रागतरंगिणीमे तीन भाषाक प्रयोग भेल अछि—संस्कृत, ब्रजभाषा तथा मैथिली। एकर मुख्य भाषा संस्कृत अछि, जे सम्पूर्ण ग्रन्थमे व्याप्त अछि। ब्रजभाषाक प्रयोग सेहो व्यापक रूपमे भेल अछि। हिनक समयमे संस्कृत जनसामान्यक भाषा रहि नहि गेल छल आ ई अपन ग्रन्थक प्रचार वृहत्तर क्षेत्रमे करऽ चाहैत छलाह, तेँ ओहि समयक सर्वाधिक प्रसरित ब्रजभाषाक स्थान देलनि। किन्तु, ई छलाह मैथिल आ मैथिली हिनक प्रिय मातृभाषा छल, तेँ रागक उदाहरणक रूपमे जतेक गीत देलनि, सभ मैथिलीमे। मैथिलीक प्रयोग केवल तेसर आ चारिम तरंगमे अछि। मैथिलीकेँ लोचन 'मिथिलाऽपभ्रंशभाषा' कहलनि अछि।

एहि ग्रन्थक महत्त्वक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक निम्नलिखित उक्ति विशेषतः द्रष्टव्य थिक—

"It is enough to note that while this work (Ragatarangini) is vailable in preserving the works of many otherwise little or unknown poets and in helping to determine their detes, it is an undying record of the widespred poetical activily of the day. This work is also an evidence of the greatness of Lochan's musical scholarship"

लोचनक कवित्व प्रतिभाक निदर्शनक लेल दृष्टान्तगीक रूपमे हिनक एक शृंगार पद द्रष्टव्य—

मोचन वमन विसमादनि रे देखलि धनि खीनि
नयन-नीरे परिपूरनि रे चित चिन्ता-लीनि
नाम वइसि पत पूछनि रे सत भाँति बुझाए
नइओ रहनि तेहि भाँतिहि रे मरगसि शिर नाए
मगुन्थि न मुख न सम्भाषन रे मुख नहि परगास
अनुदिन विखिन सोहागिनि रे तेज दीप निसास
कमल वदनि मनि मानिक रे हरि ऐसनि जाति
लोचन भन मन जानक रे मधुमति देवि कन्त
धूम महिनाथ, महीपति रे विरहिन मन-मन्त

□

चन्दा झा

चन्दा झाकेँ आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छनि। ई बहुमुखी प्रतिभाक विलक्षण व्यक्तित्वक लोक छलाह। ई मैथिलीमे रामायणक रचना कऽ साहित्य-जगतमे क्रान्ति आनि देल न। ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली प्राध्यापक डा० अमरनाथ झाक शब्दमे 'चन्दा झा पहिल कवि भेलाह जे मैथिली साहित्यक गत्यवरोधकेँ चीन्हल तथा ओहिमे नवीन गति प्रदान कऽ ओकरा देश ओ समाजक अनुकूल बनाओल एवं नवीन खाढ़ीक कविलोकनिक हेतु एक टा नव पथ प्रशस्त कयल।'

मैथिलीमे रचना करबाक कारणेँ हिनका तत्कालीन पण्डित-समुदायक उपहास सेहो सहन करऽ पड़लनि। हिनक कुचेष्टा करबाक लेल ओलोकनि हिनका कवीश्वर (अर्थात् भाँट) कहऽ लगलाह, किन्तु अपन एकनिष्ठ साधना, दृढ़ आत्मबल, तीक्ष्ण कवित्व शक्ति सँ कुचेष्टा प्रयुक्त ओहि शब्दकेँ ई गरिमामण्डित बना देलनि आ सिद्ध कऽ देलनि जे वास्तवमे ई 'कवीश्वर' (कविमे ईश्वर, अर्थात् अलौकिक प्रतिभासम्पन्न कवि) छलाह। उपहासो सूचक शब्द महापुरुषक सान्निध्य पाबि कोना महिमामय भऽ उठैत अछि, तकर ज्वलन्त प्रमाण ई थिक।

कवीश्वर चन्दा झाक पूरा नाम चन्द्रनाथ झा छलनि। ई पिण्डारुच (दरभंगा) ग्रामक, मड़रय रजौरा मूलक, काश्यप गोत्रीय पण्डित भोला झाक बालक छलाह। हिनक मातृक बड़गाम (सहरसा) तथा मातामहक नाम पण्डित गिरिवरनारायण झा रहनि। हिनक जन्म अपन मातृकेमे २० जनवरी १८३१ ई० केँ भेलनि। बादमे ई पिण्डारुच छोड़ि अपन सासुर ठाढ़ी (मधुबनी) मे निवास करऽ लगलाह। ई महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह आ महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारक आदरणीय पण्डित छलाह। हिनक निधन १४ दिसम्बर १९०७केँ वाराणसीमे भेलनि।

व्यक्तित्व—चन्दा झाक व्यक्तित्व बहुआयामी छल। ई कवीश्वरक नामे विख्यात भेलाह। ई मैथिलीक महाकवि तँ रहबे करथि, संगहि संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान सेहो रहथि। रामायणमे तथा आनो ठाम हिनक कतिपय संस्कृत-श्लोक उपलब्ध अछि। ओहि श्लोकसभक आधारपर सहजेँ ई अनुमान लगाओल जा सकैछ जे जँ मातृभाषाक प्रति हिनक प्रगाढ़ अनुरक्ति नहि रहैत तँ संस्कृतोमे ई उत्कृष्ट कोटिक ग्रन्थ लिखि अमर भऽ सकैत छलाह।

ई बहुत पैघ-अनुसन्धानकर्ता छलाह। विद्यापतिक विषयमे तथा अपन पूर्ववर्ती अनेक मैथिल कवि ओ पण्डितक विषयमे ई जाहि-जाहि तथ्यक अन्वेषण कयलनि, से हिनक विशिष्ट अनुसन्धान-क्षमताक ज्वलन्त प्रमाण थिक। "ई सर्वप्रथम व्यक्ति छलाह जे विद्यापतिकेँ मैथिल प्रमाणित करबाक दिशामे आकृष्ट भेलाह।"

ई संगीतशास्त्रक गम्भीर ज्ञाता छलाह। अपन रामायणमे मिथिलाक संगीतक अनुसार अनेकानेक रागक उल्लेख कयने छथि।

ई सफल अनुवादक सेहो छलाह। विद्यापतिक संस्कृत-ग्रन्थ 'पुरुष-परीक्षा'क गद्य-पद्यमय अनुवाद हिनक विलक्षण अनुवाद-सामर्थ्यक परिचायक थिक। तहिना संपादन-कार्यमे सेहो ई निष्णात छलाह।

ई साधको उच्च कोटिक छलाह। सांसारिक सुख-दुख दुनूक अनुभव, से पर्याप्त मात्रामे, हिनका भेलनि, किन्तु ताहिसँ अविचलित रहि सभकेँ ई सामान्य रीतिएँ ग्रहण करैत रहलाह।

ईश्वरक प्रति हिनका अगाध निष्ठा छलनि। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह ओ महाराज रमेश्वर सिंहक राजदरबारसँ सम्पृक्त रहबाक कारणेँ भोग-विलासमे आसक्त भऽ जयबाक अवसर प्राप्त रहितहुँ ई ओहि सभसँ सदा अनासक्त रहि ईश्वरभक्तिमे लीन रहलाह। भक्ति-विषयक हिनक दृष्टिकोण व्यापक छल।'

ई स्पष्टवादी एवं निर्भीक स्वभावक व्यक्ति छलाह। अनुचित वस्तुक आलोचना करबामे ई कहियो तारतम्य नहि करैत छलाह। अपन एही स्वभावक कारणेँ हिनका अपन गाम पिण्डारुच छोड़ऽ पड़लनि आ ठाढ़ी जाकऽ बसऽ पड़लनि।

ई विनोदी स्वभावक लोक रहथि। हिनकामे प्रचुर प्रत्युत्पन्नमतित्व रहनि। हिनक व्यक्तित्वक विषयमे प्रो० रमानाथ झा कहैत छथि—"हिनक कविता पढ़ि केओ नहि कहि सकैत अछि जे ई काव्यत्वक उड़ानमे सत्यकेँ त्यागि अतिशयोक्ति अथवा अतिरंजन कएल अछि। तेँ सत्यमे जे एकटा प्रभाव उत्पन्न करबाक सामर्थ्य होइत छैक, से हिनक कवितामे सर्वत्र भेटत। यैह थिक कवीश्वरक प्रतिभाक रहस्य।"

कृतित्व—मैथिलीमे हिनक अनेक ढंगक रचना अछि। मौलिक, अनूदित, संपादित। काव्य, नाटक, गद्य। काव्योमे प्रबन्धकाव्य, मुक्तककाव्य गीतिकाव्य। किछु रचना हिनक जीवनकालमे प्रकाशित भेल, किछु हिनक मृत्यूपरान्त। किछु एहनो रचना अछि जे केवल तत्कालीन पत्रिकेमे छपल रहि गेल, पुस्तकाकार नहि भऽ सकल, किछु सर्वथा अप्रकाशिते रहि गेल। अनेक रचनाक पाण्डुलिपियो आब लुप्त भऽ गेल अछि।

हिनक जीवन-कालमे पाँच मौलिक, एक अनूदित तथा एक सम्पादित, कुल सात गोट ग्रन्थ प्रकाशित भेल। मृत्यूपरान्त अद्यावधि हिनक स्फुट कविताक तीन गोट सम्पादित संकलन प्रकाशित भेल अछि। हिनक मौलिक कृति थिक—**अहिल्याचरित नाटक** (प्रकाशन—१८८३ ई०) **लक्ष्मीश्वर-विलास** (प्र०—१८८८ई), **मिथिला-भाषा रामायण** (प्र०—१८९२ ई०), **गीतसप्तशती** (प्र०—१९०२ ई०) तथा **गीत-सुधा** (दू भागमे प्रकाशित, किन्तु पहिल संस्करण अप्राप्य, दोसर लघु संकलन १९४९ ई०मे)। अनूदित—विद्यापतिक **पुरुष-परीक्षा** (प्र०—१८८८ ई०)। सम्पादित—साहेब रामदास-गीतावली (प्र०—१९०१ ई०)।

मृत्यूपरान्त प्रकाशित संकलन थिक—**महेशवानी** संग्रह (प्र०—१९२० ई०) **चन्द्रपद्यावली**, (प्र०—१९३१ ई०) **चन्द्र-रचनावली** (प्र०—१९८१ ई०)।

मिथिलाभाषा रामायण कवीश्वरक ई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ थिक। यैह ग्रन्थ हिनका कालातीत बना देलक तथा हिनक कीर्तिध्वजकेँ सदा फहरबैत रहत। ई पुराण नहि, पौराणिक महाकाव्य थिक। एकर अद्यावधि पाँच संस्करण प्रकाशित भेल अछि, एकर अतिरिक्त गुटका-संस्करण सेहो छपल अछि। एकर पहिल संस्करण कवीश्वरक जीवनकालमे प्रकाशित भेल छल।

ई मुख्यतः अध्यात्म रामायणपर आधारित अछि। एहिमे कतहु-कतहु वाल्मीकि-रामायण, आनन्द रामायण, रामचरितमानस, प्रसन्न राघव नाटक तथा हनुमन्नाटक पर आधारित कथा सेहो अछि किन्तु ओहनो स्थलक अभाव नहि अछि जे मौलिक अछि, कविक विलक्षण सूझक परिचायक अछि तथा सम्पूर्ण ग्रन्थकेँ अनुवाद ओ छायाक अभियोगसँ बचा लेने अछि।

रामायण सात काण्डमे विभक्त अछि। एक काण्डमे अनेक अध्याय छैक जे प्रायः धार्मिक भावनासँ पाठ करबाक दृष्टिकोणेँ देल गेल छैक। आरम्भमे संस्कृत-श्लोकमे वन्दना अछि। सम्पूर्ण ग्रन्थमे चौपाइ एवं दोहा छन्दक प्रधानता अछि; किन्तु बीच-बीचमे अनेकानेक छन्दक प्रयोग सेहो कयल गेल अछि जे पाठकक एकरसताकेँ भंग करैत काव्यात्मक चमत्कार उत्पन्न कऽ दैत अछि। एकर भाषा बड़ सहज, वर्णन-शैली मोहक तथा कथाक प्रवाह तीव्र अछि। बीच-बीचमे मिथिलाक लोकोक्तिक सटीक प्रयोग सेहो कयल गेल अछि। एहि ग्रन्थक सफलताक पाछाँ कोन-कोन तत्त्व अछि, ताहि प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि—

"Wonderful mastery over the language, interspersed with appropriate proverbs, idioms and figures of speech, traditional Mithila melodies, enchanting rhythm and march of the lines and meters, living characterization, love of details, spiritual conviction of the ultimate victory of good over evil – all these contributed to its success."

डॉ० अमरनाथ झाक शब्दमे "रामायणक रचना कऽ ओकरा प्रकाशमे आनि कवीश्वर से प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि जे विद्यापतिक पश्चात् मैथिलीक आन कोनो कविकेँ नहि भेटलनि। कवीश्वरक रामायणमे कल्पना-तत्त्व ततेक प्रबल नहि अछि, जतेक बुद्धितत्त्व ओ विचारतत्त्व। कवित्वक दृष्टिसँ सर्वत्र वैह अंश विच्छित्तिपूर्ण प्रतीत होइत अछि जे कवीश्वरक मौलिक कृति थिक, जाहिमे की तँ मिथिलाक महिमा वर्णित अछि, अथवा हास्य ओ व्यंग्यक समावेश अछि।"

मिथिला-महिमाक एक सुप्रसिद्ध पद द्रष्टव्य—

की दिव्यभूमि मिथिला हम आबि गेलौँ
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौँ
की दिव्य फूल-फल वृक्ष अनन्त धान
पक्षी विलक्षण करैं अछि रम्य गान

तहिना, एक आओर पद सुप्रसिद्ध अछि जे रावण द्वारा हरण कऽ लेलापर जानकीक विलाप अछि –

हा रघुनाथ, अनाथ जकाँ दशकंठ पुरी हम आइलि छी
सिंहक त्रास महावनमे हरिणीक समान डेराइलि छी
देवर-दोष कहू हम की? अपने अपराधसँ काइलि छी
चन्द्र-चकोरि अहीँक सदा हम शोक-समुद्र समाइलि छी

रामायणमे अनेक छन्दक प्रयोग कयल गेल अछि, जे कविक छन्दक व्यापक ज्ञानक परिचायक अछि। ततबे नहि, अनेक छन्दमे रागक उल्लेख सेहो कयल गेल अछि, ताहिसँ हिनक संगीतशास्त्रक ज्ञाता होयबाक संकेत भेटैत अछि। विशेष रागमे 'मिथिला संगीतानुसारेण' लिखल अछि जे एहि तथ्यक द्योतक अछि जे ओहि समय मिथिलामे आन विशिष्ट संगीत-परम्परा छलैक, जकरा प्रति कविक हृदयमे आदर-भाव छल।

स्फुट पद-संग्रह – चन्दा झाक मृत्युक उपरान्त हिनक स्फुटपद सभक तीन गोट संग्रह प्रकाशित भेल अछि। पहिल थिक महेशवानी-संग्रह, जे इंडियन प्रेस,

[illegible] १९२० ई०मे छपल। एकर संपादक छथि—म०म० डॉ० सर गंगानाथ झा तथा डॉ० अमरनाथ झा। डॉ० गंगानाथ झाक जेठ भाइ पं० विन्ध्यनाथ झा द्वारा संकलित कयल गेल ई सय बारह गोट महेशवानी एहिमे प्रकाशित अछि।

दोसर संग्रह अछि चन्द्रपद्यावली, जे राजपण्डित [illegible]देव मिश्रक सम्पादनमे दरभंगा-राजप्रेस सँ १९३१ ई०मे प्रकाशित भेल। एहिमे चन्दा झाक मैथिली, संस्कृत ओ हिन्दीक साढ़े छओ सय पद अछि। एहिमे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, देशदशा सूचक ओ किछु शिष्ट श्रृंगारभावक पद अछि, जाहिसँ कवीश्वरक विचार-धाराक परिचय भेटैत अछि। भक्तिपदमे मुख्यतः महेशवानी ओ नचारी अछि, तदतिरिक्त पार्वती, जानकी, गणेश, गंगा आदिक स्तुति सेहो अछि। देशदशा सूचक पद, यथा दुर्भिक्ष, महगी, मैथिल समाजक तत्कालीन दुर्बलताक ठीक वर्णन, तत्कालीन समयक यथार्थ चित्र आँखिक आगाँ ठाढ़ कऽ दैत अछि।

तेसर संग्रह थिक चन्द्ररचनावली, जे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा डॉ० विश्वेश्वर मिश्रक संपादनमे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे कवीश्वरक अद्यावधि उपलब्ध समस्त मैथिली पद संकलित कयल गेल अछि, जकर संख्या ८२१ अछि। हिनक समस्त मैथिली-पदकेँ पाँच खण्डमे विभाजित कयल गेल अछि, यथा भक्ति-पद (५७१ पद), श्रृंगार-गीत (७२ पद), योग (३ पद), वैराग्य (५१ पद) तथा विविध (१२३ पद)।

हिनक अनेक पद देशदशा-सूचक अछि जे तत्कालीन सामाजिक वैषम्य केँ उजागर करैत अछि। हिनका सँ पूर्वक कविगण केवल श्रृंगार ओ भक्ति रस मात्र मे अपन प्रतिभाक प्रदर्शन करैत छलाह, किन्तु चन्दा झा काव्यक परिधि-विस्तार कयलनि तथा जनजीवन सँ सम्बद्ध विषय-वस्तु केँ सेहो अपन काव्यक सामग्री बनौलनि। ई युगकेँ चिन्हलनि तेँ युगद्रष्टा भेलाह, तथा समाज केँ सन्मार्ग दिस प्रेरित कयलनि, ओकर दुर्बलताकेँ, कतहु व्यंग्यक माध्यमे तँ कतहु उपदेशक माध्यमे, ओकरा देखौलनि, ओहि सँ ओकरा सावधान कयलनि, मार्ग-निर्देश कयलनि तेँ हिनका युगस्रष्टा सेहो कहल गेल अछि। ई सभ काज ओ काव्यक माध्यमे कयलनि। अतः हिनका द्वारा काव्य मे स्वतः नवीन युगक प्रवेश भऽ गेल।

ई मिथिलाक इतिहास लिखबाक लेल कतेक उत्सुक छलाह, से हिनक निम्न-लिखित पदसँ, जे वास्तवमे पत्र थिक, ज्ञात होइत अछि। जयपुरसँ प्रकाशित मैथिलीक प्रथम मासिक पत्रिका 'मैथिलहित साधन' (प्र०-१९०५)क संचालककेँ ई लिखैत छथि

लिखल जाय मिथिला इतिहास। नहि हो ताहिमे शिथिल प्रयास।
विषय विशेष हमहुँ लिखि देब। सपतहु एक टका नहि लेब।
गुणरत्नाकर थिक जयपूर। आग्रह ग्रह नहि एको क्रूर।
पण्डित सभ्यक नियत निवास। बहुत पड़त नहि अनकर आस।

अन्तिम साँस धरि मैथिलीक हितचिन्तनमे ई निरत रहलाह। मैथिलीक लेल आदिकालमे जे काज विद्यापति कयलनि, सैह काज आधुनिक कालमे चन्दा झा। तेँ, "महाकवि विद्यापति जँ मैथिली साहित्यमे सूर्य सदृश छथि तँ चन्दा झा हमर साहित्याकाशमे यथार्थ चन्द्रमा सदृश आनन्द ओ शीतलताक मूर्ति छथि।"

हर्षनाथ झा

हर्षनाथ झा मैथिली साहित्यमे नाटककार ओ कवि दुनू रूपमे प्रख्यात छथि। ई एक दिस कीर्तनियाँ नाटक-परम्पराक अन्तिम महत्त्वपूर्ण नाटककार मानल जाइत छथि तँ दोसर दिस मध्ययुगीन काव्यपरम्पराक अन्तिम पण्डित-कवि सेहो।

हिनक जन्म उजानक शारदापुर टोलमे १८४५ ई० (१२५१ साल)मे भेलनि। आरम्भेसँ ई मेधावी छात्र रहलाह आ चौबीसमे वर्षमे काशीसँ संस्कृतक अध्ययन कऽ, पण्डित बनि, सम्पूर्ण मिथिलामे अपन विद्याक प्रभा विकीर्ण करऽ लगलाह। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारक ई सभापण्डित छलाह। हिनक निधन १८९९ ई० (१३०५ साल)मे भेलनि।

संस्कृतमे हिनक व्याकरणक ग्रन्थ परिभाषार्थ-दीपक, मनोरमा भावदीपक, शब्दरत्नार्थदीपक; धर्मशास्त्रक ग्रन्थ संस्कारदीपक; कर्मकाण्डक ग्रन्थ चातुश्चरण-पद्धति, श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा, श्रीतारा-प्रतिष्ठा लिखल अछि। मैथिलीमे हिनक दू गोट नाटक प्रकाशित अछि—उषाहरण तथा माधवानन्द। एकर संगहि गीतगोपी-पति टीका, सिद्धाश्रमलीला तथा सरस्वती-स्तुति सेहो छपल अछि। एकर अतिरिक्त हिनक स्फुट पदो अछि जकरा 'उज्झटगीत' कहल गेल अछि।

हिनक सम्पूर्ण मैथिली रचना 'हर्षनाथ-काव्य-ग्रन्थावली'क नामे कविक सुपुत्र पं० ऋद्धिनाथ झा ओ दौहित्र डॉ० अमरनाथ झाक संयुक्त संपादनमे प्रकाशित भेल अछि।

उषाहरण—उषाहरण नाटकक स्थान कीर्तनियाँ नाटक मध्य अग्रगण्य अछि। एहिमे वार्तालाप संस्कृत ओ प्राकृतमे अछि, बीच-बीचमे मैथिली गीत समाविष्ट कयल गेल अछि। एहि नाटकक आकार पैघ नहि अछि।

एकर कथावस्तु हरिवंश पुराणसँ लेल गेल अछि। द्वारकावासी श्रीकृष्णक प्रपौत्र अनिरुद्ध तथा शोणितपुर-निवासी दानवराज बाणक कन्या उषाक स्वप्नमे परस्पर आकर्षण आ प्रेम-प्रदर्शन भेल। उषा अपन सखी चित्रलेखा द्वारा भावचित्र बनबाकऽ ओहिमे अपन प्रेमी अनिरुद्धकेँ चीन्हि, तनिक अपहरण चित्रलेखे द्वारा कराकऽ हुनका संग गान्धर्व विवाह कयलनि। एकर खबरि दूत द्वारा बाणकेँ तथा नारद द्वारा कृष्णकेँ प्राप्त भेल। कृष्ण आ बाणक बीच घोर संग्राम भेल। अन्तमे उषा तथा अनिरुद्धकेँ द्वारका अनबाक वार्ता भेल। वार्तालापक भाषा पात्रक अनुरूप अछि। श्लोकसभ हिनक विलक्षण पाण्डित्यक सूचक अछि।

माधवानन्द—उषाहरण जकाँ ईहो कीर्तनियाँ नाटक थिक। एकरो भाषा संस्कृत आ प्राकृत अछि, बीच-बीचमे मैथिली गीत अछि। एकर कथानक श्रीमद्-भागवतक रासपंचाध्यायीसँ लेल गेल अछि।

राधासँ छलपूर्वक कृष्ण दोसर गोपीक संग सेहो प्रेम-प्रदर्शन करैत छथि—ई कथा दूतीक मुहेँ सुनि राधा कृष्णसँ रुसि रहैत छथि। तहि पर कृष्ण हुनक बहुत अनुनय-विनय करैत छथि किन्तु राधा हुनक कोनो अनुरोध स्वीकार नहि करैत

छथिन। बादमे असह्य विरह-वेदनासँ व्याकुल भऽ दूतीक माध्यमे सन्धिवार्ता होइत अछि तथा पूर्ववत् राधाकृष्णक बीच प्रेमालाप-विहार अभिसार चलऽ लगैत अछि। रूपकक शास्त्रोक्त लक्षणक अनुसार मनःकर्पित विषय माधवानन्दमे वर्णित अछि।

उषाहरण तथा माधवानन्द दुनू नाटक पर विचार कयलाक पश्चात् ई सिद्ध होइछ जे हर्षनाथ झा संस्कृत साहित्यक पैघ विद्वान तँ छलाहे, संस्कृत-मैथिलीक सुकवि सेहो छलाह ।

हिनक समस्त मैथिली कविता पर दृष्टिपात कयलासँ ज्ञात होइछ जे ई विद्यापति-परम्पराक अन्तिम कड़ी थिकाह। भक्ति आ शृंगारक जे धारा विद्यापतिसँ प्रवाहित भेल से हिनकाधरि एक रंग गतिमान रहल। किन्तु, समयक प्रभावेँ एतबा भेद अवश्य भेल जे जतऽ विद्यापतिक पद सर्वजन-सुलभ आ मनोरंजक छल ततऽ हिनक पद केवल पण्डित समुदायक बीच चर्चाक वस्तु एहि गेल, सर्वसाधारणसँ बहुत दूर चल गेल। हिनक कवित्व पर हिनक विद्वत्ता सवार भेल बुझि पड़ैत अछि। उदाहरणार्थ 'प्रभात'क निम्न वर्णन, जे उषाहरणक थिक, देखल जा सकैछ—

सखि-सखि ललित समय लखु भोर
नागर-नागरि रइनि रंग करि शयन करय पिअ कोर
धांवर-अंक मयंक-तरणि चढ़ि शशिकर-जाल पसार
उडगन मीन बझाए चलल जनि गगन-पयोनिधि पार
रविकर-कलित तिमिर-पट गोचन प्रकट अरुण तनु भास
लाज पुरुब दिस गनल कुमुद दृश लखि कमलिनि करु हास
मलय पवन कम्पित तनु कमलिनि कोप अरुण कार अंग
उपगत भ्रमरक करय निरादर कुमुदिन संग-पिसंग

शृंगार आ भक्ति—दुनू प्रकारक पदक रचना ई कयलनि। हिनक स्फुट पदमे शारदा ओ ताराक वन्दना, सोहर, उचिती आ तिरहुति प्रसिद्ध अछि।

हिनक काव्य-समीक्षाक दृष्टिएँ प्रो० शैलेन्द्र मोहन झाक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य थिक—"विद्यापति जतऽ अपन भावुकता द्वारा विरहिणीक मर्मक उद्घाटन कयने छथि, ओतऽ हर्षनाथ सर्वथा असफल रहलाह अछि, अपन उक्ति-चमत्कार द्वारा ई वर्णनमे ओज तँ अवश्य आनि देने छथि, परन्तु एहिमे विरहिणी नायिकाक कोमल हृदयक दर्शन नहि होइछ जाहिसँ ओकर भावनाक संगीत सहज रूपसँ पाठकक मर्मकेँ छुबि सकय।"

हिनक सम्बन्धमे प्रो० रमानाथ झाक विचार अछि—"विद्यापतिक सम्प्रदायक ई अन्तिम महाकवि थिकाह। हिनक भाषा संस्कृतबहुल अछि। उमापतिसँ जे भाषा पाण्डित्यपूर्ण होअय लागल से हिनका रचनामे आबि चरम पर पहुँचि गेल। संस्कृत-साहित्यक सरणिक अनुसरण करैत ई सभ टा रचना कएल ओ तेँ पण्डित वर्ग ओ रसिक मण्डलीमे हिनक पूर्ण समादर भेल, परन्तु लोकसाहित्यसँ हिनक रचना बहुत दूर भए गेल। विपयोमे ई पूर्वक कविलोकनिक छाया लए रचना कएल परन्तु भाषाक सौष्ठव, अलंकारक बाहुल्य, कल्पनाक प्रौढ़ता, भावक वैशद्य, सद्भाव्यक सभ टा गुण हिनक रचनामे प्रचुरतया भेटैत अछि।"



जीवन झा

"वर्तमान मैथिली नाटकक तोरण-द्वारपर जनिक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जायत ओ थिकाह जीवन झा। सर्वप्रथम मैथिलीमे नाटक लिखबा लेल यैह प्रेरित भेलाह तथा शिल्प एवं शैली दुनू दृष्टिसँ ओहिमे परिवर्तनक आरोपन कयलनि। ई अपन नाटकमे मैथिलीक संग संस्कृत एवं प्राकृतकेँ मिश्रित करबाक परम्परागत विधानकेँ हटाकऽ सरल गद्यक प्रयोग कयलनि। एहि प्रकारेँ मैथिली इतिहासमे प्रथम बेर विशुद्ध नाटकक दर्शन भेल।" डा० शैलेन्द्र मोहन झाक उक्त पंक्ति पं० जीवन झाक आधुनिक मैथिलीक नाट्य साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थानक परिचायक अछि। नाटककारक अतिरिक्त ई प्रसिद्ध कवियो छलाह। गद्यक एहन माजल लेखक बड़ विरल भेल छथि।

जीवन झा, जनिक यथार्थ नाम जीवनाथ झा छलनि, हरिपुरवा (समस्तीपुर) गामक यज्वालय मूलक ब्राह्मण, वनमाली झा प्रसिद्ध घोघोइ झाक बालक छलाह। हिनक जन्म १८४८ ई०मे भेल छलनि। ई काशिराज प्रभुनारायण सिंहक दानाध्यक्ष पदपर प्रतिष्ठित छलाह। हिनक मृत्यु काशीयहिमे वैशाख शुक्ल सप्तमी मंगलकेँ १९१२ ई०मे भेलनि।

पूर्वमे ई मैथिलीक परम्परागत पद लिखैत छलाह, किन्तु नाटककारक रूपमे सभसँ अधिक प्रसिद्ध भेलाह। हिनक चारि गोट नाटक अछि--सुन्दर संयोग (१९०४), नर्मदा-सागर सट्टक (१९०६), मैथिली सट्टक (पुस्तकाकार प्रकाशित नहि, मिथिला मोद तथा मैथिल हित-साधनमे १९०६मे अंशतः प्रकाशित), तथा सामवती पुनर्जन्म (१९०८)। एम्हर, १९८०मे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ओ डा० रामदेव झाक सम्पादनमे 'कविवर जीवन झा रचनावली' प्रकाशित भेल अछि जाहिमे हिनक समस्त उपलब्ध कृतिक अतिरिक्त, हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वक निरूपण करैत, एक दीर्घ भूमिका सेहो देल गेल अछि।

सुन्दर संयोग—ई सामाजिक नाटक थिक। ई चारि अंकमे विभक्त अछि। प्रारम्भमे प्रस्तावना अछि जाहिमे नटी आ सूत्रधार नाटकक विषयवस्तुपर प्रकाश दैत अछि। बीच-बीचमे स्वगत-भाषण सेहो अछि। नाटकक अन्त भरतवाक्यसँ होइत अछि।

एहि नाटकक नायक सुन्दर मिश्र थिकाह तथा नायिका थिकीह सरला। सुन्दर पण्डित छलाह। विवाहक प्राते सरला दुखताहि भऽ गेलीह। सुन्दर सासुरसँ विदा भऽ गेलाह। वैद्यनाथधाममे डेढ़ वर्ष धरि अनुष्ठान कयलाक बाद जखन ओ गाम घूरऽ लगलाह तखनहिं हुनक पत्नी, सासु आ सासुरक आन लोक ओतऽ अबैत गेलथिन तथा जाही पंडाक ओतऽ ओ अँटकल छलाह तनिके ओतऽ ओहोसभ डेरा देलनि। सासुरक लोक हुनका चिन्हलकनि नहि, मुदा ओ धरि, हुनकासभक परिचय बुझलाक बाद चीन्हि गेलथिन। वैद्यनाथक मन्दिरमे सरलाक मोन खराब भऽ गेलापर ओतऽ सुन्दर हुनक रक्षा कयलथिन। बादमे चिन्हा-परिचय भेलापर पति-पत्नीक 'सुन्दर संयोग' भेलनि। एकर महत्त्वक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्र कहैत छथि- 'While

characterization is selender, the sizing of a situation which is true to the life of the Mithila people is a remarkable feature of this drama." ई मैथिलीक प्रथम मौलिक सामाजिक नाटक थिक। एकर भाषा मैथिली गद्यकें तरासिकऽ चमकाऽ देलक।

सामवती पुनर्जन्म—एकरा किछु गोटे पं० अम्बिकादत्त व्यासक 'सामवत' नाटकक अनुवाद मानने छथि, किन्तु डा० रामदेव झाक अनुसार "केवल मूल कथा-वस्तुक सूत्र, किछु पात्र, किछु घटना, किछु संवादक साम्यक आधारपर 'सामवती पुनर्जन्म' नाटककें 'सामवत' नाटकक अनुवाद मानि लेब अनुचित होयत।" ई सात अंकमे विभक्त अछि। एहू नाटकमे नटी, सूत्रधार तथा भरतवाक्य अछि। बीच-बीचमे पद्य ओ गीतक प्रयोग भेल अछि। एहि नाटकक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्रक कथन छनि—*"On the whole this drama remains to be Jeevan Jha's best achievement. In itself however, it is doubtful if like other plays of this period it ranks high.*

हिनक नाटक संस्कृत नाटकक परम्पराकें एकदमसँ नकारि नहि सकल। हिनक नाटकमे विभिन्न स्थलपर पारसी नाटकक प्रभाव सेहो देखबामे अबैत अछि।

नाटककारक अतिरिक्त हिनक कवि-व्यक्तित्व सेहो प्रभावकारी अछि। ई अपन समयक प्रसिद्ध कवि छलाह। ई यद्यपि कविताक क्षेत्रमे नाटक जकाँ क्रान्ति नहि अनलनि, किन्तु कवितामे अनेक प्रयोग कऽ ओहिमे विलक्षण चमत्कार अवश्य उत्पन्न-कऽ देलनि। नाटकक बीच-बीचमे हिनक गीत विशेषतया शृंगार-पक्षक अछि। भक्ति-पक्षक रचना सेहो हिनक उपलब्ध अछि। 'जीवन झा रचनावली'क अन्तमे हिनक पाँच गोट स्फुट गीत देल गेल अछि। भाषाक सहजता, कथ्यक सौष्ठव तथा युगीन भावबोध हिनका महत्त्वपूर्ण बना दैत अछि, नाटककारक रूपमे तँ सहजहि जे कविक रूपमे सेहो।

गजल-प्रभृति उर्दू-शैलीकें सभसँ पहिने यैह मैथिली मे अपनौलनि-अजमौलनि। गीतक स्वरमे सेहो चन्दा झा द्वारा आनल परिवर्तनक विकास हिनकामे भेटैत अछि। घटकक 'दृष्टिक आड़' मे कोना ओहू दिन 'स्वच्छन्द परिणय' होइत छलैक, जे घटकेक मुँह सँ व्यक्त करा कवि एक गीतमे तत्कालीन घटक-पजियारक धुरछी मे लटपटायल वैवाहिक कुप्रथा पर कटु व्यंग्य कयने छथि—

गुरु अहाँक पढ़ा जनम भरि निज दुखाबथु घाड़
हम चिन्है छी गाम-गामक व्यक्ति-व्यक्तिक हाड
अखिल मैथिल वंश पंजी लिखि धरथु पजियाड़
हाथ हमरा कुंजिका अछि जते भवन कंवाड़
हमहि झाँपिय दोष गुण पुनि हमहिँ करिय उघाड़
वचन हमर प्रमाण पूछिय ऊच-नीच विचाड़
एहन मैथिल वंश जनमो सुत न सोर उपाड़
करय जे स्वच्छन्द परिणय घटक दृष्टिक आड़

नवीन शिल्पक उदाहरणक रूपमे हिनक गजलक चारि पाँती द्रष्टव्य थिक—

आइ भरि मानि लियऽ नाथ ने हठ जोर करू
देहरि ठाढ़ि सखी हो न एखन कोर करू
हाय रे दैव ! ई ककरासँ कहू, क्यो न सुनै
सेह खिसिआइए जकरा कतेको सोर करू

□

लालदास

रामकाव्यक परम्परामे मैथिली साहित्यमे दू गोट प्रबन्धकाव्य विशेष ख्यात भेल अछि। कवीश्वर चन्दा झा 'मिथिला भाषा रामायण' लिखि जाहि परम्पराक स्थापना कयलनि, ओहि परम्पराकें कविवर पण्डित लालदास विशिष्ट ढंगसँ आगाँ बढ़ौलनि। हिनक 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण' मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। ताहि समयमे 'पण्डित' केवल ब्राह्मणे कहबथि, किन्तु हिनक विद्वत्ता, सदाचार, नियम-निष्ठा देखि तत्कालीन मूर्धन्य व्यक्तिलोकनि हिनको 'पण्डित'क सम्मान प्रदान कयलनि। ईहो पण्डित कहबऽ लगलाह।

रामायण-सहित हिनक सत्रह गोट मैथिली-कृति अछि तथा एक गोट हिन्दी-कृति। हिनक मैथिली कृतिक नाम थिक—सांग सप्तशती दुर्गाक टीका, चण्डीचरित अर्थात् सप्तशती दुर्गा, स्त्रीधर्मशिक्षा, गणेशखण्ड; महेश्वर-विनोद अथवा गौरीशम्भु विनोद रमेश्वरचरित मिथिला रामायण, हरिताली व्रतकथा, वैधव्य-भंजनी अर्थात् सोमवारी व्रतकथा, विरुदावली, गंगा-माहात्म्य, जानकी-रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, प्रश्नोत्तर खण्ड, राधाकाण्ड, लक्ष्मीकाण्ड (सभ काव्य), सावित्री सत्यवान (नाटक) तथा स्त्रीधर्म शिक्षा (गद्य)। हिन्दीमे मिथिला-माहात्म्य अछि। रमेश्वरचरित मिथिला रामायण १९५४ ई० मे प्रकाशित भेल। एम्हर, मैथिली अकादमी, पटना द्वारा १९७९ मे सावित्री सत्यवान नाटक तथा १९८० मे जानकी रामायण प्रकाशित कयल गेल अछि। अन्य कृतिसभ बहुत पूर्व प्रकाशित भेल जे आब दुर्लभ भऽ गेल अछि।

मैथिलीक विशिष्ट रामकाव्यक प्रणेता एहि महाकविक जन्म मधुबनी जिलाक खड़ौआ नामक गाममे एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवारमे फाल्गुन कृष्ण तृतीया रवि सन् १२६३ साल (१८५६ ई०) मे भेलनि। हिनक पिताक नाम बचकन दास छलनि। ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारक रत्न छलाह तथा हुनके नामपर रामायणक रचना कयलनि। ई मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, फारसी, उर्दू भाषाक नीक ज्ञाता छलाह। गद्यलेखकक रूपमे सेहो हिनक स्थान उल्लेखनीय अछि। हिनक गद्य परिमार्जित होइत छल, जाहिमे प्रवाह दर्शनीय अछि। हिनक निधन पैंसठि वर्षक अवस्थामे अग्रहण कृष्ण तृतीया रवि सन् १३२८ साल (१९११ ई०) मे भेलनि।

रमेश्वरचरित मिथिला रामायण—मोटा-मोटी देखलासँ ई बुझना जाइछ जे ई अपन आश्रयदाता (महाराज रामेश्वर सिंह) कें तुष्ट करबाक हेतु अपन विशिष्ट कृति रामायणक नामक संग 'रमेश्वर-चरित' कें जोड़ि देने छथि। एक कारण तँ इहो अछिए, किन्तु कविक उद्देश्य एहिसँ व्यापक छलनि। हिनक राम खाली दशरथक पुत्र नहि, मानव मात्र नहि, ओ रमा अर्थात् लक्ष्मीक ईश्वर अर्थात् विष्णु थिकाह। तें, हिनक रामायणमे रामक अलौकिकताक प्रसंग अधिक देखल जाइत अछि। स्थल-स्थलपर ई बोध होइछ जे जनिक चरितगान एतऽ भऽ रहल अछि, से साक्षात् विष्णु थिकाह आ हुनक पत्नी सीता साक्षात् लक्ष्मी थिकीह। अपन जननीकें, संगहि अपन मातृभाषाकें साक्षात् लक्ष्मीक रूपमे देखब कविक व्यापक दृष्टिक परिचायक थिक, जकरा ई 'रमेश्वरचरित' शब्दमे ध्वनित कयने छथि।

एहि रामायणक आधार वाल्मीकि-रामायण थिक । प्रमाण कनिएक शब्द —

आदिकवीन्द्रक सुधा,समुद्र । कथा हमर कृत सरिता क्षुद्र ।
तेहि समुद्रसँ भरि-भरि नीर । पूरित करब सरित गम्भीर ।

वाल्मीकि-रामायण मुख्य आधार रहितो, पुराण तथा तंत्रक प्रभाव सेहो एहि कृतिपर पड़ल अछि—

आदिकविक आशय कतोक, आशय विविध पुराण ।
कतहु तंत्र मतसँ करत, लाल राम-गुण-गान ।।

अपन पूर्ववर्ती रामायणकार चन्दा झा सँ ई कतेक दूर धरि प्रभावित छलाह, ताहि प्रसंग दू इतिहासकारक दू तरहक मत अछि । डा० जयकान्त मिश्रक शब्दमे *"Laladasa tried to follow the lead given by Chanda Jha in his Rameshwar-Charit-Ramayan (1914) nemed after Maharaja Rameshwar Singh."* किन्तु प्रो० राधाकृष्ण चौधरी एहिसँ सर्वथा भिन्न मत प्रकट करैत कहैत छथि —*"It must be asserted here and now that he does not try to follow the lead given by Chanda Jha as he has been repeatedly insisted by a set of scholars, but he has his own way of saying things in a simple style."* अपन उक्तिकेँ आर स्पष्ट करैत ओ जोर दैत छथि —*"Laladasa's Ramayan doesnot carry double meaning but the facts remains that he wrote independently in his own way and it has nothing to do with the manner of Chanda Jha."*

दुनू इतिहासकारक विचारक तहमे नहियो गेलाउत्तर मोटा-मोटी दुनू रामायणमे किछु समतो देखबामे अबैछ, किछु विषमतो ।

सभसँ पहिने तँ विषयवस्तुक समता ध्यानपर अबैछ । दुनूक चरित-नायक एके थिकाह, दुनूक कथानकक मूल आधार एके थिक । वर्णन-शैलीक समता सेहो देखबामे अबैछ । दुनू रामायण काण्डमे विभक्त, दुनूमे चौपाइ-दोहाक प्रधानता । तखन, चन्दा झाक रामायणमे आनो-आनो छन्दक प्रयोग स्थल-स्थलपर भेटैछ, जकर एहिमे अभाव देखना जाइछ । दुनू रामायण प्रसाद-गुण युक्त, प्रवाहपूर्ण, धार्मिक भावनाक उद्बोधक, वर्णनक विलक्षणता दुनूमे उपर्युपरि । दुनू संस्कृतक आकर-ग्रन्थसँ प्रभावित, तथापि दुनू मौलिक । अपन-अपन कविक रचना-मालामे दुनूक ग्रंह ग्रन्थ सुमेरु, दुनू कविकेँ अमर बनौनिहार दुनूक रामायणे ।

तहिना, विषमता सेहो पर्याप्त । सभसँ पहिने तँ दुनू रामायणक नामे भिन्न-भिन्न अछि; जे सोद्देश्य राखल गेल अछि । चन्दाझाक 'मिथिला भाषा रामायण,' लालदासक 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण' । मिथिला भाषा रामायणमे मिथिलाक आ मिथिलाक भाषा (अर्थात् मैथिली)क प्राधान्य अछि, ठाम-ठाम एहि दुनूक विशिष्टताक झलक भेटैछ, किन्तु 'रमेश्वरचरित'क फलक किछु भिन्न अछि, तेँ एहिमे अलौकिकताक दर्शन कने बेसी होयब स्वाभाविके ।

चन्दाझाक रामायण सात काण्डमे विभक्त अछि, लालदासक रामायण आठ काण्डमे । आरम्भक सातो काण्डक नामकरण दुनूमे समान अछि, लालदासक रामायणक अतिरिक्त जे आठम काण्ड अछि, तकर नाम थिक 'पुष्कर काण्ड,'

जाहिमे सहस्रबाहुक कथा वर्णित अछि, तथा जानकीक शक्तिक प्रधानता देखाओल गेल अछि ।

चन्दाझाक रामायणमे एक काण्डमे अनेक अध्याय अछि, किन्तु लालदास काण्डकेँ पुनि अध्यायमे विभक्त नहि कयने छथि ।

चन्दाझाक मुख्य आधार जतऽ अध्यात्म रामायण रहल अछि ततऽ लालदासक वाल्मीकि-रामायण । लालदास तन्त्रक समावेश सेहो अपन रामायणमे कयने छथि, जखन कि चन्दाझाक रुचि एहि दिस नहि देखना जाइछ ।

लालदासक रामायणमे छवो ऋतुक वर्णन शीर्षकबद्ध अछि, जकरा पढ़ैत-काल मुख्य कथाक पूरक रूपमे नहि, अपितु स्वतन्त्र ऋतु-वर्णनक आनन्द भेटैत अछि, किन्तु, चन्दाझाक ऋतु-वर्णन एना विलगायल नहि अछि । ऋतु-वर्णन जतऽ होइतो अछि से मुख्य कथाक पूरक भऽकऽ अबैत अछि । तहिना, लंकाकाण्डक अन्तर्गत 'अथ चण्डीपाठ' शीर्षकसँ देवीस्तुति कयल गेल अछि, जे कथा-प्रवाहमे कने बाधक होइत अछि, जखन कि चन्दाझाक रामायणमे एहन स्वतन्त्र वर्णन नहि अछि ।

लालदास विशद वर्णनक आवेसी बुझि पड़ैत छथि, जकर वर्णन करऽ लगैत छथि से सांगोपांग, रावणक अन्तःपुरक वर्णन करैत छथि तँ शृंगार रसमे भासि जाइत छथि । स्वभावतः कथाक गति एहन-एहन स्थलपर रुद्ध भऽ जाइत अछि; श्लथ तँ भैये जाइत अछि । चन्दाझाक वर्णन एतेक विशद नहि अछि; शृंगार-भावक तँ ओ सभ ठाम परहेजे करैत गेलाह अछि ।

चन्दाझाक अनुसार भरतक विवाह श्रुतिकीर्तिक संग तथा शत्रुघ्नक विवाह माण्डवीक संग होइत छनि, जखन कि लालदासक अनुसार भरतक विवाह माण्डवीक संग तथा शत्रुघ्नक विवाह श्रुतिकीर्तिक संग होइत छनि । लालदासक मतक आधार वाल्मीकि रामायण ओ रामचरितमानस आदि अनेक ग्रन्थ अछि, जखन कि चन्दाझाक आधार कोन ग्रन्थ अछि, से ज्ञात नहि । तर्क देल जाइछ जे रामावतार प्रत्येक कल्पमे भेल अछि । चन्दा झा जाहि कल्पक रामावतारक वर्णन कयने छथि, ताहिसँ भिन्न कल्पक रामावतारक वर्णन लालदास कयने छथि । तेँ ई भिन्नता संभव अछि । जे हो । मैथिलीक आन जतेक रामकाव्य अछि, ताहिमे एहि प्रसंग लालदासक मतकेँ मानल गेल अछि ।

चौपाइ आ दोहा दुनू ग्रन्थक मुख्य छन्द अछि, किन्तु चन्दाझा स्थल-स्थलपर अनेक मनोरम छन्दक प्रयोग कऽ अपन रामायणकेँ बेसी सरस आ लोकप्रिय बना देलनि अछि ।

चन्दाझाक रामायण वैष्णव ग्रन्थ बुझि पड़ैत अछि, आ लालदासक रामायण शाक्त ग्रन्थ । डॉ० जयकान्त मिश्रक अनुसार *"The excelence of Chanda Jha's work becomes more striking when placed beside this work. It (Luladasa's Ramayan) is thus more a Shakta work than a Vaishnav one."*

भिन्नते दुनूक मौलिकता थिक, तेँ से होयब उचिते । अपन-अपन जगहपर दुनू महाकविक कृतिक महत्त्व विशिष्ट अछि । डा० शैलेन्द्रमोहन झाक शब्दमे

लालदास 'रामकथाक सन्दर्भमे सीताक महिमाक महत्त्व दऽकऽ, मिथिला, मातृभाषा एवं मातृसमाजक प्रति अविरल श्रद्धा आ भक्तिकें अर्पित कयलनि अछि।'

हिनक रामायणक भाषाक प्रसंग आचार्य रमानाथ झा कहने छथि—"भाषा हिनक अछि सरल, स्वच्छ, स्पष्ट, परन्तु अत्यन्त सरस। ने पण्डिताम ने गमैया। शिष्ट जनक बजबाक भाषा परन्तु कवित्वपूर्ण। कवीश्वरक भाषा सँ हिनक भाषा विशेष साहित्यिक अछि, परन्तु कवीश्वरक भाषामे जे प्रवाह छैन्हि से हिनक भाषा मे नहि अछि।"

राम द्वारा जनकक फुलबारीक प्रशंसा तथा सीताक प्रथम दर्शन मे कविक वर्णन, विवरण, ओ भाषाक प्रसादत्वक एक झलक देखल जा सकैछ—

देखि वाटिका सुभग अनूप। करथि प्रशंसा रघुकुल-भूप
कतहु ने देखल एहन उद्यान। नन्दन-वन नहि हिनक समान
विटप-लता अवनत फल-फूल। गुंजय अलिकुल अति अनुकूल
सुन्दर फल निर्मल भल वारि। कनक विहग पर बैसल डारि
एहन मनोहर विपट सुवेल। कतहु न नयनक गोचर भेल
नभरहुसँ एत मन बड़ लाग। सुख बड़ लहय बढ़य अनुराग
कहितहि राम कहथि एहि रीति। सुनलनि ततय मनोहर गीति
नूपुर धुनि सुनि चित्त चेहाय। देखल कुंज सँ नयन उठाय
त्रिजग मोहनी माधुरि रूप। लोचन गोचर भेलिह अनूप
हास विलास प्रगट अभिलाष। कोकिल स्वरें परस्पर भाष
तृषित नयन नहि तनिक अघाय। तृष्णा मन-मन बढ़ले जाय

देखि जानकिक मुख-कमल, मधुप राम दुहु नयन।
विवश मधुर रसपान कर, अति एकाग्र चित चयन॥

एम्हर जे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा हिनक दू गोट कृति प्रकाशित भेल अछि, ताहिमे एक अछि 'जानकी रामायण' तथा दोसर अछि 'सावित्री सत्यवान'। जानकी रामायण काव्य थिक। सीता मिथिलाक पुत्री छलीह। हुनक उज्वल चरित्रकें मिथिलाक अनेक कवि रेखांकित कयने छथि। लालदास तँ अपन युगक महाकविए छलाह आ मैथिलीक एकान्त सेवक। एहिमे आदिशक्तिक तीन रूप—सीता, लक्ष्मी ओ राधाक—कथाकें पुराणक शैलीमे एक-दोसरसँ जोड़ल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे मुख्य छन्द चौपाइ अछि, दोहा, सोरठा सेहो ठाम-ठाम अछि। एकर प्रकाशनसँ आधुनिक युगक मैथिलीक आदिकालीन काव्यक उत्कर्ष आओर जगजियार भेल अछि।

लालदास एक माजल नाटककार छलाह, तकर प्रमाण थिक हिनक 'सावित्री सत्यवान'। सावित्री-सत्यवानक कथा मिथिलामे अत्यन्त परिचित अछि। एहिमे सावित्रीक सतीत्वक अलौकिक चरित्रकें नाटकीय शैलीमे, सजीव रूपें, प्रस्तुत कयल गेल अछि। कथोपकथन, ठाम-ठाम किछु दीर्घ होइतो, अत्यन्त जीवन्त अछि। गद्यक प्रवाह देखबा योग्य अछि। हिनक गद्य कतेक माजल, कतेक सोंटल होइत छल, से एहि कृतिसँ स्पष्ट होइत अछि।

वास्तवमे, पण्डित लालदास मैथिलीक मणि थिकाह।

□

म०म० परमेश्वर झा

तरौनी (मधुबनी) निवासी म० म० परमेश्वर झाक जन्म २७ दिसम्बर १८५६ ई०कें बलियासे सकुरी मूलक काश्यपगोत्रीय प्रतिष्ठित ब्राह्मण-परिवारमे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम रहनि पूर्णनाथ प्रसिद्ध बाबूनाथ झा। काशीमे व्याकरणक विशेष अध्ययन कऽ, पण्डित बनि, पहिने ई राजपुताना गेलाह जतऽ एक पाठशालामे चारि वर्ष धरि संस्कृताध्यापक छलाह। तदुत्तर १८८० ई०मे पुर्णियाँक राजा पद्मानन्द सिंहक दरबारमे राजपण्डितक पदपर नियुक्त भेलाह। एकर बाद बारह वर्ष धरि गन्धवारि ड्योढ़ीक संस्कृत पाठशालामे अध्यापन कयलनि। ओतऽसँ महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे चल गेलाह, जतऽ १ जुलाइ १८९९ ई०कें राजपण्डितक पदपर नियुक्त कयल गेलाह। रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयक प्रधानाध्यापक तथा दरभंगाक राजपंडितक उभय गौरवशाली पदपर ई सुप्रतिष्ठित छलाह। हिनका व्याकरण ओ कर्मकाण्ड दुनू शास्त्रमे राजसँ धोती ओ दोशाला प्राप्त भेल छलनि, जे गौरव बड़ विरल विद्वानकें भेटल छनि। सन् १९१६ ई०मे तरौनीमे ई परमेश्वर-पुस्तकालयक स्थापना कयलनि। मिथिलामे अनुसन्धानक क्रममे ई के० पी० जायसवाल तथा एस० एन० सिंहकें मार्गदर्शन करौने छलथिन। हिनक निधन अठसठिम वर्षक अवस्थामे ३० जून १९२४ ई०कें भेलनि।

संस्कृत भाषामे, विविध विषयसँ सम्बन्धित, छोट-पैघ हिनक चालीस गोट पुस्तक अछि। मैथिली साहित्यमे हिनक महत्व दू गोट कृतिक कारणें अछि, ओ थिक—(१) सीमन्तिनी आख्यायिका, तथा (२) मिथिलातत्त्वविमर्श।

सीमन्तिनी आख्यायिका—एकर स्थान आधुनिक मैथिली गद्य-साहित्यमे प्रमुख अछि। यद्यपि ई अपूर्ण कृति अछि, किन्तु जेहो अछि, से मैथिली गद्यकारक रूपमे लेखकक नाम अमर कऽ देबाक लेल पर्याप्त अछि। जाहि रूपक ई रचना अछि, से मैथिली कथा-साहित्यक क्षेत्रमे नव होयबाक कारणें मैथिलीक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। किछु गोटे एकरा उपन्यास मानैत छथि, किछु गोटे कथा। आकारक दृष्टिएँ ई दुनूक बीचक अछि, किन्तु उपन्यासमे जे विस्तार चाही, जीवनक, समाजक, परिवेशक जे व्याप्ति चाही, तकर एहिमे अभाव अछि। आख्यायिका भेलो कयल दुनूक बीचक वस्तु। एहिमे सीमन्तिनीक जन्मसँ लऽ विवाह धरिक कथाक वर्णन भेल अछि। एकर कथानक श्लथ अछि। डॉ० जयकान्त मिश्रक अनुसार *"The importance of the work therefore doesnot lie in its plot. Its prose is dignified though marred by artificial and cumbrous details. The dialogues are unnatural and unrealistic. The descriptive passages alone merit some commendation."* वर्णन-वैशद्य ओ पाण्डित्यपूर्ण गद्यशैलीक कारणें एकर महत्त्व अक्षुण्ण रहत।

मिथिलातत्त्वविमर्श—ई हिनक महत्त्वपूर्ण कृति थिक, जकरा मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक इतिहास-ग्रन्थ सेहो कहल जा सकैछ तथा एहि देशक परिचयात्मक विवरणिका (***Who's Who***) सेहो। ई दू भागमे

विभक्त अछि—पूर्वभाग ओ उत्तरभाग। पूर्वभाग मात्र 'मिथिला मिहिर'मे धारावाही रूपमे प्रकाशित भेल छल। एकर पुस्तकाकार प्रकाशन, दुनू भागक, लेखकक मृत्युक बाद, १९४९ ई०मे भेल। मैथिली अकादमी, पटना द्वारा एम्हर एकर पुनर्मुद्रण भेल अछि।

डॉ० 'शीश'क शब्दमे "मिथिला तत्त्वविमर्शक रचना मिथिलामे प्रचलित नरपति पण्डित, धार्मिक-सांस्कृतिक पीठ सम्बन्धी किंवदन्ती अथवा लोकोक्ति, प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ तथा पुरातत्त्वक सामग्री यथा प्राचीन मूर्ति, मन्दिर अथवा प्राचीन भवनक ध्वंशावशेष, प्राचीन शिलालेख तथा सनद अथवा दानपत्रक आधार पर भेल अछि। प्राचीन रीतिक पण्डित होइतहुँ बहुविज्ञताक परिचय दैत म० म० परमेश्वर झा जाहि प्रामाणिक ओ वैज्ञानिक रीतिएँ उपलब्ध सामग्री सबकेँ ऐतिहासिक कालक्रमक अनुसार अपन एहि ग्रन्थमे सजओने छथि से हुनक मिथिलाक पुरातत्त्व ओ इतिहासक गम्भीर ज्ञान ओ अनुसन्धानमूलक मेधा मात्रेक द्योतक नहि थिक, हुनक यथार्थ तथ्य निरूपणर सम्बन्धित सूक्ष्म प्रतिभाक परिचायक सेहो थिक। वस्तुतः मिथिला तत्त्वविमर्शमे महामहोपाध्यायजीकेँ जाहि कोनो स्रोतसँ तथ्य-निरूपणमे सहायता भेटलनि तकरा ओ उपयोग कयल आओर एहि प्रकार अपन एहि ग्रन्थकेँ मिथिलाक गौरवकेँ अंकित कयनिहार ऐतिहासिक चित्रक 'अलबम' मात्र नहि बनाय देल, अपन यथार्थ अनुसन्धानात्मक व्यक्तित्वकेँ सेहो साकार रूप प्रदान कय देल, अनुसन्धान ओ अनुशीलनक एक टा प्रशस्त पथक निर्माण कऽ देल।"

म० म० परमेश्वर झा, संस्कृतक परम्परागत विद्वान होइतो, क्रान्तिकारी विचारक लोक छलाह। ई मिथिला आ बंगालक बीच बहुविध समताक निरूपण करैत पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध पर्यन्तक समर्थन कयने छलाह। जखन एखनो एकर समर्थक थोड़ पारस्परिक लोक भेटताह, तखन ओहि समयमे, ताहूमे एक टा पण्डितक एहन विचारकेँ, क्रान्तिकारिए कहल जायत।

ई पंजीव्यवस्थाक समर्थक नहि छलाह। एहि व्यवस्थासँ ऊँच-नीचक वैषम्यभाव जगबाक आशंका ई प्रकट कयलनि जाहिसँ मिथिलाक सामूहिक हितमे आघात होयबाक हिनका संदेह छलनि। आइ तँ ई व्यवस्था स्वतः भंग भेल जा रहल अछि। ओहि समयमे हिनक एहन विचार हिनक दूरदर्शिताक परिचायक छल।

प्राचीनकालमे संस्कृतक विद्वान अंगरेजीकेँ घृणाक दृष्टिसँ देखैत छलाह। किन्तु, ई अंगरेजीक अध्ययन कयलनि। ओकर नीक विचारक ग्रहण कयलनि। हिनक अंगरेजी-विषयक ज्ञानक परिचय मिथिला तत्त्वविमर्शमे प्रयुक्त अंगरेजीक उद्धरणसँ होइत अछि। ई विषयक अद्यतन (*up-to-date*) ज्ञान रखैत छलाह।

मिथिलातत्त्वविमर्शक अध्ययनसँ ज्ञात होइत अछि जे मिथिलामे ई सूक्ष्म भ्रमण कयने छलाह तथा प्रत्येक स्थानक ऐतिहासिक महत्त्वक गम्भीर अध्ययन सेहो हिनका छलनि।

म०म० मुकुन्द झा 'बक्शी'

ढंगाहरिपुर (मधुवनी)क बक्शीटोल-निवासी म० म० मुकुन्द झा 'बक्शी' 'मिथिलाभाषामय इतिहास' लिखि मैथिली साहित्यमे अमर भऽ गेल छथि। हिनक जन्म १८६० ई०मे भेलनि तथा अठहत्तरि वर्षक दीर्घजीवन प्राप्त कऽ १९३८ ई०मे ई दिवंगत भेलाह। ई कर्मकाण्डक प्रकाण्ड विद्वान छलाह। काशीमे म० म० गंगाधर शास्त्रीसँ विद्यार्जन कऽ ई देश अयलाह तथा १९१९ ई०सँ १९३५ ई० पर्यन्त धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुरमे कर्मकाण्डक अध्यापक छलाह। ओहिसँ पूर्व ई महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक धर्मपत्नी महारानी लक्ष्मीव्रती साहिबाक द्वारपण्डितक पदपर सेहो प्रतिष्ठित छलाह। धर्मसमाज संस्कृत कालेजमे अध्यापन कयलाक बाद ई पटियाला-नरेशक द्वारपण्डित सेहो भेलाह। ओतऽसँ अवकाश-ग्रहण कयलाक बाद ई काशीवास करऽ लगलाह।

मैथिलीक लघु व्याकरण तथा अमरकोशक टीका सेहो ई लिखलनि, किन्तु हिनक सभसँ महत्त्वपूर्ण आ सर्वोत्तम कृति थिकनि 'मिथिलाभाषामय इतिहास'।

मिथिलाभाषामय इतिहास—एहि ग्रन्थमे वर्तमान मिथिला राज-कुलक, जकरा खण्डवला कुल कहल जाइछ, राज्य-प्राप्तिकालहिसँ, सांगोपांग वर्णन कयल गेल अछि। एहि कुलक म० म० महेश ठाकुरक शिष्य रघुनन्दन झा अपन विद्वताक प्रसादात् सम्राट अकबरसँ मिथिलाक राज्य पुरस्कारमे पाबि अपन गुरुक चरणपर समर्पित कयलनि। म० म० महेश ठाकुर १५५६ ई०मे राजा भेलाह। हुनक राज्यकाल १५६८ ई० धरि रहल। तदनन्तर कौलिक वंश-परम्परानुसार क्रमशः गोपाल ठाकुर (१५६८-१५७०), हेमांगद ठाकुर (१५७१-११७२), अच्युत ठाकुर (१५७३-१५७३, छओ मास मात्र), परमानन्द ठाकुर (१५७३-१५८३), शुभंकर ठाकुर (१५८३-१६१८), पुरुषोत्तम ठाकुर (१६१९-१६२५), नारायण ठाकुर (१६२५-१६४३), सुन्दर ठाकुर (१६४३-१६६९), महिनाथ ठाकुर (१६७०-१६९१), नरपति ठाकुर (१६९२-१७०२), राघव सिंह (१७०३-१७३९), विष्णु सिंह (१७३९-१७४३), नरेन्द्र सिंह (१७४४-१७५९), प्रताप सिंह (१७६०-१७७४), माधव सिंह (१७७५-१८०६), छत्र सिंह १८०७-१८३८), रुद्र सिंह (१८३८-१८४९), महेश्वर सिंह (१८४९-१८६०), लक्ष्मीश्वर सिंह (१८८०-१८९८) तथा रमेश्वरसिंह (१८९८सँ ...। ई इतिहास हुनके समयमे लिखल गेल, तेँ कामेश्वर सिंहक राज्यकालक उल्लेख एहिमे नहि अछि। ओना, जानकारीक हेतु बुझि लेबाक थिक जे रमेश्वर सिंहक राज्यकाल १८९८सँ १९२९ धरि छल तथा कामेश्वर सिंहक राज्यकाल

१९२९सँ १९६२ ई० धरि रहल। दोसर विशय जे एहि इतिहासमे अवधि 'साल'मे लिखल गेल अछि, जकरा ईस्वीमे परिवर्तित कऽ एतऽ देल गेल अछि। तेँ, सम्भव थिक जे कोनो-कोनोमे एकैक वर्षक अन्तर भऽ गेल हो।)

पुस्तक चौदह अध्यायमे विभक्त अछि, जकरा 'बिश्राम' कहल गेल अछि। एकर अतिरिक्त परिशिष्ट अछि आ अन्तमे अछि संस्कृत-श्लोकमे ग्रन्थकारक संक्षिप्त जीवन-चरित। एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि। हिनक गद्यशैली म० म० मुरलीधर झा जकाँ जीवन्त तँ नहि छनि, किन्तु छनि प्रांजल, संस्कृत-शब्दावलीसँ परिपूर्ण; विद्वत्तापूर्ण। डा० जयकान्त मिश्र एहि इतिहासक प्रसंग कहैत छथि "*It is a valuable work because it contains very detailed history of the entire Khandavalakula Dynasty upto the present day. Numerous sidelights are given on verious events and episodes in the palace and in the realm during the four hundred years it professes to cover,*"

इतिहासक भाषा आलंकारिक अछि। तकर कारण थिक हिनक पाण्डित्य। भषाक जटिलताक कारणेँ ग्रन्थक लोकप्रियतामे जतबा प्रभाव पड़ैत अछि, तकर अपवाद इहो ग्रन्थ नहि अछि।

इतिहासक एहि ग्रन्थक कारणेँ मैथिली साहित्यमे हिनक नाम अमर भऽ देल अछि। एहि इतिहासमे, राजकुलक क्रमबद्ध परिचयक माध्यमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि।

हिनक तत्सम-बहुल पाण्डित्यपूर्ण गद्यशैलीक एक नमूना द्रष्टव्य थिक, जे मिथिला भाषामय इतिहाससँ उद्धृत कयल जाइत अछि—

"उत्तर दिन पुनर्यथापूर्वक दरबार जाय पुराणश्रवणकाल निज शिष्य रघुनन्दन झाक पूर्ण विद्वत्ता ओ प्रत्युत्पन्नमतिकता संश्लाघ प्रशंसापूर्वक रानी दुर्गावतीसँ कहल, जेना जे घटना गत दिन भेल छलैक।"

डा० जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे गद्यक तीन उत्थानक चर्चा कयने छथि जाहिमे दोसर उत्थानक प्रतिनिधि म० म० परमेश्वर झाक संग म० म० मुकुन्दझा 'बक्शी' केँ सेहो मानने छथि।

हिनक निधनक बाद बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 'विभूति'क एक सम्पूर्ण अंक 'मुकुन्द-स्मृति-अंक'क रूपमे प्रकाशित कयलनि, जे हिनक मैथिली-सेवाक महत्त्वकेँ देखैत सर्वथा उपयुक्त छल।

रघुनन्दन दास

मैथिली साहित्यमे साहित्य-रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास कवि ओ नाटक-
कारक रूपमे सुप्रसिद्ध छथि। रचना लिखब आरम्भ कयलनि ई ब्रजभाषामे, किन्तु
मातृभाषाक प्रेमसँ अभिभूत भऽ एकरो भंडारकेँ विविध रत्नसँ भरलनि। हिनक
मुख्य कृतिक नाम थिक—मिथिला नाटक, सुदर्शन नाटक, दूतांगदव्यायोग (नाटक)
व्रतकथा (पद्य), वीर बालक (खण्डकाव्य), तथा सुभद्राहरण (महाकाव्य)।
एहिमे सुभद्रा-हरण महाकाव्य तथा मिथिला नाटक विशेष लोकप्रिय भेल।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक सखबाड़ नामक गाममे १८६० ई० मे भेल
छलनि। हिनक आरम्भिक शिक्षा अपन मातृकक पाठशालामे भेलनि। शुरूमे बाबू
गोपीश्वर सिंहक ओतऽ छलाह। बादमे दरभंगा राजमे एकाउन्टेन्ट भेलाह। ई
म० म० गंगानाथ झा, म० म० मुकुन्द झा 'बक्शी' तथा पण्डित चेतनाथ झाक
सम्पर्कमे अयलाह आ हुनकालोकनिक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखब प्रारम्भ कयलनि।
वृद्धावस्था ई अपन गाममे बितौलनि। हिनक निधन १९४५ ई० मे भेलनि। ई
अपन समवर्ती ओ परवर्ती साहित्यकारकेँ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा दैत रहलाह।
ई मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विशेष ज्ञाता छलाह। मैथिली साहित्य परिषद
द्वारा हिनका 'साहित्य-रत्नाकर'क उपाधिसँ विभूषित कयल गेल छलनि।

सुभद्राहरण—रचना-कालक दृष्टिएँ ई मैथिलीक प्रथम महाकाव्य थिक।
किन्तु, एकर प्रकाशनसँ पूर्व 'एकावली-परिणय' प्रकाशित भऽ चुकल छलैक।
एकर कथावस्तु महाभारतक एक अंशपर आधारित अछि। एहिमे ब्राह्मणक गाय
हरण कऽ लेल जयबासँ लऽ कऽ अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरण पर्यन्तक कथा वर्णित अछि।
प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक शब्दमे—"Its convas i large, style fluent and
the discriptions of seasons and natural objects ennobling."

तेरह सर्गमे विभाजित ई महाकाव्य प्रकृत-वर्णन दृष्टिएँ अद्भुत अछि।
डॉ० बालगोविन्द झा 'व्यथित'क अनुसार "समस्त महाकाव्यमे कवि प्रकृतिक
मनोहारी रूपक वर्णन अत्यन्त चामत्कारिक ढंगसँ कयने छथि। प्रभात, संध्या,
निशीथ, सूर्योदय, चन्द्रोदय, छबो ऋतु आदिक वर्णन ठाम-ठाम बड़ आकर्षक ओ
मनोहर भेल अछि। मिथिलाक पानिसँ प्रतिपालित मुंशी जी मिथिलाक लोक-
जीवनसँ अनुप्राणित भऽ अनेक स्थलपर तकर सुन्दर वर्णन कयलनि अछि।"
दृष्टान्तस्वरूप वीररसयुक्त सेनाक युद्धभूमि-प्रयाणक छटा द्रष्टव्य—

गगन संग जे सजि चलै, रणमदसौं उन्मत्त
पड़य पैर नहि थीर महि, क्रोधहि रह चित तत्त
तत्त तमकि पददल दलितहिं मेदिनि दलकत
घघ्घघ्घमकत युद्धभूमि सुनि कच्छप दपकत

तहिना, अन्हरिया रातिक ई वर्णन बेस सजीव भेल अछि—

झिलमिलाय किछु काल ज्योतिशशि भय गेल मन्दा
जनु तुराइ तम तानि सुतल आलशवश चन्दा
तारावलि निज पतिक खोजमे क्रम-क्रम आबथि
उल्का रूपहिँ केओ भूमिपर ताकय धाबथि

सुभद्राहरणमे मुंशीजीक भाषाक विविध रूप सोझांमे अबैछ। कतहु ई संस्कृतनिष्ठ शैलीक अनुकरण करैत छथि तँ कतहु हिनक शब्द प्रयोग फारसी-उर्दू बहुल भऽ जाइछ आ कतहु ठेठ मैथिलीक चमत्कार सेहो देखबामे अबैछ। मिथिलामे प्रयुक्त लोकोक्तिसभक प्रयोग सेहो हिनक काव्यमे ठाम-ठाम देखबामे अबैछ।

मिथिला नाटक—'मिथिला नाटक' जीवनझाक 'सुन्दर संयोग'क बाद सर्वाधिक महत्त्वपर्ण नाटक अछि। डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे 'एहिमे विशुद्ध राष्ट्रीय भावना सन्निहित अछि। देशमे जे सुधारवादी आन्दोलन चलल, ओकर प्रभाव देशक प्रत्येक क्षेत्रमे पड़लैक। लेखक अपन समाजमे, मिथिला क्षेत्रमे, व्याप्त दुष्ट भावना तथा उत्तम भावनाक संघर्ष एवं अन्तर्विरोधके नाटकीय कथावस्तुक रूपमे उपस्थित करैत समाजोत्थानक संदेश दैत छथि। एहिमे एकदम साधारण ढंगसँ कतिपय सामाजिक समस्याकेँ उठाओल गेलैक अछि।' समाजमे व्याप्त विभिन्न विरूपता, रूढ़ि, सामाजिक अपराध, विषमता तथा राष्ट्रिय चेतना आदिकेँ एहिमे उजागर कयल गेलैक अछि।

एहि नाटकक पात्र प्राणीतर वस्तुकेँ सेहो बनाओल गेल अछि, जेना—क्रोध, लोभ, पैशुन, आलस्य, ईर्ष्या, धर्म, संतोष, सुमति, विद्या आदि। भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक प्रसिद्ध नाटक 'भारत-दर्शन' मे सेहो एहन प्रयोग अछि। कहल जाइछ जे मुंशीजीक ई नाटक 'भारत-दुर्दशा' सँ अत्यन्त प्रभावित अछि। किछु साम्य रहितहुँ, किछु स्थल एहनो अछि जे दुनूकेँ फराक करैत अछि। डॉ० लेखनाथ मिश्रक शब्दमे "एहि दुनू नाटकमे मुख्य अन्तर ई अछि जे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र भारत-भाग्यक आत्महत्या द्वारा नाटकके दुःखान्त बना देल अछि, किंतु मुंशीजी नाटकक मध्यमे दुःखपूर्ण चित्र उपस्थित करितहुँ नाटकके सुखान्त बनाय भारतीय नाट्य-परम्पराक आदर्शक निर्वाह कएल अछि। दोसर अन्तर उद्देश्यमे अछि। भारत-दुर्दशा नाटक मध्य देशप्रेमक स्वर बड़ तीव्र भेल अछि, नाटककारक उद्देश्य देश-प्रेममे भारतवासीकेँ रंगबाक छैन्ह, किंतु मिथिला नाटकमे वर्तमान सामाजिक दोषकेँ परिहार करैत मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक उत्थानक उद्देश्य निहित अछि, अर्थात् देश-प्रेम गौण भए गेल अछि। मिथिला नाटक मध्य मिथिला माता देशवासीकेँ जगाए उत्थानक मार्ग दिश अग्रसर होयबाक लेल आह्वान कए रहलीह अछि।"

एकर शिल्पक प्रसंग डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कहैत छथि—"नाटकक कतेक तत्त्व सर्वयुगीन होइत अछि, यथा कथोपकथनक संक्षिप्तता, कथाक क्रमिक विकास आदि। एहि दृष्टिएँ मुंशीजी जीवन झासँ नवीन होइतहु अधिक परिनिष्ठित नहि भए सकलाह। मिथिला नाटकमे छोट-छोट भाषण सन पैघ-पैघ संवाद नाटकीय स्वाभाविकताक बाधक भए गेल अछि। तथापि, मुंशीजी एहिमे अपन युगबोधक परिचय देल अछि एवं शिल्पक दृष्टिएँ सेहो नवीन प्रयोग कयल अछि।"

हिनक 'मिथिला नाटक' तथा 'दूतांगद व्यायोग'केँ सम्मिलित रूपेँ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा १९८४ ई०मे प्रकाशित कयल गेल अछि। हिनक रचनाक अध्ययनसँ स्पष्ट होइछ जे मुंशीजी वास्तवमे 'साहित्य-रत्नाकार' छलाह।

म० म० मुरलीधर झा

म० म० मुरलीधर झा आधुनिक मैथिली गद्यक निर्माताक रूपमे विख्यात छथि। काशीसँ 'मिथिला मोद' नामक पत्रिका प्रकाशित कऽ ई तत्कालीन मैथिली आन्दोलनकेँ विशेष गति प्रदान कयलनि।

हिनक जन्म १८६९ ई० मे तथा निधन ६ दिसम्बर १९२९ केँ भेलनि। ई प्रयागमे शरीर-त्याग कयलनि। हिनक पैतृक भराम (मधुबनी) छलनि, किन्तु ई बसि गेल छलाह अपन मातृक श्यामसिद्धपमे। ई काशी विवश कालेजक ज्योतिष विषयक मेधावी छात्र छलाह तथा बादमे ओहा कालेजमे उक्त विषयक प्रोफेसरो भऽ गेलाह। मैथिल ज्योतिषीमे सभसँ पहिने येह महामहोपाध्यायक पदवीसँ मण्डित भेलाह। हिनक रचित ग्रन्थक नाम थिक—(१) अर्जुन तपस्या (उपन्यास), (२) हितोपदेश, तथा (३) मैथिली व्याकरण। किन्तु, साहित्यमे ई अमर भेलाह 'मिथिला मोद' पत्रिका लऽ कऽ।

मिथिला मोद—'मिथिला मोद' पत्रिका, मासिक, १९०५ ई० सँ, काशीसँ, प्रकाशित होबऽ लागल, जकर संचालक ओ सम्पादक म० म० मुरलीधर झा छलाह, यद्यपि सम्पादक-रूपमे हिनक नाम पत्रिकामे कहियो मुद्रित नहि भेल। आरम्भसँ पाँच वर्ष धरि एकर भाषा मैथिलीक संग हिन्दी सेहो छलैक, किंतु तकर बाद हिन्दीकेँ सर्वदाक हेतु हटा देल गेल। १९०५ सँ २७ धरि छपैत रहलाक बाद एकर प्रकाशन बन्द भऽ गेल। एकर प्रकाशन पुनः आरम्भ भेल १९३६ ई०मे, म० म० मुरलीधर झाक मृत्युक बाद, उपेन्द्रनाथ झाक सम्पादनमे, जे १९४१ धरि चलल। 'मोद' सँ पूर्व मैथिलीक एकमात्र पत्र, जकरा पहिल पत्र होयबाक गौरव छैक, 'मैथिल-हित साधन' जयपुरसँ सन् उनैस सय पाँचेमे प्रकाशित भेल, किंतु ओ अधिक दिन धरि नहि चलि सकल आ 'मोद' जकाँ ख्यातियो नहि पौलक। मोदक सम्पादकीयमे मुरलीधर झाक माजल मैथिली गद्यक स्वरूप स्पष्ट होबऽ लागल। भाषाक प्रांजलता हेतु तँ 'मोद' उल्लेखनीय अछिए, किंतु एकर महत्त्व आनो तत्त्व लऽ कऽ अछि, जकर उल्लेख करैत डॉ० 'श्रीश' कहैत छथि—"मिथिला मोदक मैथिल समाजपर बड़ प्रभाव छल तथा ओकर सम्पादकीयकेँ लोक कहियो अवहेलना नहि कए सकल। मैथिल महासभाक प्रसंग ओकर विवरण ओ आलोचना मोदक पुरान फाइलमे देखबायोग्य अछि। हिन्दीक अत्याचार जखन मैथिलीक अस्तित्वकेँ नाश करबाक हेतु विशेष सक्रिय भेल तँ म० म० मुरलीधर झा एहि पत्रक माध्यमसँ ओकर विरोध कएल। वस्तुतः 'मोद' तत्कालीन मैथिल समाजक जागरणक दर्पण छल तथा ओकर विचार तत्कालीन मैथिल समाजक विचारधाराक प्रतिनिधित्व करैत छल।" डॉ० जयकान्त मिश्रक शब्दमे "The 'Moda' was one of the greatest champions of Maithili and succeeded to some extent in creating a reading public. Its voice was heard and even feared throughout the land. Its witty and sarcastic comments had an immense influence.'

हिनक हृदयमे मैथिलीक आगि छल, जे सतत प्रज्वलित रहैत छल। ई 'मोद'क माध्यमसँ मैथिलीक समस्याकेँ उजागरे टा नहि करैत छलाह, अपितु अपन ओजपूर्ण-तर्कपूर्ण लेखनीसँ समस्त मैथिलक हृदयकेँ आलोड़ित सेहो कऽ दैत छलाह। हिनक भाषा तरुआरिक तेज धार सन छल, जकरा पर ओकर आक्रमण होइत छलैक, तकरा कटने जाइत छलैक।

हिनक समयमे मैथिली साहित्य संस्कृत विद्वानक अधीन छल। अतएव एकर गद्य ओ पद्य दुनू सकल-साधारण लोकक पकड़सँ साधारणतया बाहर रहैत छल। मुरलीधर झा पत्रकार छलाह, जनैत छलाह जे मैथिलीक विकासक हेतु सकल-साधारणक सहभागिता सेहो नितान्त प्रयोजनीय अछि। मैथिलीमे—भाषा-विकास ओ साहित्य-विकास दुनू क्षेत्रमे, आमजनताक भावनाकेँ मोड़बाक लेल ई अत्यन्त सहज भाषाक प्रयोग कयलनि; काव्यकेँ सोझे-सोझ पाठकक हृदयमे उतारि देलनि। गद्यक ई सहजता हिनकासँ पहिने नहि भेटैत अछि।

जीवन झाक भाषामे मैथिली गद्यकेँ ठोस भूमि प्राप्त भेलैक, जकरा पहिले-पहिल उर्वर बनौलनि म० म० मुरलीधर झा। जीवन झा गद्यक विकास नाटकक माध्यमसँ कयलनि, किन्तु मुरलीधर झा साहित्यक कोनो खास विधाकेँ बिना धयनहि, लेख, टिप्पणी, सम्पादकीय, पत्र आदिक माध्यमे मैथिली गद्यकेँ सुघड़ बनौलनि।

मैथिलीक उन्नतिक मार्गमे हिन्दीकेँ ई बाधक मानैत छलाह। तेँ पत्रिकामे मैथिलीक संग हिन्दीक स्थान देब हिनक दृष्टिमे अनुचित छल, जकर ई खुलिकऽ विरोध करैत छलाह। हिन्दी-मैथिली-सम्बन्ध पर हिनक दृष्टिकोण आइयो बेसी समीचीन बुझि पड़ैत अछि।

काशी मैथिली साहित्यक प्रमुख निर्माण-भूमि रहल अछि। ओहि ठामसँ मैथिलीक अविस्मरणीय सेवा होइत रहल अछि। साहित्य-निर्माणक अतिरिक्त आन्दोलनात्मक क्रिया-कलाप सेहो ओतऽसँ कम नहि भेल अछि। सर्जनात्मक आ आन्दोलनात्मक—ई दुनू धारा जे अनवरत ओतऽसँ प्रवाहित भेल, तकर मूलमे म० म० मुरलीधर झाक सेवा अछि। पत्रिका एक दिस जतऽ साहित्य-सर्जनाक प्रेरक तत्त्व मानल जाइछ, ततऽ दोसर दिस आंदोलनक सूत्रधार सेहो। म० म० मुरलीधर झा, सभसँ पहिने, एहि महत्त्वकेँ बुझलनि आ 'मोद'क प्रकाशन शुरू कऽ देलनि। हिनक निर्देशन-सम्पादनमे 'मोद'क माध्यमसँ, एक संग, विशिष्ट साहित्यकारोक दल तथा मिथिला-मैथिलीक उत्थानक प्रति समर्पित आन्दोलन-कारियोक दल तैयार भेल। कविवर सीताराम झा, ज्यौ० बलदेव मिश्र, म० म० उमेश मिश्र, त्रिलोचन झा, रामचन्द्र मिश्र, अनूप मिश्र तथा कुशेश्वर कुमर, जे लोकनि आगाँ चलिकऽ प्रख्यात कवि-साहित्यकारक रूपमे परिगणित होइत गेलाह, मोदेक देन थिकाह। ई एक टा युग कायम कऽ गेल। ओहि समयक लेखककेँ मोदयुगीन लेखक कहि संबोधित कयल जाइछ।

मुरलीधर झा काशी-विद्वज्जन-समितिक संस्थापकमेसँ छलाह। ई कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु सेहो प्रयास कयने छलाह। ई वर्तनीक एकरूपताक समर्थक छलाह।

कविवर सीताराम झाक प्रेरणा-स्रोत यैह ज्यौतिषी जी छलाह आ हिनक अवदान एतबो योगदानक लेल समस्त मैथिल समाज हिनका प्रति चिरऋणी रहत। □

जनार्दन झा 'जनसीदन'

पण्डित जनार्दन झा 'जनसीदन' जँ आर किछु नहि कयने रहितथि केवल अपन मेधावी पुत्र प्र० हरिमोहन झाकेँ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणे टा दऽकऽ बैसि गेल रहितथि तैयो समस्त मैथिलक आदरक पात्र भऽ जैतथि। ई स्वयं मैथिलीक बड़ पैघ सेवक छलाह, श्रेष्ठ साहित्यकार छलाह तथा परम व्युत्पन्न मेधावी विद्वान छलाह। हिनक स्थान अपन साहित्यमे उपन्यासकारक रूपमे, कविक रूपमे, निबन्धकारक रूपमे, अनुवादकक रूपमे तथा सम्पादकक रूपमे अग्रगण्य अछि। ई आधुनिक युगक पहिल पीढ़ीक प्रसिद्ध लेखक छलाह।

हिनक जन्म वैशाली जिलाक कुमर वाजितपुर नामक गाममे १८७२ ई०क कार्तिक कृष्ण तृतीयाकेँ भेल छलनि। ई संस्कृतक निविष्ट विद्वान छलाह। अपन जीविकाक क्रममे ई अनेक ठाम गेलाह आ जतऽ गेलाह ततऽ अपन विद्वत्ता आ क्षमतासँ कार्य-सम्पादन करैत सम्मानक भाजन बनलाह। किछु दिन अध्यापन-कार्य सेहो कयलनि, किछु दिन पुर्णियाँक राजा कमलानन्द सिंहक संग सेहो रहलाह। किछु दिन दरभंगामे मिथिला मिहिरसँ सम्पादकक रूपमे सम्बद्ध रहलाह तँ किछु दिन कलकत्ता आ प्रयागमे पत्रकारिता ओ साहित्यिक कार्य कयलनि। ई बंगलाक अनेक मुख्य उपन्यासक हिन्दीमे अनुवाद कयने छथि। हिनक निधन २० जून १९५१ ई०केँ भेलनि।

मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यासकारमे हिनक स्थान सर्वोच्च अछि। हिनक रचित उपन्यासक नाम थिक—निर्दयी सासु (१९१४), शशिकला (१९१५), कलियुगी संन्यासी वा बाबा ढकोरालानन्द प्रहसन (१९२०), पुनर्विवाह (१९२६), द्विरागमन-रहस्य (१९४६-४७)।

उक्त उपन्यास सभमे पूर्वमे खाली 'पुनर्विवाह' टा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल छल। अन्य सभ उपन्यास 'मिथिला मिहिर'मे धारावाही छपल अछि, जे तत्कालीन 'मिहिर'क संगहि आब अलभ्य भऽ गेल अछि। १९८४ ई०मे श्री रमानन्द झा 'रमण' हिनक दू गोट उपन्यासकेँ एक ठाम प्रकाशित कयलनि अछि—निर्दयी सासु ओ पुनर्विवाह। यद्यपि 'निर्दयी सासु'केँ पूर्ण मानल गेल अछि, किन्तु पढ़ला उत्तर भान होइछ जेना ई अपूर्ण हो। वास्तवमे, 'मिथिला मिहिर'क तत्कालीन अंक सभमे एकर धारावाही प्रकाशन होइत छल, जाहिमे कोनो ठाम व्यवधान आबि जायब सहज संभव छल। एहिमे स्त्री-शिक्षाक महत्वक निरूपण कयल गेल अछि तथा हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक आलोचना भेल अछि। एकर भाषा प्रवाहपूर्ण, सहज ओ आकर्षक अछि, संवाद सजीव ओ आह्लादक अछि।

श्री रमानन्द झा 'रमण'क अनुसार "जनसीदनजीक तीन उपन्यास निर्दयी सासु, शशिकला एवं पुनर्विवाहक कथावस्तुसँ स्पष्ट अछि जे ओ सामाजिक समस्याकेँ स्वर देल अछि। समाजमे पसरल विकृति दिस लोकक ध्यान आकर्षित करा अनेक सामाजिक अन्धविश्वासक खण्डन कयल अछि। वर्तमान शतीक आरम्भ धरि नारी जागरणक हेतु सामाजिक आन्दोलन तेज भऽ गेल छल। जनसीदनजी एहिसँ प्रभावित भेलाह। जकर परिणाम स्वरूप 'निर्दयी सासु'क ज्योतिषी

चिन्तामणि झा अपन कन्याके एतेक धरि अवश्य पढ़ा दैत छथि जाहिसँ ओ मिथिलाक्षर एवं देवाक्षरमे लिखल पोथी पढ़ि लैछ। ओकर किताबक सन्देश ग्रामक अशिक्षिता धरि पहुँचा दैछ। एहिना हरिसिंहदेवी व्यवस्थाके वर्तमान कालक सामाजिक आवश्यकताक अनुरूप नहि पाबि विरोध कयल अछि। एहिसँ समाजक विकासमे आयल गतिरोधके तोड़ल अछि। एहिना 'पुनर्विवाह'मे वृद्ध विवाहसँ पसरैत सामाजिक दुर्गुणक कारणे उत्पन्न होइत सामाजिक विशृंखलता दिस इंगित कयल अछि।"

'पुनर्विवाह' के हिनक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास मानल जाइछ। "हिनक मैथिली साहित्यमे प्रवेश उपन्यास साहित्यक विकासक दृष्टिसँ एक महत्त्वपूर्ण घटना थिक। ई तत्कालीन सामाजिक समस्याके सोझामे अनलनि तथा स्वाभाविक रूपमे ओकर समाधानो प्रस्तुत करऽ चाहलनि।" ई अन्य अनेक भाषा-साहित्यसँ गम्भीर परिचय रखनिहार छलाह, विशेषतः संस्कृत आ बंगला साहित्यक तँ विशिष्ट ज्ञाता छलाह। बंगलाक परिष्कृत औपन्यासिक रूपके ई मैथिलीमे उतारऽ चाहलनि। ताहिसँ एतबा तँ अवश्य भेल जे अन्यो लेखक एहि दिस प्रवृत्त भेलाह। डॉ० जयकान्त मिश्रक शब्दमे "Janardan Jha 'Jansidan' showed from the very beginning a greater grasp over a 'situation' and knew how to handle a 'theme'."

कविक रूपमे सेहो हिनक स्थान उच्च अछि। हिनक एकमात्र कविताक पुस्तक 'नीतिपद्यावली'क नामे छपल अछि। पोथीक नामेसँ स्पष्ट अछि जे एहिमे सत्-पक्ष आ असत्-पक्ष दुनूक विवेचन भेल अछि तथा पाठकके सत्-पक्ष दिस प्रेरित कयल गेल अछि। हिनक कविताक भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण तथा चित्ताह्लादक अछि, कथ्य सोझ, सटीक तथा उपदेशमूलक। दृष्टान्त रूपमे 'सज्जन'क लक्षण प्रस्तुत कयल जाइछ—

सज्जन वैह थिकथि जे आनक करथि सदा उपकार
नीच जनक संसर्गहुमे पड़ि तजथि न उच्च विचार
परजनसँ अपकृत भेलोपर विसरि जाथि अपकार
क्रिया करथि नित उत्तम पालथि धर्म देश आचार

हिनक स्थान पत्रकारक रूपमे सेहो अग्रगण्य अछि। दरभंगासँ प्रकाशित प्रसिद्ध पत्रिका 'मिथिला मिहिर'क ई० १९१९ सँ २२ धरि सम्पादक छलाह। हिनक सम्पादन-कालमे उक्त पत्रिकाक बहुविध विकास भेल। हिनक सम्पादकीय लेख तत्कालीन ज्वलन्त समस्याके उजागर करैत छल।

ओहि समयक हिन्दीक सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती'क विख्यात सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीक ई घनिष्ठ मित्र छलाह। हिनक भाषाक प्रांजलता, विशुद्धता तथा स्पष्टता आदि गुणक कारणे द्विवेदीजी हिनक महान प्रशंसक छलाह तथा हिनक रचनाके ससम्मान 'सरस्वती'मे स्थान दैत छलाह। हिन्दीमे हिनक अनेक रचना प्रकाशित अछि, जाहिमे बंगला पुस्तकक अनुवादक अधिकता अछि।

ई परम व्युत्पन्न छलाह। पं० खुद्दी झा ओ पं० त्रिलोकनाथ मिश्रसँ श्लोकबद्ध पत्राचार होइत छलनि। कहल जाइछ जे मिश्रजीसँ यदाकदा वार्तालापो श्लोकबद्ध चलैत छलनि। ⊡

दीनबन्धु झा

महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झा मैथिलीक 'पाणिनि' कहल जाइत छथि। ई 'मिथिलाभाषा-विद्योतन' लिखि मैथिलीक स्वतन्त्र स्वरूपके आओर अधिक ठोस, आओर अधिक पुष्ट, आओर अधिक प्रामाणिक तँ बनयबे कयलनि जे 'मिथिलाभाषा कोष'क संकलन-प्रकाशन कऽ, जे स्वतन्त्र भाषाक हेतु सभसँ आवश्यक वस्तु मानल गेल अछि, ताहू दिशाक पथके प्रशस्त कऽ देलनि। मिथिलाभाषा विद्योतन-सन उत्कृष्ट व्याकरण-ग्रन्थक रचनाक हेतु हिनका, १९४१ ई० मे, मैथिली साहित्य परिषदक मधुबनी-अधिवेशनमे, 'महावैयाकरण'क उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलनि।

पं० दीनबन्धु झाक जन्म इसहपुर (मधुबनी)क मरड़ेय मिहौलि मूलक काश्यप गोत्रीय परिवारमे, १८७८ ई० मे आश्विन शुक्ल चतुर्दशी बृहस्पतिके भेलनि। हिनक पिताक नाम विद्यानाथ झा रहनि, जे फेकू झाक नामसँ प्रसिद्ध छलाह। आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद उच्च अध्ययनक हेतु ई १८९३ ई० मे काशी गेलाह, जतऽ तत्कालीन पण्डितप्रकाण्ड म० म० शिवकुमार शास्त्रीसँ सात वर्ष धरि विधिवत् शिक्षा ग्रहण कयलनि। १९०८ ई० मे ई धौतपरीक्षोत्तीर्ण भेलाह। सर्वप्रथम होयबाक कारणे हिनका धौतीक संग दोशाला सेहो देल गेलनि। लगभग समस्त जीवन ई अध्ययन-अध्यापन-कार्य कयलनि तथा देवघर, लक्ष्मीपुर, गाम, सरिसव आ दरभंगामे रहि शतावधि मेधावी छात्रके प्रतिष्ठित विद्वान बनौलनि। हिनक निधन ७७ वर्षक अवस्थामे २६ जनवरी १९५५ ई० के भेलनि।

ई संस्कृत काव्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र आदि विषयक रमेश्वरप्रतापोदयम्, समासशक्तिदीपिका, वकारविवेकः, श्राद्धाधिकारिनिर्णयः प्रभृति अनेक ग्रन्थ ओ निबन्धक रचना कयने छथि। मैथिलीमे हिनक चारि गोट ग्रन्थ प्रकाशित अछि— १—मिथिलाभाषाविद्योतन (१९४१), २—धातुपाठ (१९४६-५०), ३—मिथिलाभाषा कोष (१९५०) तथा ४—अलंकार-सागर (१९६७)। अलंकार-सागर पूर्ण नहि भऽ सकल तथा एकर प्रकाशनो लेखकक निधनक बादे भेल।

मिथिलाभाषा विद्योतन—ई मैथिली व्याकरणक ग्रन्थ थिक, जकर निर्माण संस्कृत-व्याकरणक ढंगपर भेल अछि। कोनो भाषाक स्वतन्त्र अस्तित्व बिना ओकर अपन व्याकरणक सिद्ध नहि भऽ सकैत छैक। मैथिलीक व्याकरण यद्यपि एहिसँ पहिनहु लिखल गेल छल, किन्तु सांगोपांग, परिनिष्ठित तथा मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ताके स्पष्ट करऽवला महत्त्वपूर्ण व्याकरण यैह थिक। एहि व्याकरणक प्रसंग डॉ सुनीति कुमार चटर्जीक मत अछि जे 'मिथिलाभाषा-विद्योतन अनेक दृष्टिएँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि। मैथिलीमे आइ धरि प्रकाशित समस्त व्याकरण-मध्य ई सर्वाधिक सांगोपांग आ परिपूर्ण अछि। एहिमे एक कोटिसँ अधिक लोक मध्य व्यवहृत मैथिली भाषाक परम जटिलताके पूर्णतः स्पष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि। यद्यपि ग्रन्थकार सूत्र-पद्धति अपनाय संस्कृतक प्रति श्रद्धा प्रकाश कयलनि अछि, तथापि हम एहि ग्रन्थमे संस्कृतसँ नितान्त भिन्न, मैथिलीक जे किछु विलक्षणता छैक से स्पष्ट रूपे परिलक्षित पबैत छी।" ई व्याकरण सूत्रबद्ध

होयबाक कारणेँ सामान्य पाठकक हेतु दुरूह अवश्य अछि, किन्तु संस्कृतक अध्येताक हेतु कठिन नहि।

मिथिलाभाषाविद्योतनक दोसर खण्डक रूपमे 'धातुपाठ'क प्रकाशन भेल अछि। एक धातुसँ मैथिलीमे जतेक शब्द बनि सकैत अछि आ तकर अर्थमे जे परिवर्तन होइत छैक, तकरा एहि ग्रन्थमे सोदाहरण व्याख्यायित कयल गेल अछि। एहि दृष्टिएँ ई मैथिलीक अद्वितीय ग्रन्थ अछि। एहिमे लगभग बारह सय धातुसँ निर्मित चारि हजारक करीब शब्द अछि। एकरा विशुद्ध मैथिली कोश कहल जा सकैछ। उदाहरणक रूपमे एहि ग्रन्थक एक अंश द्रष्टव्य। 'पान्त' (जाहि शब्दक अन्तमे 'प' हो) धातुसँ जे शब्द बनैत अछि, तकर अर्थ ओ प्रयोग निम्नलिखित अछि—

कप—कम्पन (जाड़ेँ देह कपैत अछि। अतिवार्धक्यसँ हाथ कपैत छैक), **खप**—न्यून होयब (ग्रहणमे सूर्य चन्द्रमा खपैत छथि), **छप**—तिरोधान, मुद्रण (भीतक आड़मे छपि गेलाह), **जप**—परश्रवणागोचर मन्त्रजप (गायत्री जपैत छथि), **टप**—उल्लंघन (भीत टपि गेलाह), **छिप**—प्रच्छन्न होयब, प्रच्छन्न करब, जोरसँ फेंकब (ओ छिपल छथि = प्रच्छन्न छथि। किछु मधुर छिपलक = प्रच्छन्न कयलक। प्रथम अर्थमे अकर्मक, द्वितीय अर्थमे सकर्मक। बनसी छिपलक = जोरसँ फेंकलक), **टिप**—क्रीड़ामे प्रधानकेँ चालि कहब (सतरंजमे टिपनिहार चाही), **घिप**—तप्त (अग्नितापसँ युक्त होयब) (जल घिपल = उष्ण भेल), **निप**—भूमिलिम्पन (आँगन निपैत अछि = पानि-गोबरसँ उपलिप्त करैत अछि), **धुप**—धूआँसँ पकायब (केरा धुपैत अछि = धुआँसँ पकबैत अछि), **खेप**—कालातिवाहन (ओ खेपैत अछि = कालक्षेपण करैत अछि), **लेप**—लिप्त करब (गोबर-माटि लेपैत अछि = लिप्त करैत अछि), **छोप**—ऊपरसँ काटब (अधिक बढ़ल धानकेँ खसि पड़बाक डरसँ गृहस्थ छोपैत अछि = ऊपरसँ काटि दैत अछि), **तोप**—आच्छादित करब (घरमे लागल आगि छाउर-धूरासँ तोपलक = झँपलक), **थोप**—आच्छादित करब (आगि थोपलक = आच्छादित कयलक), **घोप**—आच्छादित करब (आगिकेँ घोपलक = आच्छादित कयलक), **रोप**—रोपण (खेतमे धान रोपैत अछि), **छरप**—लाँघब, **तरप**—लाँघब (खेड़िमे नेनासभ छरपैत अछि वा तरपैत अछि), **अड़ोप**—आरोप (पयर अड़ोपलक = आरोपित कयलक)।

दू सय दस पृष्ठक ई ग्रन्थ धातु सभसँ बनल एहने शब्द, ओकर अर्थ आ प्रयोगसँ परिपूर्ण अछि।

मैथिलीभाषाकोष—कोष कोनो भाषाक हेतु सर्वाधिक महत्त्वक वस्तु होइत अछि। स्वतन्त्र भाषाक जहिना अपन व्याकरण रहैत छैक, तहिना अपन शब्दकोष सेहो। मैथिलीकेँ पहिल शब्दकोष प्रदान करबाक श्रेय पं० दीनबन्धु झाकेँ छनि। शब्दकोशक निर्माण ने समय-सीमाक बन्धन-साध्य छैक आ ने एक व्यक्तिक परिश्रम-साध्य। जावन्त भाषामे समय आ वातावरणक प्रभावक कारणेँ शब्द सभ बनैत रहैत छैक, बाहरसँ अबैत रहैत छैक तथा पुरान शब्द लुप्त होइत जाइत छैक। शब्दकोषमे लुप्त भेल शब्दक संगहि नवागत शब्दक समावेश सेहो रहब आवश्यक। तहिना, एक भाषाक अनेक उपभाषा होइछ, बोली होइछ, जकर क्षेत्र-विशेषमे शब्दक रूप परिवर्तित होइत रहैछ। कोनो भाषाक शब्दकोषमे ओहि

भाषाक प्रत्येक क्षेत्रक शब्दक मौलिक रूप रहब वांछित होइछ। एहन परिश्रम-साध्य, व्ययसाध्य ओ संस्थासाध्य काजकेँ पं० दीनबन्धु झा हाथमे लेलनि आ साढ़े तीन सयसँ अधिक पृष्ठक एक कोषक प्रकाशन करौलनि। एहि कोषमे मैथिलीक अपन शब्द—देशज शब्द—क संकलनकेँ प्रधानता देल गेलैक अछि। सभसँ अधिक महत्त्व एकर एहि लऽ कऽ अछि जे, ई एक दिस मैथिलीक एक बड़का अभावक पूर्ति करैत अछि तँ दोसर दिस व्यापक शब्दकोष-निर्माणक मार्गकेँ सेहो प्रशस्त करैत अछि। धातुपाठ तथा मिथिलाभाषा-कोष—एहि दुनू ग्रन्थकेँ मिला कऽ छओ हजारसँ ऊपर मैथिलीक देशज शब्द आबि गेल अछि, जाहिमेसँ अनेक तँ आब लुप्तप्राय भेल जा रहल अछि, जकर संकलन आ अर्थ-निरूपण होयब आवश्यक छल।

साहित्य-अध्येताक हेतु 'अलंकार-सागर'क उपयोगिता असंदिग्ध अछि। अलंकार सन क्लिष्ट विषयकेँ एहि ग्रन्थमे सांगोपांग विश्लेषित कयल गेल अछि। दुर्भाग्यसँ ई ग्रन्थ पूर्ण नहि भऽ सकल। एकर प्रकाशन-सम्पादन आचार्य रमानाथ झाक द्वारा, लेखकक मृत्युक बहुत वर्ष बाद, भेल। एकरो निरूपण-शैली संस्कृते काव्यग्रन्थक अनुरूप अछि।

भाषाक उन्नतिक लेल जहिना सर्जनात्मक साहित्यक प्रणयन आवश्यक मानल गेल अछि तहिना ओकर स्वरूपकेँ ठोस भूमि देबा लेल, ओकर गतिकेँ शास्त्र-सम्मत बनयबा लेल, ओकर वर्तनी, शैली आदिक निरूपणक लेल ओहि भाषाक व्याकरण, कोष, काव्यशास्त्र आदिक रचना केँ सेहो समान महत्त्व आ गौरव प्राप्त अछि। शास्त्रीय ग्रन्थक निर्माणक हेतु जाहि कोटिक विद्वता, भाषा ओ विषयमे गति तथा तत्परता अपेक्षित होइछ—ई सभ गुण प्रचुर मात्रामे 'महावैयाकरण'मे छलनि। ई आचार्य छलाह—से एहू दृष्टिएँ जे विद्वान आ सामान्य—दुनू कोटिक लोकक हेतु ई आकर ग्रन्थ प्रस्तुत कयलनि।

वर्तनीक प्रति हिनक दृष्टि उदार बुझि पड़ैत अछि। यद्यपि ई वर्तनीक एकरूपताक पक्षधर छलाह, किन्तु भाषाक गतिमे अवरोध नहि आबय, कोनो अनावश्यक विवाद नहि ठाढ़ होअय, तेँ विकल्पो रूपकेँ ई मान्यता देने छलाह। 'कएल' आ 'कयल' दुनू रूप हिनक ग्रन्थमे भेटैत अछि।

ई मैथिली भाषाक स्वरूपक निर्धारण ओ विश्लेषण विस्तारसँ अपन 'कोश'क भूमिकामे कयने छथि। मैथिलीक भाषिक चरित्रकेँ स्पष्ट करैत एकरा संस्कृतसँ उद्भूत मानितहुँ एकर स्वतन्त्र सत्ताकेँ स्पष्टतासँ बुझौने छथि।

महावैयाकरणजी यद्यपि सर्जनात्मक साहित्य नहि लिखलनि, किन्तु जे लिखलनि से आकर-ग्रन्थ, आ ताहिसँ मैथिलीक जतेक पैघ उपकार भेल अछि, तकर महत्त्व कोनो सर्जनात्मक साहित्यसँ अधिक अछि। हिनक दू गोट विद्वान पुत्र पण्डित कविवर जीवनाथ झा (आब स्वर्गीय) तथा पण्डितप्रवर गोविन्द झा, जे मैथिलीक बड़का उन्नायक छथि, हिनकहि प्रेरणासँ मैथिलीमे अयलाह। एहू उपकारक हेतु अग्रिम पीढ़ी सदा हिनक कृतज्ञ रहत।

□

सीताराम झा

मैथिली गद्यकें प्रांजल बनयबामे जे स्थान म० म० मुरलीधर झाक छनि; सैह स्थान, अपितु ताहूसँ बेसी, मैथिली कविताकें सजयबा-समकयबामे कविवर सीताराम झाकें प्राप्त छनि। विद्यापतिसँ लऽ कऽ आइ धरि मैथिली काव्यधारामे मोड़ देनिहार किछु महाकविमे एक टा ईहो छथि। कविवर सीताराम झा काव्यक टाँट परती-पराँटकें तोड़िकऽ, जोति-कोड़िकऽ, ओहिमे मा भोग-तुलसीफूल धान उपजा देलनि।

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक बहेड़ा-परिसरक चौगमा नामक गाममे १६ जनवरी १८९१ ई० कें भेलनि। ज्योतिषशास्त्रक ई प्रकाण्ड विद्वान छलाह। ज्यौतिषिक अध्यावसाय हिनक मुख्य कार्य छल। १९२१ सँ १९६२ ई० धरि काशीस्थ संन्यासी संस्कृत महाविद्यालयमे ई ज्यौतिषक गण्यमान्य अध्यापक छलाह। तकर बाद वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक ई सम्मानित प्राध्यापक नियुक्त भेलाह, जतऽ अन्तिम समय धरि रहलाह। हिनक कर्मभूमि काशी छलनि। हिनक निधन ओतहि १५ जून १९७५ ई० कें, चौरासी वर्षक अवस्थामे, भेलनि।

संस्कृतमे ज्यौतिष शास्त्रसँ सम्बद्ध हिनक रचित पचहत्तरिसँ ऊपर पोथी अछि। मैथिलीमे हिनक कुल सोरह गोट पुस्तक प्रकाशित अछि—अम्बचरित (महाकाव्य), अलंकार-दर्पण—दू भाग, अतीचार-निर्णय, उनटा बसात, उपदेशाक्षमाला, गीतातत्त्वसुधा (गीताक अनुवाद), पढ़ुआ-चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहार, पर्व-निर्णय, परिचय-दर्पण, भूकम्प-वर्णन, मैथिली काव्यषट्‌रस, मैथिली काव्योपवन, रत्नसंग्रह, लोकलक्षण, व्यवहार-विवेक, तथा शिक्षासुधा।

'मिथिला-मोद'क संस्थापक म० म० मुरलीधर झाक ई शिष्य छलाह तथा मैथिलीमे हुनके प्रेरणासँ लिखब आरम्भ कयलनि। पं० जीवन झाक रचनासँ सेहो ई प्रेरित भेलाह। हिनक देशदशासूचक आ व्यंग्यरचना तत्कालीन मैथिल-मानसकें झकझोड़ि देलक। हिनक काव्यमे मिथिलाक माटि-पानिक सुगन्ध भेटैछ। ठेठ मैथिलीक ठाठ हिनक कविताक मुख्य विशेषता थिक। मैथिलीक लोकप्रियताकें बढ़यबामे हिनक सेवा स्तुत्य अछि। ई काज कतेक दुःसाध्य छल से ओहि स्थितिक कल्पना कयने बिना अनुभव नहि कयल जा सकैछ। ताहूमे हिनक बेसी काज मिथिलाक बाहर, काशीमे रहिकऽ भेल छलनि। अपन देशक सीमा टपलापर काजक दुष्करता आओर बढ़ि जाइछ।

हिनक मुख्य धारा तँ काव्य-रचने छल, किंतु अन्य प्रकारक साहित्यिक काज सेहो ई कयलनि। १९२० सँ २७ धरि पं० अनूप मिश्रक संग ई 'मिथिला मोद'क संपादन कयलनि। हिनक किछु गद्यो उपलब्ध अछि, किंतु ओहूमे काव्यात्मक चमत्कार विद्यमान भेटैछ। हिनक गद्यो गद्य कम, कविता बेसी अछि। शैलीक प्रसंग ई 'मोद'-मतक समर्थक छलाह, किंतु दोसरो शैलीक विरोधी नहि। कोनो

शैलीक प्रति कट्टरताक भाव नहि छलनि। ई आचार्य छलाह, काव्यशास्त्रक रचना-व्याख्या कयलनि। हिनक काव्य-साधनाक अवधि बिरसठि वर्षक छल—१९१३ सँ १९७५ धरि।

हिनक प्रसंग प्रो० रमानाथ झा कहने छथि—"ज्योतिषीजी आशुकवि छथि। हिनक वाणी जेना कविताबद्ध बहराए। पहिने ई देशदशा ओ नीतिक पद खूब रचल जाहिमे भाषाक सरलता, स्वच्छता, स्पष्टता अत्यन्त स्वाभाविक रहैत आएल अछि। हास्य-व्यंग्यक रचनामे ज्योतिषीजी बेजोड़ छथि तथा शब्दक चयन हिनक तेहन विलक्षण होइत अछि जे हिनक रचना मन मुग्ध कएने बिना नहि रहि सकैत अछि।"

आन-आन कवि जतऽ मिथिलाक कोनो खास-खास अंगकें स्पर्श कयलनि अछि, ततऽ कविवर सम्पूर्ण मैथिल-संस्कृतिएकें उजागर कऽ देलनि अछि। दोसर शब्दमे, कविवरक सम्पूर्ण काव्य-साहित्य मिथिलाक सम्पूर्ण संस्कृतिक प्रतिबिम्ब मानल जा सकैछ।

अम्बचरित—'अम्वचरित' महाकाव्य कविवर सीताराम झाक सभसँ महत्त्वपूर्ण कृति थिकनि। ओना तँ एकर प्रथम सर्गमे जे कथावस्तु घोषित अछि तकर किछुए अंश एहिमे आयल अछि, तथा एकरा पूर्व भाग कहिकऽ ई आभास देल गेल अछि जे ई पूर्ण नहि अछि, तथापि जतबे अंश अछि, महाकाव्यक विशेषताक दृष्टिएँ अपनामे पूर्ण अछि तथा कविवरक काव्यक समस्त छटाकें संजोगने अछि। कविवरक काव्य-प्रतिभाक चमत्कारक संगहि हिनक गम्भीर पाण्डित्यक प्रभा सेहो एकर पात-पातपर विकीर्ण अछि। लगैत अछि, अम्बचरितक रूपमे जेना कविवर विद्वत्ताक विशुद्ध दूधमे तैयार सेवा-भावरूपी मखानक खीरक-पातरि माय मैथिलीकें भोग लगौने होथि।

ई पन्द्रह सर्गमे निबद्ध अछि। एहिमे सीताक जन्मसँ लऽ कऽ हुनक द्विरागमन धरिक कथा कहल गेल अछि। किंतु, अम्बचरित लिखबाक कविक उद्‌देश्य रामकथाकें दोहरायब नहि छलनि। हिनक मुख्य उद्‌देश्य छलनि अम्ब—अर्थात् माय—आ मायक भाषा—आ मैथिलक संस्कार-संस्कृति-सभ्यता—क चरितक बखान करब। सेनाक जन्मसँ लऽ कऽ ओकर विकास-कथा जे एहिमे वर्णित अछि, से सर्वांग मैथिल-कथा थिक, मैथिल-संस्कारक दस्तावेज थिक।

मिथिलामे कन्यादानक मानदण्ड की छल (जे आदर्श मानदण्ड अछि) से द्रष्टव्य थिक—

बल-गुन-रूप अधिक हो जकरा
कन्यासौं, कन्या दी तकरा
वर थिक वर यदि वयस सबैया
द्विगुन वयस सम, अधम अढ़ैया
तहिसँ अधिक वयस वर त्यागी
नहि तँ दाता नरकक भागी
प्रथम वरक गुन वयस परीक्षा
तखन करक थिक अपर समीक्षा

एकर विपरीत भेलसँ कुपरिणामो दिस कवि संकेत कयने छथि—

द म्पति-गुन विपरीत जतय हो
सतत अहेतुक कलह ततय हो
जतय कलह से विपतिक वन थिक
नरक भवन से नरक-भवन थिक

अतएव—

सब विधि प्रथम वरक गुण थाही
कन्या न करक पुनि चाही

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक अनुसार "कथा आ वर्णन-वैभवक संगहि प्रस्तुत काव्यमे भाव-सम्पत्तिक बड़ मनोरम समागम अछि। कथाक मोह हमरा एतऽ नहि भेटैछ। अतः अम्बचरितक काव्यरूप ओहिसँ प्रभावित होइतो एक भिन्न प्रकारक बनि जाइछ। परिष्कृत भाषा एवं ठेठ शब्दक प्रयोगकर्ताक रूपमे, प्रवाहमय रचयिताक रूपमे एवं भावशिल्पीक रूपमे, ई चन्दाझाक निकट अनुयायी छथि।" डॉ० जयकान्त मिश्रक मत अछि—"Ambacharita doesnot reveal his great powers so ably displayed in his invaluable Muktaka poems and has only the charm of some patriotic description of Mithila in it."

अम्बचरितके दू भागमे समाप्त करबाक कविक कल्पना छलनि, किन्तु मैथिलीक दुर्भाग्यसँ एकर उत्तरार्ध तैयार नहि भऽ सकल। किंतु जतबे अंश अछि, से मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक।

संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे अम्बचरितक महत्त्व सामाजिक जीवनक विभिन्न पक्षक आदर्शक निर्वाह लऽकऽ अछि, सहजे उमड़ैत भाषाक प्रवाह लऽकऽ अछि, मिथिलाक विशिष्ट आचार-विचारक प्रतिष्ठापन लऽकऽ अछि, एहि ठामक विधि-व्यवहारक उत्कर्ष-दर्शन लऽकऽ अछि, एतष्क पवित्र उर्वर भूमि आ मनोरम प्रकृतिक अनुपम छटाक चित्रण लऽ कऽ अछि, मैथिल सभ्यता आ संस्कृतिक वैभव-वर्णन लऽकऽ अछि तथा पात-पातपर छिड़िआयल बात-बातमे सूक्ति-सुमनक सौरभ लऽकऽ अछि।

अलंकार-दर्पण हिनक दू भागमे प्रकाशित अछि, एक भाग शब्दालंकारक, दोसर भाग अर्थालंकारक। एहिमे अलंकारक परिभाषा दैत, ओकर लक्षण कहैत, सटीक उदाहरण देल गेल अछि। एहिमे ठाम-ठाम गद्यक प्रयोग सेहो भेल अछि। विषयके ततेक सहज पद्यमे बुझाओल गेल अछि जे अलंकार सन कठिन विषय पाठकके एकदम बोधगम्य भऽ जाइछ।

मिथिलाक सुच्चा लोकोक्तिसभ, यथा घरमे मुसरा खीचथि दण्ड, फररिक खम्हपर सितुआ चोख, सभसँ घुड़िबक दीनानाथ, आदिक माध्यमे कविवर जे-जे शिक्षा देने छथि अथवा अपन समाजक कुसंस्कार दिस इंगित करौने छथि, तकर जोड़ कतहु नहि भेटैछ।

'लोकलक्षण'मे पुरुष आ स्त्री दुनूक फराक-फराक स्वभावजन्य भेदक अद्भुत चित्रण करब कविवरक असाधारण प्रतिभाक द्योतक थिक। स्वभावसँ नीक आ अधलाह पुरुष आ महिलाक जे शारीरिक लक्षण उपस्थित कयने छथि ई लोकलक्षणमे, ओहिमे भाव आ भाषागत चमत्कारक भण्डारे निहित अछि। हिनक एक प्रसिद्ध पद अछि, जाहिमे ई शंखिनी नारीक विलक्षण चित्र अंकित कयने छथि—

केश छत्ता जकाँ, माथ हत्त जकाँ,
आँखि खत्ता जकाँ, दाँत फारे बुझू
बोल रोड़ा जकाँ, चालि घोड़ा जकाँ
पेट मोड़ा जकाँ, वा खारे बुझू
छूति नेल जसँ, संग कैपाजसँ
नित्य सत्काजसँ तँ उधारे बुझू
राक्षसी ढंग टा सँ करय ढंग टा
शंखिनी संग टा तँ संहारे बुझू

मैथिलीक प्रति हिनक भक्ति समक हेतु अनुकरणीय थिक। मातृभाषाक विरोधीके ई कोनो रूपे सहय नहि कऽ सकैत छलाह। हिनक निम्नलिखित प्रसिद्ध उक्ति एक समयमे मिथिलाक घर-घरमे लोक-जिह्वापर विराजमान छल—

पढ़ि-लीखि जे न बजैछ हा निज मातृभाषा मैथिली
मन होइछ झटुकीसँ तकर हम कान दुनू ऐंठि ली
एहना कपूतक जीह छाउर लेपि सट दऽ खींचि ली
पर खेद जे अधिकार ई हमरा ने देलनि मैथिली

ई अपन जीवनक अधिक आ महत्त्वपूर्ण भाग वाराणसीमे व्यतीत कयलनि तथा गंगाक पवित्र जलसँ अपन तन-मनके अभिषिक्त करैत रहलाह। हिनक गंगा-महिमाक निम्न पंक्ति भक्ति-भावनाक दृष्टिएँ तँ सहजहिँ जे भाषाक प्रवाहोक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि—

जा धरि जह्नुसुता जगमे छथि
ता धरि राग-विराग बराबरि
पुन्न करू अथवा कर पाप
दुहू विधि पायब भाग बराबरि
जे पद देवहुके छल दुर्लभ
जे छल लाख सुयाग बराबरि
सम्प्रति दिव्य धुनी-तटमे अछि
से पदबीसब साग बराबरि

मैथिलीक ओजपूर्ण काव्यक सर्वश्रेष्ठ बानगीमेसँ कविवरक निम्नलिखित पद्यके राखल जा सकैछ—

गंगा-पथ रुद्ध सुनि क्रुद्ध मिथिलेश उठि
कैल प्रण जँ न दुष्ट-गौरव दहावी हम

युद्ध-जीत आंदिक अशुद्ध मत खण्डन कऽ
शुद्ध धर्म-मार्ग जँ न देशमे गहाबी हम
वीर बनि चंगा ठानि कालहुसँ दंगा
जँ न निर्मल तरंगा-नीर देशमे बहाबी हम
धारि पाग-श गा तौं न आबी दरभंगा
जौं न लाबी फेर गंगा तौं न भूपति कहाबी हम

मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति भक्तिक उमड़ैत भाव तथा प्रचलित ठेठ भाषाक उच्छल-उज्वल तरंग जेहन हिनक हृदय आ लेखनीमे छल, से आन ठाम देखबामे नहि अबैछ। १९३६ ई० मे मैथिली साहित्य परिषदक मुजफ्फरपुरक छठम अधिवेशनमे कविसम्मेलनक अध्यक्ष-पदसँ देल गेल पद्यबद्ध भाषण हिनक मनक भाषा आ कलमक जादूकेँ साकार करैत अछि। तकर एक अंश द्रष्टव्य—

पाबि मनुष्यक देह रहब जा घाड़ खसौने
बनि कातर पुनि अपन पूर्वजक नाम हँसौने
तावत दुस्मन दशो दिशासँ रहत दबौने
सुख स्वतन्त्रता हेतु रहब एहिना मुँह बौने
पायब किछु अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ?
अछि सलाइमे आगि, बरत की बिना रगड़ने ?
बिसरय जे निज रूप तकर जगमे की सेखी ?
बकरिक डरेँ पड़ाय सिंह, रकसमे देखी

किछु आलोचकक आरोप अछि जे हिनकामे राष्ट्रिय चेतना (अखिल भारतीय स्वरूप)क अभाव अछि, किन्तु ई आरोप तथ्यपरक नहि अछि। ई सत्य जे कविवर राजनीतिक घटना-क्रमसँ अपनाकेँ उदासीन रखलनि, मुदा स्वतंत्रताक बाद जखन भारतक अंग-भंग होबऽ लागल, शत्रुक खूनी पंजा भारतमाताक देह नोछड़ऽ लागल, तखन देशक सपूत कवि कोना चुप रहि सकैत छल, ओ दहाड़ि उठल—

युवक सुधीर ! तीर-धनुष उठाउ, उठू
शीघ्र सीमावर्ती शत्रु-सैनिककेँ मोड़ि दियऽ
भीति तजू कालहुसँ नीति अपनाउ नव
प्रीतिभाव रीति आब दुर्जनसँ छाड़ि दियऽ

कविवर मातृभाषाक अर्चनामे जे भक्तिक पुष्पहार चढ़ौलनि से ककरो आनक फुलबारीक फूल तोड़िकऽ नहि, अपितु अपन उर्वर हृदय-भूमिमे लगाओल गेल काव्य-उपवनक भकरार फूलकेँ गाँथि-गाँथि कऽ। मैथिलीक गरदनिमे सुशोभित कविवरप्रदत्त हारसँ मैथिलीक शोभा-विस्तार भेल अछि तथा ओहि सुमनक अपूर्व सुवाससँ सम्पूर्ण मैथिली साहित्य महमहा उठल अछि। संक्षेपमे, "प्राचीन एवं नवीन विचारधाराक संघर्ष हुनक कविताक मुख्य स्वर रहल अछि तथापि समाज-राज, व्यष्टि-समष्टि, लोक-परलोक, नीति-धर्म, संस्कृति-सभ्यता, आचार-विचार आदि जीवनक प्रायः सभ पक्ष हुनक कविताक विशाल पाटमे सन्हिया गेल अछि।" मैथिलीक नवीन काव्यक आधार-स्तम्भ तँ ई छथिहे, संगहि आधुनिक नवीन काव्यक सर्वाधिक समर्थ हस्ताक्षर श्री यात्रीकेँ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा देलनि, ताहू लऽकऽ विशेष श्रद्धास्पद छथि।

❑

बदरीनाथ झा

संस्कृत साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान पण्डित बदरीनाथ झाकेँ हिनक विलक्षण कवित्व प्रतिभाक कारणे 'कविशेखर'क उपाधिसँ विभूषित कयल गेल छलनि। संस्कृतमे हिनक मौलिक, टीका ओ संपादित ग्रन्थक संख्या बीससँ ऊपर अछि, जाहिमे 'राधा-परिणय' महाकाव्यक स्थान विशिष्टतम अछि। मैथिलीमे ई बहुत थोड़ लिखलनि। मैथिलीक हिनक एकमात्र मौलिक कृति अछि 'एकावली-परिणय' महाकाव्य। किंतु, यैह एकमात्र कृति हिनक कीर्ति केँ अक्षय बना देने अछि। एकर अतिरिक्त ई 'मैथिली गीत-रत्नावली' नामक पोथीक सम्पादन-प्रकाशन कयने छथि, जाहिमे विद्यापतिसँ लऽ कऽ आधुनिक कालक कविक परम्परागत शैलीक गीतक संकलन कयल गेल अछि। एहिमे प्राचीन कालक किछु कविक रचनाक ई स्वयं अनुसन्धान कयने छलाह। ई कृति हिनक अनुसन्धान-क्षमतासँ सेहो अवगत करबैत अछि। स्फुट रचना हिनक गनल-गुथल अछि।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक सरिसवपाही नामक गाममे खौआल (खौआड़) वंशक सिमरवार शाखाक काश्यप गोत्रीय कुलमे १२ जनवरी १८९३ ई०केँ बृहस्पति दिन भेल छलनि। ई साहित्यक अत्यन्त मेधावी छात्र छलाह, बादमे अपन विषयक दिग्गज विद्वान भेलाह। ई मुजफ्फरपुरक धर्मसमाज संस्कृत कालेजक साहित्य-अध्यापकक पदकेँ बहुत दिन धरि अलंकृत कयने रहलाह। मैथिलीक एहि युगक विख्यात कविलोकनि यथा सुमन, मधुप, मोहन आदि हिनक शिष्य छलथिन। हिनक मृत्यु ४ नवम्बर १९७३ ई० केँ काशीमे भेलनि।

एकावली-परिणय—मैथिलीक ई पहिल प्रकाशित महाकाव्य थिक। एकर स्थान मैथिली साहित्यमे शीर्षस्थ अछि। एकर सर्वप्रथम धारावाही प्रकाशन प्रो० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित 'साहित्य-पत्र'मे भेल छल तथा पुस्तकाकार प्रकाशन १९४२ ई०मे राजप्रेस, दरभंगासँ भेल। एहिमे संस्कृत-काव्यशास्त्रक अनुसार महाकाव्यक प्रायः सभ विशेषता एकहि ठाम भेटि जाइछ। "हिनक एहि महाकाव्यकेँ देखि समीक्षकलोकनि हिनका मैथिलीक 'माघ' कहैत छथि आ वास्तवमे संस्कृत साहित्य मध्य 'शिशुपाल-वध'क जे महत्त्व अछि, मैथिली मध्य एकावली-परिणय ओही स्थानक अधिकारी अछि।"

एहि महाकाव्यक विषय-वस्तु देवीभागवतक छठम स्कन्धसँ लेल गेल अछि। एकर नायिका एकावली छथि तथा नायक छथि एकवीर। हुनक परिणयक कथा एहि ग्रंथक प्रतिपाद्य विषय थिक। "कथावस्तु पुत्रहीन राजा तुर्वसुक घनघोर तपस्यासँ प्रारंभ होइछ। तपस्यासँ प्रसन्न भऽ विष्णु दर्शन दैत छथिन तथा एकवीर नामक शिशु प्रदान कऽ हुनक पुत्र-प्राप्तिक कामनाकेँ पूर्ण करैत छथि। तुर्वसुक मृत्युक पश्चात एकवीर पिताक राज्य-सिंहासन ग्रहण करैत छथि। हुनक यशोमती नामक एक सुन्दरीसँ परिचय होइत छनि। हुनकासँ अपन सखी एकावली (रैभ्यराजक पुत्री) नामक सखीक रूप-गुणक वर्णन करैत छथि जनिका जलक्रीड़ा करैत काल कालकेतु नामक एक दैत्य द्वारा बलपूर्वक अपहरण कऽ लेल गेल छल। एकावलीक रूप-गुणकेँ सुनि कऽ एकवीर विमुग्ध भऽ जाइत छथि तथा दैत्यपर आक्रमण कऽ, ओकरा

पराजित कऽ सुन्दरीकें मुक्त करैत छथि। पुनि एकवीर आ एकावलीक परिणय होइत छनि।"

कथानकक प्रवाह एहिमे यद्यपि मन्द अछि, किन्तु वर्णनक विलक्षण छटा पद-पदपर आकृष्ट कऽ लेबऽमला अछि। ई महाकाव्य संस्कृतक पण्डित द्वारा, संस्कृतक रीतिपर, संस्कृत महाकाव्यक टक्करक लिखल गेल अछि, तेँ एकर सम्यक् रसास्वादनक हेतु संस्कृतक प्रचुर ज्ञान रहब आवश्यक अछि। कविक स्पष्ट मत छन्हि जे भाषामे सौंदर्य बिना संस्कृत-रीतिक अनुकरण कयने आबिए नहि सकैत अछि। महाकाव्यक आदिएमे हिनक उद्घोषणा अछि—

जँ जाइनि भावक साम्य सूझि
संस्कृत-काव्यक प्रतिबिम्ब बूझि
तँ करथु सुधीजन समाधान
भाषा-सौंदर्यक गति न आन

वर्णनक चमत्कार ओ भाव-गाम्भीर्यक दृष्टिएँ ई कृति अद्वितीय अछि। एहिमे महाकाव्यक लक्षणक अनुरूप सूर्य, चन्द्रमा, संध्या, राति, भिनसर, अन्हार, छबो ऋतु, तपोवन, नदी, नीति, स्त्री, ब्रह्मचारी गृहस्थ आदिक यथास्थान वर्णन भेल अछि। एकर अतिरिक्त नायक-नायिकाक विप्रलंभ, तकर बाद संयोग शृंगारक शिष्ट-विशिष्ट वर्णन अछि। प्रो० रमानाथ झाक अनुसार "एतेक गोट महाकाव्यमे एहने पनल दू-चारि गोट शब्द भेटत जकर विकृत रूप ई देल अछि, अन्यथा विशुद्ध भाषाक प्रयोगसे छन्दक सभ टा निर्वाह साधारण परिपक्वता प्रदर्शित नहि करैत अछि। कोनहु अलंकारक दृष्टान्त तकबामे एहिसँ बाहर जयबाक काज नहि।"

डॉ० जयकांत मिश्रक अनुसार एहिमे कथाक गति अवरुद्ध अछि। डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मत छनि जे संस्कृतक लक्षण-ग्रन्थक आधार पर जें एकर निर्माण भेल अछि तें से होयब अस्वाभाविक नहि। भाषाक क्लिष्टताकें स्वीकार करितो डॉ० 'श्रीश' कहैत छथि "मुदा जाहि ठाम ओ कथा कहए लगैत छथि, ताहिठाम हुनक भाषा सहज ओ सरल मनबोधक भाषाक प्रवाह ग्रहण कए लैत अछि।" हिनक भाषाकें मनबोधक भाषाक संग तुलना करब समीचीन नहि लगैत अछि। दुनू दू वर्गक भाषा थिक। मनबोधक पाँती जतऽ अपढ़ो स्त्री-पुरुषक कंठमे विराजमान छल, ततऽ हिनक पाँती, जे गंभीर विद्वान नहि छथि, हुनक कंठमे तँ नहिए अँटकि सकैत छनि। हिनक पद्यमे सुसंस्कृत भाषाक जे परिपक्वता दृष्टगत होइछ से अवश्य अपन भाषाक धरोहरि अछि।

हिनक वर्णन-चमत्कारक किछु दृष्टान्त एतऽ प्रस्तुत अछि। एकावलीक भहुँक मनोरम वर्णन करैत कवि कहैत छथि जे कामदेवकें एकावलीक सौंदर्यकें देखि अपन धनुष रखब निरर्थक बुझना गेलनि। तें, ओ ओकरा दू खण्ड कऽ फेकि देलनि। धनुषक वैह दुनू खण्ड हिनक दुनू आँखिक भहुँ भऽ गेल—

रैभ्यसुता-सौन्दर्य अनिर्वचनीय निरखितहिं
मदन धनुष रखबाक प्रयोजन मानल किछु नहि
फेकल कए दुइ खण्ड विश्वकें जानि वशीकृत
सैह भेल भ्रू-युग्म तनिक पुनि भालमूल धृत

ताहिना, सातम सर्गमे वसन्त-वर्णन ओ एकवीरक सुन्दरताक वर्णन एक संग चलैत अछि। एक पदमे वसन्त-वर्णन होइत चलैत अछि तँ ओकर बादक पदमे एकवीरक अंग-वर्णन। एकवीर नरराज छथि, वसन्त ऋतुराज अछि। एकवीर जहिना यौवन-सौन्दर्यक, विलास-शृंगारिक, उत्साह-उमंगक प्रतीक छथि, तहिना वसन्त सेहो अछि। तें, दुनूक संग-संग, एक रंग, वर्णन कऽ परस्पर साम्य भावक संकेत दऽ, कवि अपन विलक्षण कल्पनाशीलताक परिचय देने छथि। दुनूक समानान्तर वर्णनक एक बानगी द्रष्टव्य—

दछिन पवन झट गमहि आबि पथ सुरभित करइत झारल
हरखि कुसुम-रस बरखि लता तरु मधु-संचार प्रचारल
शोभल कुंकुम-तिलक भालपर लाल युवक-नरपालक
प्रभा-जाल जनु रविक कनक-गिरि-शिखरहिं प्रातःकालक
मलय-समीर धीर भए बहइत युवजन - मानस मोहल
करइत नमित कुसुम-धनु मदनक दहिन-बाहु सम सोहल
चान छान दए कमल मधुप धए विधि प्रति दिन कत सीखल
तखन ताकि आनन-मण्डलमे भ्रूलेखा ध्रुव लीखल

एकवीरक वाल्यकालक वर्णनमे, हुनक संस्कार-वर्णनमे मिथिला-रीतिक पालन कयल गेल अछि। अर्थात्, जहिना एहि ठामक बालककें अन्नप्राशन, नामकरण, कर्णवेध, उपनयन आदि संस्कार होइत छैक, ओही परिपाटीसँ हुनको होइत छनि। एतबे नहि, हुनक एकावलीक संग द्विरागमनो मिथिलेक परिपाटीसँ होइत अछि। एहि वर्णन-विवरणमे मिथिलाक विधि-व्यवहार, रीति-नीति, हास-परिहास, सभ वस्तुक, क्रम-क्रमसँ, प्रामाणिक रूपें, व्यावहारिक ओ शास्त्रीय पक्षपर प्रकाश पड़ल अछि। एतबे नहि, टोना-टापरक उल्लेख सेहो भेल अछि—

दुस्सह-दीठि-दोष हरबा लए, माता देव मनाए
राइ जमाइनि देल बघनहा, हैंठा सुइ पहिराए
जानल अपन बुझल अनकहुसँ, जत टोना परकार
रक्षा-हेतु सुतक से सभ टा, कएलन्हि बारम्बार
चाउर सोन निहुछि ढाकन भरि, रानी देथि लुटाए
साँझहि चौमुख दीप प्रदक्षिण, करवथि मुखक घुमाए

एहि काव्यक ई विशेषता थिक जे जतेक बेर पढ़ब, नव-नव अर्थक उद्भावना होयत। ई भाव उत्पन्न करब असाधारणे प्रतिभाशालीक सामर्थ्यक सक थिक।

हिनक जतबे-किछु स्फुट पद अछि, से अछि तँ प्राचीन परिपाटीक, मुदा सभ क्लिष्ट नहि अछि। हिनक एक गीत एतऽ प्रस्तुत अछि जाहिमे भाषाक सहजता विशेष रूपें द्रष्टव्य थिक—

के हमरो दुख कहतन्हि रे तन्हि मधुपुर जाए
अशन वसन घर-आंगन रे तनि बिनु न सोहाए
की गोकुल नहि सुन्दरि रे अनुरागिनि नारि
मनमोहन मन मोहल रे कुबजहि सुकुमारि....
पूरत सकल मनोरथ रे तोहर यदुनाथ
धैरज धए रहु गुणवति रे भन बदरीनाथ

□

म० म० उमेश मिश्र

अन्तिम मैथिल महामहोपाध्याय तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रथम कुलपति डॉ० उमेश मिश्र मैथिली साहित्यमे अपन बहु-विध प्रतिभाक परिचय देने छथि। हिनक विविध प्रकारक निबन्धमे मैथिली गद्यक परिपक्व प्रांजल रूपक दर्शन होइत अछि, अनुसंधान-कार्यमे हिनक तीक्ष्ण दृष्टि तथा गंभीर पकड़ ध्यान आकृष्ट करैत अछि, ग्रन्थ-सम्पादन सेहो ई उच्च कोटिक कयने छथि, संस्कृत-साहित्यक मैथिली रूपान्तर तथा विविध उपनिषदक सारानुवाद हिनक उच्चस्तरीय अछि, बाल-साहित्यक रचनामे हिनका दक्षता प्राप्त छलनि तथा वक्ता ई प्रथम कोटिक मानल जाइत छलाह। ई संस्कृतक प्रसिद्ध विद्वान, मैथिलीक उन्नायक तथा अंगरेजीक ज्ञाता छलाह।

ई मधुबनी जिलाक गजहरा नामक निवासी म० म० जयदेव मिश्रक बालक छलाह। हिनक जन्म १८ नवम्बर १८९५ ई० कें भेल छलनि। अपन सुविख्यात पिता तथा म० म० गंगानाथ झाक सम्पर्क-सान्निध्यमे ई विद्यार्जन कयने छलाह। ई १९२३ सँ ५९ ई० पर्यन्त इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृत-प्राध्यापक छलाह। ओही अवधिक अभ्यन्तर किछु दिन ई दरभंगामे मिथिला शोध-संस्थानक निदेशकक पदपर सेहो प्रतिष्ठित भेलाह। १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह। हिनक निधन प्रयागमे १६ मइ १९६७ ई० कें भेलनि। ई मिथिलाक सनातनी विद्वान-परम्पराक अन्तिम कड़ी छलाह।

हिनक प्रसिद्ध पुस्तक अछि—कमला, उपाख्यानमाला, तिरहुता अक्षरक उत्पत्ति आ विकास, विद्यापति ठाकुर (एकर हिन्दी अनुवाद सेहो प्रकाशित अछि)। मनबोध-कृत कृष्णजन्मक ई सम्पादन कयने छथि। एकर अतिरिक्त श्रीकांत गणकक 'श्रीकृष्णजन्म रहस्य नाटक'क सम्पादन डॉ० जयकान्त मिश्रक संग हिनका द्वारा भेल अछि। पुस्तकक अतिरिक्त हिनक किछु भाषण बड़ विख्यात अछि यथा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक घोघरडीहा अधिवेशन (१९३३) मे पठित भाषण एवं मैथिली साहित्य परिषदक छठम अधिवेशन (१९३८ ई०)मे शैली-निर्धारण-समितिक अध्यक्षीय भाषण आदि। एहि सभक अलावे विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अनेकानेक वर्णनात्मक, आलोचनात्मक, अनुसंधानात्मक परिचयात्मक तथा बालोपयोगी निबन्ध अछि।

ई अपन लेखन 'मिथिला मोद'सँ प्रारम्भ कयने छलाह। शुरूमे ई म० म० मुरलीधर झाक शैलीकें ग्रहण कयलनि, किन्तु बादमे ई अपन स्वतन्त्र शैलीक निरूपण कऽ ओकरे व्यवहार करैत रहलाह।

'वटुक'मे हिनक अनेक पौराणिक कथा प्रकाशित अछि, जाहिमे उपनिषदक छओ गोट कथा—नचिकेतोपाख्यान, अष्टावक्रोपाख्यान, अगस्त्योपाख्यान, उपमन्यु उपाख्यान, उत्तङ्कोपाख्यान एवं नलोपाख्यान—क मैथिलीमे अनुवाद 'उपाख्यान-माला'क नामसँ १९६७ ई० मे पुस्तकाकारो भेल अछि। अनुवाद सरस, सरल ओ प्रांजल मैथिलीमे अछि। ई शैलीक प्रमुख निर्धारकमे छलाह। एहि

दृष्टिएँ मैथिली साहित्य परिषदक मुजफ्फरपुर अधिवेशनमे पठित हिनक विद्वत्ता-पूर्ण भाषण शैलीक समस्याकें विस्तारपूर्वक उठाय ओकर तार्किक समाधानक दिशामे एक महत्त्वपूर्ण डेग मानल गेल अछि। वैदेहीमे प्रकाशित मैथिल संस्कृति ओ सभ्यतापर हिनक निबन्धमाला शास्त्रीय आ लौकिक दुनू पक्ष पर सम्यक् विश्लेषणयुक्त हिनक पाण्डित्यक परिचायक तँ थिके जे ओ मैथिलीक आधुनिक सुष्ठु गद्यक सुन्दर नमूना सेहो थिक।

—तहिना, सन् १९३३ ई० में अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक घोघरडीहा अधिवेशनमे पठित हिनक अध्यक्षीय व्याख्यान मैथिली गद्यक उत्कृष्ट रूप तँ प्रदर्शित करिते अछि, संगहि मैथिली-हिन्दी सम्बन्धपर विस्तृत प्रकाश सेहो दैत अछि तथा मैथिलीक स्वतन्त्र अस्तित्वक पक्षमे अकाट्य तर्कसभ सेहो उपस्थित करैत अछि। एहि भाषणसँ हिनका मैथिलीक उन्नेताक रूपमे पर्याप्त ख्याति भेटलनि।

हिनक निबन्धक सम्बन्धमे प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक निम्न मत द्रष्टव्य थिक—"Mm. Umesha Mishra is well known for his style which is serious argumentative, concrete, concise and expository. As a creative writer his essays bear the imprint of his scholarly personality and his contribution to the development of Modern Maithili prose is immense."

गम्भीर निबन्धक अतिरिक्त हिनक किछु एहनो निबन्ध प्रकाशित अछि, जकरा मनोरंजक निबन्ध कहल जा सकैछ। हिनक एहि प्रकारक निबन्धक प्रसंग डॉ० 'श्रीश'क मन्तव्य अछि "डॉ० उमेश मिश्र गम्भीर साहित्यिक शास्त्रीय आलोचनात्मक प्रबन्ध लेखनक अतिरिक्त १९१७हिसँ मनोरंजक निबन्ध लिखिए लगलाह, यथा चोरि-विद्या, शास्त्रार्थ-परिपाटी, कर्त्तव्य प्रभृति निबन्ध। ई निबन्धसभ तर्कपूर्ण ओ व्याख्यात्मक शैलीमे लिखल तथा संक्षिप्तता एवं विचारक उदात्तता एहि निबन्धसभक प्रधान गुण थिक।"

डॉ० जयकान्त मिश्र हिनक निबन्ध-शैलीपर प्रकाश दैत कहैत छथि—"He is happy in building up long sentences rolling with copious details homely and philosophical in the same birth, diffuse and concreate, elevated and grand eloquent." संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे मैथिलीमे जे किछु निबन्धकार भेल छथि, ताहिमे म० म० उमेश मिश्रक स्थान अग्रगण्य अछि।

हिनक अनुसन्धान-विषयक रुचि विद्यापतिपर रचित हिनक पुस्तक तथा कृष्णजन्मक भूमिकामे देखबामे अबैत अछि। मैथिली साहित्यक काल-विभाजन, विद्यापतिक समय-निरूपण तथा मनबोध एवं कृष्णजन्मपर हिनक मौलिक विवेचन हिनक उक्त क्षेत्रमे गम्भीर चिन्तनकें सूचित करैत अछि।

जहिना एक दिस ई दर्शनशास्त्रीय तथा विवेचनामूलक निबन्ध लिखबामे दक्ष छलाह, तहिना कोमलमति बालकक निमित्त उपदेशात्मक निबन्ध सोझ-साझ भाषामे लिखबाक क्षमता सेहो रखैत छलाह। धर्मशास्त्रक ई उद्भट विद्वान छलाह। १९६२ ई० मे मलमास लऽ कऽ पण्डित-समाजमे भीषण विवाद पसरि गेल;

छलाह । ओहि समयमे हिनक विचार अनेक क्षेत्रमे मान्य भेल । ई तद् विषयक एक गोट पोथी सेहो मैथिलीमे प्रकाशित करौने छलाह ।

डॉ० जयकान्त मिश्र हिनक गद्यक उत्कृष्टताक उल्लेख करैत कहैत छथि—"महामहोपाध्यायजी अपन वैज्ञानिक ओ ऐतिहासिक गद्य शैलीमे परिपक्वता प्राप्त कऽ जे लिखऽ लगलाह से विशुद्ध काव्य भेल एवं गम्भीर मैथिली गद्य अपना ढंगक चरम सीमापर पहुँचि गेल । देशदशा, ऋतु-वर्णन (शिशिर, ग्रीष्म) आर आनन्द पर जे हुनक निबन्ध सभ अछि से कोनो गद्य-लेखकक हेतु गौरवक वस्तु थिक ।"

एतऽ 'आनन्द स्वरूप-निरूपण' नामक निबन्धक एक अंश द्रष्टव्य, जकर गद्य 'कादम्बरी-दशकुमारचरितक तुल्य' बुझि पड़ैत अछि—

"कविक अलौकिक प्राकृत जगतमे दू प्रकारक पदार्थ अछि—एक, चंचल अर्थात् शीघ्र परिवर्तनशील, दोसर आपेक्षिक स्थिर । एही दुनू प्रकारक वस्तुकए आधार मानि अधिक काल कवि कविता करैत छथि । जेना—पछिला पहर रातिक समयमे पसर चरएबाक हेतु चरबाहक निद्राभंग, शारीरिक सुख कए दूर कए अपन परिश्रमसँ जीविका चलौनिहारक, कर्मनिहारिक जातपरक लगनीक मधुर गान क्रमशः प्रकाश क्षीण होइत दीपकेर टिमटिमाइत इजोत—शाइक निद्राभंग करबामे पटु स्तनधन्यक कानब, टिम-टिमाइत जोतिएँ जागल लोकक उपकार करबामे असमर्थ तारागणक लाजेँ क्रमिक मुँह झाँपि लेब, अवस्थाविशेषमे मणिमय आभूषण सभकेँ कात कए प्राकृतिक सौन्दर्यकेँ प्रस्फुटित करैत कुलांगनाक निर्व्याज शरीरक शोभाक समान अपूर्व दृश्य धारण कएने आकाश, चतुर्दिक्षु शान्तिमय नीरव प्रकृतिक निरवच्छिन्न विस्तार, अनन्त प्रवाहक लीलामे निरत नदीक कलकल नाद, स्वच्छ सुगन्धित समीरक मन्द-मन्द संचार, पतिक विरहमे ओस बिन्दुक व्याज, कुमुदिनीक नीरव नोर खसाएब, क्रमशः रजोगुणक प्रकृतिमे उथल-पुथल होएब, चिड़ैक चंचलता ओ चहचहाएब इत्यादि प्रातःकालिक दृश्य ।"

ई सनातनी विचारधाराक प्रति कट्टर छलाह । मिथिलाक आचार-विचार तथा संस्कृति-सभ्यताक प्रबल पक्षधर छलाह । किन्तु, प्रगतिक तेँ विरोधी नहि छलाह । पाश्चात्य सभ्यताक सभ वस्तुकेँ, प्रत्येक विधानकेँ ई हेय नहि बुझैत छलाह । ई सूटो पहिरैत छलाह आ ताहिपर तौनी आ पाग सेहो धारण करैत छलाह । ई स्वयं अंगरेजियोक विद्वान छलाह तथा अपन पाँचो बालककेँ अंगरेजिएक शिक्षा दियौलनि । एहिसँ हिनक प्रगतिवादी विचारधाराक प्रति आकर्षण स्पष्ट होइत अछि । वस्तुतः ई दुनू धाराक बीच सेतु छलाह । मिथिलाक शास्त्रार्थी विद्वान परम्पराक सेहो ई प्रायः अन्तिम कड़ी छलाह ।

मैथिलीक श्रेष्ठ उन्नायकक रूपमे म० म० डॉ० उमेश मिश्र सदा स्मरणीय रहताह ।

□

भोला लालदास

कोनो व्यक्तित्व एहन होइछ जे एकान्त साहित्य-साधना कऽ अपन नामकेँ इतिहासक पन्नामे सुरक्षित करा लैछ । एकर विपरीत, एहनो किछु व्यक्तित्व अवश्य होइछ जकर संघटन-क्षमता, कर्मठता ओ नेतृत्वक प्रसादात् भाषा-साहित्यमे गति आबि जाइछ । भावी पीढ़ी ओकरो नामकेँ श्रद्धाक उच्चासन पर स्थान दैछ । बाबू भोला लालदास एही कोटिक महापुरुष छलाह, यद्यपि ओ साहित्य-सर्जनाक क्षेत्रमे सेहो ख्यात छलाहे ।

हिनक जन्म माघ कृष्ण त्रयोदशी शुक्र, सन् १३०१ साल, अर्थात् १८९७ ई० मे दरभंगा जिलाक कसरौर गाममे भेल छलनि । बी० ए०, बी० एल० कऽ ई ओकालतिक सम्मानीय पेशाकेँ अपनौलनि । अपन पेशाक व्यवितगत चिन्तासँ अधिक हिनका मैथिलीक सर्वतोमुखी विकासेक चिंता रहैत छलनि । एही चिन्तामे ई जीवन पर्यन्त लागल रहलाह । मैथिलीक एहि दधीचिक निधन २८ मइ १९७७ ई० केँ लहेरियासराय स्थित अपन निवास-स्थानपर भऽ गेलनि ।

हिनक व्यक्तित्वक आन्दोलनात्मक पक्षपर विचार करैत काल हिनक प्रगतिवादी विचारधारा, उदारवादी दृष्टिकोण एवं मैथिलीक प्रति समर्पण-भावनापर दृष्टि देब आवश्यक भऽ जाइछ ।

मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल हिनक जीवन समर्पित छलनि । पंघसँ पैघ विरोधीकेँ मुँहतोड़ उत्तर देनिहार हिनकासन थोड़ लोक भेलाह । मैथिलीक प्रश्न पर पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति डॉ० सच्चिदानन्द सिंहक संग हिनका विवाद भऽ गेलनि आ हुनक इच्छाक विरुद्ध सुनियोजित, सुसंघटित तथा न्यायोचित प्रयत्नक फलस्वरूपे उक्त विश्वविद्यालयमे १९३९ ई० मे मैथिलीक स्वीकृति भेटि सकलैक । विद्यालय-स्तरमे मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षा प्रदान करबाक ई बीड़ा उठौलनि । एहि लेल मैथिलीमे विद्यालयोपयोगी पुस्तकक निर्माण सेहो हिनका करऽ पड़लनि । अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगाक संस्थापक-मण्डलमे ई अग्रगण्य छलाह तथा १९३१ सँ ४० ई० धरि ओकर प्रधान मंत्री रहलाह । मैथिली साहित्य परिषदक ओ आरम्भिक दस वर्षक अवधि विभिन्न कार्य-कलापक हेतु तेँ स्मरणीय अछिए जे ओकर बादोक कार्यविधिक भूमिका तैयार करबामे ओहि अवधिक नेतृत्व उल्लेखनीय अछि, आ तकर विशेष श्रेयक अधिकारी बाबू भोला लालदास थिकाह ।

ई नवीन आ प्रगतिशील विचारक लोक छलाह, तकर प्रमाण कुशेश्वर कुमर तथा हिनक संयुक्त संपादनमे प्रकाशित 'मिथिला'क निम्नलिखित टिप्पणीसँ भेटि जाइछ—

'कुमर' पुरातन नीति-निरत छथि 'दास' नवीन समाजी
अछि आशा दुनू-दुनूकेँ सब विधि रखता राजी
ओहि 'मिथिला'क नीति कतेक उदार छलैक, ओकर सम्पादक-द्वयमे कतेक

...विचारवल छलाह, से निम्नलिखित पाँतीसँ झलकैत अछि—

> ...ती-प्रतिवादी हुनक हम खंडन मंडन छापब
> उचित दोष-गुण जे क्यो लिखता नहि तकरा हम झापब

एकर अनन्तर, ई मैथिली साहित्य परिषदक अपन मंत्रित्व कालमे 'भारती' (१९३७) नामक पत्रिकाक सेहो प्रकाशन कयलनि। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे एहि दुनू पत्रिकाक विशिष्ट स्थान अछि तथा एकर प्रेरणादायक, उद्बोधक संपादकीय टिप्पणी अपन साहित्यक अमूल्य निधि भऽ गेल अछि।

'मिथिला'क एक अंकमे ओकर ग्राहकतापर जोर दैत भोला लालदास मैथिल-मानसकेँ कोना झकझोरबाक चेष्टा कयने छथि, से देखबायोग्य अछि—"अनेक शिक्षित व्यक्ति एखन धरि कौंसिल, डिस्ट्रिक्टबोर्ड, लोकल बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड आदि कोन संस्था थिक, चुनाव अथवा भोट कोन वस्तु थिक, देश तथा प्रान्त कोन दिस जाय रहल अछि, हमरा लोकनिक दीनावस्थाक वास्तविक कारण की थिक आदि—साधारणसँ साधारण विषय नहि जनै छथि। एहि विभीषिकाकेँ हम कहिया धरि सह्य करैत रहब? यदि महाराजाधिराज मिथिलेशक ध्यान एहि दिशि आकृष्ट नहि होइन्ह तँ की देशो तेहने कूपमंडूक भै जाएत? की एही प्रकारेँ मिथिला भारतवर्षक राष्ट्र-निर्माणमे भाग लेत? बहुत अतिकाल भेल। कहाँ तँ एक कोटि मिथिला भाषा-भाषी आओर कहाँ 'मिथिला'क एको हजार ग्राहक नहि! की एतबाक दिनमे ई देश तथा समाजक किछु सेवा नहि कैलक अछि? की एकरा सहयोगसँ किछु उपकारक सम्भावना नहि? मिथिलाक ग्राहक-संख्ये एकर उत्तर देत।"

जाहि समस्याकेँ ई १९३० मे ठाढ़ कयलनि, से आइ धरि समस्ये बनल अछि। स्थितिमे एतबा परिवर्तन अवश्य आयल अछि जे ताहि दिन ई समस्या एक करोड़क बीच छल, आइ चारि करोड़क बीच अछि। किन्तु, एतऽ द्रष्टव्य थिक लेखकक भाषा-शैलो, हिनक चिन्तन-शैली तथा हिनक एहि प्रदेशक द्रुत प्रगति लेल आतुरता-आकुलता।

प्रो० हरिमोहन झाक सुविख्यात उपन्यास 'कन्यादान'क प्रणयनक पाछाँ हिनके मुख्य प्रेरणा छलनि तथा सर्वप्रथम यैह ओकर किछु आरम्भिक अंश अपन 'मिथिला'मे प्रकाशित कयलनि।

नव-नव लेखकके तैयार करबाक काज, निबन्ध-टिप्पणी लिखिकऽ जनसाधारणमे जागृति अनबाक काज, सुरुचिपूर्ण विचारोत्तेजक रचना-चयन करबाक काज तथा शैलीक एकरूपतामे सक्रिय योगदान देबाक काज हिनक परिपक्व संपादन-कौशलक परिचायक थिक। वस्तुतः ई मैथिलीक महान सम्पादक भेलाह। मैथिलीक व्याकरण-लेखनक जटिल काज सेहो ई कयलनि। गद्यकुसुमांजलि नामक एक गोट संग्रहक संकलन-प्रकाशन हिनका द्वारा भेल। एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल कतेक निबन्ध होयत, तकर लेखा नहि अछि। मैथिलीमे ज्ञान-साहित्यक निर्माणक क्रममे नवीन मोडेलपर चारि भागमे 'मैथिला साहित्य लहरी'क लेखन-प्रकाशन ई कयलनि। मैथिलीमे बाल-साहित्यक एखनो कमी अछि। ताहि समयमे एकर आवश्यकताक अनुभव कऽ रिक्त भण्डारकेँ भरबाक हिनक ई काज स्तुत्य अछि।

ई कवि सेहो छलाह। हिनक काव्यमे ओजगुणक प्रधानता पाओल जाइछ। कथ्यक स्पष्टता, भाषाक प्रभाव, छन्दक परिपक्वता तथा शब्द-संयोजनक चमत्कारक

दृष्टिएँ हिनक 'युवक' शीर्षक कविता महत्त्वपूर्ण अछि—

> भूमिकम्प छी प्रबल विश्व-विप्लवकारी हम
> छी अति प्रखर तरंग रूढ़ि गिरि रजकारी हम
> दावानल प्रज्वलित-दासता क्षयकारी हम
> झंझानिल सम छी स्वतन्त्रता-रवकारी हम

ई किछु भक्ति पदक रचना सेहो कयने छलाह। एक टा महाकाव्य लिखबाक योजनो ई वृद्धावस्थामे बनौने छलाह—जकर प्रायः किछु अंश लिखनहुँ छलाह।

हिनक छिटफुट निबन्धमे संस्मरण आ जीवनी-साहित्य बड़ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण जे ओहि सभ निबन्धमे मैथिलीक विभिन्न समस्याक दिग्दर्शन, मिथिलाक विभिन्न विभूतिक योगदानक मूल्यांकन, आन्दोलनक विभिन्न स्वरूपक चित्रण तथा आगामी योजनाक निर्धारण स्पष्ट कयल गेल अछि।

ई मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यकेँ किछु मूल्यवान वस्तु देलनि, किन्तु जतबा दऽ सकैत छलाह, से नहि दऽ सकलाह। डॉ० रामदेव झाक शब्दमे "दुर्भाग्य यैह जे एहि प्रकारक रचनात्मक साहित्यक रचना अधिक नहि कऽ सकलाह। नहि कऽ सकलाह ताहिमे पैघ कारण अछि जे ओ छलाह आन्दोलनी। जीवन भरि आन्दोलनमे लागल रहलाह। आंदोलनीकेँ एतेक पलखति कहाँ जे कल्पना-लोकमे विचरण कऽ कऽ रचनात्मक साहित्यक सृष्टि कऽ सकय, ओ तँ यथार्थक धरातलपर जिबनिहार छलाह, चलनिहार छलाह। यथार्थ, मैथिलीक यथार्थ, मैथिलीक भविष्य हुनक चिरन्तन सत्य छलनि। समस्त समय, श्रम, बुद्धि, वयस खर्च भऽ गेलनि मैथिलीक हेतु दौड़-धूप, आयोजन-संयोजन, खंडन-मंडन, आक्रमण-प्रत्याक्रमणमे। जे व्यक्ति मैथिलीक हेतु अपन जीविका, परिवारसँ निरपेक्ष भऽ गेल से रचनात्मक साहित्य दिस सक्रिय सापेक्षता नहि देखा सकल तँ कोन आश्चर्य!"

हिन्दीमे सेहो ई लिखलनि। तत्कालीन सुप्रसिद्ध पत्रिका 'चाँद'मे हिनक लेखमाला हिन्दी-जगतमे चर्चित-प्रशंसित भऽ चुकल अछि। किन्तु, बादमे हिन्दी लिखब छोड़ि देलनि आ मैथिलीक एकान्त सेवक भऽ गेलाह। हिनक दीर्घ जीवन मिथिला-मैथिलीक एकटा अविस्मरणीय इतिहास थिक। डॉ० श्रीश'क हिनक सम्बन्धमे कहल ई उक्ति अक्षरशः सत्य अछि—"दासजी कोनो उच्च कोटिक पुस्तकक रचना नहि कयल जे स्थायी महत्त्वक वस्तु मानल जा सकय, परन्तु हुनक उच्च कोटिक स्थायी वस्तु अछि मैथिली साहित्योन्नतिक आधारशिला जकर निर्माण ओ कयल अपन रक्त-प्रस्वेदसँ सानल अपन साधनाक चून-सुर्खीसँ, अपन अक्षय परिश्रमक पजेबासँ। मैथिलीक हेतु कयल हुनक संघर्ष, हुनक त्याग, हुनक आत्मबलिदान, सैह हुनक सेवा थिक, जे आब इतिहास तँ अवश्य भऽ गेल अछि परन्तु जे सतत मैथिली साहित्योन्नतिक प्रेरणा देत।" मैथिलीक वर्तमान पीढ़ी बाबू भोलालाल दासमे अपन ओहि इतिहासकेँ जगमगाइत पर्वत रहल अछि जकर प्रभा विकीर्ण करैत एक-एक मणिमाणिक्य स्वदेशक सम्मान आ मातृभाषाक उत्थानक प्रति कोनो सम्पूर्ण समर्पित व्यक्तित्वक कर्त्तव्यक औजारसँ तरासल छैक, जकर एक-एक अलंकरण कोनो दधीचि-सदृश तपस्वीक हड्डीसँ निर्मित मंजूषामे सजायल छैक।

□

गंगानन्द सिंह

कुमार गंगानन्द सिंहक नाम आधुनिक मैथिली कथाक अधिष्ठातागणमे आदरक संग लेल जाइछ। हिनक 'उपन्यास' अगिलही मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि बनि गेल अछि। राजकुलमे जन्म ग्रहण कऽ कुमार साहेब जाहि रूपमे सकल साधारणक आत्मीय भऽ गेलाह, तकर दोसर उदाहरण आधुनिक कालमे भेटब दुर्लभ अछि। श्रीनगर (पूर्णियाँ)क ई राजकुमार केवल अपन सीमित राज-काजमे नहि ओझरायल रहलाह, अपितु राजनीतिक, साहित्यिक आ शैक्षणिक क्षेत्रोमे अपन अमिट व्यक्तित्व आ कृतित्वके छोड़ि गेलाह। कथा, उपन्यास तथा एकांकी लऽकऽ हिनक नाम मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहासमे स्थायी भऽ गेल अछि।

हिनक जन्म २४ सितम्बर १८९८ ई०कें भेल छल। कलकत्ता विश्वविद्यालयक ई एम० ए० छलाह। सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्रमे बिहारमे हिनक उच्च आ सम्मानित स्थान छल। ई बिहार सरकारक शिक्षामंत्रीक पदकें सेहो अलंकृत कयलनि। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति सेहो हिनका बनाओल गेलनि। ओहिसँ पूर्व महाराज कामेश्वर सिंहक आप्त सचिवक रूपमे मिथिला आ बिहारक ई विशिष्ट सेवा कयलनि। हिनक निधन १७ जनवरी १९७०कें भेलनि।

ई १९१७ सँ मैथिलीमे लिखब शुरू कयलनि। यद्यपि मात्राक हिसाबें ई थोड़ लिखलनि, किंतु साहित्यक विभिन्न विधापर हिनक लेखनी चलल। 'मोल' छद्मनामसँ लिखल हिनक 'मनुष्यक मोल' कथा, जे १९२४मे प्रकाशित भेल, मैथिलीक आरम्भिक कथामे अबैत अछि। एकर बाद विवाह, पंडित-पुत्र, पंचपरमेश्वर, आमक गाछी आ बिहाड़ि—ई पाँच गोट कथा हिनक प्रकाशित भेल। 'प्रारम्भिक युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकें आधार बनाकऽ सुधारवादी दृष्टिक परिचय हिनक कथामे भेटैत अछि। एही भाव-भूमिपर हिनक एकांकी 'जीवन-संघर्ष' सेहो अछि। यद्यपि हिनक यैह एकमात्र एकांकी अछि, किंतु एकर शिल्प-शैली हिनक कथा-कौशलक, तथा एकर विषय-वस्तु हिनक सुधारवादी दृष्टिकोणक सम्यक् परिचय दैत अछि। 'अगिलही' हिनक सर्वोत्तम कृति थिक, जे अछि तँ उपन्यास, मुदा खंडित अछि, किंतु जतबे अछि जे मैथिलीक अनमोल निधि अछि।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा हिनक पाँचो कथा ओ अगिलहीकें अपन सम्पादनमे 'अगिलही एवं अन्य कथा'क नामसँ १९६६ ई० मे प्रकाशित करौलनि। ओकर भूमिकामे हिनक कथापर अपन मन्तव्य दैत डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा कहैत छथि—"रुचि-संस्कारक संगहि, रूप-परिष्कारक दृष्टिएँ, मैथिली कथा-साहित्यमे कुमार साहेबक योगदान महत्त्वपूर्ण छनि। कुमार साहेब जाहि दिनमे कहानी लिखब प्रारम्भ कयलनि ताहि दिनमे, मैथिलीमे उपन्यास ओ कहानीक अन्तर स्पष्ट नहि भेल छल। परन्तु हिनक 'मनुष्यक मोल'मे नूतन शिल्प-प्रयोग दिश जे सचेतनता दृष्टिगत होइछ ओ जेना उपन्याससँ एकर स्वतन्त्र अस्तित्व घोषित कयने छल। परवर्ती कहानी साहित्यक स्वरूप-विधानपर एकर प्रचुर प्रभाव पड़ल। स्वयं कुमार

साहेब जे कहानीक रचना कैलनि ओ हुनक उपस्थापन-सम्बन्धी मौलिकतासँ युक्त भय मैथिली कहानीक विकसित कलारूपक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि।"

अगिलही—ई हिनक सभसँ महत्त्वपूर्ण कृति थिक। एकर प्रकाशन १९३५ ई०मे भेल। यद्यपि ई उपन्यास अपूर्ण अछि, किंतु जतबे अंश लिखल गेल अछि से शैलीक चमत्कारक दृष्टिसँ, मिथिलाक संस्कारक सटीक वर्णनक दृष्टिसँ, भाषाक सहज निर्मल प्रवाहक दृष्टिसँ तथा चरित्रक जीवन्त चित्रणक दृष्टिसँ पाठकपर अपन अमिट प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। एकर प्रकाशन 'साहित्य-पत्र' आ मिथिला मिहिरमे भेल। दुर्भाग्यसँ साहित्य-पत्र'क प्रकाशन बन्द भऽ गेलैक, प्रो० रमानाथ झाक तगेदा कम भऽ गेलनि, फलस्वरूप हिनक ई उपन्यास पूर्णताकें नहि पाबि सकल। एकर मात्र तीने परिच्छेद लिखल जा सकल, जाहिमे प्रथम दू परिच्छेद महत्त्वपूर्ण अछि। लेखक एकरा 'स्केच' कहने छथि। जतबे चित्रण अछि, अपनामे पूर्ण अछि। एहिमे एक चंचल बालिकाक विभिन्न क्रिया-कलापक जीवन्त चित्रणक माध्यमसँ बालमनोविज्ञानक सूक्ष्म अध्ययन कयल गेल अछि।

एहि कृतिक विशेषताकें समर्टैत डॉ 'श्रीश' कहने छथि—"एहि मध्य उपन्यासकार बड़ कलात्मक रीतिएँ सूक्ष्मताक संग एक बढ़ैत मैथिल बालिकाक स्वाभाविक चित्रांकन कयल अछि जे सर्वथा यथार्थ ओ मनोवैज्ञानिक भेल अछि। एहि उपन्यासक प्राण थिक स्वभाविकता—भाषा; अभिव्यक्ति आ चरित्रक। एक दोसर गुण थिक मनोवैज्ञानिक चित्रण। बालमनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ अगिलही सर्वथा प्रशंसनीय उपन्यास थिक।"

डॉ० जयकान्त मिश्र एकर अपूर्णतापर पश्चाताप करैत एकर महत्त्वकें निम्नांकित शब्दमे व्यक्त कयलनि अछि—"It portrays with gentle humar and great skill the character of a little girl as she grows up. It is written throughout in good taste, is true to the life in Mithila and would have been a very successful work if it had been completed."

ई बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यापति-पदावलीक सम्पादक छलाह। प्रो० रमानाथ झा अपन 'मैथिली नवीन गीत'मे हिनक एक कविताक संकलन सेहो कयने छथि। पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति-सम्बन्धी आन्दोलनमे हिनक भूमिका महत्त्वपूर्ण छलनि। ई सभ हिनक बहुमुखी प्रतिभाक सूचक थिक।

राजकुलक परम्पराक अनुरूपे ई उदार हृदय रखैत छलाह। हिनक संरक्षणमे संस्कृतक विद्वान तथा मैथिलीक कवि-साहित्यकार लोकनि साहित्यक सेवा कयने छथि। एहिसँ सिद्ध होइछ जे ई स्वयं तँ मैथिलीक पोषक छलाहे, मैथिली-सेवीक आश्रयदाता सेहो छलाह। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह द्वारा जे मैथिलीक हितमे काज भेल अछि, ताहिमे हिनक मुख्य परामर्शदाता एवं सचिवक रूपमे हिनक प्रेरणाक भूमिका महत्त्वपूर्ण अछि।

संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे हिनक बहुमुखी व्यक्तित्व मैथिलीक लेल अत्यन्त विशिष्ट सिद्ध भेल। हिनक जतबे साहित्य अछि, मैथिली-भण्डारक जगमगाइत रत्न अछि।

□

रमानाथ झा

मैथिलीमे शास्त्रीय आलोचनाक दिशा-निर्देश कयनिहार, भाषाकेँ व्याकरणीक अनुशासनमे रखनिहार, विशिष्ट साहित्यकार लोकनिसँ उत्कृष्ट रचना लिखौनिहार, साहित्यक समृद्धिक दिशामे सतत चिन्तनशील रहनिहार तथा साहित्यिक दिस निरन्तर सक्रियता देखौनिहार, पंजीक विशेषज्ञ तथा अनुसंधान-कार्यमे आजीवन रत रहनिहार रमानाथ झा आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक महान व्यक्तित्व छलाह। क्रमबद्ध अध्ययन कयलनि ई अंगरेजीक, कौलिक संस्कारक कारणेँ मनन-चिन्तन कयलनि संस्कृत शास्त्रक तथा सेवा-साधनाकऽ सुप्रतिष्ठित भेलाह मैथिलीमे। तेँ, हिनक रचनामे एक्के ठाम संस्कृतक गम्भीरता भेटैछ, अंगरेजीक स्पष्टतो, मैथिलीक सहृदयता-सरसता तँ सहजहिँ। सम्पादक, अनुवादक तथा वक्ता सेहो ई उच्च कोटिक छलाह। साहित्य अकादमी, दिल्लीमे मैथिलीक प्रवेश भेलापर ओतऽ एहि भाषाक पहिल प्रतिनिधि यैह भेलाह। उचिते कहल जाइछ जे ई व्यक्ति नहि, अपनामे एक संस्था छलाह।

हिनक जन्म २१ सितम्बर १९०६ केँ भेल छलनि। हिनक पैतृक दरभंगा जिलाक धर्मपुर छल। पटना विश्वविद्यालयसँ १९३० मे ई अंगरेजीमे एम० ए० कयलनि। सन १९३३ मे कानूनक परीक्षामे सेहो ई उत्तीर्ण भेलाह। ई १९३० सँ ३६ क नवम्बर धरि मधेपुर हाइस्कूलक हेडमास्टरक पदपर काज कयलनि। १९३६ मे ई दरभंगा राज लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त भेलाह। ओहि पदपर रहैत ई प्रचुर अध्ययन कयलनि। १९५२ सँ ६२ धरि चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे अंगरेजीक प्राध्यापकक पदपर रहलाह तथा ६२ मे तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालयमे मैथिलीमे स्नातकोत्तर अध्ययन आरम्भ भेलापर ई मैथिली विभागक रीडर आ अध्यक्ष बनाओल गेलाह। १९६५ मे दिल्लीक साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि ओ ओकर कार्यकारिणीक सदस्य निर्वाचित भेलाह, जाहि पद पर ९ दिसम्बर १९७१ धरि, जहिया ई दिवंगत भेलाह, आसीन रहलाह।

हिनक रचनाक क्षेत्र बहुत व्यापक अछि। विभिन्न विधामे लिखित, अनूदित, संकलित-सम्पादित हिनक अनेक पोथी प्रकाशित अछि। अपन समयक लगभग सभ प्रमुख पत्र-पत्रिकामे हिनक निबन्ध ओ आलोचना छपैत रहल।

हिनक अनुसन्धानात्मक निबन्धक दू गोट संकलन अछि—निबन्धमाला तथा प्रबन्ध-संग्रह। अनुवाद-ग्रंथमे महत्त्वपूर्ण अछि विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाक अनुवाद। पौराणिक कथाक आधारपर रचित पोथी थिक—उदयन-कथा ओ बररुचि-कथा। संकलन-संपादनमे प्रमुख अछि—मैथिली पद्य-संग्रह, मैथिली गद्य-संग्रह (तीन भाग), कविता कुसुम, प्राचीन गीत, कथाकाव्य, नवीन गीत आदि। व्याकरण ओ रचनाक पोथी 'मिथिला-भाषा प्रकाश'क अतिरिक्त ई 'अलयी-कुल-प्रकाश'', 'मैथिलीक वर्तमान समस्या', 'मैथिली गद्यक प्रसंग' प्रभृति विविध विषयक पुस्तकक प्रणेता तथा मनबोधक 'कृष्णजन्म' एवं चन्दा झाक 'मिथिलाभाषा-रामायण' आदि ग्रन्थक सम्पादक छथि।

हिन्दी आ अंगरेजीमे सेहो हिनक किछु पोथी प्रकाशित अछि—मैथिल ब्राह्मणो की पंजी-व्यवस्था, Tales from Vidyapati तथा साहित्य अकादमीक 'Makers of Indian Literature' सिरिजमे Vidyapati. एहि पोथीक अद्यावधि सात-आठ भारतीय भाषामे अनुवाद भऽ चुकल अछि।

'निबन्धमाला' ओ 'प्रबन्ध-संग्रह' हिनक अनुसन्धानमूलक निबन्धक संकलन थिक जे हिनक अनुसंधानक तीक्ष्ण मेधाकेँ द्योतित करैत अछि। 'निबन्धमाला'मे छओ गोट निबन्ध संकलित अछि—विद्यापतिक वंश, विसपी-माहात्म्य, विद्यापतिक वसन्त-वर्णन, की विद्यापति वैष्णव छलाह? फागु तथा ज्योतिरीश्वर। 'फागु' एक भिन्न प्रकारक साहित्यिक निबन्ध थिक, यद्यपि एहुमे लेखकक अनुसंधान-दृष्टि अछिए। एकरा छोड़ि दी तँ एहि पोथीमे पाँच गोट गम्भीर विवेचनात्मक; विश्लेषणात्मक शोध-प्रबन्ध अछि, जाहिमे चारि गोट विद्यापति-विषयक सेहो अछि। विद्यापतिक सम्बन्धमे एहिमे अनेक नवीन तथ्यक उद्‌घाटन भेल अछि।

''प्रबन्ध-संग्रह'मे पाँच गोट शोध-प्रबन्ध अछि जे वैदेही समिति द्वारा आयोजित 'प्रथम श्यामनन्दन सहाय-व्याख्यानमाला'क अन्तर्गत लिखल ओ पढ़ल गेल छल। पाँचो निबन्धक नाम थिक—प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा, मैथिली नाटक, विद्यापतिक शिवसिंह, गोविन्ददास झा तथा कवीश्वर चन्दा झा। हिनक मैथिली नाटक' विषयक निबन्ध कीर्तनियाँ नाटकक विवादकेँ जन्म देलक, जाहिपर बहुत दिन धरि पक्ष-विपक्षमे तर्क चलैत रहल। हिनक मत अछि जे कीर्तनियाँ—नाटक नहि, नाच थिक, आ ओ सभ मैथिलीक नहि, संस्कृतक ग्रन्थ थिक, जाहिमे गीत मात्र मैथिलीक अछि। हिनक एहि मान्यताक अनुसार सम्पूर्ण मध्यकालीन नाट्य-साहित्यक गौरवमय परम्परे समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि मतक विरोधमे प्रमुख स्वर डॉ० जयकान्त मिश्र उठौलनि आ ओ सिद्ध करबाक चेष्टा कयलनि जे कीर्तनियाँ विशुद्ध नाटक थिक आ ओ मैथिलीक वस्तु थिक, जे हमरा लोकनिक एक युग (मध्यकाल) क गौरवमय उपलब्धि थिक। दुनू गोटेक तर्क सहजोर अछि। ई एहन विषय थिक जाहिपर आगुओ विवेचन होइत रहत। एतबा अवश्य जे एहन गम्भीर विषयकेँ उठायब हिनक प्रगाढ़ पाण्डित्यक सूचक तँ थिके।

डॉ० नरनाथ झा द्वारा सम्पादित 'विविध प्रबन्ध'मे रमानाथ झाक सत्रह गोट प्रबन्ध अछि। एहिमे विषयक विविधता अछि। एहिमे आलोचना-साहित्य पर तीन गोट महत्त्वपूर्ण निबन्ध अछि—समालोचना, आलोचना-साहित्य तथा समीक्षा-वृत्ति, जे एहि विधाकेँ मैथिलीमे पहिल बेर वैज्ञानिक स्वरूप निर्धारित कयलक अछि।

साहित्य-पत्र—'साहित्य-पत्र' नामक सुप्रसिद्ध त्रैमासिक पत्रिका (सन् १९३७ सँ ३९) क ई प्रतिष्ठापक, संचालक तथा सम्पादक छलाह।

साहित्य-पत्रक महत्त्व दू दृष्टिएँ अछि। पहिल ई जे एहिमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार लोकनिक महत्त्वपूर्ण मौलिक ओ अनूदित ग्रन्थक धारावाही प्रकाशन भेल। कविशेखर बदरीनाथ झाक एकावली-परिणय महाकाव्य, तन्त्रनाथ झाक कीचक-वध महाकाव्य, कुमार गंगानन्द सिंहक अगिलहा उपन्यासक एक अंश, डॉ० अमरनाथ झा द्वारा सम्पादित गोविन्ददासक शृंगार भजनावली, हिनक अपन उदयन-कथा आदि आनो किछु प्रसिद्ध ग्रंथ प्रथमतः एही पत्रमे छपल। एकर

उद्देश्ये छल पोथीक प्रकाशन, छिटफुट निबन्धक नहि। दोसर दृष्टिए एकर महत्त्व अछि वर्तनी लऽ कऽ। एहिसँ पूर्व मैथिलीक कोनो पत्रमे वर्तनी-नीतिक एतेक दृढ़तापूर्वक पालन नहि कयल गेल छल। एहिमे सभटा रचना एकहि प्रकारक हिज्जेमे प्रकाशित भेल। एकर ततेक व्यापक प्रभाव पड़ल जे रमानाथ झा स्कूले चलि गेल। एखनो एहि शैलीक अनुकरण कयनिहार अनेको विद्वान छथि।

एहि पत्रक सेवाक महत्त्वकेँ स्वीकार करैत डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि—"The most important contribution to the development of Maithili prose was the publication of the 'Maithili Sahitya Patra' (1937 to 39), a quarterly which professed to publish works of permanent value only. Its publication gave popularity to the scientific and traditional style of spelling Maithili words in print".

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी सेहो एकर महत्त्वकेँ मुक्त कंठे स्वीकार करैत निम्न-लिखित विचार प्रकट कयने छथि—

"From the literary point of view the publication of the 'Maithili Sahitya Patra' under the able editorship of Ramanath Jha forms a landmark in the history of modern Maithili Literature. This journal could very well compare with any literary journal of any language.........The 'Sahitya Patra' laid the foundation of a literary style and its contribution in that regard is unique. It marked the high watermark of literary Maithili journalism."

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अनुसार "एकरा पत्र-पत्रिकाक कोटिमे राखब युक्तिसगत नहि थिक। एहिमे पत्रक कोटा लक्षण घटित नहि होइत अछि। एहिमे ने सम्पादकीय रहैत छल, ने समाचार, ने सामाजिक समस्या, ने अन्य प्रकारक कोनो टिप्पणी आदि, अतः एकरा ग्रन्थमाला कहब बेसी उपयुक्त अछि। एहिसँ एकर महत्त्व कम नहि भऽ जाइत अछि। जे महत्त्वपूर्ण काज एहि साहित्य-पत्र द्वारा भेल से मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक।"

साहित्य-पत्र अपन उद्देश्यमे सफल रहल, किन्तु भेल धरि ई अल्पायु। एक दिस एकरा मैथिलीक अमूल्य ग्रन्थक प्रकाशनक गौरव छैक तँ दोसर दिस अपन सम्पादकक प्रतिष्ठाकेँ मैथिलीमे स्थापित करबाक श्रेय सेहो। साहित्य-पत्रक प्रकाशनसँ हिनका जे गौरव प्राप्त भेलनि, तकरा ई अपन बहुविध कार्यसँ बढ़बैत रहलाह।

मैथिलीक ई अनुपम गद्यकार छथि। मैथिली गद्यकेँ तरासि-तरासि कऽ, झाड़ि-झूरि माजि-मूजि कऽ जतेक ई चमकौलनि, ततेक दोसर केओ नहि। हिनक गद्य ठोस भूमिपर आगाँ बढ़ैत अछि जकरा कवितासँ कोनो लागि-लूगि नहि छैक, किन्तु से सरसता आ प्रवाहमे एको रती झूस नहि बूझि पड़ैत अछि। मूल हो कि अनुवाद—हिनक गद्य व्याकरणक कसौटी पर कसल, वाक्य-रचनाक दृष्टिएँ सुघड़, भाषाक दृष्टिएँ प्रांजल तथा भावक दृष्टिएँ गम्भीर अछि।

आलोचनाक क्षेत्रमे हिनक अवदान अद्वितीय अछि। मैथिली साहित्य परिषद तथा मैथिली लेखक-सम्मेलन आदि अधिवेशनमे आलोचना-विभागक अध्यक्षक पदसँ देल गेल हिनक व्याख्यान ('विविध प्रबन्ध'मे संकलित) आलोचना शास्त्रक प्रमाणिक सामग्री प्रस्तुत करैछ। कविता-संग्रहमे कविलोकनिक प्रसंग जे हिनक अभिमत अछि, से समालोचनाक कसौटी पर कसल, कविक असल दृष्टिकोणकेँ उद्घाटित कयनिहार, सूत्रबद्ध आ दिशा-निर्देशक अछि। हिनक निबन्ध ओ टिप्पणीकेँ विषयक गम्भीर पकड़ तथा ओकरा प्रांजल भाषामे अभिव्यक्त करबाक सुन्दर दृष्टान्तक रूपमे सेहो देखल जा सकैछ।

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक आलोचनाक विशेषताक सम्बन्धमे विचार करैत कहने छथि—"अंग्रेजी-संस्कृत साहित्यक समान रूपसँ मर्मज्ञ प्रो० झाक आलोचनाक प्रणालीमे प्रमुखता अछि ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक ओ निर्णयात्मक आलोचना-शैलीक, जाहिमे सहृदयताक सेहो अभाव नहि अछि। स्थान-स्थानपर तुलनात्मक ओ व्याख्यात्मक प्रणालीकेँ सेहो आ ग्रहण कएल।"

अनुसन्धानक दृष्टि तँ हिनकामे विलक्षण छलनि। पंजीक आधारपर कतेको विवादास्पद विषयकेँ, यथा प्राचीन कविलोकनिक स्थान आ समयकेँ किंवा कोनो खास घटनाकेँ, ई प्रमाणपुरस्सर सोझरौलनि। पंजीक ई ज्ञाता छलाह, ततबे नहि, ओकर वैज्ञानिक अध्येता एवं ओकर समुचित महत्त्वकेँ नीक जकाँ बुझनिहार सेहो छलाह। चन्दा झाक मिथिलाभाषा रामायणक विभिन्न संस्करणक पाठ-भेदकेँ इंगित करैत ओकर मूल पाठकेँ कवीश्वरक पाण्डुलिपिसँ मिलान कऽ, सुसम्पादित रूपमे राजपण्डित बलदेव मिश्रक संग प्रकाशित करौने छलाह। ई अपने तँ शोधकार्यमे निरन्तर लागल रहिते छलाह जे अपन निर्देशनमे कतेको गोटेकेँ एहि काज दिस प्रवृत्त करौने छलाह। प्राचीन आ अर्वाचीन—दुनू युगक साहित्यक सभ विधापर तथा अपन समय धरिक प्रायः सभ रचनाकारपर निबन्ध वा टिप्पणी द्वारा ई अपन सुपठित, सुविचारित, सुनियोजित अभिमत निस्संकोच प्रकट कयने छथि।

प्रो० हरिमोहन झा उचिते हिनका 'संस्था' कहने छथि। हिनक समस्त विशेषताकेँ प्रो० हरिमोहन झा एहि वाक्यमे गुम्फित कऽ देलनि अछि—"मैथिलीक प्रति असीम आस्था ओ निष्ठासँ भरल, मैथिलीक प्राचीन लिपि ओ शैलीक संरक्षणमे अदम्य उत्साहसँ युक्त, शोध, गवेषणा ओ समीक्षाक क्षेत्रमे सेनानी जकाँ नेतृत्व करैत, साहित्यक निर्माण, संकलन, सम्पादन ओ दिशा-निर्देशन द्वारा मैथिलीक वेहन अमूल्य सेवा कयने छथि जे इतिहासमे चिरस्मरणीय रहत।"



श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आधुनिक मैथिली काव्य-साहित्यमे शीर्षस्थानीय छथि। की अबोध ग्राम-बालक मधुरिम अधरमे, की प्रत्येक नटुआक पुष्ट-पटु स्वरमे, की उपनयन-विवाहादिक संस्कार-बेलामे, की नाटक-रामलीलाक मेला-ठेलामे, की हजारक हजार कमरथुआक वेदना-गानमे, की विद्वद्वृन्दक जटिल काव्यानुसन्धानमे—सभ ठाम एक रंग समादर प्राप्त कयनिहार ई महाकवि जेहने दक्ष छथि अलंकारक पथार लगयबामे, तेहने सिद्धहस्त छथि सरलतम शब्दक चामत्कारिक प्रयोग करबामे।

८ अक्टूबर १९०६क आश्विनी पूर्णिमा दिन हिनक जन्म भेलनि। हिनक पैतृक मधुबनी जिलाक कोइलख थिकनि, किन्तु ई बसि गेल छथि अपन मातृक दरभंगा जिलाक कोथु मे। ई संस्कृतक मेधावी छात्र छलाह, व्याकरण-साहित्याचार्य कयलाक बाद वेदान्तशास्त्री कयलनि। सन् १९४० सँ ५ अप्रैल '७७ धरि जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ामे प्रधान पण्डितक पदपर कार्य कयलनि। एही जीविकामे रहैत अपने तँ साहित्यक अतुलनीय सेवा करबे कयलनि, अपन सम्पर्कमे अयनिहार कतेको गोटेकेँ बड़का साहित्यकार बना देलनि। श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', श्री रामचरित्र पाण्डेय 'अणु', श्री राधाकृष्ण झा 'बहेड़' प्रभृति कतेको साहित्यकार हिनकासँ अनुप्राणित भेल छथि। रामकृष्ण झा 'किशुन' हिनके प्रेरणासँ मैथिली दिस आकृष्ट भेलाह।

मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनयबामे एहि युगक कविमे हिनक योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि। जहिया लोक एहि भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छल; एकर साहित्यक प्रति लोकक अनुदार दृष्टिकोण छलैक; तहिया ई एक-एक सरल, सरस, सुन्दर, छोट-छोट गीत बनाकऽ अपढ़-अनजान राशि-राशि वृद्ध-वृद्धा युवक-युवती किशोर-किशोरी बालक-बालिकाक ठोरपर पहुँचा देलनि। विद्यापतिक बाद यैह भेलाह जनिक गीत मैथिलक कोनो आँगनमे, कोनो अवसरपर, सुनल जाइत छल; मिथिलाक हरबाह-चरबाहक टाहिमे हिनक पाँती प्रस्फुटित होइत छल, तिरहुतिआ कमरथुआक दुख-दर्द हिनक गीतक माध्यममे गुंजित होइत छल, होइते अछि। आइयो मिथिलांचलमे जतेक हिनक गीत प्रचलित अछि, ततेक आन किनको नहि।

हिनक छोट-पैघ कुल बीस गोट पोथी अद्यावधि प्रकाशित अछि। सभसँ पहिल पोथी १९४१मे छपल छल, नाम छल तकर—अपूर्व रसगुल्ला। एखन धरिक सभसँ टटका पोथी अछि—मधुप सप्तशती, जे १९८२ मे छपल अछि। एकर अतिरिक्त अठारह गोट पोथी निम्नलिखित अछि—झांकार (४२), शतदल (४४), टटका जिलेबी (४५), कोबर गीत (४५), पचमेर (४९), त्रिवेणी (५५); ताण्डव (५९), गीत-मंजरी (६३), चौंकि चुप्पे (६६), द्विकुशा (६८), राधा-विरह (६९), विदागीत (७३); गंगातरंगावली (७४), बटसावित्री (७५), दुर्गासप्तशती मैथिली-सुधा (७८), द्वादशी (७९), प्रेरणा-पुंज (८०), बोल बम (८१)।

हिनका बीच-बीचमे पुरस्कार ओ सम्मान सेहो प्राप्त होइत रहलनि अछि। १९७० ई०क साहित्य अकादेमी पुरस्कार हिनका 'राधा-विरह' महाकाव्यपर प्राप्त भेलनि। ताहिसँ पहिनहुँ १९५४ ई० मे 'त्रिवेणी'क पाण्डुलिपिपर अखिल भारतीय वयस्क शिक्षा प्रतियोगिता मध्य भारत सरकारक ग्राम-साहित्य विभाग द्वारा पाँच सय टाकाक पुरस्कार हिनका भेटल छलनि। शतदल आ कोबर-गीतपर सेहो ई पुरस्कृत भेल छथि। 'प्रेरणा-पुंज' पर हिनका मैथिली अकादमी, पटना १९८३क 'विद्यापति- पुरस्कार'सँ सम्मानित कयल अछि।

विषय-वस्तुक दृष्टिसँ हिनक काव्यक परिधि बहुत विशाल अछि। पहिने जकरा हेय मानल जाइत छल, कविगणक लेल जे विषय अछूत बूझल जाइत छल, ताहू सभकेँ ई काव्यक परिधिमे अनलनि आ ओहिपर सुन्दर कविताक रचना कयलनि। 'शतदल' मे, जाहिमे एक सय कविता अछि, एहन कतेको शीर्षक भेटि जायत, जाहिपर पहिले-पहिल हिनके ध्यान गेल छनि, यथा—सारापरक तुलसी; पतित पीक, कामनाक पतझाड़, वंचित वायससँ, छुतहर आदि। 'छुतहर'क वेदना द्रष्टव्य थिक—

अस्पृश्य भेलहुँ कँ कोन पाप ?

मृत्तिका एक एके कुम्हार, ओ दण्ड चक्र चीवर सम्हार
आकार एक क्यो मंगल-घट, गोबरौर बनल हम सही ताप
जँ मृगनयनिक कटि-माथ उपर, घुमलहुँ कतेक दिन रस निर्झर
से देखि दूर कहि दूर जाथि, नहि जानि देल के एहन शाप ?

काव्यशैलीक दृष्टिएँ सेहो ई नव-नव प्रयोग करैत रहलाह अछि। ई जाही सहजतासँ सरल देशज शब्दक प्रयोग कऽ छोट-छोट रमनगर गीत बना लैत छथि ताही सहजतासँ तत्सम शब्दक पथार लगाकऽ जटिलसँ जटिल छन्दमे सेहो रचना कऽ लैत छथि।

लोकगीतक ई सरल रूप द्रष्टव्य—

हम जेबै कुसेस्सर भोर
रंगि कै ठोर
पहिरि कै काड़ा
ननकाय धनाझन छाड़ा

आब तत्सम शब्द-बहुल छन्दक बानगी सेहो दर्शनीय—

सरसा सालंकारा कृति सार्थक
कवि-कृति गुण-गुम्फित रूप
पदन्यास-विन्यास प्रशंसित
सद्वृत्तिक साक्षात् स्वरूप
सर्जनरत कवि-रचित सुवर्ण-खचित
आर्यादिक वन्दित नाम
भावमयी ध्वनि-मोहित सहृदय-हृदया
कवि कविता अभिराम

'मधुप'क काव्यधारा तीन दिशामे प्रवाहित भेल अछि—लोकधुनपर

आधारित गीतक दिशामे, करुणरससँ ओतप्रोत शोषित वर्गक प्रतारणाकेँ स्वर दैत कथाकाव्यक दिशामे तथा संस्कृत शैलीक अनुकरणपर मुक्तक ओ महाकाव्यक दिशामे।

'द्वादशी' हिनक कथाकाव्यक संग्रह थिक जाहिमे बारह गोट कथाकाव्य अछि—सभ मुक्तछन्दमे। 'घसल अठन्नी' समसँ प्रसिद्ध कथाकाव्य सिद्ध भेल। एहि दुःखान्त कथाकाव्यमे जमीन्दारक पैशाचिक अत्याचारक रोमांचक ओ हृदय-द्रावक वर्णन भेल अछि। 'घसल अठन्नी'क सम्बन्धमे डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि—"Madhup has written long pathetic poems, the best being Ghasal Athanni. It purports to describe the end ot a poor labourer and her child. The incident is small and perhaps a little exaggerated in its effect but the poet has made a 'Capital' poem out of it."

प्रो० रमानाथ झा हिनक काव्यक समीक्षा करैत कहैत छथि—"मधुपजीक महत्त्व एहि हेतुए नहि अछि जे हुनक विषयवस्तु अथवा शिल्प-शैलीक क्षेत्र व्यापक अछि, प्रत्युत हुनक काव्यक महत्त्व निहित अछि भाव-विन्यासक विशिष्ट अभिव्यक्ति-भंगिमामे, भावानुभूतिक विलक्षण उपस्थापनमे, जे स्थान-स्थानपर कृत्रिम भेलहुँ सर्वथा मौलिक एवं अद्वितीय अछि। हिनक कवितामे कल्पनाक प्रौढ़ता एवं वर्णनक वैशद्यक स्थिति रहितहुँ सभसँ पहिने ध्यान जाइत अछि ओहिमे प्रयुक्त शब्दालंकारक झंकार दिस। मधुपजी यमक ओ वक्रोक्तिक नियोजनामे मैथिली साहित्य मध्य अद्वितीय छथि। हिनकामे एहि प्रकारक आलंकारिक प्रवृत्ति एतेक प्रबल छनि जे आत्माभिव्यक्तिमूलक रचनोमे ताकर प्रयोग करिते छथि भनहि ताहिसँ आत्मनिष्ठ रागात्मक रसानुभूतिमे हानि होइत हो, भाषाक प्रसादत्व नष्ट होइत हो, ओहिमे कृत्रिमता आ दुरूहता अबैत हो। मधुपजीकेँ गीत-रचनामे प्रकृष्टता प्राप्त छनि। अन्योक्ति-नियोजनामे ई बेजोड़ प्रतीत होइत छथि एवं हिनक कवितामे अन्तर्निहित कारुण्यक स्वर बड़ हृदयस्पर्शी होइत अछि।"

वास्तवमे, 'मधुप' करुणरसक अद्वितीय स्रष्टा छथि। हिनक 'आत्मगीत'मे करुणा जेना साकार भऽ गेल अछि—

अपने दारुण दुखसँ सदिखन चुपचाप कनैत रहै छी
नहि विपति-समयमे संगी क्यो संताप जनैत रहै छी
ने मिझा सकय शत-सहस जलधियो जकर अलौकिक ज्वाला
से मनक वेदन भय नोरक कण बनि जाइछ वर्णक माला
जग-स्वर-सम्बोधित कवि हम ई अपलाग सुनैत रहै छी
मधु-वारिधि बसि भसिआइत छी तैयो नहि तृप्त पिपासा
चलि प्रगतिक पथ श्लथ चरणक रथ, तैयो परिणाम निराशा
सहि सकय कते नर दरद तकर हम माप बनैत रहै छी

प्रो० हरिमोहन झाक निधनपर रचित शोकगीतक किछु पंक्ति द्रष्टव्य—

हास-ओहास प्रवाहित कय सहृदय हित रे
निर्दय निर्दय लोचन भेल अन्तर्हित रे

विधि कलमे छिनि हासक, लुटि सब हा ! सक रे
पात्र कयल उपहासक, सम बदहासक रे
दर्शन-कानन-केहरि, के हरि सन अथ रे
भारति-माइक भा-रति, भऽ गेल संश्लथ रे
हास्यरसक सम्राटक, हाटक हाटक रे
देखय लाग पथ हा ! टक ताहि विराटक रे

प्रकृति-चित्रणोमे हिनका पूर्ण दक्षता प्राप्त छनि। जाहि वस्तुक चित्रण करैत छथि ओकर स्वरूप ठाढ़ कऽ दैत छथि। उषाक मानवीकरण द्रष्टव्य—

बाल-बधूटी जागलि उषा
चन्ना चकमक दीप मिझौलनि
तम-घोघट-पट दूर हटौलनि
राखि देल निज कन्तोड़ीमे
बिछि-बिछि निर्मल नखत विभूषा

हिनक दार्शनिक पक्षक उद्घाटन किछु गीतमे भेल अछि। यथा—

वायु-वेगेँ चार आयुक यद्यपि उतरल जा रहल अछि
कामना-लतिका तदपि दिन-राति लतरल जा रहल अछि

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक काव्यक प्रसंग कहैत छथि—"मधुपजी एक दिस यदि उत्कृष्ट शृंगारिक रचना कएल तँ दोसर दिस करुणरसक आत्माभिव्यक्तिमूलक उत्तम प्रतीकक सेहो प्रणयन कएल। कतोक दीनहीनक चित्रणपर आधारितो कविता अछि जे यथार्थवादी वा प्रगतिवादी कहाए सकैत अछि। किन्तु मधुपजीक सर्वश्रेष्ठ वैह रचना थिक जे सहज सरल भाषामे लिखल गेल अछि तथा नवीन प्रगीत रीतिक अछि। हिनक ओहने गीतकाव्य उत्कृष्ट कोटिक अछि जाहिमे आत्माभिव्यक्तिपूर्ण करुण भावक द्योतन भेल अछि।"

राधा-विरह—'राधा-विरह' महाकाव्य १९६१ मे प्रकाशित भेल तथा १९७० क साहित्य अकादमीक पुरस्कार द्वारा एकर रचयिता 'मधुप'केँ सम्मानित कयल गेल।

'राधा-विरह' सुन्दर कल्पनापर आश्रित मैथिलीक एहन महत्त्वपूर्ण महाकाव्य थिक, जाहिमे आलंकारिक भाषाक प्रचुर प्रयोग कयल गेल अछि। एकरा पाण्डित्यपूर्ण वर्णन-वैशद्यक कारणेँ आधुनिक साहित्यक निधि मानल गेल अछि। संस्कृतक पूर्वाचार्यलोकनि महाकाव्यक जे लक्षण सभ निरूपित कयने छथि, ताहिमे बहुतोक पालन एहि महाकाव्यमे भेल अछि। ई सत्रह सर्गमे विभाजित अनेक छन्दसँ गुम्फित अछि। संस्कृत महाकाव्यक परिपाटीक अनुसारेँ एहूमे कथानकसँ बेसी वर्णनक महत्त्व दृश्य अछि। एहिमे शृंगाररस अंगी अछि, आन सभ रस अंग-रूपमे आयल अछि। एहिमे प्रभात-वर्णन, संध्या-वर्णन, मनुष्यक विविध जातिक रूपमे भगवतीक व्यापक वर्णन बड़ मोहक बनि पड़ल अछि। स्पष्टतः एकर नायिका राधा थिकीह। एहिमे राधाक सम्पूर्ण चरित नहि, केवल कृष्णक वियोगमे हुनक विरह-व्यथेटाक अंकन भेल अछि।

देश-काल-पात्रक अनुसारेँ कविलोकनि कथानकमे मोड़ देबाक अधिकारक खुलि कऽ प्रयोग करैत देखल जाइत छथि। ओ दूरस्थ पात्रकेँ अपन समय ओ

समाजक अनुकूल बनयबा लेल ओहिमे स्थानीय ओ सामयिक रंग भरि दैत छथि। एहिसँ ओ पौराणिक वा ऐतिहासिक पात्र भलें बेसी आत्मीय बुझना जाय, मुदा ओकर मौलिक स्वरूप तँ नष्ट भैए जाइत छैक। 'मधुप' कविक एहि अधिकारक प्रयोग करबासँ बचलाह अछि। फलतः हिनक राधा अपन मूल रूपमे अयलथिन से बुझले जाथि, ई कोन आवश्यक? मैथिलीमे रचित महाकाव्यक पात्र खाली मिथिलेक किएक होथि? आ, जे मिथिलाक पात्र नहि होथि, तनिका मिथिलाक बनयबाक कोन प्रयोजन? संस्कृति दू प्रदेशक भिन्न-भिन्न भऽ सकैछ, आधारमे अन्तर कदाचित ताकल जा सकैछ, किन्तु, तें संस्कार तँ बदलतैक नहि, विचारमे भिन्नताक तँ नहि औतैक, प्रेमक रंग तँ एक्के रहतैक। राधा जँ मिथिलाक नहि छथि, ब्रजेक छथि, तँ प्रस्तुत महाकाव्यमे मिथिलाकें ताकब उचित नहि, ब्रज-भूमिएकें ताकब समुचित होयत। किन्तु; जहाँ धरि राधाक प्रेम ओ विरह-व्यथाक सम्बन्ध अछि, हुनक हृदयक अनुराग-प्रवाहक सम्बन्ध अछि, मिथिलाक नारीक संग ओ एक भऽ जाइत छथि।

वर्णनक बीच-बीचमे सामाजिक कुरीतिक आभास बड़ छटासँ कहि दऽ देने छथि। प्रभात-वर्णनक क्रममे निम्नलिखित चित्र द्रष्टव्य—

> आधे पहर रातिसँ प्राती गावि छलाह पहर जे दैत
> निन्दक भेने कमी, ताहि निन्दक युवजनकेर व्यंग्य गुनैत
> बाल-कुरंगी नयनि जकर भुज जान छोड़ा भागलि बुझि भोर
> चौंकि-चिहुँकि ग्रीवामे सार्टीफिकेट दैत कंगनाक नछोड़
> सेहो बूढ़-बुढ़ नुस मानुस दुखक पात्र जलपात्रक हाथ
> धनुषीगात्र अपात्र जरासँ चलला बान्हि मुरेठा माथ

वर्णन तँ अछि भोरक; भोरमे बूढ़-बुढ़ानुस मुरेठा बान्हि हाथमे लोटा लऽ शाहुयभूमि दिस विदा भऽ जाइत छथि। बड़ स्वाभाविक चित्र अछि। किंतु, एहि ठाम विशेषतः द्रष्टव्य थिक ओहि बूढ़-बुढ़ानुसक चरित्र। हुनक अवस्था ततेक बेसी भऽ गेल छनि जे शरीर धनुष जकाँ लीबि गेलनि अछि। एहन बूढ़ लोक रातिमे अपन तरुणी पत्नीक संग सह-शयन करवा लेल जहाँ उद्यत होइत छथि कि पत्नी चौंकि-चिहुँकिकऽ झटकि दैत छनि। ओहो बरजोरी करैत छथि। ओकर कंगनसँ हुनक गरदनिपर नछोड़ लागि जाइत छनि आ ओ वृद्धक आलिंगन-पाशसँ मुक्त भऽ पड़ा जाइत अछि। ओ बेचारेकें एक तँ बुढ़ारी अवस्थाक कारणें, दोसर पत्नीक प्रतारणाक व्यथासँ निन्द कोना होइन? तें, आध पहर रातिएसँ प्राती गाबऽ बैसि जाइत छथि। प्राती की गबैत छथि, पहर दैत छथि।

वृद्ध-विवाह, जे मिथिलाक बहुत दिन धरि अभिशाप छल तकर आभास देअयबामे कवि पूर्ण सफल भेल छथि। प्रो० 'सुमन'क निम्नस्थ अंश एकर महत्ताकें नीक जकाँ स्पस्ट कऽ दैत अछि—"अक्षर-अक्षरमे अनुप्रास, पद-पदमे यमक, वाक्य-वाक्यमे रस टपकैत।"

संस्कृत साहित्यक कतिपय वस्तुकें मैथिलीमे अनूदित कयने छथि, यथा—गीतगोविन्द, दुर्गासप्तशती, 'मेघदूत'क किछु अंश आदि। पत्रोत्तरो छन्देमे देनिहार ई महाकवि एखनो अनवरत काव्यसाधनामे निमग्न रहैत छथि। □

डॉ० श्री कांचीनाथ झा 'किरण'

डॉ० श्री कांचीनाथ झा 'किरण' बहुमुखी व्यक्तित्व रखैत छथि। आन्दोलन ओ साहित्य-सर्जन—भाषा-सेवाक जे ई दू गोट माध्यम अछि, किरण दुनू क्षेत्रमे अग्रिम स्थानक अधिकारी छथि।

प्रो० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' उक्त दुनू क्षेत्रमे हिनक अप्रतिम प्रतिभाकें रेखांकित कयने छथि। हिनक व्यक्तित्वक प्रसंग सुमनक कहब अछि—"वाणीमे स्पष्टता, विचारमे प्रौढ़ता, चिन्तनमे मौलिकता, सामाजिक जीवनमे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रह आ तदनुकूल आचरण, दलित-पीड़ितक प्रति सहज सहानुभूति, क्रान्तिक प्रखरता अथापि शान्ति रम्यता, सिद्धान्तमे कठोर अथच व्यवहारमे कोमल किरणजीक चरितक रूपरेखा थिक।" तहिना; हिनक कृतित्वक प्रसंग सेहो सुमन कहैत छथि—"प्रौढ़ निबन्ध, निर्लिप्त आलोचना, वास्तविकता ओ कल्पनासँ समन्वित प्रगतिवादी कवित्व, नाट्य एकांकीक रससिद्ध विन्यास, समाज-सुधारपर आधारित सुरुचिपूर्ण उपन्यास गल्प किरणजीक कलमक जादूक उदाहरण अछि।"

हिनक जन्म २८ दिसम्बर १९०६ ई० कें भेलनि। ई धर्मपुर (पो० लोहना रोड, जि० दरभंगा)क निवासी थिकाह। छात्रावस्थामे ई काशी चल गेलाह। ओतऽसँ मैथिली आन्दोलनमे अप्रतिम योगदान देलनि। काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे जे मैथिलीक स्वीकृति भेल, ताहिमे हिनक भूमिका बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। ई बहुत दिन धरि सरिसब उच्च विद्यालयमे शिक्षक तथा बादमे ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालयमे मैथिलीक यशस्वी प्राध्यापक रहलाह।

हिनक हृदयमे मैथिली-प्रेम लबालब भरल छनि। संघटन-क्षमता सेहो हिनकामे बेजोड़ छनि। अपन क्षेत्रक जनताकें जगा कऽ ओकरा लोकनिक हृदयमे मिथिला-मैथिलीक ममता भरबामे, विद्यापति-पर्वक आयोजन करबामे, ओकरा व्यापक बनयबामे हिनक प्रेरणा आ सक्रिय योगदान रहल अछि। मैथिली साहित्य परिषदक ई छओ वर्ष (१९४७ सँ ५३) धरि प्रधान मन्त्री रहल छथि। वस्तुतः एहि पचास-पचपन वर्षमे मैथिली आन्दोलनक जतऽ जे गति-विधि रहल अछि; सभ ठाम प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष-रूपमे किरणजी रहलाह अछि, आगुए रहलाह अछि।

साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो ई प्रगतिशील विचारधाराक पोषक छथि। हिनक समस्त साहित्यक खास विशेषता थिक ओकर सुरुचापन। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहमे हिनक परिचयक प्रसंग एकदम सत्य कहल गेल अछि जे "ई सुरुचापन हिनक सभ रूपमे दृष्टिगत होइछ। जेहने निर्लिप्त आलोचक, तेहने प्रगतिवादी कवि, तेहने मौलिक चिंतक। क्रान्तिक प्रखरता आ सिद्धान्तक आग्रह हिनक व्यक्तित्वमे छनि। अपन लेखनमे सामाजिक आर्थिक विषमता, शोषण-उत्पीड़न आदिकें उजागर करैत समाज-सुधारपर हिनक दृष्टि रहलनि अछि।"

हिनक प्रकाशित कृति अछि—चन्द्रग्रहण (१९६२)—लघु उपन्यास; विजेता विद्यापति (१९७२)—नाटक; ध्रुव, अभिमन्यु—बालोपयोगी; जय जन्मभूमि (१९५३)—एकांकी।

चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहण लघुकाय सामाजिक उपन्यास थिक, जकर प्रकाशन १९३२ ई० मे भेल। एकरा मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक विकसित रूप मानल गेल अछि। यद्यपि एहिमे पहिल बेर सांगोपांग वर्णन ओ विषय-वस्तुक व्यापकताक दर्शन होइछ, तथापि किछु आलोचक एकरा दीर्घकथा सैह मानैत छथि। एहिमे चन्द्रग्रहणक अवसर पर गंगास्नानक निमित्त सिमरिया-यात्राक आ ओहि ठामक मेलाक वर्णन अछि। धार्मिक स्थलोमे कोना अनाचार-अत्याचार होइछ, से देखायब लेखकक लक्ष्य बुझि पड़ैत अछि। एक मुसलमान गुण्डा स्नानक समयमे एक युवतीक मर्यादा-भंग करऽ चाहैत अछि, किन्तु ताहिमे ओ अन्ततः असफल भऽ जाइछ, पकड़ा जाइछ।

एहि प्रसंग डा० अमरेश पाठकक मत अछि जे "छोट रहितो चन्द्रग्रहण मैथिली उपन्यास-साहित्यमे नव अध्यायक श्रीगणेश करैत अछि। यद्यपि चन्द्रग्रहण सामाजिक कथाभित्तिपर आधारित अछि, किन्तु संयोगक प्रबलता देखा लेखक पाठकक मनमे घटनाक प्रति सन्देह उत्पन्न कऽ दैत छथि। एहि दृष्टिएँ कथानक दोषयुक्त अछि किन्तु दृश्यावलीक वर्णन द्वारा लेखक एहि छोट रचनामे रमयबाक शक्ति रखैत छथि।"

एकर कथावस्तुक प्रसंग डा० अमरेश पाठक विचार प्रकट करैत छथि जे "एहि रचनाक स्वाभाविक विकास नहि भेल अछि। सभ स्थलपर संयोगक आश्रय लेल गेल अछि। एहन सन बूझि पड़ैछ जे कोनो निश्चित उद्देश्य धरि पहुँचयबाक हेतु घटना साधन मात्र बनाओल गेल अछि। घटनाक स्वाभाविकता यत्रतत्र नष्ट भेल अछि।"

विजेता विद्यापति—प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क निम्नस्थ पंक्ति एहि नाटकक यावन्तो विशेषताकेँ स्पष्ट कऽ दैत अछि "नाटक थिक ऐतिहासिक, कथावस्तु आधारित अछि मिथिलाक लोकस्मृतिमे जगजियार-उजियार अनुश्रुतिपर, समय थिकैक इतिहासक मध्य संक्रान्तिकाल चौदहम शताब्दी, पात्रमे किछु इतिहास-विदित, किछु कवि-कल्पित। मिथिलाक सीमाक्रमण प्रसंग पठान-युद्धमे बन्दी बनल कुमार शिवसिंहकेँ अपन प्रतिभा-कलाक बलपर बन्धनसँ मुक्त करा दिल्लीसँ मिथिला अनबाक क्रिया-कलाप द्वारा विद्यापतिकेँ विजेताक रूपमे उपस्थित कयल गेल अछि। चरित्र-चित्रणमे विद्यापति शिवसिंह तँ प्रधाने छथि। साधारणसँ साधारण पात्र-सोमन, जीवछ, जीवराज समान पुरुष, शारदाक संग गहुमा-रीगा स्त्रीपात्र अपना-अपनी एक विशिष्ट रूपरंग, ओज-माधुर्य, देशभक्ति ओ कर्तव्य-प्रेरणाक प्रतीक बनि नाटकीय मंचपर अवतीर्ण भेल छथि। दृश्य-योजना २९ अछि। मिथिलाक माटि-पानि, बन-बाध, घर-आङन, रहन-सहन, पशु-पक्षी सभक निवेश-प्रवेश, प्रकृतिक रूपरंग, संस्कृतिक झलक, मिथिलाक राज-शिविरमे भारतीय परम्परा ओ पठान-छावनीमे तुर्क फौजक गोंजगांज, दृश्य-निवेशहुमे जेना नाटकीय परिवेश किछु प्रेरणा दैत हो।"

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एहि नाटकक विषयमे मत व्यक्त करैत कहैत छथि—"किरणजी अपन नाटकमे विद्यापतिक चरित्रक अभिनव पक्षक उद्घाटन कएल। एखन धरि विद्यापतिक चित्रांकन महाकवि ओ भक्तक रूपमे सैह कएल गेल छल, किरणजी सर्वप्रथम हुनकर शूर-वीर विजेताक रूपमे दृश्यांकन कए हुनक चरित्रकेँ नवीन साहित्यिक व्याप्ति देल अछि।" एतावता हिनक ई नाटक मैथिली नाट्य साहित्यक श्रेष्ठ कृतिमे परिगणित होइछ।

ई एकांकी सेहो लिखने छथि जाहिमे पुस्तकाकार प्रकाशित अछि 'जय जन्मभूमि' मात्र। एकर अतिरिक्त महाराज शिवसिंह, शीतल सेनी आदि अन्य एकांकी विभिन्न संकलनमे छपल अछि। हिनक एकांकीक विशेषताक प्रसंग डा० 'श्रीश' कहैत छथि—"हिनक एकांकीक विशेषता थिक प्रगतिशील विचार-धाराक अभिव्यक्ति। परन्तु हिनक प्रगतिशीलता कथोपकथनक माध्यमसँ स्थूल रूपेँ व्यक्त होइत अछि। एहि कारणेँ हिनक कथोपकथन छोट-छोट वक्तव्यक रूप धारण कए लैत अछि तथा से नाटकीयताक बाधाक भए जाइत अछि। एकांकीक मूल सफलता चरित्रक अन्तःसंघर्षपर अवलम्बित रहैत अछि। एहि दृष्टिएँ हिनकामे दोष आबि गेल प्रतीत होइत अछि।"

हिनक कवि-रूपकेँ प्रो० रमानाथ झाक उक्तिमे वेसी नीक जकाँ देखल जा सकैछ—"श्री किरणजीक स्थान मैथिलीक प्रगतिशील कवि सभमे अग्रगण्य अछि। हिनक काव्यक प्रेरणा मिथिलाक ग्राम-जीवन थिकैक जकरा ओ तदनुरूप भाषा-शैलीमे व्यक्त करब अपन कवि-कर्म बुझैत छथि। हिनक रचनामे ने तँ कविकल्पनाक चमत्कारपूर्ण उत्कर्ष भेटत आओर ने अभिव्यक्ति-शिल्पक पाण्डित्यपूर्ण प्रकर्ष, किन्तु जहाँ धरि लोक-जीवनक भाव-भूमिक यथार्थ अभिव्यक्तिक प्रश्न अछि, ताहिमे ई बेजोड़ छथि। हिनक एहि प्रकारक रचनामे लोक-जीवनक अन्तः ओ वाह्य—दुनू प्रकारक चित्रण भेल अछि। विद्रोहपूर्ण भावाभिव्यक्तिक हेतु किरणजी व्यंग्यक आश्रय लैत छथि। किरणजी अपन कवितामे गाममे सामान्य रूपेँ व्यवहृत भाषाक प्रयोग कयने छथि। तेँ ओ तत्सम शब्दक व्यवहार यथासाध्य अल्प कएल अछि।"

हिनक ठेठ भाषाक प्रयोगक उदाहरणक लेल निम्नलिखित पाँती द्रष्टव्य थिक—

दूर न जो रे बाउ हमर तोँ जो न बलानक पार
जानि न कखन ढुल्ल सन बढ़तै, छै भुताहि ई धार
एन्नी-ओन्नी कने-मने टहला-बुला झटसिन चलि अबिहेँ
छौँड़ा सभ सङ लागि खेलमे बाउ हमर नहि बात बिसरिहेँ
बाबू लायुन बोनि कमा कऽ नवका मड़ुआ रखने रहबौ
सौंसे रोटी ललका टिकरी सत्तू रखबौ आइ न ठकबौ

काव्यगत रूढ़िकेँ तोड़ि देबाक मानू ई संकल्प लेने छथि। भारतीय काव्य-साहित्यमे वसन्तकेँ ऋतुराजक संज्ञा देल गेल अछि। मैथिलीमे सेहो अनेकानेक साहित्यकार वसन्त ऋतुकेँ सर्वश्रेष्ठ मानि ओकर प्रशंसामे पदक पथार लगा देने छथि। किन्तु, से एहि विद्रोही कविकेँ मान्य नहि। ओहन कविगणकेँ ललकारैत 'किरण' कहैत छथि—

पिबइत दूध पवित्र मधुर माँ
मिथिला केर कोरमे बैसल
के बताह कवि भाङ पीबि
स्वागत वसन्त अछि गाबि रहल

आ, एहि पाँतीक बाद एहि ऋतुक दुर्गुण सभ एक दिससँ गना जाइत छथि। हिनक दृष्टिमे मिथिलाक लेल ऋतुराज थिक हेमन्त।

ई ईश्वरीय सत्तामे विश्वास नहि करैत छथि। ई माटिक महादेवक, जनिक पूजा मिथिलाक घर-घरमे होइत अछि, अस्तित्वकें ललकारैत छथि—

तञ्ञ हे माटिक महादेव !
नहि करह कनेको अहंकार
जहिया हैतह विसर्जन, लगतह सब गोकिआबय।
ह, जा धरि अक्षत, चानन, फूल
पड़क किछु येन्ह रहतइ लागल,
लतमर्दनिसँ रहि सकैत छह पाँचल
किन्तु निष्पक्ष परीक्षक कालक प्रहारसँ
पारि न सकबह त्राण
झड़ि पोअड़ि जेतह सभ चेन्ह
तखन की हेअह ! करह कने अनुमान।
पदे प्रतिष्ठित केर होइत अछि की अन्तिम परिणाम ?
जनैत छह ? केवल पद-सत्कार।

हिनक मान्यता छनि जे बलवान मनुष्य स्वार्थक हेतु महादेवकें फूल-अक्षत चढ़बैत अछि तथा स्वार्थपूर्ति भऽ गेलापर हुनका गोकियाबऽ लगैत अछि। अन्तमे हुनक नियति होइत अछि लतखुर्दनि।

एक आलोचकक शब्दमे "जीवनक स्थितिकें चारू भरसँ देखबाक व्यापक दृष्टिकोण किरणजीक रचनामे दृष्टगत होयत। दीन-दुखियाक करुण क्रन्दन हिनक कान धरि पहुँचल अछि; परन्तु कविक द्रवणशील हृदय खाली ओकर मार्मिक चित्र नहि उपस्थित कयलक अछि वरन अपन सशक्त शब्दावलीमे वर्तमान सामाजिक विषमतापर असंन्तोष प्रकट कयलक अछि।"

कथाकारक रूपमे सेहो हिनक स्थान साहित्यमे उच्च छनि। 'मधुरमनि' हिनक श्रेष्ठ कथा थिकनि। एकर अतिरिक्त 'कोन महल नाम रखबैक एकर ?' 'करुणा' तथा 'इहो चारि खून किएक ?' आदि प्रसिद्ध कथा अछि। आरम्भिक समयक कथा 'धर्म-रत्नाकर' सेहो वेस चर्चित भेल छल। हिनक कथामे मर्मकें छूबि लेबाक गुण प्रचुर मात्रामे विद्यमान रहैछ।

आलोचना सेहो ई लिखने छथि उच्च कोटिक। हिनक तर्क ठोस होइछ, चोट प्रत्यक्ष होइछ तथा विषयक प्रतिपादनक शैली रोचक आ हृदयग्राही होइछ। मिथिलाक फकड़ा ओ कहबी सभकें ताकि कऽ संग्रह कयने छथि। अनुसन्धान-क्षमता सेहो हिनक विलक्षण अछि।

हिनक प्रसंग प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक उक्ति द्रष्टव्य थिक—"He generally writes serious and thought provoking essays and articles but at the same time he is a great poet and novelist. His description of nature and of the variegated colour of the multitudes in the congregation is beautiful and at times exciting. His power of imagination is marvellous. 'Kiran' is a man of the earth and sees things from common man's point of view." □

लक्ष्मीपति सिंह

बाबू लक्ष्मीपति सिंहक अवदान, मैथिली साहित्यमे, बहुमुखी अछि। हिनक महत्व साहित्य-सर्जकक रूपमे तँ अछिए जे प्रवासी मैथिल-समाजमे मातृभाषाक प्रति प्रेम जगयबाक प्रेरक-रूपमे सेहो आ पत्रकार-रूपमे सेहो अछि। साहित्यक अनेक विधामे ई कलम चलौलनि जाहिसँ उपन्यास, कविता, समीक्षा, रेडियो रूपक, गंभीर ओ हास्य-व्यंग्यात्मक निबन्ध, बाल-साहित्य, आत्मकथा आदि क्षेत्र पुष्ट भेल। पत्रिकाक सम्पादन कयलनि, जाहिसँ तत्कालीन आनो लेखकगणकें लिखबाक प्रेरणा भेटल, साहित्य, विशेषतः बाल-साहित्य बढ़ल। हिनक व्यक्तित्वो विलक्षण छल, मोहक छल, वार्तालापमे आनन्दक सृष्टि होइत रहैत छल।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक मधेपुर ड्योढ़ीमे, खण्डबला राजकुलमे, बाबू हिमपति सिंहक पुत्रक रूपमे, फाल्गुन शुक्ल तृतीया १३१४ साल, तदनुसार १५ फरवरी १९०७ ई० कें भेल छलनि। लगभग पाँचे मासक बाद ई मातृहीन भऽ गेलाह। बाल्यावस्थामे हिनक नाम 'लक्ष्मीनन्दन' राखल गेलनि, किन्तु विद्यालयमे नामांकनक समय पैतृक परम्परानुरोधें 'लक्ष्मीपति' कऽ देल गेलनि। हिनक कोनो-कोनो स्वरचित पदक भनितामे 'दयापति' सेहो भेटैत अछि, जे हिनक राशिक नाम छलनि। १९२९ ई० मे ई ग्रेजुएट भेलाह। किछु दिन मधेपुर हाइ स्कूलमे शिक्षकक काज कयलनि। बादमे, २७ नवम्बर १९४७ सँ ११ फरवरी १९७७ धरि पटनाक न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन्स (आर्यावर्त प्रेस) मे सेवाशील रहलाह—आरम्भिक चरणमे आर्यावर्तक उपसम्पादकक रूपमे, पश्चाति रेफरेन्स विभागक पुस्तकाध्यक्षक रूपमे। पटनेमे, ६ मार्च १९७९ ई० कें, हिनक देहान्त भऽ गेलनि। हिनक पत्नी लक्ष्मीवती लीला सेहो मैथिलीक कवयित्री ओ लेखिका छलीह।

अपन सहपाठी अच्युतानन्द दत्तक प्रेरणासँ ई साहित्य-क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि तथा मैथिली, संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी चारू भाषामे किछु-ने-किछु लिखऽ लगलाह। पुस्तकाकार, हिनक दू गोट उपन्यास प्रकाशित अछि—चामुण्डा तथा पंचवटी। एक संक्षिप्त आत्मकथा अछि—अतीतक स्मृति-पटल। 'हिन्दी-मैथिली-शिक्षक' नामक एक गोट व्याकरण ओ तुलनात्मक विवेचनक पोथी सेहो हिनक प्रकाशित अछि। उक्त मौलिक पुस्तकक अतिरिक्त 'मैथिली कुसुमांजलि' नामक एक पोथीक सम्पादक छथि, जे वस्तुतः हिनक संपादित 'चौपाड़ि' मे प्रकाशित किछु विशिष्ट रचनाक संकलन थिक। ई तीन गोट पत्रिकाक सम्पादन कयने छलाह—आगरासँ प्रकाशित पं० रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित'-संरक्षित 'मैथिल बन्धु'क, पटनासँ प्रकाशित बाबू दुर्गापति सिंह-संरक्षित 'मिथिला ज्योति'क तथा पटनेसँ प्रकाशित 'चौपाड़ि'क। दुर्भाग्यसँ बादक दू पत्रिका अल्पजीवी भेल। एकर अतिरिक्त, अनेक पत्र-पत्रिका तथा पुस्तक-संकलनमे हिनक बहुविध गद्य-पद्यमय रचना छिड़िआयल अछि, जकर अनुसन्धान ओ संकलनक काज अद्यावधि बाँकी अछि। जा धरि ई काज नहि भऽ जाइत अछि, तावत बाबू साहेबक सम्यक् मूल्यांकन बाँकिए रहत। ताहूमे चामुण्डा, हिन्दी-मैथिली-शिक्षक तथा मैथिली कुसुमांजलि—ई तीनू टा पोथी सम्प्रति अनुपलब्ध भऽ गेल अछि।

मैथिलीमे ई विख्यात भेलाह अपन 'चामुण्डा' उपन्यासक प्रकाशनसँ। 'चामुण्डा'क प्रकाशन १९३३ ई० मे भेल, सर्वप्रथम 'मिथिला मिहिर'मे धारावाही रूपमे। ई ऐतिहासिक उपन्यास थिक। मुगल-अमलासँ अपन सम्मानक रक्षार्थ कोनो वर्द्धमान उपाध्यायक दू कन्या रहस्यमय लुप्त भऽ जयबाक कथा एहिमे वर्णित अछि। प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक शब्दमे "The Chamunda of Lakshmipati Singh is a thrilling historical novel. It relates to the disappearance of the two daughters of Vardhamana to their honour from a Mughal Government Official."

पंचवटी—हिनक दोसर उपन्यास 'पंचवटी' यद्यपि प्रकाशित भेल लेखकक मृत्युक बाद, १९७९ मे, किन्तु एकर रचना भेल छल सन् अठतालिसेमे। एतेक दिन पूर्वक लिखल रहबाक कारणें, डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क शब्दमे "एहि मध्य तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति, गान्धीवादी दृष्टिकोण एवं आरम्भिक उपन्यास-शिल्पक परिचय प्राप्त होइत अछि।" डॉ० 'श्रीश' एकर प्रतिपाद्य विषयक प्रसंग आगाँ कहैत छथि जे लेखक "पंचवटीमे कोशीक विभीषिकाक कारणेँ छिन्न-भिन्न भेल सुरेशक परिवारक सुखान्त कथाक वर्णन कयने छथि। सुरेशक पत्नी कमलाक आदर्शवादी रचनात्मक व्यक्तित्व, ज्येष्ठ बालक गोपालक चरित्रक उच्च आदर्श एवं प्रोफेसर साहेबक मानवीय सहृदयता पाठकक चित्तकेँ उदात्त भावभूमिपर प्रतिष्ठित करबामे सर्वथा समर्थ भेल अछि। पंचवटी नाम प्रतीकात्मक थिक। 'शान्त तपोवनहिसँ लंकाकाण्डक पुनरावृत्ति होइत रहल छैक एवं होइत रहतैक'—इएह उपन्यासक माध्यमसँ लेखकक प्रतिपाद्य विषय अछि। एहि मध्य नहि तँ सामाजिक यथार्थक चित्रण भेल अछि आओर ने कोनहु पात्रक मनोविश्लेषणे भेल अछि, मुदा कथाक निष्पादन-शैली एतेक रोचक अछि जे पढ़ब आरम्भ कए समाप्त कएने बिना नहि रहल जाए सकैत अछि आओर एहि रोचकताहिमे एहि उपन्यासक सफलता निहित अछि।"

अतीतक स्मृति-पटल—ई आत्मकथा थिक। एकरो प्रकाशन, हिनक देहान्तक बाद, १९८०मे भेल। यद्यपि ई बड़ संक्षेपमे लिखल अछि, हिनक जीवनक अनेको प्रमुख घटनाक विस्तारसँ वर्णन नहि अछि, प्रवासी मैथिलक सम्पर्कमे कोना अयलाह तकर संकेतो नहि अछि, तेँ एकरा सर्वांगपूर्ण आत्मकथा मानब उपयुक्त नहि होयत। किन्तु आत्मकथाक जे सभसँ महत्त्वपूर्ण तत्त्व होइत छैक लेखकक इमानदारी, से एहिमे पाँती-पाँतीसँ टपकैत भेटछ। हिनक संकोची स्वभाव, हिनक जीवन-शैली, हिनक अपना प्रति दृष्टिकोण, समकालीन समाजक संग हिनक तादात्म्य, हिनक नियतिवाद, हिनक संघर्ष-शीलता, हिनक कर्मठताक साक्षी हिनक आत्मकथा थिक, ओहन साक्षी जे एको शब्द फूसि नहि कहैछ। ई कृति हिनक हृदयकेँ खोलिकऽ राखि दैछ। स्पष्टवादिता ओ विनम्रता एकर पात-पातपर झलकैत अछि, जे लेखकक महत्ताक द्योतन करैत अछि। मैथिली साहित्यकारक आत्मकथाक ई पहिले पोथी थिक, एहू दृष्टिएँ एकर ऐतिहासिक महत्त्व अछि। गिरीन्द्र मोहन मिश्रक कृति 'किछु देखल किछु सुनल' अवश्य एहिसँ पूर्व प्रकाशित भऽ चुकल छल, किन्तु ओकर रचना-शैली आ प्रतिपाद्य विषयकेँ देखैत ओकरा विशुद्ध आत्मकथाक संज्ञा देब समुचित नहि होयत। अतएव, एहि विधाक हिनका प्रेरक-स्रष्टा कहल जा सकैत अछि।

आलोचनाक हिनक कोनो पुस्तक यद्यपि छपल नहि अछि, किन्तु एहु विधाके हिनका द्वारा कयल काजक विशेष महत्त्व अछि। १९५० मे रेफरेन्स विभागक पुस्तकाध्यक्ष बनलाक बादसँ मैथिलीमे प्रकाशित प्रायः प्रत्येक पोथीक समीक्षा ई अंगरेजीमे लिखैत रहलाह जे 'सिंह' नामसँ 'इंडियन नेशन'क रविवासरीय परिशिष्टांकमे प्रकाशित होइत रहल। ई क्रम १९७७ धरि चलल। हिनका प्राचीन मैथिली साहित्यक अध्ययन तँ रहबे करनि, 'इंडियन नेशन'मे समीक्षार्थ गेल पुस्तकक सभक अध्ययनक क्रममे अनायासे नवीनो साहित्यक अवलोकनक सुअवसर प्राप्त भऽ गेलनि। मैथिलीक प्रत्येक बढ़ैत डेगक टटका सूचना बाबू साहेब 'फस्टहैंड' प्राप्त कऽ लैत छलाह। अंगरेजीक पण्डित होयबाक कारणेँ पाश्चात्य आलोचना-पद्धतिसँ सेहो परिचित रहबे करथि। संस्कृतोक ज्ञाता छलाहे। मैथिलीक संस्कार हिनका कूसल छलनिहेँ। मैथिली साहित्यक, ओकर मूल प्रवृत्तिक रक्षा करैत, पाश्चात्य आलोचनाक कसौटीपर जे मूल्यांकन ई करैत छलाह, ताहिसँ मैथिली आलोचनाक मार्ग अनेरे प्रशस्त होइत जाइत छल। यद्यपि आचार्य रमानाथ झा जकाँ ई मैथिलीमे आलोचना नहि लिखलनि, किन्तु एहि माध्यमे जे मैथिली आलोचना विधाक हिनका द्वारा श्रीवृद्धि भेल अछि, ताहि पर एखन धरि कोनो विद्वानक ध्यान प्रायः गंभीरतापूर्वक नहि गेल अछि। आलोचनाक दृष्टि हिनक वस्तुपरक छलनि। जे जाही प्रकारक वस्तु रहैत छल, तकरा ताही प्ररिप्रेक्ष्यमे, बिना पूर्वाग्रहक, ई देखैत छलाह। नवकविताक पोथीकेँ ई अधुनातन सन्दर्भमे परखैत छलाह तँ रूढ़िवादी रचनाक कोनो पोथी पर जखन ई कहैत छलाह, तखन हिनक नजरि संस्कृत आलोचनाक कसौटी पर रहैत छलनि। इंडियन नेशनक १८-१९ वर्षक फाइलसँ हिनका द्वारा मैथिली पोथीक कयल गेल आलोचनाकेँ बाछि जँ ओकरा सभकेँ एक ठाम संकलित कऽ लेल जाय तँ हिनक आलोचकक भव्य ओ व्यापक रूप सोझाँ आबि जायत।

काव्यक रूपमे हिनका परम्परावादी कहल जा सकैछ। कविताक रचना करब हिनक मुख्य काज नहि छलनि। आस्तिक होयबाक कारणेँ समय-समय पर भक्ति पदक रचना कऽ लैत छलाह, जाहिमे मुख्यतः हिनक हृदय द्रष्टव्य थिक। ताहि दिनका प्रचलनक अनुसारेँ ई देशदशासूचक पदक रचना सेहो कयलनि, जाहिमे तत्कालीन समाजक कुप्रथाक चर्चा भेल अछि। हिनक पद सरल, हृदयग्राही ओ अनुभूति प्रधान अछि।

देशदशा-सूचक हिनक एक पद अछि विधवा-विलाप। हिनक समयक आरंभिक कालमे अनमेल विवाहक दारुण प्रथाक कारणेँ मिथिलामे विधवाक संख्यामे निरंतर वृद्धि भऽ रहल छल। अनेक कवि ओकर मनोव्यथाकेँ स्वर देबाक चेष्टा कयने छथि, ताहिमे एक स्वर हिनको द्रष्टव्य थिक। स्वरमे नवीनता नहियोँ रहने हृदयक करुणा तँ साकार भए गेल अछि, संगहि ई मिथिलाक नारीक सम्पूर्ण जीवनकेँ रेखांकित कऽ दैत अछि। ततबे नहि, सामाजक एहि वर्गक प्रति हिनक सहानुभूति एहि कुप्रथाक विरोधक हिनक धारणाकेँ इंगित करैछ। भाषाक सहज आ सुच्चा स्वरूप पाठकक हृदयक तारकेँ सोझे स्पर्श कऽ लैत अछि—

अलि हे, विधिगति मोहि प्रति वामे
चारि वर्ष बीतल छल जखनहि छुटल कुमारिक नामे
सात वर्ष होइतहि भऽ गृहिनी, छाड़ल नैहर गामे
पढ़ब-लिखब हम पाप जानि कऽ, दसम बरख परिनामे
वृद्ध पतिक सेवामे रहलहुँ, किन्तु बिना किछु ज्ञाने

सभय पाबि पतिसेवा-धर्मक, कयल जखन अनुमाने
तावत तँ प्रस्थान कयल पतिदेव हमर सुरधामे
आब समाजक लाज मानि सब करथि हमर अपमाने
शनिक दृष्टिसँ ताकि रहल छथि हारा सब सभ ठामे
सासु अलच्छी काहि-कहि डाँटथि, नहि नहिरहु अछि ठामे
सूप महक भाटा भऽ गेलहुँ धरम बचल केहि ठामे
धर्म जानि निज करथि समाजो जखन हमर अपमाने
तखन हमर सन विधवा सभके छनि मुइनहिँ कल्याने
अलि हे, और कहाँ हुज ठामे

नारी-अधोगति-सूचक एहि गीतमे करुण-भाव स्फुट भेल अछि। समाजक पुरुषवर्गक अनाचारसँ आहत नारी समाजक आत्महत्याक भाव देखा कवि पुरुषवर्गक आँखि खोलबाक चेष्टा कयलनि अछि। लोकोक्तिक प्रयोगसँ पात्रोपयुक्त भाषामे निखार आबि गेल अछि।

ई अनेक रेडियो-रूपकक रचना कयने छलाह। हिनक रेडियो रूपकक विषय-वस्तु मुख्यतया ऐतिहासिक रहैत छल, जे सजीव वार्तालाप, उपयुक्त पात्र-संयोजन तथा कथ्यक सुन्दर उपस्थापनक ढंगक कारणेँ प्रभावोत्पादक होइत छल।

संस्मरण लिखबामे सेहो ई सिद्धहस्त छलाह। महावैयाकरण दीनबन्धु झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, आचार्य रमानाथ झा आदि कतिपय पूर्ववर्ती ओ समकालीन विद्वान पर ई संस्मरण लिखने छथि। कविवर सीताराम झा पर लिखल हिनक लेख सेहो उल्लेखनीय अछि। मैथिली पत्रपत्रिका पर हिनक शोध-निबन्ध विशेष उपादेय अछि।

ई विभिन्न अवसरक उपयुक्त, विभिन्न साहित्यिक विधामे, विभिन्न भाषामे विभिन्न विषयक, अनेको वस्तु तैयार कयलनि, जे हिनक जीवनक अन्तिम चालीस वर्षक अवधिमे प्रकाशित अंगरेजी, हिन्दी ओ मैथिलीक अनेक पत्र पत्रिका, स्मारिका तथा विभिन्न संकलनक पन्नामे दबल-पड़ल अछि जे भेटब एकटा जटिल समस्या अछि। हिनक रेडियो रूपक तथा आकाशवाणीसँ प्रसारित वार्ता सभ ऊपर कयनाइ तँ आरो दुस्तर अछि। हिनक व्यक्तित्वक सम्पूर्ण वास्तविक स्वरूप तावत काल धरि ठाढ़ नहि कयल जा सकैत अछि, जावत ओहि सभ ठामसँ जोहि हिनक समग्र साहित्यकेँ एकत्र नहि कऽ लेल जायत। ई भेला उत्तर हिनक बहुआयामी व्यक्तित्व आओर चमकि उठत आ वस्तुतः तहिये हमरालोकनि हिनक वास्तविक कवि-रूप, एकांकीकारक रूप, संस्मरण-लेखकक रूप, आलोचक-चिन्तकक रूप आ संगहि एहि विविध विधाक प्रभासँ आलोकित बाबू साहेबक समेकित साहित्यिक स्वरूपक इन्द्रधनुषी झलक पाबि सकब। ओना, एखनहुँ जतबो सामग्री उपलब्ध अछि, ताहू आधार पर एतबा तँ निस्संकोच कहल जा सकैछ जे बाबू लक्ष्मीपति सिंहक बहुविध लेखनसँ, हिनक संपादनसँ, हिनक चिन्तनसँ, हिनक कर्ममय जीवनसँ मैथिली साहित्य उपकृत भेल अछि।

□

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'

बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क साहित्य-क्षेत्रमे पदार्पण मैथिलीक विकासक गतिकेँ तेज कऽ देलक। साहित्यक जाहि विधापर हिनक लेखनी चलल, ओहिमे नवीनताक संचार आबि गेलैक। हिनक व्यक्तित्व क्रांतिकारी छल—से हिनक कृतिक अवलोकनसँ स्वतः सिद्ध भऽ जाइत अछि। कविवर श्री आरसी प्रसाद सिंहके मैथिलीमे आनबाक श्रेय हिनके छनि। हिनक एहु सेवाकेँ मैथिलीभाषी कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करैत रहत।

दरभंगा जिलाक आनन्दपुर ड्योढ़ीमे, खण्डवला राजकुलमे, हिनक जन्म (चैत्र कृष्ण) मार्च १९०७ ई० मे भेल छलनि। यद्यपि ई लक्ष्मीपात्र-कुलमे जन्म लेने छलाह, किन्तु सरस्वतीक साधनामे तल्लीन भऽ गेलाक कारणेँ लक्ष्मीकेँ अपना लग राखि नहि सकलाह। ई अपन समस्त सम्पत्ति मैथिलीकेँ समर्पित कऽ देलनि। हिनक जीवनक अन्तिम अवधि कष्टपूर्ण बितलनि। हिनक कार्यक्षेत्र मुजफ्फरपुर छलनि। ११ नवम्बर १९४४ ई० केँ, अल्पायुमे, मैथिलीक एहि तेजस्वी पुत्रक निधन भऽ गेल।

ई मूलतः कवि छलाह—नव-नव भाव-बोध समन्वित कविताक रचना कयलनि; कथाकार छलाह—हिनक किछु कथाक गणना ओहि समयक उत्कृष्ट कथाक रूपमे होइत अछि; अनुवादक छलाह—हिनका द्वारा कयल गेल बंगलाक सुप्रसिद्ध कवि माइकेल मधुसूदन दत्तक 'विरहिनी ब्रजांगना'क मैथिली अनुवादक सम्बन्धमे कहल जाइछ जे ई मूलेक आनन्द प्रदान करैत अछि; सम्पादक छलाह—हिनक 'विभूति' मासिक मैथिलीक पत्रिका-समूहमे शीर्ष स्थानपर अवस्थित अछि। एकर अतिरिक्त रामदासक 'आनन्द-विजय नाटिका'क संपादन सेहो हिनक कयल अछि। सम्पादक होयबाक कारणेँ विभिन्न प्रकारक सामग्रीक रचना स्वयं करऽ पड़लनि, जे अनेक छद्मनामसँ 'विभूति'क पन्नामे छिड़िआयल अछि। हिनक गद्य-रचना भाषाक गतिमयता, विचारक स्पष्टता तथा विलक्षण वाक्य-विन्यासक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। मातृभाषाक सेवाक संगहि राष्ट्रभाषाक सेवा सेहो हिनका द्वारा भेल अछि।

हिनक दू गोट मौलिक कविता-संग्रह अछि—आषाढ़ (१९३६) तथा स्मृतिकण (१९४५) : 'स्मृतिकण' हिनक मृत्युक बाद प्रकाशित भेल। १९५८ मे डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक सम्पूर्ण उपलब्ध काव्य-साहित्यकेँ (अनुवाद अंश समेत) 'भुवन-भारती'क नामसँ एक ठाम संकलित कऽ प्रकाशित करा देने छथि, जकर दोसरो संस्करण भऽ चुकल अछि।

हिनक काव्यक समीक्षा करैत प्रो० शैलेन्द्र मोहन झा लिखैत छथि—"हिनक आविर्भाव एहन समयमे भेल जखन मैथिलीक कविलोकनि रूढ़ एवं परम्परागत काव्य-पद्धतिक अनुकरण कऽ रहल छलाह। यदि एहि स्थितिमे प्रतिक्रिया भेलो छल तँ ओ रचना सभ मात्र वस्तुक यथातथ्य वर्णन छल और ताहिमे कविक स्वानुभूति एवं कल्पनाक नितान्त अभाव छल। परन्तु भुवनजी काव्य-साधनामे नवीन रूपक पक्षपाती छलाह। ओ संस्कृत, हिन्दी, बंगला एवं अंग्रेजी काव्यक अध्ययन कयने

छथाह आ एहिसँ विविध रत्नराशि सऽ मातृभाषाकेँ अलंकृत करबाक चेष्टा कयलनि। फेर की छल, मैथिली कविता जे मध्ययुगीन तिरहुति मलार, विरह आ मानक पंकमे फँसल छल तकरा आधुनिकताक ठोस धरातलपर आनि ठाढ़ करबाक लेल ओ तत्पर भऽ गेलाह।" आचार्य रमानाथ झाक शब्दमे "भुवनजीक कविता हुनक जीवनक आशा ओ वेदना, विषाद ओ उल्लास, आदर्श ओ अभिलाषाक प्रतिबिम्बन करैत अछि। तेँहि तँ भुवन जी मैथिली कवितामे आधुनिकताक प्रतिष्ठापक मानल जाइत छथि, प्रगतिवादक प्रवर्तक।"

किन्तु, परवर्ती किछु आलोचकलोकनि प्रगतिवादक प्रवर्तनक श्रेय श्री यात्री केँ दैत छथि। 'भुवन'क कतिपय कविताक विषय आधुनिक अछि, ओकर शिल्पो नवीन अछि, किन्तु भाषाक स्तरपर ओ बहुत अधिक आगाँ नहि आबि सकलाह। से कयलाह यात्री। यात्रीक संग प्रगतिवाद जनसमाहत आयल आ साहित्य-धाराकेँ एक नव मोड़ दऽ देलक। किन्तु, जे काज यात्री कयलनि, तकर आधार तैयार करबामे हिनक योगदानक महत्त्वकेँ नकारल नहि जा सकैछ। प्रगतिवादक सहजोर भूमिकाक रूपमे तँ हिनक कविताकेँ स्वीकार करहि पड़त।

आषाढ़—१९३६ ई० मे प्रकाशित प्रस्तुत काव्य-संग्रह मैथिली साहित्यमे विप्लो आनि देलक। एकर भूमिका सर्वाधिक चर्चित भेल जाहिमे प्राचीन परिपाटीक कविकेँ दूरेसँ नमस्कार कयल गेल अछि। अपन कविताक प्रयोजनीयताक प्रसंग कवि स्वयं उद्घोष कयने छथि—"अनिक कान तिहुँत' 'मलार'क रस-रंगसँ भरल हो, वा 'नारदी'क 'नाचत मृदंग-ए'क ढंगपर नृत्योल्लास करैत होथि, हुनिका निमित्त ई प्रयास नहि। 'आषाढ़' रचनाक उद्देश्य जे छैक······ से जँ एखन एकर समय नहि छैक तँ कहियो भविष्यमे अबोतैक।"

'आषाढ़'क कवितासभमे परम्परासँ भिन्न स्वर-लहरीक दर्शन होइछ। 'आषाढ़' शीर्षक कवितामे प्रकृति-वर्णनक ई नवीन रूप द्रष्टव्य थिक—

आयल अषाढ़, आयल अषाढ़
भऽ गेल तिरोहित ग्रीष्म गाढ़
झर-झर-झर-झर झहरय फुहार
खुजि गेल प्रकृति-मन्दिर-द्वार
वन-वीथीमे मंजुल विकास
लतिका-कलिकाहि मधुर हास
नहि शुष्क विटप अधर-प्रदेश
छलकय छल-छल अमृत अशेष

जहिना आषाढ़ अबिते तबधल धरती, जरल-झरकल गाछ-वृक्ष तथा प्रचण्ड गर्मीसँ प्रताड़ित मानव हरित-भरित-पुलकित भऽ उठैछ, जीवनमे एक नवीन संचारक अनुभव करऽ लगैछ, तहिना हिनक 'आषाढ़' सेहो काव्य-जगतमे व्याप्त गर्मीक अकुलाहटिसँ साहित्यिक समाजकेँ त्राण देलौक।

मैथिली साहित्यमे वसन्त-वर्णनक परम्परा आदिए कालसँ रहल अछि। प्रायः सभ कवि ऋतुराजक वर्णन-विन्यासमे अपन काव्य-कौशलक प्रदर्शन कयने छथि। भुवन सेहो 'वसन्त-सुषमा'क वर्णन कयने छथि। किन्तु, हिनक वर्णनमे कतेक मन्यता अछि, से द्रष्टव्य—

किए किंशुक छथि प्रफुल्लित कोकिला मधुगान गाबथि
मुग्ध भुवनक मन करैं छथि सतत नव सम्मान पाबथि

हँसै छथि वसुधा विमल बहुवैत उथि आनन्द-धारा
कौन एविसँ आइ सुन्दरि प्रिय दिवाकर चन्द्र तारा
सजनि, दक्षिण पवन अपना संग ककर सुवास लाबथि
हाय, अन्तहित कतऽ के वेधि निज स्वर शर चलाबथि

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे "विश्वयुद्धक विभीषिका साहित्यकेँ सहजेँ मानवतावाद दिस मोड़ि रहल छल और एम्हर भारतक राजनीतिक रंगमंचपर महात्मा गान्धीक पदार्पणसँ देशप्रेमक भावना जोर पकड़ि रहल छल। मैथिली कवितामे एहि विविध भावनाक समावेश भुवनजीक रचना द्वारा भेल। 'आषाढ़'मे जेना रवीन्द्रक स्वर प्रतिबिम्बित भऽ रहल हो।"

एक आलोचक कहैत छथि जे 'आषाढ़क कवितामे स्वानुभतिक मधुर उपन्यास, सहृदयता ओ सरसताक एक गोट नव आस्वाद उपस्थित करैत अछि,' किन्तु एक अन्य आलोचकक अनुसार 'ओ मैथिलीक मध्ययुगीन लटाढ़मसँ मुक्त नहि भऽ सकलाह अछि।'

प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक अनुसार "The 'Asadh' of 'Bhuvana' is the harbinger of a new type of poetry—the lyrical element of which is marvellous. He touched both the old and the new themes. Some of the lyrics are noted for expressing directly his personal emotions."

'आषाढ़'क प्रकाशनक बाद हिनक कविता आर बेसी प्रभावी भेल, समाजक अभिजात वर्गपर आर कठोर चोट कयलक—

की गाउ गाबि ककरा सुनाउ
गुण अछि ठामहि गुण-ग्राहक नहि
रीझत के, हम ककरा रिझाउ
सुनि गीत कहय जग वाह-वाह
भावय के भावक अगम थाह
भऽ जाइछ व्यर्थ करुणा-प्रवाह
महिषिक आगाँमे अपन हाय
की मधुर स्वरेँ वीणा बजाउ ?

समाजमे व्याप्त दकियानुसी विचार तथा विषमताक दुर्भावनाकेँ मूक द्रष्टा बनि देखहि टा नहि चाहलनि कवि, अपितु स्थितिमे परिवर्तनक लेल भीषण हुंकार सेहो कयलनि—

हम करब प्रलय, हम करब प्रलय
हम रहय देब नहि आब जगत मे
छन भरियो विष-कुम्भक भय
हम छी महान, छी गुण-निधान
उरमे चिर जाग्रत स्वाभिमान
मुखमे ज्वालामय प्रगति-गान
गति रोकि सकै अछि नहि कृपाण
अछि प्रकृति स्वयं सहचरी हमर
अन्तर्बलमय, हम अभय, अजय

एही सभ स्वरक कारणें प्रो० रमानाथ झा हिनका 'नवीनताक सूत्रधार' तथा 'प्रगतिवादक प्रवर्तक' मानने छथि।

कविवर यात्री हिनक काव्यक महत्त्वक प्रसंग एक ठाम लिखने छथि—"प्राचीन परिपाटीक शब्द-शिल्प नवीन भावना कें अभिव्यक्त करबा काल नङराय लागल तें ओ आगाँ आबि मैथिली कविताकें हिन्दी छायावादी कविताक सम्मुख ठाढ़ कऽ देल। की शिल्प-विधान आ की तत्त्व-चिन्तन, भुवन जी काव्यधाराकें नवीन दिशामे मोड़ि देल।"

हिनक कथाकारक रूप सेहो उल्लेखनीय अछि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक भूमिकामे कहल गेल अछि—"मैथिली कथा-साहित्यमे भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। बंगला एवं विशेषतः हिन्दीक कथा सँ प्रभावित भऽ मैथिलीमे नव शिल्पक कथाक प्रारम्भ भुवन जी द्वारा रचित एवं हुनके द्वारा संपादित 'विभूति'मे प्रकाशित कथासँ होइत अछि। हिनक 'शून्य' कथामे 'फ्लेशबैक'क पाश्चात्य शिल्प तँ अपनाओलि गेल अछि, कथावस्तुक नवीनता सेहो अछि।"

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार "भुवनजीक 'रौद-छाया' ओ 'शून्य' प्रसिद्ध कथा छनि। प्रथम यदि प्रतीकात्मक आ Reflective कथा थिक तँ दोसर प्रगतिशील ओ मनोविश्लेषणात्मक।"

'आषाढ़'क भूमिका, 'विभूति'क सम्पादकीय तथा अन्य छिटफुट प्रकाशित निबंध-आलोचनाक आधार पर कहल जा सकैछ जे हिनकामे गम्भीर आलोचकक दृष्टि छलनि, विषयकें पकड़बाक क्षमता छलनि तथा ओकरा सहानुभूतिपूर्वक स्पष्ट भाषामे अभिव्यक्तिक कला सेहो छलनि।

विभूति—हिनका द्वारा सम्पादित 'विभूति' नामक मासिक पत्रिका १९३६-३८ मे प्रकाशित भेल। डॉ० 'श्रीश'क अनुसार "भुवनजीक 'विभूति' प्रगतिशील उद्देश्यें अवतरित भेल। भुवन जी क्रान्तिकारी विचारक निर्भीक व्यक्ति छलाह ओ ओहि युगमे हुनक निर्भीकता प्रगतिशील व्यक्तिमे तँ लोकप्रिय अवश्य भेल, मुदा ओहि कारणें विभूतिक अन्तो भऽ गेलैक। नवीनताक दृष्टिसँ विभूतिक प्रकाशन मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे स्वर्णाक्षर सँ लिखबा योग्य अछि। एहि मध्य नवीन प्रकारक लेख, निबन्ध आलोचना ओ कविता सभ प्रकाशित होइत छल। नवीन शिल्पक दृष्टिएँ मैथिलीक गल्प-साहित्य सभसँ पहिने एहि मध्य प्रकाशित भेल। एहिमे प्रकाशित हास्य-व्यंग्य बड़ मार्मिक होइत छल। एकर अध्ययनसँ भुवन जी ओ हुनक विचारधाराक कवि-लेखकवृन्दक प्रवृत्ति-विश्लेषणमे बड़ सहायता भेटि सकैत अछि।"

किन्तु, श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकर महत्त्वकें स्वीकार तँ करैत छथि, किन्तु एकर अवदानकें बहुत अधिक महत्त्व देबा लेल तैयार नहि छथि। हुनक कहब अछि "विभूति पत्रकारिताकें एक नवीन दिशा देलक। साहित्यक समीक्षामे स्पष्टता अनलक, जाहि मैथिल महासभाक संकीर्ण नीतिक कारणें मैथिली भाषा वर्ग-विशेषक भाषाक रूपमे सिकुड़ि गेल ताहि नीतिक विरोधमे ओहि सामन्तशाहीसँ टक्कर लेलक, किछु सत्साहित्यहुक प्रकाशन कयलक, एहि उपलब्धि सभकें नकराल नहि जाय सकैत अछि। परन्तु सत्यक घेँट ममोड़ि इतिहासक पृष्ठपर स्वर्णाक्षरमे एकर नाम अंकित होयत ई कहब इतिहासहुकें अमर्यादित करब थीक।"

एहि पत्रिकाक स्वरूप, पाठ्य-सामग्री तथा एकरा बन्द होयबाक कारणपर प्रकाश दैत डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि "The Vibhuti began well. It was priced very low, considering that is used to give very interesting, though at times provcative, matter and that an established writer like 'Bhuvana' was associated with it. Its articles were revolutionary in sprit and envisaged a new line of work—that of ready-wit and humour. It met with its end soon because its style of spelling was new to Maithili readers, because it went too far in criticising old institutions and becouse it gave an impression of malicious propaganda."

ई पत्रिका बेसी दिन चलल नहि तकर कारण छल—एक तँ मैथिली पाठककें एकर शैली सर्वथा नवीन रहलाक कारणें पचैत नहि छल; दोसर, अपन पूर्ववर्ती साहित्यकार, समाजसेवक आदिक ई कटु आलोचना करैत छल, जे हुनकालोकनिक सहन-शक्तिक सीमाकें टपि गेल छल, फलस्वरूप ई विपरीत प्रचारक शिकार भऽ गेल।

'विभूति' भनहि लगले बन्द भऽ गेल, किन्तु जतबा दिन ओ जील, ततबा दिन धरि सभक ध्यानपर कोनो-ने-कोनो कारणें चढ़ल रहल। तहिना, 'भुवन' यद्यपि अल्पजीवी भेलाह, किन्तु जतबे दिन ओ जीलाह, अपन आस्तित्वक सभकें आभास दियबैत रहलाह, अनेकोकें आतंकित करैत रहलाह। हिनक सम्पूर्ण व्यक्तित्व हिनक 'परिचय' शीर्षक कवितामे उमड़ि कऽ समक्ष चल आयल अछि, जकर किछु अंश एतऽ द्रष्टव्य थिक—

कवि छी, सदा एक समान रही
अनुप्राणित भऽ कलगान करी
अपने पथ-संबल-हीन रही
जगकें धन-जीवन दान करी
....
दीन छी, भाग्य-विहीन विपन्न
स्वभावहिसँ करुणाक निधान छी
प्रीतिक गीत गबैत छी मुग्ध भऽ
दैवक हाय विचित्र विधान छी
घोर विपत्तिक चोटहुमे
दयनीयक हेतु कुबेर समान छी
रिक्त छी, तैयो लुटाबी विभूति
कहओ जग तुच्छ, परन्तु महान छी

□

ईशनाथ झा

स्वर्गीय ईशनाथ झा 'सरस कवि' क रूपमे मैथिली साहित्यमे विख्यात छलाह। हिनक सुकोमल भावाभिव्यंजक कविता-संग्रहक नाम 'माला' थिक। किन्तु, ई नाटककारक रूपमे सेहो तहिना विख्यात छलाह। हिनक मौलिक नाटक दू टा अछि—चीनीक लड्डू तथा उगना। जे दू गोट संस्कृत नाटकक अनुवाद हिनक कयल अछि, तकर नाम थिक—कालिदास-कृत 'शकुन्तला' तथा शूद्रक-कृत 'मृच्छकटिक'। एकर अतिरिक्त, 'गद्य-चन्द्रिका' नामक संकलनक संपादन सेहो कयने छलाह। ई अपन जीवनक अन्तिम पहरमे महाभारतक अनुवाद करब सेहो प्रारम्भ कऽ देने छलाह, किन्तु से हिनक देहान्तक कारणें अपूर्ण रहि गेल। हिनक मृत्यु २ मार्च १९६५ ई० कें भेलनि।

हिनक जन्म भेल छलनि १८ जून १९०७ ई०कें, जेठ शुदि सप्तमी तिथिकें, दरभंगा जिलान्तर्गत नवटोल नामक गाममे। ई संगीत-शास्त्रक विधिवत अध्ययन कयने छलाह। ई चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागक प्राध्यापक भेलाह। एहि विभागक ई यशस्वी अध्यक्ष आजीवन रहलाह। संस्कृतक गंभीर अध्येता तँ ई छलाहे जे पाश्चात्यो साहित्यक नीक ज्ञान रखैत छलाह।

हिनक कवितामे एक दिस जतऽ संगीतक सरस स्वर-लहरी भेटैछ, ततऽ दोसर दिस संस्कृत साहित्यक गम्भीर्यो देखबामे अबैछ तथा पाश्चात्य साहित्यक यथार्थताक दर्शन सेहो होइछ।

माला—'माला'क समस्त कविता सुर-ताल-लय-निबद्ध, कोमलकान्त-पदावली-युक्त विभिन्न भाव-बोध-मण्डित अछि। एकर प्रारम्भे कतेक सरस भेल अछि—

उजड़ल उपवन करइत सिंचन
दृग-सरमे नहि बाँचल जलकण
जीवन दय कय नव सुम-सचय
गथलहुँ बिनु दामक हार
अयलहुँ लय नव उपहार

एहि लघुकाय पोथीमे विभिन्न भाव आ विषय-समन्वित विलक्षण कविता संकलित अछि। शरद, स्वागत वसन्त, मेघमाला आदिक सरस, सुकोमल वर्णन सेहो एहिमे अछि आ मैथिलीक महिमा-बोधक स्तुति-गीत सेहो; अमर, शिशु आदि किछु नव भावक रचना जँ भेटैत अछि तँ 'कृषक-कन्या'क अल्हड़पनक हृदयग्राही स्वाभाविक चित्रांकन सेहो; 'हलधर'क कठोर श्रमक सबल अभिव्यक्ति भेल अछि तँ विद्रोहक चिनगी सेहो देखबामे अबैछ। किन्तु, कविता कोनो प्रकारक हो, कविक सरसता सभ ठाम स्पष्ट होइत अछि। यद्यपि ई कहैत छथि—

छन्द-ताल केवल थिक बन्धन
नहि सम्प्रति अछि तकर प्रयोजन
रुचिर पवित्र भावमय गायन
पंचम स्वरसँ गाउ

किन्तु, हिनक कोनो कविता छन्द-ताल-विहीन देखबामे नहि आयल अछि। 'कृषक-कन्या'क विषय-वस्तु यद्यपि अंगरेजी काव्य 'सोलीटरी रीपर' सँ खूब नीक जकाँ प्रभावित अछि तथा एकर छन्द-विन्यास हिन्दीक सुमित्रानन्दन पंतक 'ग्राम-युवती' सँ मिलैत अछि, तथापि अपन कोमलता ओ गेयधर्मिता लऽ कऽ ई कविता चित्तकें आह्लादित कऽ लैत अछि--

पल्लव पुंजक बिच सुभग वर्ण जूहीक मुकुल सम सुन्दर
अति गौर वदन अज्ञात मदन
पट पहिरि हरित ई कृषक-सुता
मुग्धा ललिता चलिकें झटपट
भार-भरिकें घट उठा र कटि-तट
पटवैत बीज की गाबि रहल अछि सुललित गीत मनोहर

एक दिस कृषक कन्याक रूपच्छटावर्णन अछि तँ दोसर दिस विद्रोहक गीत सेहो अछि—

की केहरि-शिशु केहनो निर्बल
नहि कूदि पड़य गजवर-शिरपर
निज जन्मसिद्ध अधिकार हेतु
यदि मरब, मरब नहि, बनब अमर

'माला'क प्रसंग प्रो० कृष्णकान्त मिश्रक मत अछि—"माला नामक पद-संकलनमे अंगरेजी काव्यक गुण प्रस्फुटित अछि। सौन्दर्य, पवित्रता एवं सत्यताक आदर्श एहिमे व्यक्त अछि। ई प्रकृतिकें आत्मीय मानैत छथि एवं तें वसन्त, शरद, मेघ, प्रातः आदिक विषयक पद बनओलनि। 'स्वप्न' नामक कवितामे स्वप्नक गूढ़तम व्याख्या कऽ अपन विलक्षण प्रतिभाक परिचय दैत छथि। भाषामे संस्कृत-शब्दक प्राचुर्य अछि, किन्तु पाँतीक मधुर संगीत एहि प्रभावकें गौण कऽ दैत छैक। विचार-शैथिल्य कतहु कतहु भेटैछ, किन्तु ओ ततेक नहि खटकैत अछि।"

आचार्य रमानाथ झाक अनुसार—"माला मैथिली काव्य-क्षेत्रमे एक गोट बड़ प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कयने अछि।" हिनक कविताक प्रसंग ओ पुनः कहैत छथि—"हिनक कविता संगीतक माधुर्यसँ ओतप्रोत रहैत अछि ओ तदनुकूल शब्दचयन, छन्दक विन्यास, विषयक उपस्थापन आदि मे ओ माधुर्य कतहु-कतहु अतिशय भए जाइत अछि। प्राचीन रीतिक पक्षपाती ई कखनहुँ भिन्न-भिन्न वादक रचना सेहो कएल अछि, परन्तु एहि सभ आयास मे हिनक रचनाक महत्त्व नहि स्फुट होइत अछि। से होइत अछि हिनक स्वानुभूतिक अभिव्यंजक कवितामे, ओ ताहिमे संगीतक माधुर्य ओ कविताक रस—दुहूक सामंजस्य हिनक रचनाक वैशिष्ट्य अछि।"

प्रो० रमानाथ झाक एहि उक्तिक समर्थनमे हिनक निम्न पद द्रष्टव्य—

हम धूलि रहब नहि फूल बनब
बरु दलित होयब नहि आहि कहब
एतबय जनलहुँ एतबय सिखलहुँ
दुखकें हँसइत अपनओलहुँ
पद-धूलि बनल हम अयलहुँ

डॉ० जयकान्त मिश्र हिनक काव्य-प्रतिभाक मूल्यांकन करैत कहैत छथि—"Ishanath Jha was perhaps the most versatile writer of his generation who blended the traditional and new manner of writing poetry. Poetry was written in his family for many generations... He utilised all this cultural heritage in creating his lyrics... The poet betrays some amount of immaturity of thought in his early poems but gradually, however, he appears to free himself from it."

प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक अनुसारें "There is a fine blending of both the old and new techniques in his poems and there lies his claim to originality. In his discription of nature, he is second to none and at times he excells many."

प्रो० चौधरीक मन्तव्य किछु उदार रहितो एतबा तँ निस्संकोच स्वीकारल जा सकैछ जे ईशनाथ झा जे-जतबे लिखलनि, महत्त्वपूर्ण लिखलनि। डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क ई उक्ति सार्थक बुझि पड़ैत अछि—"रमणीयार्थ उत्पन्न करबाक पाछाँ ईहो एतेक लागि जाइत छथि जे कल्पनाशीलतामे आकंठ निमज्जित भऽ जाइत छथि। आत्माभिव्यक्तिक जे स्वाभाविकता चाही, से तँ नहि रहि पबैत अछि, मुदा हिनक कल्पना धरि होइत अछि बड़ मधुर जे काव्यमर्मज्ञकेँ अत्यधिक आह्लादित करैत अछि।"

जतबे हिनका काव्य-रचनामे दक्षता प्राप्त छलनि, ततबे नाटक-रचनामे परिपक्वता सेहो छलनि। मौलिक नाटकमे 'चीनीक लड्डू' सामाजिक समस्या पर आधारित अछि तथा 'उगना' ऐतिहासिक ओ जनश्रुतिक आधारपर।

चीनीक लड्डू—डॉ० 'श्रीश'क अनुसार "मैथिली नाटकक शिल्प ओ नाटकीयताकेँ आगाँ बढ़यबामे 'चीनीक लड्डू' बड़ महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैछ। वस्तुतः की उपयोगिताक दृष्टिएँ आ की नाटकीयताक दृष्टिएँ, की कथोपकथनक सरलता-स्वाभाविकताक दृष्टिएँ आ की भाषक अकृत्रिम प्रयोगक दृष्टिएँ 'चीनीक लड्डू' प्रायः आबहु मैथिली साहित्यमे सर्वश्रेष्ठ अछि। एहिमे धूर्त खलपात्र दिबान नटआदासक स्वार्थपरताक वर्णन भेल अछि जे कोना दू भाइ मध्य विभेद उत्पन्न करैत अछि तथा कोना सुधाकान्तक बालककेँ खोअयबाक हेतु विष मिलाओल चीनीक लड्डू बनबैत अछि।"

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा एकर आलोचना करैत कहने छथि—"यद्यपि जे चित्र उपस्थित कयल गेल छैक से मिथिलाक समष्टिगत वर्गक नहि, एक संकुचित वर्गक छैक, तथापि जे 'भैयारी-फकीरी' द्वन्द्वक वर्णन अछि से यथार्थ अछि। एकरा क्यो बिसरि नहि सकैछ। तथापि, दुनू भाइक चरित्रमे सत्ययुग आ कलियुगक जे अन्तर छैक, से सुधाकान्तक चरित्रकेँ आविश्वसनीय बना दैत छैक।"

उगना—'उगना' हिनक दोसर मौलिक नाटक थिक, जकर प्रकाशन १९५६ ई० मे भेल। एकर कथावस्तु विद्यापतिक शिव-भक्ति तथा एहिसँ आह्लादित भऽ महादेवक उगनाक रूपमे विद्यापतिक चाकरी करबापर आधारित अछि। पार्वतीक षडयंत्रसँ ई भेद व्यक्त भऽ जाइछ ओ अपन वचनानुसार महादेव कैलास घुरि जाइत छथि।

विद्यापतिसँ सम्बन्धित होयबाक कारणेँ एकरा ऐतिहासिक नाटक कहल जाइछ, किन्तु डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा एहि पर अपन विमत प्रकट करैत कहैत छथि—"ऐतिहासिक पुरुष विद्यापतिसँ संम्बद्ध रहलाक कारणेँ एकरा ऐतिहासिक नाटक कहब उचित नहि जँचैछ। पहिल बात तँ ई जे ई नाटक एक किंवदन्तीपर आधारित अछि, दोसर बात ई जे एहिमे पूर्णतः आलौकिक असंभावित घटनाक असंगत सम्मेलन कराओल गेलैक अछि। अभिमान, क्रोध, पिपासा आदि केँ व्यक्तिक रूपमे उपस्थित कऽ ओकरा नाटकक मानव-पात्रक शरीरमे प्रविष्ट कराओल गेलैक अछि जकरा वर्तमान युगक बुद्धिजीवी दर्शक कथमपि स्वीकार नहि कऽ सकैछ।"

अनूदित नाटकमे कालिदासक विश्वविख्यात नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'क सफल गद्य-पद्यमय अनुवाद कयल गेल अछि। 'मृच्छकटिक' नाटक, जकर मूल लेखक शूद्रक थिकाह, हिनक दोसर अनूदित नाट्यकृति थिक, जाहि प्रसंग आचार्य रमानाथ झाक मत द्रष्टव्य थिक—'माटिक खेलओनाक गाड़ी' एहि नाटकमे एक गोट साधारण घटनाक द्योतक थिक, किन्तु ओकर परिणाम केहन विकट से तँ नाटक पढ़लहि उत्तर स्पष्ट होएत।.... "संस्कृत नाट्य साहित्य एक निर्दिष्ट रीति पर रचित होइत आयल अछि ओ तेँ अधिक मे बहुत रस विषय समाने भेटैत अछि। ओकर उपन्यासहुक क्रम समाने भेटैत अछि। मृच्छकटिक ताहि दृष्टिसँ सर्वथा भिन्न अछि। नाटकमे होइत अछि कथावस्तु, चरित्र, वार्तालाप ओ वातावरणक सृष्टि। एहि सब दृष्टिएँ ई नाटक सर्वथा अभिनव अछि।"

ईशनाथ झा मैथिलीक प्राचीन काव्यक, विशेषतः विद्यापति ओ गोविन्ददासक, मर्मज्ञ छलाह। आचार्य रमानाथ झा द्वारा सम्पादित 'प्राचीन गीत' मे गोविन्ददासक पदसभक विद्वत्तापूर्ण टिप्पणीसँ हिनक तद्विषयक ज्ञानक गाम्भीर्य प्रकट होइत अछि। गोविन्ददासक पदक सूक्ष्म अर्थ, ध्वनि, तात्पर्य-अलंकार आदिक स्पष्ट निर्देश करैत ठाम-ठाम हुनक शब्द-प्रयोगमे स्खलनकेँ सेहो ई संकेतित कयने छथि, जे हिनक आचार्यत्वकेँ नीक जकाँ स्थापित करैत अछि।

हिनक अपूर्ण कृति 'महाभारत'क आंशिक अनुवाद हिनक अनुवाद-क्षमता ओ काव्य-रचनाक दक्षताकेँ एकहि संग उद्घाटित करैत अछि। जतबे अनुवाद प्रकाशित अछि, से भाव आ भाषा, उपस्थापन आ वर्णन दुनू दृष्टिएँ विलक्षण अछि। रचनामे कतहु अनुवाद जन्य-अस्वाभाविकता नहि आयल अछि। खेद एतबे जे ई पूर्ण नहि भऽ सकल, ताहूमे जतबो लिखल अछि, सेहो अद्यावधि प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि।

हिनक जतबहु रचना प्रकाशित अछि, से हिनका साहित्यमे मर्यादित स्थान प्रदान करयबामे सर्वथा समर्थ अछि।

□

हरिमोहन झा

मैथिलीमे विशाल पाठकक वर्गकेँ तैयार करबामे, एकर साहित्यकेँ भाषान्तरमे सम्मान देअयबामे तथा एकर लोकप्रियता बढ़यबामे, आधुनिक कालमे जँ ककरो एक गोटाकेँ श्रेय देल जायत तँ ओ होयताह प्रोफेसर हरिमोहन झा। वस्तुतः ई अपन रंग विरंगक रचना सँ रूढ़ि पर कठोर प्रहार कऽ मिथिलाक जड़ताकेँ भंग कयलनि तथा हिनके उपन्यास-कथा सभसँ प्रेरणा लऽ मिथिलाक ललना-लोकनि समाजक विकासमे अपनाकेँ समर्थ प्रमाणित कयलनि। योग्य पिता पं० जनार्दन झा 'जनसीदन'क सुयोग्य पुत्र प्रो० हरिमोहन झा मैथिली साहित्यमे एक नवीन विधा—व्यंग्य—क सृष्टि कयलनि तथा 'खट्टर ककाक तरंग'क रचना कऽ तकरा पुष्टो कऽ देलनि।

हिनक जन्म वैशाली जिलाक कुमर बाजितपुर गाममे १८ सितम्बर १९०८ ई० केँ भेलनि। ई अत्यन्त मेधावी छात्र छलाह तथा दर्शनशास्त्रमे एम० ए० कऽ पहिने पटनाक बी० एन० कालेज, पुनः पटना कालेज, तदनन्तर पटना विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर विभागमे अध्यापन कयलनि। दर्शन-विभागाध्यक्षक पदसँ सेवा-निवृत्त भेलाक बादो पाँच वर्ष धरि विश्वविद्यालय-सेवा-आयोगक Research Professor रहलाह। हिनक निधन २३ फरवरी १९८४ केँ दरभंगा मे भऽ गेलनि।

हिनक लेखन-कार्य कहियो रुकल नहि। मृत्युक समयसँ किछु दिन पूर्व धरि ई आत्मकथा लिखैत रहलाह जे पछाति 'जीवन-यात्रा'क नामसँ प्रकाशित भेल। हिनक विशिष्ट मैथिली-सेवाक कारणेँ पटनाक मैथिल गोष्ठी द्वारा १९८३ ई० मे एक गोट विशाल अभिनन्दन-ग्रन्थ हिनका समर्पित कयल गेल। दीर्घ आकारक, ५९८ पृष्ठक ओहि अभिनन्दन-ग्रन्थमे एकानबे रचनाकारक १०६ गोट रचना संकलित अछि।

हिनक प्रकाशित कृति अछि—कन्यादान (१९३३), द्विरागमन (१९४३)—उपन्यास; प्रणम्य देवता (१९४५), रंगशाला (१९५०)—कथा-संग्रह; खट्टरककाक तरंग (१९४९)—व्यंग्य; चर्चरी (१९६०)—विविध; जीवन-यात्रा (१९८४)—आत्मकथा। एकर अतिरिक्त, संगृहीत-असंगृहीत एगारह गोट बीछल कथाक संग्रह 'एकादशी'क नामसँ सेहो प्रकाशित भेल अछि। हिनक अनेक पोथीक अनेक संस्करण भेल अछि।

उपन्यास आ कथा तँ ई लिखबे कयलनि—एकांकी, प्रहसन, निबन्ध, कविता आदि अन्यान्यो विधापर ई विलक्षण रचनाक सृष्टि कयलनि।

कन्यादान—'कन्यादान'क प्रकाशनक संगहि ई मैथिली संसारमे सुविख्यात भऽ गेलाह। एकर आरम्भिक किछु अंश 'मिथिला' नामक पत्रिकामे, १९२९ ई० मे, सर्वप्रथम प्रकाशित भेल छल। बादमे, १९३३ में, पुस्तकाकार छपल। 'कन्यादान'क १९८२वला संस्करणमे दस पृष्ठक विस्तृत समालोचनात्मक भूमिका देल गेल अछि, जे एहि पुस्तकक ऐतिहासिक ओ साहित्यिक महत्त्वकेँ खूब नीक जकाँ रेखांकित करैत अछि। 'कन्यादान'क महत्त्वक प्रसंग ओहिमे कहल गेल अछि—"कन्यादान सर्वप्रथम मैथिली उपन्यासकेँ यथातथ्यक संकीर्ण ढाबासँ निकालि ओकरा वर्णनक

विपुल ऐश्वर्यसँ समृद्ध कयलक। पूर्वक उपन्यासमे वर्णनक ई सूक्ष्मता नहि छल आ सूत्ररूपमे कथा कहि देबाक प्रवृत्ति छल। कन्यादान एहि प्रणालीक अन्त कयलक आ मैथिली उपन्यासकेँ पहिल बेर ओकर सही भूमिपर आनि ओकरा ओहि सभ महिमासँ मण्डित कयलक जे ओकरा गद्यक क्षेत्रमे महाकाव्यक दर्जा देयबैत छैक।"

डॉ० 'श्रीश'क शब्दमे "मैथिली साहित्यकेँ लोकप्रिय बनयबामे प्रो० हरिमोहन झाक कन्यादानक बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। एहिसँ मैथिली भाषाभाषी शिक्षित जनसमुदायक जतबा मनोरंजन भेल, ततबा मैथिली साहित्यक कोनो अन्य कृतिसँ नहि।"

एकर कथावस्तु संक्षिप्त अछि। चण्डी चरण मिश्र (प्रसिद्ध सी० सी० मिश्र) अंगरेजी शिक्षामे तेना रमि गेल छथि जे हुनका अपन समस्त संस्कार-संस्कृति, सामाजिक रहन-सहन, चालि-चलन उकरू लागऽ लगैत छनि, किन्तु हुनक विवाह भऽ जाइत छनि मिथिलाक एक अशिक्षित कन्या बुच्ची दाइसँ। दुनूक संस्कारमे आकाश-पातालक अन्तर अछि। फल ई होइत अछि जे सी० सी० मिश्र चतुर्थीक रातिएमे पड़ा जाइत छथि।

एहि उपन्यासक कारणेँ एहि लेखककेँ मैथिल पण्डित समुदायक घोर आलोचना सहऽ पड़ल छलनि, मैथिलीक हाथ-पयर तोड़ि देबाक जबर्दस्त अभियोगक सामना करऽ पड़ल छलनि—'स्वच्छन्द प्रोफेसर मैथिलीक हाथ-पयर पहिनहि तोड़ि देलऽ'। किन्तु, नवीन विचारधाराक विशाल पाठक-समुदायक हिनका, तहिना, प्रचुर प्रशंसो प्राप्त भेलनि।

एकर कथावस्तु यद्यपि बहुत शक्तिशाली नहि अछि, किन्तु वर्णन तेहन चमत्कारी अछि आ विषय तेहन विस्फोटक अछि जे एकरा पढ़बा लेल अन्य भाषा-भाषी पर्यन्त मैथिली सिखने अछि।

डॉ० जयकान्त मिश्रक मत अछि— 'The story does not reveal the real reason of the popularity of Harimohan Jha. His strong propaganda in favour of educating girls on western lines, indeed, excited criticism and he tried to justified his "impartiality' in the preface to its sequel Dviragman."

प्रबुद्ध पाठककेँ ई उपन्यास कोना आकृष्ट कऽ लेबाक क्षमता रखैत अछि, तकर झलक डॉ० श्रीकृष्ण मिश्रक एहि कथनसँ भेटि जाइत अछि—"हमरा मोन अछि, जखन ई पुस्तक हमरा प्रथम बेरि उपलब्ध भेल तँ हम एक्के बैसकीमे तीनि आवृत्ति एकरा पढ़ल, आओर विशेषता ई जे तीनू बेर घटकराजक टनटनौआ, ठनठनौआ, खनखनौआवला घटकैतीक विभाजन, झारखंडीक 'आङनमे पेट फुलता हए,' पुरोहितक बोल लगनाइ, बटुक जीक बोली, ई सभ प्रियगर लगबे कयल।"

एकर वर्णन-शैली एवं भाषा-सौष्ठवक प्रसंग डॉ० अमरेश पाठकक मत अछि—"कन्यादानक लेखक अपन स्वाभाविक वर्णन शक्तिक कारणेँ हमरालोकनिक ध्यान आकृष्ट करैत छथि। वस्तुतः श्रीहरिमोहन झा मैथिलीक पहिल उपन्यासकार छथि, जनिक रचना शिल्प एवं विषय दुहू दृष्टिएँ आकर्षक अछि। लोकोक्तिक प्रयोग, शब्द-चयन, भाषाक गतिशीलता आदिमे हिनक विशेषताक परिचय भेटैत अछि। मैथिलीक परिष्कृत एवं उपन्यासक हेतु स्वाभाविक गद्यक रूपक दर्शन कन्यादानसँ होबऽ लगैत अछि।"

कन्यादानक विशेषताक प्रसंग डॉ० पाठक कहैत छथि—"अनुकूल वातावरण निर्माण कऽ प्रभावोत्पादक प्रसंगक उद्भावना करब कन्यादानक विशेषता थिक। मनोरंजनक दृश्य उपस्थापनक क्रममे तीक्ष्ण व्यंग्य द्वारा लेखक विचारसँ पाठकके प्रभावित करैत छथि।"

कन्यादानक रचनाक दस वर्षक बाद द्विरागमनक रचना भेल। एकर उद्देश्यके स्पष्ट करैत लेखक कहने छथि—"प्राचीन परम्परागत रूढ़ि तथा नवीन अंग्रेजी विचार, एहि दुहूक संघर्षसँ उत्पन्न प्रतिक्रियाके विनोदात्मक रूपमे उपस्थित करब लेखकक प्रधान उद्देश्य बूझक चाही।"

आलोचकक दृष्टिमे द्विरागमनक कथानक आओर कमजोर अछि, किन्तु लेखकक अन्य वैशिष्ट्य—भाषाक चित्रणक, वर्णनक—से एहूमे वपुल मात्रामे देखबामे अबैछ। समालोचकक इहो मत अछि जे कन्यादानमे जे समस्याके उठाओल गेल अछि, तकर समाधान द्विरागमनमे नहि भऽ सकल।

प्रो० हरिमोहन झा कथाक क्षेत्रमे सेहो ओही स्थानक अधिकारी छथि, जे स्थान हिनका उपन्यास-क्षेत्रमे प्राप्त छनि। हिनक दू गोट कथा-संग्रह प्रकाशित अछि—प्रणम्य देवता तथा रंगशाला। 'चंर्चरी'मे सेहो कथासभ संगृहीत अछि। साठिक बादक कथाक संग्रह प्रकाशित होयब बाँकिए अछि।

हिनक कथाक मूल उद्देश्य मनोरंजन तथा मनोरंजनक माध्यमे मैथिल समाजक रूढ़िगत दुर्वलताक उद्घाटन करब थिक। हिनक कथाक विशेषताक प्रसंग मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक भूमिकामे कहल गेल अछि—"मिथिलाक अभिजात वर्गीय समाजक मानसिकताक गंभीर एवं सूक्ष्म अध्ययन कऽ हास्य एवं व्यंग्यक कटुमधु परिवेशमे अपन बात कहबाक हिनकामे अपूर्व क्षमता छनि। प्रणम्य देवताक सृष्टि केवल मैथिली कथाक इतिहासमे नहि, अपितु सम्पूर्ण मैथिल समाजक इतिहासमे एक क्रान्तिकारी घटना थिक। एहि पुस्तकक कथासभमे मैथिल पहिल बेर आत्मनिरीक्षण कयलनि आ आत्मनिरीक्षण द्वारा निश्चित रूपसँ प्रगतिक दिशामे गतिशील भेलाह। रूढ़िवादिता एवं धर्मान्धताक पराकाष्ठापर स्थित मिथिलाक लोकके अपना स्वरूपक बहुत-किछु ज्ञान प्रणम्य देवता आ रंगशालाक माध्यमसँ भेलैक।"

डॉ० जयकान्त मिश्रक शब्दमे—"Harimohan Jha's stories are marred by his obsession of finding fault with even some of those things which form the really noble, sublime and good in our culture. While he seeks to shake our confidence in their values, he does not always succeed in offering with any force other alternative values of life. His greatest gift that attracts his readers in spite of this defect is his command over the language which he can mould, modify and run as he pleases."

हिनक विशिष्ट कथाक संकलन 'एकादशी'क १९८१क संस्करण ओ ओकर बादक संस्करणमे प्रत्येक कथाक आरम्भमे उपादेय टिप्पणी देल गेल अछि, जे हिनक निर्दिष्ट कथाक वैशिष्ट्यके उजागर करैत अछि, हुनक कथाक मर्म धरि जयबामे सहायक होइत अछि। हिनक प्रसिद्ध कथामे पाँच पत्र, ग्रामसेविका, रेलक अनुभव, मर्यादाक भंग, कन्याक जीवन आदि अनेको नाम गनाओल जा सकैछ।

खट्टर ककाक तरंग—'खट्टर ककाक तरंग'क प्रकाशनसँ पूर्व व्यंग्य साहित्यमे विधाक मान्यता नहि प्राप्त कयने छल। यैह कृति व्यंग्यके विधाक मान्यता प्रदान करौलक। ई हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक। एहिमे लेखकक दार्शनिक चिन्तन तथा लेखकीय सामर्थ्य दुनू पराकाष्ठापर पहुँचि गेल अछि। खट्टरकका एहन पात्र छथि जे भाङक निसामे ककरो छोड़ैत नहि छथि। एकर एक-एक तरंग जतऽ एक दिस हास्यक सृष्टि करैत अछि ततऽ दोसर दिस रूढ़िपर भीषण चोटो करैत चलैत अछि। खट्टरकका मनके गुदगुदबितो छथि आ हृदयके छनछनबितो। हिनक विचारक परिधिमे देवता-पितर शास्त्र-पुराण आचार-विचार—सभ टा आयल अछि। ई प्रचलित सिद्धान्तके ताहि कौशलसँ काटैत छथि जे ओकर घोर समर्थकोके निरुत्तर कऽ दैत अछि। किन्तु एहि व्यंग्य-प्रहारक पाछाँ अपन प्रदेश-समाजके जड़तासँ मुक्ति देअयबाक प्रेरणादायी संदेश निहित अछि, जे एकर लक्ष्यके ध्वंसात्मक नहि, निर्माणात्मक बनबैत अछि।

एहि प्रकारक रचना कोनो आन भारतीय साहित्यमे प्रायः नहि अछि।

जीवन-यात्रा—जीवन-यात्रा, जे आत्मकथा थिक, प्रो० हरिमोहन झाक अन्तिम कृति थिकनि, जकर प्रकाशन हिनक मृत्युक बादे, १९८४मे, भऽ सकल। एहिमे ई अपन जीवनक विविध घटनाक रोचक वर्णन कयने छथि। सम्पूर्ण पोथी एगारह अध्यायमे विभक्त अछि। पहिल अध्यायमे 'बाबूजी' शीर्षकसँ अपन पिता पं० जनार्दन झा 'जनसीदन'क पारिवारिक ओ साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि। अपन पिताक साहित्यमय वातावरणमे हरिमोहन झाक झुकाव साहित्य दिस होयब सहज स्वाभाविक छल। साहित्यिक प्रेरणा हिनका अपन पितेसँ प्राप्त भेल छलनि।

जीवन-यात्रामे प्रोफेसर हरिमोहन झाक अपन जीवनक घटनावली तँ विस्तारसँ वर्णित अछिए, जे स्वयंमे बड़ महत्त्वपूर्ण अछि, तकर अतिरिक्त तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ओ शैक्षिक वातावरणक प्रामाणिक जीवन्त चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि, जकर साहित्यसँ भिन्नो कारणेँ महत्त्व भऽ जाइत छैक।

एकर शैली पोथीक अतिरिक्त विशेषता थिक। अपन कथा-उपन्यासे जकाँ एकरो रोचकता कायम रखबामे लेखकके विशिष्ट सफलता प्राप्त भेलनि अछि। लेखकक जीवनक जे मोड़ जेहन रहलनि अछि, ताही प्रकारक भाषाक छटा ओ विवरणक दिशा एहिमे भेटैत अछि। हिनक आनन्दमय अवधिक वर्णन-विश्लेषणमे जँ हास्य-व्यंग्यक फोहारा छुटैत चलैत अछि तँ कष्टकालक घटनाक प्रसंग अबिते लेखक अपन करुणामे पाठकक संवेदनाके पूरा तरहेँ समेटि लैत छथि। 'शेष अध्याय'मे लेखकक दुर्घटनापूर्ण जीवनक झाँकी भेटैत अछि, जाहिमे हिनक दार्शनिक पक्ष बहुत अधिक उजागर भेल अछि। अन्तमे, डायरीक शैलीमे घटना-क्रम आगाँ बढ़ैत अछि आ लेखकक मृत्युक संगहि समाप्त भऽ जाइत अछि।

मैथिलीक कोनो महान साहित्यकारक ई पहिल आत्मकथा थिक। एकर प्रकाशनसँ मैथिलीक भण्डार समृद्ध भेल अछि।

विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक किछु निबन्ध सेहो प्रकाशित अछि, जे विषयक उपस्थापन ओ विचारक सुघड़ता दुनू दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि।

एकर अतिरिक्त, हिनक कविता सेहो बराबरि प्रकाशित होइत रहल। हिनक कवितोमे ओ सभ गुण भेटैत अछि, जे हिनक कथामे पाओल जाइत अछि। हालाँकि

टीपार्टी, नवकी पीढ़ी, पढ़नाइ, महगी आदि हिनक किछु प्रसिद्ध कविता थिक।
प्रो० रमानाथ झा हिनक कवित्वक प्रसंग कहने छथि—"दर्शनशास्त्रक आचार्य पं०
श्री हरिमोहन झाजी अपन हास्य रसक कथा सबहिक हेतु देश भरिमे सुप्रसिद्ध छथि
ओ से कथासभ मुख्यतः गद्यमे अछि, किन्तु पद्यहुमे हिनक रचना ओहने रोचक, ओहने
विलक्षण, ओहने लोकप्रिय होइत अछि। हिनक रचनामे ठाम-ठाम अश्लीलता सेहो
चल अबैत अछि।" किन्तु, हिनक कवितामे प्रभाव उत्पन्न करबाक अद्भुत शक्ति
रहैछ, वर्णनक विशदता रहैछ, जीवन्तता रहैछ, नवका परिपाटीपर व्यंग्य रहैछ
चुटकी रहैछ। एहि दृष्टिएँ टीपार्टीक निम्नलिखित अंश द्रष्टव्य—

दुइए एक फक्का मध्य साफ भेल दालमोट
सेबइ तथा बुनिया और किशमिश विलीन भेल।
एक रसगुल्लामे विलम्ब की लगैत कहू ?
समतोलाक बाद शेष रहल एक केरा टा।
एक मिनट लागल हैत, ताहीमे साफ भेल,
चिनियाक प्लेट हमर निराकार भऽ गेल।
किन्तु ऊपर योद्धागण युद्ध चलबैत रहलाह
घंटा भरि लागल, किन्तु प्लेट नहि खाली भेल।
किशमिशकेँ खोंटि कनेक मुँहमे रखैं छथि केओ
एक दालमोट तोड़ि दाँत पर धरैत छथि।
आधा रसगुल्ला खाकऽ आधा छोड़ै छथि केओ
रम्भाफलक स्पर्शो मात्र केओ नहि करैत छथि !

तहिना, भाग्यक फेर सँ सम्बद्ध हिनक एक कवित्तमे शब्दसभक दू विपरीत
अर्थ देहन चमत्कारक अछि, तकर एक बानगी देखल जा सकैछ—

पीसल बदाम घोरि नित्य जे पिबैत छला
पीसल बदाम घोरि नित्य से पिबैत छथि
चानीपर हाथ राखि रातिमे सुतैत छला
चानीपर हाथ राखि रातिमे सुतैत छथि
जूआ पर बैसल जे दाव लगबैत छला
जूआ पर बैसल से दाबल गबैत छथि
नाना गाम जाकऽ जे बहुक पोषण करै छला
नाना गाम जाकऽ से बहुक पोषण करैत छथि

एहिमे पहिल 'पीसल बदाम'क तात्पर्य थिक पिस्ता बादाम पीसिकऽ आ
दोसर 'पीसल बदाम'क आशय सातु। पहिल 'चानीपर हाथ राखि'क तात्पर्य
'चानीक पलंग' थिक तथा दोसर 'चानीपर हाथ राखि'क आशय 'माथाहाथ दऽकऽ'।
पहिल 'जूआ'क अर्थ थिक 'द्यूत-क्रीड़ा' आ दोसर 'जूआ'क माने 'बलगाड़ीक जूआ'।
पहिल 'नाना गाम' आ 'बहुक पोषण'क अर्थ थिक 'अनेक गाम जाकऽ अनेक व्यक्तिक
पालन-पोषण' तथा दोसर ठाम प्रयुक्त एहि शब्दक तात्पर्य अछि 'मातृक' तथा
'अपन स्त्री'। एहि अर्थक संग एकर चमत्कार देखबा योग्य अछि।

प्रोफेसर हरिमोहन झाक साहित्यसँ मैथिली एहि युगमे आनो भाषाभाषीक
मध्य सुप्रतिष्ठित भेल अछि।

तन्त्रनाथ झा

महाकाव्य, मुक्तककाव्य एवं एकांकी-लेखनमे सिद्धहस्त, छिटफुट सरस निबन्धक लेखनक संगहि संस्कृत साहित्यसँ मैथिली अनुवाद करबामे दक्ष प्रोफेसर तन्त्रनाथ झाक मैथिली साहित्यमे विशिष्ट अवदान रहलनि अछि। साहित्य-सर्जनाक अतिरिक्त ई मैथिली आन्दोलनमे सेहो सजग सक्रिय रहैत छलाह। मैथिली साहित्य परिषदक बहुत दिन धरि ई सचिव रहलाह तथा अपन समयमे एहि परिषदक माध्यमे कतोक विशिष्ट काज कयलनि। 'आधुनिक कालमे मैथिलीकेँ सरकार ओ विश्व-विद्यालय द्वारा मान्यता दिअयबाक लेल जे संघर्ष होइत रहल अछि, ताहिमे हिनक सक्रिय सहयोग' छलनि।

प्रो० तन्त्रनाथ झाक जन्म २२ अगस्त १९०९ केँ भेलनि। हिनक पैतृक धर्मपुर (उजान, दरभंगा) छलनि। अर्थशास्त्रक अध्ययन कऽ, किछु दिन धरि उच्च विद्यालयमे शिक्षक, पछाति चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापकक रूपमे काज कयलनि। ओहि ठामसँ अवकाश-ग्रहण कयलाक उपरान्त ई दरभंगामे निवास कऽ काव्य-साधनामे लागल रहैत छलाह। हिनक देहान्त ४ मइ १९८४ केँ वाराणसीमे भेलनि। ई आचार्य रमानाथ झाक अनुज छलाह।

हिनक विशिष्ट साहित्य-साधनाक लेल १९८० ई०मे हिनका एक अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित कयल गेलनि। ३९८ पृष्ठक भव्य आकार-प्रकारक 'प्रो० तन्त्रनाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ'मे कुल ७० रचना अछि, जाहिमे हिनक व्यक्तित्व कृतित्वक सभ पक्षपर नीक जकाँ प्रकाश पड़ल अछि।

हिनक विभिन्न विधाक अनेक कृति प्रकाशित अछि। कीचक-वध, कृष्ण-चरित—महाकाव्य; नमस्या, मंगल-पंचाशिका—मुक्तक काव्य; एकांकी-चयनिका—एकांकी-संग्रह; मैथिली हितोपदेश-सार, नाट्यकथासार—सार-संक्षेप; लघु-कथा, योगक संगी—तिरहुता लिपिमे बालोपयोगी कथा।

कीचक-वध—हिनकासँ पूर्व मैथिलीमे महाकाव्य-रचना संस्कृत-परम्परामे होइत छल, किन्तु ई तकरा त्यागि अंगरेजीक ब्लैंकवर्स (अमित्राक्षर छन्द)क प्रयोग पहिले-पहिल अपन कीचक-वध महाकाव्यमे कयलनि।

एहि महाकाव्यक कथावस्तु महाभारतसँ लेल गेल अछि। पाण्डवलोकनि वनवासक अवधि समाप्त कयलाक बाद राजा विराटक दरबारमे गुप्तवास करबाक कालसँ लऽ कऽ विराटमहिषी सुदक्षणाक भाइ तथा राज्यक प्रधान सेनापति कीचकक भीम द्वारा वध धरिक कथा एहिमे वर्णित अछि।

पहिने एकर छओ सर्ग मात्र प्रकाशित भेल छल। ओकर बहुत बादमे कवि ओहिमे तीन सर्ग आर जोड़िकऽ ओकरा नओ सर्गक बनौलनि। पुनः तेसर खेप, सातम ओ आठम सर्गक बीचमे एक सर्ग आर जोड़ि देलनि, फलः आठम सर्ग नवम भऽ गेल आ नवम दसम—एहि तरहेँ आब कुल दस सर्गक ई महाकाव्य भऽ गेल अछि।

सम्पूर्ण महाकाव्य एके छन्दमे लिखल अछि—श्लोक वर्गमे। एकर शैली-विन्यास तँ पाश्चात्य अवश्य अछि, किन्तु चित्रणक छटा, शब्द-प्रयोग, ऋतु-वर्णन आदि संस्कृत-साहित्यक अनुरूपे भेल अछि।

श्री विभूति भूषण मुखोपाध्यायक अनुसार एहि "काव्य-रचनामे कविकेँ अपन सर्जनात्मक कल्पना-शक्तिक उपयोगक यथेच्छ अवसर भेटलनि अछि। कवि एहि काव्य-रचनामे पूर्ण सफल भेल छथि। विशेषतया वर्णन-विस्तारक हेतु सूक्ष्म दृष्टि तथा प्रांजल वचो-विन्यासेँ हिनक काव्यकर्म मनोहर भऽ गेल छनि।"

डॉ० जयकान्त मिश्रक शब्दमे "Sanskritization of its style doesnot hamper the progress of the story; it helps to raise the work to sublime heights. ...The style is befittingly grave and gay with turns in minds. It is really a glorious achievement."

एहि महाकाव्यक चारिम सर्ग सभसँ महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि "जाहिमे ओ कीचकक ओहि ठाम जाइत द्रौपदीक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण चित्रण कयने छथि। नारी-हृदयक विवशतापूर्ण कातरताक चित्रण कऽ क्रमशः ओ प्रतिष्ठित होइत द्रौपदीक गहन आत्मविश्वासक तेजोद्दीप्त भावनाक अंकन ओ जाहि प्रभाव पूर्ण रीतिएँ कयल अछि से बड़ स्वाभाविक ओ मार्मिक भेल अछि।" उदाहरणार्थ निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य—

क्षत्रिय-पुत्रि, वीर-पत्नी, कुल-नारि
निर्भय हम जाइत छी कीचक-गेह।
जे विभु कौरव-सभा मध्य मम लाज
राखल, जे विभु कयलनि ओहि विधि त्राण
सिन्धुराजसँ से विभु निश्चय आज
भय सहाय रखताह धर्म अक्षुण्ण।
शार्दूला की कखनहु पावय त्रास
जम्बूकक? की ज्वलित तप्त अंगार
तृणचय सकय झाँपि? की चम्पक-वास
घ्राण तुच्छ कऽ सकय कतहु उपभोग?
जँ हम कयल न तजि पांडव पति पंच
आन पुरुष प्रति कखनहु स्वप्नहु चित्त
नहि कीचक कऽ सकत हमर तन स्पर्श।

चारिम सर्गक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक कहब अछि—"It describes the feelings that sway the mind of Draupadi while she is asked to fetch wine from the room of Kichaka. She recalls her gorious home, her svayamvara, her days in the company of Arjuna, her survival of the ordial presented by Duhsasana, and finally concludes that Kichaka cannot even touch her. There is no hurrying over moods and emotions here, each possible turn is explored, and is briefly but imaginatively conceived."

कृष्ण-चरित—ई कविक दोसर महाकाव्य थिक। एहि कृतिपर कविकेँ १९७९ ई०क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेल छलनि। ई बारह सर्ग मे निबद्ध

अछि। संस्कृत साहित्यक महाकाव्यक लक्षण पर आधारित, विविध छन्दमे, कृष्णक बाल्यकालक घटनाकेँ लऽ कऽ एहि महाकाव्यक रचना कवि कयने छथि। एहिमे गुरुकुलक वर्णन, अध्ययनक लेल उपयुक्त वातावरणक वर्णन, छात्रक आदर्श दिनचर्या, गुरु-शिष्य सम्बन्ध शिष्य-शिष्यक बीच सम्बन्ध, अतिथि-सेवा, कर्तव्य-परायणता, सदाचार, मिथिलाक प्रायः प्रमुख सभ पाबनि-तिहारक वैशिष्ट्य ओ विधान आदि विभिन्न विषय दिस संकेत कयल गेल अछि। शब्द-योजना, भावक सूक्ष्मता, कल्पनाक उड़ान आदि कविक विशिष्टताक द्योतक वसन्त-वर्णनक निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य थिक—

चढ़लि वनी-रथ जाति मलय हय, अलितति रश्मि लगाय
किसलय-वसन, विकच कमलानन, सुम भूषण भरि काय
कुन्दरदनि वसन्त लक्ष्मी भय उपगत शोभित भेलि
अधर-जवा, राजीवनयन, स्मिति जाही जूही बेलि।

जहिना उक्त पद तत्सम शब्द-बहुल आ क्लिष्ट अछि, तहिना अनेको स्थल पर कविक भाषा बेस सहज भऽ गेल अछि। एहने एक स्थलक वर्णन देखल जा सकैछ—

उठि-उठि आश्रमवासिगण, लेथि हरिक शुभ नाम
कुलपतिकाँ सभ करथि गय, गहि पदपद्म प्रणाम
दक्षिण कर दक्षिण चरण, वामहि गहि पद वाम
माथहि मस्तक राखिकेँ, अपन उचारथि नाम
मुनिवर दऽ आशिष समुद, सभकेँ ठोकि अपार
समाचार दैहिक तखन, पूछथि बारम्बार

किन्तु, अधिक ठाम भाषाक एहि प्रसादत्वक अभाव अछि, गूढ़ शब्दावलीक बीच भाव तेना नुका रहल अछि जे ओकर स्वाद लेबा लेल संस्कृत-शब्दकोषक शरणापन्न होबऽ पड़ैछ।

डॉ० 'श्रीश'क कथन अछि जे "कृष्ण-चरितमे कवि परम्परा ओ आधुनिकताक बड़ कलात्मक समन्वय कयलनि अछि। एहि मध्य पुरान रीतिक महाकाव्यक वर्णन-प्रणालीक दर्शन होइत अछि तँ आधुनिक रीतिक सुनियोजित कथात्मक विकास ओ मनोवैज्ञानिक चरित्रविश्लेषणात्मक विन्यासक दर्शन सेहो होइत अछि।"

हिनक मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प-शैलीक विविधता देखबामे अबैत अछि। एक दिस ई प्राचीन ढंगक ईश-वन्दनाक रचना कयने छथि, अभिसारक वर्णन कयने छथि तँ दोसर दिस अंगरेजीक सॉनेट, ओड आदि काव्य-शिल्पकेँ मैथिलीमे प्रतिष्ठापित कयने छथि। ई उपहास-काव्य (सटायर) क रचना सेहो कयने छथि तथा सुलभ सरल रीतिएँ 'मुसरी झा'क अलौकिक चरित्रक चित्र सेहो खिचने छथि।

प्रो० रमानाथ झाक विचारेँ "श्री तन्त्रनाथ झा मैथिली काव्य-साहित्यमे एक विलक्षण कविक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। हिनक कविताक मुख्य गुण थिक नवीनता। हिनक एहि नवीनतामे प्रयोग रहितहु 'वाद'क संकीर्णता कतहु नहि रहैत अछि, कारण ओ नवीनताक स्वीकार परम्पराक विद्रोहक हेतु नहि, विकासक हेतु करैत छथि। हिनक काव्य-प्रेरणाक मूल उत्स थिक पाश्चात्य साहित्य जकरा ओ अपन मौलिक कविक प्रतिभासँ परिमार्जित कएल अछि।"

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार "ई जखन संस्कृत-निष्ठ भाषाक प्रयोग करैत छथि तँ संस्कृत-निष्ठताकेँ चरमसीमा पर पहुँचा दैत छथि आओर जखन ठेठ मैथिलीक प्रयोग करैत छथि तँ ताहुमे अपूर्व कौशलक परिचय दैत छथि।" कीचक-वध, कृष्ण-चरित आदि हिनक संस्कृत-बहुल रचनाक उदाहरण थिक, 'मुसरी झा' आदि हिनक ठेठ भाषाक। 'वर्षा-घोष'क अन्तिम अंशमे समाजक बुर्जीप्रतिपर व्यंग्य द्रष्टव्य थिक—

गाबह बेङ गाबह, करह कलगान अपन,
जीके जुड़ाय लेह, करह सिहन्ता पूर,
की करबहक लोक लए ?
ठनकासँ बहरि लोकक कानमे
कथी लए कनेको करतैक असरि
कतबो कए प्रयास करबह तों कर्कश-नाद !
किन्तु, हे मण्डूक !
देखह कतराक झाड़ लग
दबकल केचुआएल ढोंढ़
प्रसन्न छहु गान सुनि
तकइत छहु तोहरहि दिशि।

कहल जा सकैछ जे मैथिलीक काव्योपवनमे ई गुलाबो लगौलनि तँ केकटसक गाछ सेहो रोपलनि। ई तँ आन कवि सेहो कयलनि। सभसँ पहिने यैह एना कयलनि, तकरो नहि, असल विशेषता तँ हिनक ई अछि जे केकटसक गाछमे गुलाब फुलौलनि। शेक्सपीयरक शरीरमे विद्यापतिक आत्मा केँ धऽ देलनि। सॉनेटमे स्तुति लिखलनि। इङ्गिकक साँचपर महाकाव्यक मूर्त्ति गढ़लनि।

काव्य-रचनाक अतिरिक्त ई किछु नीक एकांकी सेहो लिखने छथि आ ओकर संकलन 'एकांकी-चयनिका' नामे प्रकाशित करौने छथि। एकांकी-चयनिकामे कओलेज-प्रवेश, अपनयटाक भोज, पन्ना, तमघैल तथा घटक-पराभव, ई पाँच गोट एकांकी संगृहीत अछि। हिनक एकांकीसभ बड़ लोकप्रिय भेल अछि। डॉ० श्रीशक अनुसार 'हिनक एकांकीमे हास्य-व्यंग्य उत्कृष्ट कोटिक अछि, किन्तु स्थल-स्थलपर अन्तःसंघर्षहुक समावेश नीक जकाँ भेल अछि।'

डॉ० जयकान्त मिश्र हिनक एकांकीक मुख्य विशेषतासभकेँ सूत्रबद्ध करैत लिखैत छथि—"Less boisterous but more sophisticated and subtle are the plays of Prof. Tantranatha Jha...He shows a greater sense of the stage and a keener appreciation of our social problems. The comic muse finds in his plays a powerful exponent."

बालोपयोगी कथाक तिरहुता अक्षरमे लेखो कराय दू गोट संग्रह हिनक प्रकाशित अछि, जाहिसँ एक दिस तँ बालोपयोगी साहित्यक श्रीवृद्धि भेल अछि, दोसर दिस लुप्त होइत तिरहुताकेँ पुनर्जीवन प्रदान करबाक प्रयास लक्षित होइत अछि।

हिनक एकाध ललित निबन्ध यथा 'हमर ठेङ' तथा एकाध कथा यथा 'चोर' सेहो प्रकाशित अछि, जाहिमे हिनक भाषाक अकृत्रिम सौन्दर्य देखबा योग्य अछि।

□

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' वर्तमान कालमे, मूर्धन्य साहित्यकार लोकनिक मध्य, अग्रगण्य छथि। मैथिलीक ई शीर्षस्थ महाकवि यशस्वी सम्पादको रहलाह अछि तँ सुविख्यात प्राध्यापको; उत्कृष्ट कोटिक निबन्धकार ओ सफल समालोचको छथि तँ मान्य कथाकारो; संस्कृत आ बंगला-ग्रन्थक सफल अनुवादकोक रूपमे विख्यात छथि तँ धाराप्रवाह सुसंस्कृत-सुष्ठु चिन्तात्मक वक्ताक रूपमे सेहो सुप्रसिद्ध छथि। साहित्यकारक अतिरिक्त हिनक व्यक्तित्वक राजनीतिक पक्ष सेहो अछि। ई बिहार विधान सभा तथा लोकसभामे दरभंगा-क्षेत्रक प्रतिनिधित्व कयने छथि। सम्प्रति, १९८३ सँ साहित्य अकादमी दिल्लीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधि छथि। ओ ओकर कार्यकारिणीक सदस्य छथि, जाहि पद पर १९८७ पर्यन्त रहताह। ओ मैथिली साहित्य परिषदक पूर्वमे ई महामंत्री रहल छथि तथा १९७३ सँ अद्यावधि ओकर अध्यक्ष-पदकेँ सुशोभित करैत छथि।

समस्तीपुर जिलाक बल्लीपुर नामक गाममे हिनक जन्म १९१० ई० मे आश्विन शुक्ल पंचमी तिथि केँ, तदनुसार ९ अक्टूबरकेँ भेलनि। संस्कृत साहित्यक ई अत्यन्त मेधावी छात्र छलाह तथा धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुरसँ साहित्याचार्य कयलनि। आरंभमे किछु दिन एक उच्च विद्यालयमे अध्यापन कयलनि, पुनः १९३५ मे मिथिला मिहिरक सम्पादक भऽ दरभंगा आबि गेलाह। एहि पद पर ई १९५४ धरि रहलाह। १९५३मे चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे मैथिली विभागमे प्राध्यापक-रूपमे प्रवेश कयलनि। ओतऽ अपन प्रकाण्ड विद्वत्ता केँ प्रदर्शित करैत, शत-सहस्र छात्रकेँ ज्ञानामृतक पान करबैत ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागाध्यक्षक पद धरि केँ गौरवान्वित कयलनि। अवकाश-ग्रहण कयलाक बाद साहित्यिक ओ राजनीतिक काजमे ई अपनाकेँ समर्पित कऽ देलनि। अपन एकनिष्ठ साधनाक बल पर १५ अगस्त १९८२सँ दैनिक 'स्वदेश'क पुनः प्रकाशन आरम्भ कयलनि जे ८४क पूर्वार्द्ध धरि चलैत रहल। एखनहुँ ई मैथिलीक चिन्तनमे अनुरत लागल रहैत छथि।

संस्कृत आ हिन्दी-रचनामे सेहो हिनका समान गति छनि, किन्तु अपन सम्पूर्ण सेवा मैथिली केँ समर्पित कऽ देने छथि। हिनक महत्त्वक एक कारण ईहो अछि जे हिनके प्रेरणा पाबि कतेको प्रतिभाशाली साहित्यकार मैथिली दिस आकृष्ट भेलाह तथा अपन बहुमूल्य अवदानसँ एकर भण्डार केँ भरैत गेलाह। परवर्त्ती तँ सहजाहि जे हिनक समकालीन कविचूड़ामणि श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' तथा कविवर उपेद्र ठाकुर 'मोहन' सेहो हिनके प्रेरणासँ मैथिली-लेखन दिस उन्मुख भेलाह।

तीस गोट मौलिक काव्य-पुस्तक हिनक प्रकाशित अछि तथा अनूदित आ सम्पादित कृतिक संख्या लगभग पन्द्रह अछि। एहिमे किछु महत्त्वपूर्ण मौलिक काव्य-संग्रहक नाम थिक—प्रतिपदा, अर्चना, सावन-भादव, अंकावली, अन्तर्नाद, भारत-वन्दना, पयस्विनी (साहित्य अकादमीक १९७१क पुरस्कार-प्राप्त) तथा

उत्तरा (मैथिली अकादमीक प्रथम १९८१क 'विद्यापति पुरस्कार' सँ सम्मानित खण्ड-काव्य)। हिनक मुख्य अनूदित पोथीमे पुरुष-परीक्षा, अनुर्गातांजलि, ऋतुश्रृंगार बड़की दाइक उल्लेख कयल जा सकैछ तथा सम्पादित प्रमुख कृतिमे वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द विजय, गोविन्दगीतांजलि, मैथिली प्रबन्ध काव्य (चन्दा झा ओ लालदासक रामायणक संक्षेप) आदिक नाम लेल जा सकैछ।

आचार्य सुमन संस्कृत साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान छथि, तेँ हिनक कवितामे संस्कृत काव्यक गरिमाक सहजहिँ दर्शन होइछ। हिनक दृष्टि आधुनिक छनि, तेँ हिनक काव्यमे अधुनातन विचारधाराक झलक देखबामे अबैछ। ई खास राजनीतिक विचारधाराक प्रबल-प्रवक्ता छथि, तेँ हिनक किछु कवितामे अनायासे ओहन स्वर-झंकार सुनबामे आबि जाइछ।

ई रससिद्ध कवि छथि, तेँ सभ रसक रचना करबामे हिनका प्रकृष्टता प्राप्त छनि। एहि दृष्टिएँ हिनक 'साओन-भादव' ने केवल हिनके रचना-मालामे, अपितु मैथिली साहित्योमे अद्वितीय कृति अछि। एहि पोथीमे केवल वर्षाऋतुकेँ आधार बनाकऽ नवो रसक जे चमत्कार देखाओल गेल अछि से सहजेँ मैथिली काव्यक आभिव्यंजन-क्षमताकेँ, एकर भावप्रवणताक शक्ति-सामर्थ्यकेँ बहुत आगाँ बढ़ा दैत अछि। सभ रसक वर्णन एक रंग मोहक, एक रंग चित्ताकर्षक, एक रंग कल्पनाशील अछि, कोनो अंश ककरोसँ न्यून नहि। पढ़ैत काल बेर-बेर भान होइछ जेना लगले-लागल कल्पनाक राकेट निक्षेपित होइत हो। एतऽ वीररसक एक अंश दृष्टांत रूपमे प्रस्तुत अछि—

नील नील घन-घटा जकर अछि
ढाल संग विद्युत करगत अछि
भीष्म अरिदलक छिन्न अंगसँ
रक्तधार की बरसि रहल अछि ?
नभसँ लऽ वसुधा धरि पसरे
रण-सागर उमड़ल ई अभिनव
नव उत्साह सजल पावसकेर
समर-भूमि ई साओन-भादव

मैथिलीक आलोचक लोकनि हिनका प्राचीनता ओ नवीनताक संगम पर ठाढ़ पबैत छथि। ई स्वयं एक ठाम कहने छथि—

प्राचीन जीर्ण जगतीक वीन
मे बाजि उठल अछि युग नवीन

प्रो० जयदेव मिश्रक कहब अछि जे 'ई संस्कृतकेँ गलाकऽ मैथिलीक श्रृंगार करैत छथि।' वास्तवमे हिनक कवितामे भारतीय संस्कृतिक जेहन झाँकी भेटैत अछि, से अन्यत्र दुर्लभ अछि।

हिनक 'अर्चना'क प्रसंग डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक कहब अछि— 'हिनक अर्चना मैथिली मन्दिरक एक भक्ति-प्रधान काव्य अछि। गंगातरंगिणी, मैथिली-वन्दना ओ मिथिला-महिमा ई तीनू कविक एहन कृति अछि जकर आधार मूलतः सांस्कृतिक अछि। परन्तु एकर वर्णनमे कवि जाहि पौराणिक गाथाक उल्लेख

कयने छथि ओ इतिवृत्त मात्र नहि भऽ अपन काव्य-चमत्कारक बलेँ अतीव आकर्षक ओ महत्त्वपूर्ण भऽ गेल अछि।" केओ कहने छथि जे ई संस्कृतक स्थिर किनार केँ छोड़ि आधुनिक प्रवाहमे अंतर्वाहि दूर जाइत छथि जतऽसँ पुनः फिरिकऽ अयबामे कठिनता नहि होइत छनि। एतऽ 'गंगा-तरंगिणी'क एक अंश उद्धृत कयल जाइछ—

अहँ हिमनगपति महाकविक उर द्रवित निरन्तर
नित नव-नव हिमभाव सजल कविता चिर सुन्दर
ध्वनि-रस-गतिमय एक एक पद-कणसँ सुरसरि
युग-युग सँ छी दैत अमृत संदेश विश्व भरि
छाया-पथक विहारिणी, निधि अनन्त गति-गामिनी
करब भाव उर्वर हमर, उर-मरु शीतल-वाहिनी

"एतऽ शब्द-संयोजन, अलंकार-विधान, वर्णनात्मक ढंग आदिमे पूर्णतः संस्कृतक परम्पराक पालन कयल गेल अछि। ध्वनि, रस, गति एवं पदमे श्लेषक अपूर्व निर्वाह कयल गेल अछि। परन्तु हिमालयकेँ महाकविक उपाधिसँ सम्वोधित कऽ गंगाकेँ हुनक हृदय-प्रदेशसँ निःसृत करबाक रूप दऽ एक विलक्षणताक समावेश कऽ देने छथि। एही विलक्षणतामे सुमन जीक आधुनिकता निहित अछि।'

आचार्य रमानाथ झाक अनुसारेँ "ई प्राचीन अधिक छथि, नवीन कम। हँ, आधुनिक सोरहो आना छथि। हिनक आधुनिकता थिक प्राचीनताक 'नवीनीकरण'। चमत्कारपूर्ण सूक्ष्म कल्पनासँ निबद्ध हिनक प्रत्येक रचनामे उक्ति-बक्रता भेटैत अछि, किछु नव बात उत्पन्न करबाक क्षमता भेटैत अछि। 'रमणीयार्थ प्रतिपादन' करब हिनक कविकर्मक मूल उद्देश्य थिक आओर एहि रमणीयार्थ प्रतिपादन करबाक हेतु ई सादृश्यमूलक आरोपक बेश सुन्दर योजना करैत छथि तथाकथित प्रगतिवादो कवितहुमे। हिनक विषय-क्षेत्र व्यापक अछि, प्रायः कोनो वाद-प्रवाद नहि छूटल होयत जाहि आधार पर ई रचना नहि कयने होथि। वर्णनक पाण्डित्यपूर्ण उत्कर्षक कारणेँ हिनक रचना सर्वसाधारणक हेतु दुरूह अछि। भाषा हिनक तत्समबहुल ओ उक्तिक पाण्डित्यपूर्ण बक्रता हिनका सर्वसाधारणक कवि नहि बनऽ दैत अछि। सुमनजीक वास्तविक महत्व काव्यधाराक कोनो 'वाद'क वृत्तक अन्तर्गत नहि अछि, प्रत्युत कविताक ओहि भावभूमि पर प्रतिष्ठित अछि जाहि हेतु कवि युगातीत कहल जाइत छथि।" एक ठाम आचार्य रमानाथ झा हिनका 'कविक कवि' कहने छथि। हुनक कहब छनि जे वास्तवमे हिनक कविताक रसास्वादनक लेल एक गोट कविक हृदय चाही।

'प्रतिपदा' यद्यपि हिनक अरम्भिक कालक रचना थिक, तथापि ओकर प्रौढ़तामे कनेको कमीक आभास नहि होइत अछि। 'कविताक आह्वान'मे तप्तयुगक दाहक अनुभव कवि कोना कयने छथि, से देखल जा सकैछ—

पति परलोक बसल घर उजड़ल चिन्तित चित्त अधीर
मास-माससँ जकर कमासुत सुत ज्वर-गलित शरीर
जकर अन्नपूर्णा भसिअयलि कौशिकीक मझधार
जीवन-तट पर एक शब्द सुनइछ जे हाहाकार
ओहि अनाथ विधवाक अश्रुहिक सगरो उमड़ल बाढ़ि
करुण क्रन्दने कविता कनइछ कौशिकीक तट ठाढ़ि

'प्रतिपदा' मे प्रकृतिक मनोरम चित्रण सेहो कयल गेल अछि। किशोरीक सहजताक अनुभव शरदक एहि अंशमे करैत मनायसि भऽ आ संकेत छैक—

> चरण-पल्लव कर-कमल मुख-चन्द्र-रश्मि पसारि
> नयन अंजनि चटुल संचित शरद सुकुमारि
> नील शैवालक शिरोरुह खचित कमलक फूल
> कुमुद दन्तावलि विशद सरिताक शुभ्र दुकूल

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे "सुमनजीक समस्त काव्य-साधना पर विचार कयने देखब जे आधुनिक युगक विविध काव्यधाराक सामंजस्य यदि कोनो कविमे अछि तँ ओ सुमनेजीमे अछि।"

एहि दृष्टिएँ हिनक 'पयस्विनी'क कविता सभकेँ सेहो विशेष रूपेँ देखल जा सकैत अछि।

विनोवा भावेक भूदान-आन्दोलनसँ प्रभावित भऽ कवि 'शिक्षा-पात्र' कविताक सृष्टि कयलनि, जाहिमे विनोवा-दर्शनक मानू निचोड़ राखि देने छथि—

> भूमिहीन भूमिपुत्र कोना सहल जाय?
> धनी धन्य कोना जखन भूख बढ़ल जाय?
> श्रमे मूल, पत्र फूल सम्पदा सहाय,
> कोना तखन श्रमिक श्रवण श्रद्धा फल लेब
> अपन भूमि-रतन यदि न भाजन भरि देब

विनोबाक भूदान-यज्ञ साधारण भीख नहि थिक, ई एहन भीख थिक जे प्रदान कयलासँ मानव-धर्मक मर्म प्राप्त भऽ जाइत अछि—

> भीख ई न थीक मात्र दीनताक हेतु
> लीख ई न थीक मात्र नीति सिन्धु-सेतु
> सीख ई न थीक मात्र प्रीति कीर्ति-केतु
> सहज मनुजताक कर्म धर्म मानि लेब
> महज दनुजताक लेल बर्म मानि लेब

एहिमे 'मनुजताक कर्म' करबा टाक प्रेरणा नहि देल गेल अछि, आपितु 'दनुजताक बर्म' सँ सावधान सेहो कयल गेल अछि।

तहिना, 'वनपर्व' कविता सेहो उल्लेखनीय अछि। सांसारिक ऊहापोहक महाजाल मे ओझारायल, संघर्ष-भाग-दौड़क जिनगीसँ अकच्छ, दीनता-दुश्चिन्ताक तापमे प्रतिपल छटपटाइत हो अथवा ऐश्वर्यक प्रासादमे आजीवन उबिआइत, प्रकृतिक उन्मुक्त वातावरणमे शीतल बसातक कमसँ कम एको झोंकक स्पर्श-सुखक आकांक्षा प्रत्येक व्यक्तिक मनमे रहितहिँ छैक, समय-कुसमय ओकर हृदयसँ ई उद्गार फुटि पड़ितहिँ छैक—

> हम चलब नगर केर पार, गामसँ दूरे
> आछि बसल बनक सीमा, सुषमासँ पूरे
> ने धवल महल, ने भीत-टाटकेर घेरा
> अछि जतय मुक्त प्रकृतिक युग-युगसँ डेरा

तकर कारणो स्पष्टे अछि—

> नगरक रागेँ, गामक द्वेषेँ अकछाइछ
> निर्द्वेष-राग वन दिस मन पुनि ठकुलाइछ

तहिना, वृद्ध, युवक तथा बालकक रूपमे पर्वतक मानवीकरण चमत्कारपूर्ण भेल अछि। डॉ० 'श्रीश'क अनुसार 'पयस्विनीमे 'सुमन जी राष्ट्रवादी सांस्कृतिक भावधाराक प्रतिपादन विविध रीतिसँ कय अपन उच्च ऊहाकवित्वक सुन्दर निदर्शन कयल अछि, परन्तु से मननीय अछि, सहज रूपसँ आस्वादनीय नहि।'

गणित तथा काव्य—परस्पर दू विरोधी तत्त्वक समन्वय 'अंकावली'मे भेल अछि। एकसँ नओ तथा शून्यक योगसँ बनल संख्यापर आधारित हिनक काव्य एक दिस हिनक साहित्यिक वैदुष्य आ दोसर दिस सांख्यिकी पटुताक प्रमाण उपस्थित करैत अछि। 'अन्तर्नाद' राष्ट्रिय एकताक परिप्रेक्ष्यमे लिखल हिनक उच्च कोटिक वैचारिक काव्य-पुस्तक थिक, जाहिमे कविक राजनीतिक जागरूकता स्पष्ट रूपमे परिलक्षित होइत अछि। 'ललना-लहरि' अपन देशक प्रत्येक प्रान्तक महिलाक रूप-रंग, आचार-विचार, पहिरन-ओढ़न ओ सब-सेहन्ताक बड़ सूक्ष्म विश्लेषण अछि। 'गाम-धरती' मैथिलीक प्रायः एहन पहिल कृति थिक जकर विषय-वस्तु कोनो गामपर आधारित हो। यद्यपि एहिमे मिथिलाक केवल एक गाम—कविक जन्मभूमि 'बल्लीपुर'—क बाध-वन, लोक-वेद, परिजन-पुरजन, अग्रज-अनुजक वर्णन अछि, किन्तु ओहिमे मिथिलांचलक सभ गामक व्यक्तित्व उद्भासित भऽ गेल अछि। कविक जीवनक कतिपय घटनाक प्रामाणिक आलेखक रूपमे सेहो एकर महत्त्व अछि। 'जतरा चारू धाम'मे भारत-दर्शन कराओल गेल अछि। वर्णन एतेक स्वाभाविक अछि जे पाठक स्वयं अपनाकेँ ओहि वातावरणमे पहुँच जयबाक अनुभव करऽ लगैत अछि। 'उत्तरा' खण्डकाव्य थिक, जकर आधार तँ महाभारतीय कथा अछि, किन्तु ठाम-ठाम कविक कल्पना मौलिक भावनाक सृष्टि सेहो कयलक अछि। उत्तरा'क कला-शिक्षाक परीक्षामे सफलता प्राप्त कयलापर द्रौपदी हुनका अपन सौभाग्य-हार पहिरा दैत छथि, जे दुनू कुलक भावी सम्बन्धक भूमिका सदृश अछि।

हिनक काव्यक महत्ताक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक मत द्रष्टव्य थिक—"His greatness lies in a chaste and elegant style which can yield its finest shades of meaning and nuances to only the trained ear... His sanskritized diction and measured rhythms and rhetorical style can never make his poems 'memorable' for the common reader but his poems would continue to be read and enjoyed by all those who love Mithila thought and culture in which his poems are steeped and who can read and brood over lines of good poetry."

ई १९३५ सँ ५४ धरि मिथिला मिहिर पत्रक यशस्वी सम्पादक रहलाह। ओहि अवधिमे ई अनेको लेखक-कविक प्रतिभाकेँ रासि-तरासिकऽ चमकौलनि। १९३५मे प्रकाशित मिथिला मिहिरक 'मिथिलांक' विशेषांक आइयो अपन जोड़ नहि रखैछ। डॉ० जयकान्त मिश्र ओकरा 'a storehouse of information on Mithila and her culture' कहने छथि।

वस्तुतः हिन्दी साहित्यमे जे स्थान महावीर प्रसाद द्विवेदीक अछि, मैथिली मे ओकर एकमात्र अधिकारी यैह छथि। आइयो ई अपन समकालीनक बीच सम्पादकेजीक नामेँ जानल जाइत छथि।

हिनक सम्पादनमे १९४८मे 'स्वदेश' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। ई एहि पत्र केँ पछाति दैनिक बना देलनि जे ९ अक्टूबर १९५५

से २७ दिसम्बर १९५५ ई० धरिक अवधिमे प्रकाशित होइत रहल आ एहि अवधि मे एकर ६५ गोट अंक प्रकाशित भऽ सकल। ई मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र छल। एकर पुनं प्रकार न १५ अगस्त १९८२ कें आरम्भ भेल जे कहुना ८४क पूर्वार्ध धरि चलल। एहि अवधि मे कोनो दोसर दैनिक नहि प्रकाशित भऽ सकल। मिथिला-मैथिलीक प्रगतिक हेल आधुनिक युग मे दैनिक पत्रक प्रयोजनकें नितान्त आवश्यक मानि एहि दिस हिनक साहसिक डेग उठल छल। एक असम्भव काजकें ई संभव बना देलनि। समाजक अपेक्षित सहयोगक अभावमे यद्यपि पत्रकें हिनका बन्द करऽ पड़लनि, किन्तु इतिहासमे हिनक योगदान अमिट भऽ गेल अछि।

ई गद्यक सेहो प्रौढ़ लेखक छथि। हिनक गद्योमे काव्यक प्रवाह रहैछ। शरच्चन्द्रक उपन्यासक ई मैथिलीमे भावानुवाद कयने छथि। किछु कथा सेहो ई लिखने छथि, जाहिमे 'बृहस्पतिक शोष' विशेष प्रसिद्ध भेल। किन्तु, कविक बाद, हिनक सभसँ सबल पक्ष आलोचकक अछि।

आलोचनाक एक पुस्तक प्रकाशित अछि—मैथिली काव्यपर संस्कृतक प्रभाव। एहिसँ अतिरिक्तो विभिन्न पुस्तकक भूमिका-रूप मे हिनक विपुल आलोचना-साहित्य छिड़िआयल अछि। मैथिलीक एतेक पोथीक भूमिका ई लिखने छथि, ततेक प्रायः क्यो दोसर एक व्यक्ति नहि। ओहि सभ भूमिकाकें जे ताकिकऽ एक ठाम कऽ देल जाय तं ओ मैथिलीक विलक्षण आलोचना-ग्रन्थ भऽ जायत। एहि दिस प्रयास भऽ रहल अछि।

हिनक किछु निबन्ध सेहो प्रकाशित अछि जे तात्कालिक आ शाश्वत समस्यापर आधारित अछि, सुचिन्तित अछि, गांभीर्यपूर्ण अछि, तथा जकर भाषा एकदम माजल-तराशल छैक, जाहिमे निरवरोध निर्मल प्रवाह छैक। हिनक ग्रन्थक बानगीक हेल 'पयस्विनी' क भूमिकाक किछु पाँती द्रष्टव्य थिक—

"छन्दकें यदि केओ कल्पना-कामिनीक नूपुरक मन्द-मधुर शिंजन बुझै छथि तं हुनका उद्भट दण्डक घटाटोप टंकारो सुनय पड़तनि। यदि मालिनी-शिखरिणीक कंकन-किंकिनि सुनबामे रस अयतनि तं हठात् हुनका मन्दाक्रान्ता शार्दूलविक्रीड़ितक चरणचाप सुनबोक धैर्य सहेजय पड़तनि। छन्दक द्रुतविलम्बित गतिमे जीवनक सहज संगति माननहि, प्रयोजन पड़ने 'पयस' क श्लेषाश्लेष नहि।"

वास्तवमे हिनक गद्य की पद्य की, एहमे वैह गूढ़ार्थ-बोधक भाषा, वैह सबल शिल्प-शैली, वैह 'तिल-तिल नूतन होय'क चमत्कार, वैह मनोमोहक वर्ण-विन्यास, वैह पाँती-पाँतीमे विहारीक गम्भीरता। हिनक 'दत्त-वती' महाकाव्य, प्रकाशनक पथपर अछि, मैथिलीक एहन प्रथम महाकाव्य होयत, जे विश्वक वर्तमान राजनीति ओ स्वातंत्र्योत्तर अपन देशक राजनीतिक गतिविधिक विस्तत व्याख्याक संगहि यावन्तो विषयक प्रसंग दिशा-निर्देश करत।

□

श्री यात्री

ज्योतिरीश्वर-विद्यापति-युगसँ अविच्छिन्न रूपें प्रवाहित होइत मैथिली काव्यधारामे महत्त्वपूर्ण मोड़ देनिहारमे मनबोध, चन्दा झा, सीताराम झा प्रभृति अनेक महाकविक नाम लेल जाइछ, किन्तु ओकर गतिकें तीव्रतम कऽ ओकरा आधुनिक युगक कोनो अन्य समृद्ध भाषाक काव्य-प्रवाहक समानान्तर लऽ अनबाक श्रेय जाहि एकमात्र कविकें देल जाइछ, ओ थिकाह 'यात्री'क उपनामसँ सुविख्यात श्री वैद्यनाथ मिश्र। हिनक लेखनीसँ निःसृत मैथिली कविता अपन मोहन सुरम्य सुवाससँ वातावरणकें महमहा देलक जकर सुगन्ध लेबाक लेल दूर-दूरक लोक स्वतः आकृष्ट भऽ गेल। वस्तुतः आकृष्ट करऽवला हिनक विलक्षण व्यक्तित्वो अछि—अपन गाम-घरक भारसँ अपनाकें सतत कात रखबाक चेष्टामे रत रहऽवला फक्कड़ व्यक्तित्व; सतत भ्रमणशील, समाज-संसारक रग-रगकें परखऽवला पारखी व्यक्तित्व; रूढ़िभंजक, श्रम-शक्तिक पूजक, व्यवस्थाक विद्रोही, नवीन पीढ़ीक प्रति आवेसी व्यक्तित्व। अपन जीवने जकाँ मैथिली कविताकें ई संकीर्ण छन्दक बन्धनसँ मुक्त कऽ सर्वहाराक प्रशस्त बाटपर उन्मुक्त विचरण करबाक हेतु छोड़ि देलनि।

'चित्रा' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक दू गोट कविता-संग्रहक अतिरिक्त तीन गोट उपन्यासो हिनक प्रकाशित अछि—पारो, नवतुरिया तथा बलचनमा। एकर अलावे किछु संस्मरण, किछु सामायिक टिप्पणी, किछु शब्दचित्र, आदि अछि।

दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे सन् १९११ ई०क बुद्ध पूर्णिमा दिन एक निम्नमध्यवित्त ब्राह्मण परिवारमे हिनक जन्म भेलनि। किछु दिन गाम, किछु दिन मातृक सतलखा, किछु दिन काशीमे संस्कृत साहित्यक अध्ययन कयलनि। एकर बाद बौद्ध भिक्षु भऽ गेलाह आ लंका चल गेलाह। फेर विश्वक अन्य भाषाक अध्ययन कयलनि, हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रगतिवादी कवि-लेखकक रूपमे अखिल भारतीय नाम-यश अर्जित कयलनि, पुनः अपन कौलिक संस्कारकें स्वीकार कयलनि आ मातृभाषाक भण्डारकें गुणक दृष्टिसँ अति समृद्ध कयलनि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर १९६८ ई०क साहित्य अकादमी पुरस्कार हिनका प्राप्त भेलनि।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे "यात्रीजीक कवितामे एक विचित्र विविधताक दर्शन होयत। रूढ़ि-जर्जर एवं आत्मविश्वाससँ ग्रसित जीवन, शोषण, उत्पीड़नक दारुण ज्वालामे दग्ध होइत जनताक दुख-दर्द, समाजमे अन्तर्निहित वर्ग-संघर्षक भावना, जीवनक सरल सात्विक वर्णन, प्रकृतिक एक-सँ-एक रमनगर रूपक अतिरिक्त 'प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मिथिलाक माटि-पानिकें—हर-जनकें—कोसी लखिमाकें नहि बिसरि सकलाह अछि।" एहि समस्त विलक्षणतासँ युक्त हिनक काव्य एक विलक्षण रूप प्राप्त कऽ लेने अछि। एहि विलक्षणताक किछु बानगी द्रष्टव्य—

कविताकें राजप्रासाद किंवा सुखी-सम्पन्नक आङन-दलानसँ उठाकऽ एकरा घेर ई गरीबक ओलिक कोर धरि पहुँचा देलनि। ई जे 'स्वप्न' देखलनि, से आइ प्रत्यक्ष भऽ रहल अछि—

ई २७ दिसम्बर १९५५ ई० धरिक अवधिमे प्रकाशित होइत रहल आ एहि अवधिमे एकर ६५ गोट अंक प्रकाशित भऽ सकल। ई मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र छल। एकर पुनंप्रकाशन १५ अगस्त १९८२ केँ आरम्भ भेल जे कहुना ८४क पूर्वार्ध धरि चलल। एहि अवधि मे कोनो दोसर दैनिक नहि प्रकाशित भऽ सकल। मिथिला-मैथिलीक प्रगतिक लेल आधुनिक युग मे दैनिक पत्रक प्रयोजनकेँ नितान्त आवश्यक मानि एहि दिस हिनक साहसिक डेग उठल छल। एक असम्भव काजकेँ ई संभव बना देलनि। समाजक अपेक्षित सहयोगक अभावमे यद्यपि पत्रकेँ हिनका बन्द करऽ पड़लनि, किन्तु इतिहासमे हिनक योगदान अमिट भऽ गेल अछि।

ई गद्यक सेहो प्रौढ़ लेखक छथि। हिनक गद्योमे काव्यक प्रवाह रहैछ। शरत्चन्द्रक उपन्यासक ई मैथिलीमे भावानुवाद कयने छथि। किछु कथा सेहो ई लिखने छथि, जाहिमे 'बृहस्पतिक शोष' विशेष प्रसिद्ध भेल। किन्तु, कविक बाद, हिनक सभसँ सबल पक्ष ओलोचकक अछि।

आलोचनाक एक पुस्तक प्रकाशित अछि—मैथिली काव्यपर संस्कृतक प्रभाव। एहिसँ अतिरिक्तो विभिन्न पुस्तकक भूमिका-रूप मे हिनक विपुल आलोचना-साहित्य छिड़िआयल अछि। मैथिलीक जतेक पोथीक भूमिका ई लिखने छथि, ततेक प्रायः क्यो दोसर एक व्यक्ति नहि। ओहि सभ भूमिकाकेँ जे ताकिकऽ एक ठाम कऽ देल जाय तँ ओ मैथिलीक विलक्षण आलोचना-ग्रन्थ भऽ जायत। एहि दिस प्रयास भऽ रहल अछि।

हिनक किछु निबन्ध सेहो प्रकाशित अछि जे तात्कालिक आ शाश्वत समस्यापर आधारित अछि, सुचिन्तित अछि, गांभीर्यपूर्ण अछि, तथा जकर भाषा एकदम माजल-तरासल छैक, जाहिमे निरवरोध निर्मल प्रवाह छैक। हिनक गद्यक बानगीक लेल 'पयस्विनी'क भूमिकाक किछु पाँती द्रष्टव्य थिक—

"छन्दकेँ यदि केओ कल्पना-कामिनीक नूपुरक मन्द-मधुर शिंजन बुझैत छथि तँ हुनका उद्भट दण्डक घटाटोप टंकारो सुनय पड़तनि। यदि मालिनी-शिखरिणीक कंकन-किंकिनि सुनबामे रस अयतनि तँ हठात् हुनका मन्दाक्रान्ता शार्दूलविक्रीड़ितक चरणचाप सुनबोक धैर्य सहेजय पड़तनि। छन्दक द्रुतविलम्बित गतिमे जीवनक सहज संगति माननहि, प्रयोजन पड़ने 'पयस'क श्लेषाश्लेष कयनहि।"

वास्तवमे हिनक गद्य की, पद्य की, सभमे वैह गूढ़ार्थ-बोधक भाषा, वैह माजल शिल्प-शैली, वैह 'तिल-तिल नूतन होय'क चमत्कार, वैह मनोमोहक वर्णन-विन्यास, वैह पाँती-पाँतीमे विहारीक गम्भीरता। हिनक 'दत्त-वती' महाकाव्य, जे प्रकाशनक पथपर अछि, मैथिलीक एहन प्रथम महाकाव्य होयत, जे विश्वक वर्तमान राजनीति ओ स्वातंत्र्योत्तर अपन देशक राजनीतिक गतिविधिक विस्तत व्याख्याक संगहि यावन्तो विषयक प्रसंग दिशा-निर्देश करत।

श्री यात्री

ज्योतिरीश्वर-विद्यापति-युगसँ अविच्छिन्न रूपेँ प्रवाहित होइत मैथिली काव्यधारामे महत्त्वपूर्ण मोड़ देनिहारमे मनबोध, चन्दा झा, सीताराम झा प्रभृति अनेक महाकविक नाम लेल जाइछ, किन्तु ओकर गतिकेँ तीव्रतम कऽ ओकरा आधुनिक युगक कोनो अन्य समृद्ध भाषाक काव्य-प्रवाहक समानान्तर लऽ अनबाक श्रेय जाहि एकमात्र कविकेँ देल जाइछ, ओ थिकाह 'यात्री'क उपनामसँ सुविख्यात श्री वैद्यनाथ मिश्र। हिनक लेखनीसँ निःसृत मैथिली कविता अपन ओहन सुन्दर सुवाससँ वातावरणकेँ महमहा देलक जकर सुगन्ध लेबाक लेल दूर-दूरक लोक स्वतः आकृष्ट भऽ गेल। वस्तुतः आकृष्ट करऽवला हिनक विलक्षण व्यक्तित्वो अछि—अपन गाम-घरक भारसँ अपनाकेँ सतत कात रखबाक चेष्टामे रत रहऽवला फक्कड़ व्यक्तित्व; सतत भ्रमणशील, समाज-संसारक रग-रगकेँ परखऽवला पारखी व्यक्तित्व; रूढ़िभंजक, श्रम-शक्तिक पूजक, व्यवस्थाक विद्रोही, नवीन पीढ़ीक प्रति आवेसी व्यक्तित्व। अपन जीवने जकाँ मैथिली कविताकेँ ई संकीर्ण छन्दक बन्धनसँ मुक्त कऽ सर्वहाराक प्रशस्त बाटपर उन्मुक्त विचरण करबाक हेतु छोड़ि देलनि।

'चित्रा' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ' नामक दू गोट कविता-संग्रहक अतिरिक्त तीन गोट उपन्यासो हिनक प्रकाशित अछि—पारो, नवतुरिया तथा बलचनमा। एकर अलावे किछु संस्मरण, किछु सामायिक टिप्पणी, किछु शब्दचित्र, आदि अछि।

दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे सन् १९११ ई०क बुद्ध पूर्णिमा दिन एक निम्नमध्यवित्त ब्राह्मण परिवारमे हिनक जन्म भेलनि। किछु दिन गाम, किछु दिन मातृक सतलखा, किछु दिन काशीमे संस्कृत साहित्यक अध्ययन कयलनि। एकर बाद बौद्ध भिक्षु भऽ गेलाह आ लंका चल गेलाह। फेर विश्वक अन्य भाषाक अध्ययन कयलनि, हिन्दीमे नागार्जुन नामे प्रगतिवादी कवि-लेखकक रूपमे अखिल भारतीय नाम-यश अर्जित कयलनि, पुनः अपन कौलिक संस्कारकेँ स्वीकार कयलनि आ मातृभाषाक भण्डारकेँ गुणक दृष्टिसँ अति समृद्ध कयलनि। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर १९६८ ई०क साहित्य अकादमी पुरस्कार हिनका प्राप्त भेलनि।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे "यात्रीजीक कवितामे एक विचित्र विविधताक दर्शन होयत। रूढ़ि-जर्जर एवं आत्मविश्वाससँ ग्रसित जीवन, शोषण, उत्पीड़नक दारुण ज्वालामे दग्ध होइत जनताक दुख-दर्द, समाजमे अन्तर्निहित वर्ग-संघर्षक भावना, जीवनक सरल सात्विक वर्णन, प्रकृतिक एक-सँ-एक रमनगर रूपक अतिरिक्त 'प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मिथिलाक माटि-पानिकेँ—हरजनकेँ—कोसी लखिमाकेँ नहि बिसरि सकलाह अछि।" एहि समस्त विलक्षणतासँ युक्त हिनक काव्य एक विलक्षण रूप प्राप्त कऽ लेने अछि। एहि विलक्षणताक किछु बानगी द्रष्टव्य—

कविताकेँ राजप्रासाद किंवा सुखी-सम्पन्नक आङन-दलानसँ उठाकऽ एकबेर ई गरीबक ओलिक कोर धरि पहुँचा देलनि। ई जे 'स्वप्न' देखलनि, से आइ प्रत्यक्ष भऽ रहल अछि—

मोर मन दौड़ैत छइ कोठाक दिस
पैड़-पैड़ धनीक दिस दरबार दिस
गरीबक दिस ककर जाइत छै नजरि
के तकै अछि हमर नोरक धार दिस
अन्न ने छै, कैंचा ने छै, कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे
उठह कवि तों दहुक ललकारा कने
गिरि-शिखरपर पथिक दल बढ़तैक रे

सत्यिंहु, कवि हेहन ने ललकारा देलनि जाहिसँ अनेक शताब्दीसँ गरजैत राजप्रासादक गुम्बज धराशायी भऽ गेल, युग-युगसँ पूजित होइत वैद्यनाथ 'पचकल लोढ़ा' भऽ गेलाह, 'चामुण्डाक तरुआरि' भोथ भऽ गेल, वेद-पुरान 'फूसि' भऽ गेल। एकर विपरीत, श्रमिक वर्गमे जागृति आयल, श्रमजीवीक जयगान होबऽ लागल, 'हाथक क्षमता' 'सत्य' सिद्ध भेल।

हिनक 'चित्रा'मे तथा ओकर बादोक कवितामे उक्त स्वर क्रमशः आर अधिक मुखर भेल अछि। किन्तु, एहि प्रकारक कविताक अतिरिक्त हिनक स्वानुभूतिमूलक कविता सेहो अछि जे मनोभावक सहज स्फुरणक कारणेँ, उपस्थापन-शैलीक विलक्षणताक कारणेँ तथा व्यक्तिगत समस्याकेँ सार्वभौम सत्ता प्रदान करबाक कारणेँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। आचार्य रमानाथ झा एहने काव्यकेँ हिनक सर्वोत्कृष्ट रचना मानलनि अछि। हुनक मतक अनुसार "ई साम्यवादी साहित्यक विवेचन ठेठ मैथिली भाषामे, बन्धनहीन छन्दमे, कएल से हिनक काव्यक वैशिष्ट्य अवश्य थिक, किन्तु यदि आओर मूल रूपेँ हिनक काव्य-प्रवृत्तिक विश्लेषण कयल जाय तँ हिनक कविताक ओ स्थल अत्यन्त उत्कर्षपूर्ण प्रतीत होइत अछि जाहि ठाम ई अपन 'वाद'क प्रचारक व्यक्तित्वकेँ त्यागि अकृत्रिम भावेँ अपन रागात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्ति करैत छथि। वस्तुतः यात्रीजीक ओहने चित्तवृत्तिक द्योतक रचना हिनक सर्वश्रेष्ठ रचना थिक।" एहन रचनामे अन्तिम प्रणाम, गामक चिट्ठी, हिमगिरिक उत्संगमे, छातिका नक्षत्रमे, भावना, सिनुरिया आम आदि कतिपय कविताक नाम गनाओल जा सकैछ। हिनक 'अन्तिम प्रणाम'क मार्मिकता हृदयकेँ झकझोड़ि दैत अछि—

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा सन्तति, से हुनक पाप
ई सोचि हौन्हु जनु मनस्ताप
अनको विसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम

मिथिलाकेँ हिनक ई प्रणाम भलेँ अन्तिम नहि रहल होअओ, किन्तु मैथिली रूढ़िवादी इतिवृत्तात्मक काव्यकेँ धरि अवश्य हिनक प्रगतिवादी कविताक 'अन्तिम प्रणाम' सिद्ध भेल; भलेँ गाम-घरक लोक हिनक नाम बिसरि गेल होइनि, किन्तु मैथिलीक आधुनिक कालक इतिहासमे हिनक नाम तेहन ने अमिट भऽ गेल छनि जे साधारणो छात्र कथमपि ओकरा बिसरि नहि सकैछ।

एक दिस ई माँ मिथिलाकेँ अन्तिम प्रणाम करैत देखल जाइत छथि मुदा दोसर दिस स्वयंकेँ मैथिल होयबाक कारणेँ गौरवान्वितो अनुभव करैत छथि, तकर कारण—

अहिंक अणु-अणुसँ भरल जे देह
अहिंक स्फूर्तिक स्पन्द जे चैतन्य
अहीं, मिथिले, जे कि जन्म स्थान
जे कि मैथिल, धन्य तेँ हम धन्य

प्रतिपल चिन्ताक लावापर चढ़ल मनुष्य कोना प्राकृतिक आनन्दकेँ छनो भरि प्राप्त करबा ले' बेहाल रहैछ, कोना ओकरा प्रकृति चुम्बक जकाँ खीचैत रहैत अछि, एहि भावक तीव्र अनुभूति 'सिनुरिया आम'क निम्नांकित पाँती करबैत अछि—

किछु होअओ, भावीक चिन्ता नहि करी
एखन तँ झरकल नयनकेँ जुड़ा ली तत्काल
दिव्य ओ अभिराम
करै अछि आकृष्ट रहि-रहि ठाढ़िपर लटकल
सिनुरिया आम।

एहिमे भविष्यक चिन्ता छोड़ि सद्यःप्राप्त सुख भोगबाक तृप्तिजन्य आनन्द भेटैछ।

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कहैत छथि—"अभिव्यक्ति-शैलीमे तँ ई क्रान्ति उपस्थित कऽ देल। मैथिली साहित्यमे हिनकहि टा भाषा यथार्थ रूपमे लोकभाषा थिक। किन्तु आन प्रतिभाक स्पर्शसँ ओ ग्राम्य भाषाकेँ साहित्यिकता प्रदान कयल। हिनक रचनाकेँ जे सर्वाधिक मार्मिकता प्रदान करैत अछि से थिक ठेठ स्वाभाविक भाषाक प्रयोग ओ वक्रतापूर्ण कहबाक रीति जाहिमे व्यंग्यार्थ बेस चमत्कारक होइत अछि।"

बहुविवाह आ बालविवाह, जे मिथिलाक अभिशाप छल, एहि दुनू विषयपर 'बूढ़ वर' ओ विलाप'मे अग्निस्फुलिंग छिटकल अछि, जे समाजक महन्थक चानिकेँ छक दऽ दागि दैत अछि—

अगड़ाही लागउ बरु बज्र खसउ
एहन जातिपर बरु धसना धसउ
भूकम्प होउक बरु फटौक धरती
माँ मिथिला रहिए कऽ की करती

एहि प्रकारक कविताकेँ लक्ष्य कऽ डॉ० जयकान्त मिश्र हिनक सम्बन्धमे निम्नलिखित मत प्रकट करैत छथि—"The change in the idiom of these poems is remakable. The poet does not use Sanskritzed words, and raise a colloquial style to the poetic level. Ingenious thought, epigrammatic and terse style, colloquial diction, unparalleled speed and tempo and pointed observation characterise these poems."

'फोटोग्रफिक चित्रण' आ 'चित्र'—एहि दुनू शब्दमे अद्भुत साम्य अछि, अर्थो अत्यन्त समीप अछि। हिनक 'फेकनी' यथार्थवादी कविताक बेजोड़ नमूना थिक—

छें रखने पौआही फुक्की दैबहिक
दै छही पिला तैयो अँटकरसँ पानि नित्त
... ...

बान्हल छौ दूटा बूढ़ि गाय दच्छिना योग अरियार्नामे
....

बाछी नै छौ जे रखितें बैतरनीक हेतु
... ...

गै, क्यो नहि औतौ काज, कथी ले' छें बेहाल
... ..

गै, बेटा पीबै छौ ताड़ी
....

सपनहुँमे नहि तों गेल हेबें
एहि जन्म सिमरिया घाट हेगै
जो भऽ आ गऽ
....

जिनगीक ठेकाना कोन,
आब तों सहजहिं पाकल आम भेलें,
दै छही मिला तैयो अँटकरसँ पानि नित्त !

यथार्थवादी कविताक निम्नलिखित लक्षण कहल गेल अछि—

(१) वक्तव्य-वस्तुक लग-पासक प्रत्येक बातक ब्योरावार विवरण उपस्थित करब तथा निरघिन बूझल जायवला वस्तुक 'चऽ तू' कऽ उल्लेख करब।

(२) समसामयिक घटना तथा रीति-नीतिक विस्तारपूर्वक उल्लेख करब।

(३) वक्तव्य-वस्तुक संग अत्यन्त क्षीण सूत्रसँ सम्बद्ध नगण्यो लोकक चर्चा करब।

(४) भिन्न-भिन्न पात्रक बोलीकें हू-ब-हू उतारब तथा ओहिमे जँ कोनो गारियो हो तँ ओकरा जहिनाक तहिना रहऽ देब।

(५) विभिन्न व्यवसाय तथा पेशावला लोकक पारिभाषिक शब्दावलीकें चुनि-चुनिकऽ संग्रह आ व्यवहार करब।

(६) घटनाक सत्यताक वातावरण उपस्थित करबाक हेतु चिट्ठी, चिट्ठा, सनद एवं अन्य प्रामाणिक बूझल जायवला बातकें उपस्थित करब।

हिनक 'फेकनी'मे यथार्थवादी काव्यक अधिक तत्वक समावेश पबैत छी। यथार्थवादी कविकें परहेज कथूसँ नहि रहैत छैक। आ, ओ निरघिन बूझल जायवला वस्तुक, घृणित वस्तुक, सामान्य मनुक्खक आँखि जकरा दिस नहि देखऽ चाहत तेहन वस्तुक वर्णन बड़ आवेससँ, बड़ आत्मीयतासँ, बड़ फैलसँ करत। एहि संदर्भमे

'गोठबिछनी' कविताक निम्नांकित अंश देखल जा सकैछ—

मैल पुरान पचहथ्थी नूआ
सेहो फाटल थेकरी लागल
देहक रङ जमुनिया, तइपर
मुँह माइक गोटीसँ दागल
बगड़ा जेना लगाबय खोंता
तेहने रुच्छ केश छउ तोहर
दू छर हारी मात्र गरामे
केहन विचित्र भेस छउ तोहर

यथार्थवादी कवि जतबा भावुक होइछ, चिन्तक ताहिसँ बेसी होइछ। ओकर भावुकता दीन-दलितक प्रति रहैछ, किन्तु ओकर दुर्दशा देखि सभसँ पहिने ओकरा मनमे समाजक ओहि (धनिक) वर्गक प्रति आक्रोशक भाव उदित होइछ, जे ओकर एहि दुरवस्थाक हेतु जिम्मेदार छैक। पुनः दलितक उद्धारक चिन्ता आ चिन्तन करऽ लगैछ, महन्थक आसनकें पकड़िकऽ झमारऽ लगैछ। 'नव झचारी'मे एही भावक अभिव्यंजन भेल अछि—

गौरा पहिरथि फाटल नूआ
छनि कर्महिमे लागल भूआ
कातिक गणेश छथि गीड़ि रहल
उसिनल अगबे मड़ुआक पात
बेमान बापसँ की माङ्यु तऽ दालि-भात
अपने पर्वत छह भाग कप्पारो परकारक
बनका लेनें तँ दुर्लभ छै आको धथूर
बुझि पड़ितहुँ जँ सुनितहुक—
उपासल कमरथुआकेर मुइल सूर !

हिनक कविताक अभिव्यंजना-शक्ति बेजोड़ अछि। ओकर व्यंग्य सोझे हृदयपर चोट करैत अछि, मस्तिष्ककें झमारि दैत अछि। ओहि व्यंजना-शक्तिकें तीव्र करबामे हिनक भाषा सेहो खूब सहायक होइछ। एखनुका कविमे मैथिली भाषाक सुच्चा रूप हिनकेमे देखल जा सकैत अछि। हिनक परवर्ती अनुयायी हिनक भाषाक सामर्थ्यकें नहि छूबि सकल अछि।

'आन्हर जिनगी' आधुनिक जोवनक अनास्था, अस्थिरता आ अनिर्णीत दिशामे आशाक संचार सूचित करऽवला अत्यन्त शक्तिशाली कविता थिक—

आन्हर जिनगी
नाङड़ि आशाकेर कान्हपर हाथ राखिकें कोम्हर जाइ छें
ओ गबइत छौ बटगमनी, तों गुम्म किए छें
तोहूँ धऽ ले कोनो भनिता

एकर अग्रगामिता आ आशावादिता मानव-जीवनक प्रगतिशीलता दिस उन्मुख अछि। एहि कविताक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक कहब छनि—"The greatest lyric he has written—Anhar Jingi—can very well claim to be the greatest single poem of Modern Maithili."

हिनक कवितामे उद्दाम प्रवाह, अत्यधिक प्रगतिशीलता, भोगल अनुभूति आ मार्मिक व्यंग्य रहैछ। समाजमे जे वस्तु हेय, असुन्दर, अनादृत, बहिष्कृत आ

दसहा दूसल जाइछ तकरा ई अपन काव्य-पारसमणिक स्पर्शसँ सुपाठ्य, सुन्दर, जादुर आ सोना बना दैत छथि। हिनक कविताक विभिन्न प्रवृत्ति आ प्रवृत्तिक विशेष अध्ययनक लेल डॉ० यशोदानाथ झा लिखित 'यात्री-काव्य-विवेचन' पुस्तक पठनीय थिक।

पारो, नवतुरिया आ बलचनमा—एहि तीनू उपन्यासक सर्जन कऽ यात्री मैथिलीक शीर्षस्थ उपन्यासकारमे परिगणित भऽ गेलाह अछि। "पारोमे बिरजू ओ बिरजूक पिसिऔत बहिनक परस्पर आकर्षण, प्रेम ओ कोमल भावक चित्रण भेल अछि। नवतुरियामे यात्री जी बाल-वृद्ध विवाह तथा मिथिलाक नवतुरिया लोकनिक नवजागरणक चित्रांकन कयने छथि। साठि वर्षक चतुरानन झा जखन बिसेसरीक संग विवाह करबाक हेतु प्रस्तुत होइत छथि तँ बूढ़ लोकनिक अनटोटल काज नवतुरिया लोकके नहि देखल गेलनि, ओ सभ कैओ तकर विरोध कऽ दैत छथि तथा वाचस्पति झाक संग बिसेसरीक विवाह सम्पन्न होइत अछि।"

हिनक दुनू उपन्यासक उद्देश्यपर प्रकाश दैत डॉ० अमरेश पाठक कहैत छथि—"सामाजिक विषमता, ओकर रूढ़िग्रस्तता एवं ओकरा प्रति जनसाधारणक आक्रोशक चित्रणक समस्याकेँ लऽकऽ पारो एवं नवतुरिया लिखल गेल। पारोमे समाधान नहि ताकल गेल अछि, परन्तु नवतुरियामे समस्या ओ समाधान दुनूक सन्निवेश अछि। वस्तुतः नवतुरियामे मिथिलामे व्याप्त अनमेल विवाह, वृद्ध-विवाह एवं नारी-जातिक शोषित रूपक चित्र अंकित कऽ ओकर समाधानक चेष्टा अछि। संग-संग एहिमे मिथिलाक जीवनक चित्र अत्यन्त स्वाभाविक एवं आकर्षक रूपमे अंकित भेल अछि। वर्णनात्मक शैलीक प्रयोग ठेठ शब्दावलीक व्यवहार द्वारा प्रतिपादित करबामे यात्रीजीक अन्यतम स्थान छनि। हिनक दुनू उपन्यासमे वर्णनक स्वाभाविकता देखि पाठक आश्चर्य-चकित भऽ जाइत छथि।"

भाषा आ शैलीक तँ अनुपम शिल्पी छथि यात्री। हिनक ठेठ फड़कैत भाषाक बानगी नवतुरियाक निम्न पाँतीमे द्रष्टव्य—

"पंडिताइत दिनसँ दिन नाटि होइत गेली आ दैवक इच्छा सएह ओहि बेचारीक लेखेँ सर्वोपरि टॉनिक रहइन्ह। आँखि-मुँह नाक-कानक काट बढ़िएँ छलन्हि, काँति गेहुआँ, पण्डितक अपन काँति रहइन्ह पिण्डश्याम तँ तेँ की? धिया-पूताक आकृति ओ रूपपर माइहिक छाप पड़ल छलइक, पण्डिताइनक शील-स्वभाव सेहो मधुर रहइन्ह आर बोल-वचन सेहो मिसरी।

अथा-जाल मामूली।

वृत्ति रहइन्ह पंडिताइ सएह।"

'बलचनमा' यद्यपि मैथिलीक वस्तु थिक, किन्तु एकर प्रकाशन पहिने हिन्दीमे भऽ गेलक आ एकर मैथिली अनुवाद बादमे भेल। ताहूमे, एकर किछुए अंशक अनुवाद स्वयं उपन्यासकार कयने छथि। तेँ, प्रभावक दृष्टिएँ ई कने झूस बुझना जाइछ। तथापि, डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा एकर रचनाकेँ 'वस्तु-विन्यासक दृष्टिएँ एक युगान्तकारी घटना' मानने छथि।

एकर अतिरिक्त अन्य जे छिटफुट रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि, ताहूमे भाषाक ठेठ रूप, कहबाक अपूर्व छटा पाँती-पाँतीमे दृष्टिगत होइछ। मिथिलाक माटिक सोन्हगर गन्ध हिनक समस्त रचना—की पद्य, की गद्य—मे अनुस्यूत अछि। □

डॉ० श्री सुभद्र झा

भाषा-विज्ञानक राष्ट्रख्यात विद्वान डाक्टर सुभद्र झा मैथिलीकेँ भाषावैज्ञानिक आधार प्रदान करबाक कारणेँ, विद्यापतिक विशुद्ध पदावलीक अंगरेजीमे व्याख्या कऽ ओकर महत्त्वकेँ विश्वस्तर पर पहुँचयबाक कारणेँ, मैथिलीक प्राचीन सम्पादाकेँ अपन समालोचक-दृष्टि दऽ ओकरा स्थिर आ प्रामाणिक बनयबाक कारणेँ, तथा अपन विशिष्ट गद्य-शैलीक कारणेँ मैथिली साहित्यमे सदा स्मरणीय रहताह। हिनक प्रत्येक कृति, चाहे ओ मैथिलीमे हो वा मैथिली-विषयक अंगरेजीमे, स्थायी महत्त्वक अछि। मैथिलीक कृति तँ ओकर विलक्षण भाषा टाक हेतुएँ अमर अछि।

मैथिलीमे अद्यावधि हिनक तीन गोट मौलिक पुस्तक प्रकाशित अछि—(१) प्रवास-जीवन (किछु प्रतिमे एकर नाम 'प्रवास' मात्र अछि। किन्तु दुनू पोथी एके थिक, एके वस्तु, एके संग छपल, खाली कवर-पृष्ठ आ इनर कवर टा भिन्न अछि) (२) यात्रा-प्रकरण-शतक तथा (३) नातिक पत्रक उत्तर।

उक्त पोथीक अतिरिक्त हिनक कतिपय निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि—भाषा-साहित्यक विभिन्न अंगकेँ स्पर्श करैत, समसामयिक विचार-धाराकेँ मन्थन करैत। विषयमे भिन्नता जे रहओ, किन्तु शैली सभमे अपन विलक्षणता लेने अछि—ठेठ शब्दावलीक सटीक प्रयोग, हृदयमे लगले प्रवेश कऽ जयबाक क्षमता राखऽवला वाक्य-विन्यास, गम्भीरसँ गम्भीर तथा सहजसँ सहज भावकेँ सरलतापूर्वक हृदयंगम करा देनिहार मातल भाषा।

भाषा-विज्ञानक हिनक विशिष्ट कृति अंगरेजीमे प्रकाशित अछि—Formation of Maitlili Language.' एही कृतिपर हिनका D. Litt. क उपाधि प्राप्त भेल छनि। डा० 'श्रीश' हिनक एक टा आर कृतिक नाम लेने छथि—'Historical Grammer of Maithili.'

भाषा-विज्ञानक अतिरिक्त डा० सुभद्र झा विद्यापति-काव्यक गम्भीर अध्येता-व्याख्याकारक रूपमे सेहो प्रसिद्ध छथि। अंगरेजीमे विद्वत्तापूर्ण गवेषणात्मक भूमिकाक संग, अर्थ-सहित विद्यापतिक पद ई प्रकाशित कयने छथि "Songs of Vidyapati" क नामसँ। बिलैतमे छपल हिनक एहि पोथीसँ विद्यापतिक काव्य-प्रतिभाकेँ विदेशियो विद्वान नीक जकाँ परखलक जँचलक। विद्यापतिक किछु पदमे सन्निहित गूढ़ार्थ हिनक व्याख्यामे उद्घाटित भेल अछि।

वर्तनीक प्रसंग ई कट्टर छथि। प्रो० रमानाथ झा जकाँ, अपना द्वारा प्रयुक्त वर्तनीकेँ, भाषा-विज्ञानक आधारपर उचित आ वैज्ञानिक सिद्ध कयने छथि आ ओहिसँ भिन्न वर्तनीकेँ अशुद्ध मानने छथि।

साहित्य अकादमी, दिल्ली मैथिलीकेँ अपन स्वीकृत भाषा-सूचीमे सम्मिलित करबाक औचित्य जनबा लेल जे पाँच टा सुविख्यात विद्वानक समिति गठित कयने छल, ताहिमे एक ईहो छलाह। मैथिली एक स्वतंत्र, सुविकसित आ श्रेष्ठ भाषा थिक—एहि प्रसंग हिनक अकाट्य तर्कसभ सुनिकऽ सर्वसम्मतिसँ उक्त समिति मैथिलीकेँ साहित्य अकादमीक स्वीकृत भाषासूचीमे सम्मिलित करबाक लेल अपन अनुशंसा प्रेषित कयने छल।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक नागदह नामक गाममे १९११ ई० मे भेलनि। कलकत्ताक स्कॉटिश चर्च कालेजसँ स्नातक भेलाक बाद ई सन् १९३६ सँ ४० धरि पटना विश्वविद्यालयक शोध-अध्येता रहलाह। तदनन्तर १९४१ ई० मे चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगामे प्राध्यापक भऽ गेलाह। सन् १९४४ ई० मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट्०क उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलाह। एकर बाद, १९४६ ई० मे विशेष अध्ययनक हेतु ई पेरिस गेलाह। ओतय ई 'डाक्टर-एस-लएतसँ' उपाधि प्राप्त कयलनि। एकर अतिरिक्त ई साहित्याचार्य सेहो छथि। बहुत दिन धरि वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक ई पुस्तकालयाध्यक्ष पदपर रहलाह। ओहू ठाम हिनका प्राचीन प्रकाशित-अप्रकाशित भाषा-साहित्यक अध्ययनक प्रचुर अवसर प्राप्त भेलनि। ओहि ठामसँ अवकाश प्राप्त कयलाक बाद ई राँचीमे योगदा सत्संग महाविद्यालयक प्रधानाचार्य पदपर कार्य कयलनि। ओहू ठाम निर्धारित सेवा-अवधि ई सम्पन्न कयलनि। तकर बाद ई पटना विश्वविद्यालयक 'मिथिलेश रमेश्वर सिंह मैथिली चेयर' मे 'रिसर्च प्रोफेसर'क पदकेँ सुशोभित कयलनि। सम्प्रति ई अवकाशक जीवन व्यतीत करैत गामहि पर रहि अध्ययन-लेखनमे लागल रहैत छथि।

प्रवास-जीवन—सन् १९५० ई० मे प्रकाशित ई पोथी यात्रा-साहित्यमे अपन विलक्षण स्थान सुरक्षित करा चुकल अछि। यद्यपि यात्रा-साहित्यमे आनो रचना कम नहि प्रकाशित अछि, पोथियोसभ छपल अछि; किन्तु एकर स्थान एखन धरि अद्वितीय मानल जाइत अछि।

कोनो देशकेँ, कोनो संस्कृतिकेँ आत्मीयतासँ देखब, अध्ययन करब तथा ओकर समाजकेँ, संस्कारकेँ आत्मीयतासँ शब्दबद्ध करब—ई बड़ कठिन काज थिक। डा० सुभद्र झा एकरा जाहि सहृदयतापूर्वक लिखलनि अछि, से हिनक साहित्यिक प्रतिभाक उत्कृष्टताक द्योतन तँ करबिते अछि, मैथिली साहित्योक उत्कृष्ट शैली-सामर्थ्यक सम्यक् परिचय करा दैत अछि।

पुस्तकाकार प्रकाशित होयबासँ पूर्व ई वर्णनसभ धारावाही रूपमे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल छल। मिथिला मिहिरमे, प्रायः नब्बे सप्ताह धरि हिनक यात्रा-वर्णन छपैत रहल आ मैथिली पाठकक मनोरंजन आ ज्ञानवर्धन करैत रहल। ओसभ टा वस्तु पुस्तकाकार प्रकाशित होइत तँ लगभग एक हजार पृष्ठक भऽ जाइत, मुदा अर्थाभावक कारणेँ से संभव नहि भऽ सकल। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "सम्पूर्ण यात्रा-वर्णन एकत्र छपाएब बड़ व्ययसाध्य छैक तेँ मित्रलोकनिक अनुरोधसँ ओकर दू अंश मात्र प्रस्तुत पोथीमे संकलित कए प्रकाशित कराओल अछि। १९४७ ई० क मध्यमे श्री सुभद्र बाबू पेरिससँ जर्मनी गेल छलाह ओ किछु दिनक उपरान्त स्विटजरलेण्ड। इएह दुहू अंश एतए अछि।" यैह कारण थिक जे पुस्तकक पहिले पाँती पूर्वक प्रकरणकेँ मोन पाड़ैत अछि।

जर्मनी आ स्वीटजरलेण्डक तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ राजनीतिक अवस्थाक परिचय एहि पुस्तक द्वारा भेटि जाइछ। एकर अतिरिक्त एहिमे लेखकक व्यक्तिगत रोचक संस्मरण ठाम-ठाम अतीव आनन्ददायक अछि। भारतक विख्यात नेता कृष्ण मेनन तथा बिहारक प्रसिद्ध नेता अनुग्रह नारायण सिंहक संग लेखकक वार्तालाप तथा आत्मीयताक रोचक वर्णन पाठकपर दीर्घ काल धरि अपन प्रभाव छोड़ि जाइछ। तहिना, लेखक चुंगी-विभागकेँ ठकिकऽ

कोना टाइपराइटरकेँ सीमा-पार करौलनि, सेहो प्रसंग विसरबला नहि अछि। लेखकक मुर्गपत्नी, अशुद्ध हिन्दी बाजब आदि प्रकरण अत्यन्त मोहक अछि।

लेखकक वर्णन-शैलीक एक उदाहरण द्रष्टव्य—"हम फ्रेंच के कहय, अंग्रेजी मो नहि बाजब, से निश्चय कएल। फाटक खुजल। देवी-देवता सबहिक स्मरण करैत सभसँ आगाँ हम प्रवेश कएल। माधवजी हमर सटिआ वा संगी नेबूझल जाथि तेँ किछु पाछू भए गेलाह। हमर मोटा खोलि फ्रेंचमे पूछल—'अहाँ कीनल अछि?' हम (हिन्दीमे)—'हिन्दुस्तानी है हिन्दुस्तानी।' ओ (अंगरेजीमे) 'Do you speak English. ?" हम (हिन्दीमे) —'पेरिस जायगा पेरिस।' ओ (जर्मनमे)—"अहाँ किछु कीनल अछि?' हम—'पढ़ता है पढ़ता'। ओ (फ्रेंचमे)—'ई अहाँकेँ स्विस आ फ्रेंच द्रव्य अछि?' हम—'पेरिस होकर चार महीनामे लन्दन होकर कलकत्ता जायगा—ओही लग हमरा घर है।' बेचारा पेसोपेस भऽ गेल।"

हिनक प्रस्तुत पुस्तकक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्र लिखने छथि—"यात्रा-सम्बन्धी साहित्यमे सभसँ विलक्षण गद्य लिखलनि अछि डा० श्री सुभद्र झा। हुनक लिखल 'हमर प्रवास' (पोथीक नाम डा० मिश्र अशुद्ध लिखने छथि) मैथिलीक एक गोट श्रेष्ठ ग्रन्थ थिक। देश-परदेशक कथासभ ओ जे लिखलनि अछि से कतेक रोचक अछि तकर कथा नहि हो, ओहिमे यत्र-तत्र श्री सुभद्र बाबूक झलकैत व्यक्तित्व जे घुरि-घुरिकऽ प्रकट भऽ जाइत अछि से अवर्णनीय आनन्द देनिहार अछि। निधोख भऽ सभ विषय, सभ बात—अपन विशिष्टता, अपन अन्धविश्वास, अपन अतर्कित तर्क, अपन संस्मरणसँ अपन समस्त पाठकक समक्ष आनिकऽ ठाढ़ कऽ दैत छथि। श्री सुभद्र बाबूक शैली विस्तृत अछि, चित्रित अछि, सर्वथा यात्रा-वर्णनक उपयुक्त अछि।" तहिना Formation of Maithili Language क सन्दर्भमे डा० मिश्रक मत अछि—"The Study of the Maithili Language as language has been best done by Dr. Subhadra Jha."

'प्रवास-जीवन' लेखकक विदेश-यात्रापर आधारित अछि, आ 'यात्रा-प्रकरण-शतक' मुख्यतः हिनक स्वदेश-भ्रमणपर। एहिमे एक सय एहन प्रकरणक उल्लेख अछि, यात्रा प्रकरणक—जाहि पर लेखक कोनोमे संक्षिप्त रूपेँ तँ कोनोमे विस्तारसँ प्रकाश देने छथि। यद्यपि एकरो रोचकता कायम राखल गेल अछि, किन्तु 'प्रवास-जीवन'क स्वाद एहिमे पाठककेँ नहि भेटैछ।

'नातिक पत्रक उत्तर' पत्र-शैलीमे लिखल गेल एहन पोथी थिक जाहिसँ सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, मैथिली-आन्दोलन तथा व्यक्तिगत समस्या आदिसँ सम्बद्ध अनेको विषयपर लेखकक दृष्टिक सूचना प्राप्त होइत अछि। भरिसक निबन्धकेँ पत्र-शैलीमे कऽ देल गेल अछि, कारण पत्र-शैलीमे ई सुविधा रहैछ जे अपन मनक बातकेँ अनौपचारिको ढंगसँ लेखक राखि सकैत अछि, कोनो विषयपर आवश्यकतासँ बेसियो तर्क कऽ सकैत अछि तथा कोनोपर स्पर्श मात्र कऽ ओकरा टारि दऽ सकैत अछि, अपन मान्यता आ अपन पूर्वाग्रहकेँ विस्तारपूर्वक पसारि सकैत अछि। ताहूमे पत्र जँ अपनासँ छोटकेँ सम्बोधित हो तँ पत्र-लेखकक उपदेशक स्वर कने बेसिए प्रखर भऽ सकैत अछि। 'नातिक पत्रक उत्तर' पढ़ैत काल एहि विन्दु सभपर पाठकक नजरि अँटकैत बढ़ैत अछि।

मैथिलीक सम्बन्धमे भाषावैज्ञानिक शोधपत्र ई अनेक ठाम प्रस्तुत कयने छथि, जाहिमे एकाध टा मात्र प्रकाशित अछि। ओहि सभक प्रकाशनसँ मैथिलीक ई अंग सेहो पर्याप्त पुष्ट भऽ जायत।

श्री आरसी प्रसाद सिंह

आधुनिक मैथिली काव्य-साहित्यमे श्री आरसी प्रसाद सिंहक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । ई मूलतः गीतकार छथि । हिनक रंग-बिरंगक गीत भाव आ भाषा—दुनू दृष्टिएँ उत्कृष्ट अछि । एम्हर ई अतुकान्त, मुक्त छन्दमे सेहो किछु कविताक सृष्टि कयलनि अछि, किन्तु ताहूमे जे अन्तर्लय अछि से हिनक गीतकारेक रूपकेँ उद्घाटित करैत अछि । मुक्तक काव्यक हिनक तीन गोट संकलन अद्यावधि प्रकाशित अछि—माटिक दीप (१९५८), पूजाक फूल (१९६७) तथा सूर्यमुखी (१९८१) । एकर अतिरिक्त कालिदासक 'मेघदूत'क सफल अनुवाद ई कयने छथि । अनुवाद तँ कयलनि ई बहुत पूर्वे, किन्तु ओ प्रायः १९७३-७४ मे मिथिला मिहिरमे खण्ड-खण्ड कऽ प्रकाशित भेलनि । बादमे कलकत्ताक मैथिली प्रकाशन समिति द्वारा पुस्तकाकार भऽ गेलनि । पथमे विलक्षण रेडियो-रूपक हिनक लिखल अछि । गद्य सेहो ई लिखैत छथि माँजल, किन्तु लिखनहि छथि थोड़ । एहि सन्दर्भमे साइकिलपर हिनक उत्कृष्ट ललित निबन्ध 'हमर जीवन-संगिनी' तथा स्व० रामलोचन शरण आ प्रो० हरिमोहन झा पर लिखल हिनक संस्मरण उल्लेखनीय अछि । हिनक आत्मकथा वैदेहीक एक विशेषांकमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कविता-संग्रहक सम्पादकत्रयमे एक टा हिनको नाम अछि । मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे एखनो हिनक कविता खूब देखबामे अबैत अछि । ताहिसँ सिद्ध होइछ जे एखनो हिनक लेखनी पर्याप्त गतिशील अछि ।

समस्तीपुर जिलाक एरौत नामक गाममे १९ अगस्त १९११ केँ हिनक जन्म भेलनि । परिस्थितिक कारणेँ विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त करबाक सुयोग हिनका नहि भेटि सकलनि, किन्तु प्रतिभाक धनी रहलाक कारणेँ स्वाध्यायसँ ई विपुल ज्ञानक अर्जन कयलनि । कवित्व शक्ति हिनकामे जन्मजात छनि । ई पहिने हिन्दीमे काव्य-रचना करब प्रारम्भ कयलनि तथा ओहि भाषाक एहि प्रान्तमे ई अपना कालक अग्रगण्य कवि मानल जाय लगलाह । अपन एही कवित्व ख्यातिक कारणेँ ई आकाशवाणीक प्रोड्यूसर सेहो भेलाह आ इलाहाबाद तथा लखनौमे बहुत दिन धरि एहि पदपर कार्य कयलनि । ओहि पदसँ, हिन्दीक प्रति सरकार-विरोधी रुखिक कारणेँ, ई त्यागपत्र दऽ देलनि । किछु दिन खगड़िया कालेजमे हिन्दीक प्राध्यापकक काज सेहो कयलनि । तकर बाद ई मुख्यतया स्वतन्त्र रहि काव्याराधनामे लागल रहलाह । हिन्दीमे कविताक हिनक एक दर्जनसँ ऊपर पोथी प्रकाशित-प्रशंसित अछि ।

मैथिली दिस भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क प्रेरणासँ ई बादमे उन्मुख भेलाह । मातृभाषामे 'शेफालिका' हिनक प्रथम कविता थिकनि, जे प्रकाशित होइते प्रसिद्ध भऽ गेलनि आ एहीसँ उत्साहित भऽकऽ कवि मैथिलीयोमे छिटफुट रूपसँ बराबरि लिखैत रहलाह ।

'सूर्यमुखी' काव्य-संग्रहपर हिनका १९८४क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि । एहिसँ पूर्व एही संग्रहपर हिनका मैथिली अकादमीक १९८२क 'विद्यापति-पुरस्कार'सँ सेहो सम्मानित कयल गेलनि । मैथिलीमे 'सूर्यमुखी' एक मात्र एहन पुस्तक अछि जकरा एहि भाषाक दू टा सर्वोच्च पुरस्कार पयबाक सौभाग्य भेटल छैक ।

माटिक दीप—कविक २९ गोट मुक्तक कविताक ई पहिल संकलन थिकनि । एकर प्रथम संस्करण १९५८ मे भेल छल । एहिमे अनेक प्रकारक भाव-बोध-समन्वित कविता अछि—यथा मातृभूमि-मातृभाषा-वन्दना, देव-प्रार्थना, ऋतु-चित्रण, उद्बोधनात्मक, हास्य व्यंग्यमूलक, देशदशा-सम्बन्धी, प्रकृति-वर्णन आदि ।

मातृभाषाक प्रति हिनक जे भावना अछि, तकर परिचायक थिक 'अधिकार' शीर्षक कविता । मैथिल अपना लेल भीख नहि माङि रहल अछि, एकरा चाहिऐक न्यायोचित अधिकार, जकरा क्यो रोकि नहि सकैत छैक—

बैसि कंठपर क्यो बलजोरी
स्वर नहि दाबि सकै अछि
मूँग दड़ड़ि सदिखन छातीपर
मुँह नहि जाबि सकै अछि
लेब अपन अधिकार आब हम
अपन महालक पानी
माङि रहल छी प्रथम आइ हम
अपन मातृजन-वाणी

ई अधिकार प्रदान करबामे जँ शासन तारतम्य करत, तँ तकरा लेल कवि पहिनहि रनडंक बजा चुकल छथि—

बाजि गेल रनडंक, डंक ललकारि रहल अछि
गरजि-गरजिकऽ जन-जनकेँ परचारि रहल अछि
कोशी कमला उमड़ि रहल, कल्लोल करै अछि
के रोकत ई बाढ़ि ककर सामर्थ्य अड़ै अछि
चलि ने सकै अछि आब सवारी हौदा कसिकऽ
ई अदराक मेघ ने मानत, रहत बरसिकऽ

स्थितिमे एतेक परिवर्तन भेलाक बादो—

आबहु की रहतीह मैथिली बनलि बन्दिनी ?
तरुक छाँहमे बनि उदासिनी जनकनन्दिनी ?
डंक बाजि गेल आगि लंकमे लागि रहल अछि
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि

भवानीकेँ जनौनिहार ई कवि किछु आलोचकक मतानुसार स्वयं 'अभिनव विद्यापति' थिकाह ।

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे "विद्यापतिक परम्परामे ई बहुतो गीत रचने अछि आओर ओ एहि तरहक कण्ठसँ एक नूतन स्वर ओ नवीन माधुर्य लऽ विगलित भेल अछि । राधाक आत्मविस्मृतिक चित्रण कवि एहि प्रकार-बीतये बनयने छथि—

माधव-माधव रटि-रटि राधा भै गेलि माधव-रूप
राधा-राधा करइत अनुखन वन-वन फिरथि अनूप
माधव अहँ छी केहन कठोर
हृदय बज्रसम भेल अहाँकेर पाथर पसिझय नोर

एना लगैत अछि जे विद्यापतिक विरह-विदग्धा राधाकेँ आरसी बाबू एक नव आभरण-आभूषण दऽ और भावमयी ओ कोमल बना देने छथि।"

नवीन युगक स्वागतमे ई केहन चित्ताकर्षक दीप मालिका सजा रहल छथि से द्रष्टव्य थिक—

नवीन युग, नवीन जग, नवीन मुक्ति-बालिका
स्वतन्त्र देशमे खिलल नवीन दीप-मालिका
कि जगमगा रहल गगन, प्रदीपसँ भरल भवन
कि दिगदिगन्तसँ मधुर उतरि रहल अरुण किरण

डॉ० आनन्द मिश्रक अनुसार "माटिक दीपमे कविक क्रमिक विकासक संग हुनक भावुकता, अभिव्यंजना-शक्ति आदि विषयक अपूर्व परिचय प्राप्त होइछ। प्रस्तुत संग्रहमे ओ प्राचीन एवं अर्वाचीन दुनू परम्पराक गीत-रचना उपस्थित कयलनि अछि जाहिसँ कविक परम्पराक प्रति आसक्ति एवं नवीनताक प्रति अग्रसर होयबाक धारणा परिलक्षित होइछ।"

वस्तुतः हिनक 'माटिक दीप ओहि दीपशिखा सदृश अछि जकर शीतल आलोकमे मैथिली-मन्दिर चिरकाल धरि जगमगाइत रहत।'

पूजाक फूल—ई कविक दोसर काव्यकृति थिक, जाहिमे ३० गोट कविता संकलित अछि। 'माटिक दीप जकाँ एहूमे विविध स्वादक रचना, जे अधिकांश पहिल संकलनक बाद रचित अछि, संगृहीत कयल गेल अछि। एहि संकलनमे आबिकऽ कविक शैली बेसी परिपक्व भऽ गेलनि अछि तथा भाषा सेहो अधिक परिनिष्ठित लगैत छनि। उदाहरणार्थ स्वदेश-वन्दनाक निम्न पंक्ति राखल जा सकैछ—

कश्मीर अछि हमर ओ कैलास मानसर ओ
ककरो कि दऽ सकै छी अप्पन बनौल घर ओ
जे शत्रु बनि अबै अछि, स्वागत सहर्ष तकरो
तरुआरिसँ समरमे हम घोषणा करै छी
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै छी

एहू पुस्तकमें प्रकृति—सम्बन्धी कम कविता नहि अछि। वर्षाऋतुसँ सम्बन्धित चारि गोट पद अछि, से अछि कतेक सरल, गेय, मोहक आ मार्मिक! प्रस्तुत अंशमे लोकगीत आ शास्त्रीय गीतक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करैछ—

मेघ पड़ै छै, बुन्द झड़ै छै
नाचै छै मन-मोर रे
कोन प्रिया केर काजर आँखिमे
आइ भरल छै नोर रे
काँपि रहल छै झिहिर-झिहिर
मधुमातल सरस बसात रे,
काँपि रहल छै सिहिर-सिहिर

हरिआयल आमक पात रे
जकर कन्त भेल चान, नै छै
तकर हियाक चकोर रे
मेघ पड़ै छै, बुन्द झड़ै छै
नाचै छै मन-मोर रे।

सूर्यमुखी—साहित्य अकादमी तथा विद्यापति पुरस्कारसँ सम्मानित कृति 'सूर्यमुखी' दीर्घ अवधिमे लिखल गेल कविक स्फुट काव्यक संग्रह थिक जाहिमे अनेक ढंगक कविता अछि—देशदशा-सूचक, उद्बोधनात्मक, व्यंग्यात्मक, शृंगारिक, करुण-गीत, गजल, छन्द आदि। भाव ओ शैलीगत विविधताक अछैतो जे एक बात समान रूपसँ हिनक सभ कवितापर लागू होइत अछि, से थिक काव्यगत बाह्य ओ आन्तरिक अटूट प्रवाह, जे काव्य-प्रेमी पाठकके तीव आनन्द प्रदान करैत अछि।

कविक पुष्प-प्रेम विशेष उल्लेखनीय अछि। एकरा स्वयं स्वीकार करैत एकर कारण पर प्रकाश दैत कवि कहैत छथि—"जँ डूबिकऽ देखल जाय तँ लागत जे हमरा जीवनमे फूलसँ जेना लगाव भऽ गेल तेना संसारक आन कोनो वस्तुसँ किएक ने? बात किछु अंशमे बहुत महनीय अछि। फूलसँ हमरा विशेष अनुराग अछि। एतबे नहि, प्रत्येक फूलक आकृति, प्रकृति एवं सुगंधक हमरा मनमे एक विशेष परिकल्पना भऽ गेल अछि। कोन फूल किए कोनो विशेष समय वा अवसर पर कोनो खास प्रभाव दै छै तकर कारण जनबा ले ऊहापोह करबामे अक्षम रहितो अनुभूति तँ होइते छै, आ, अनुभूतियोमे जे प्रखरता सुगन्धक पक्षमे होइत छै, से रंग वा रूपक आग्रहमे नहि। गन्ध जे कि धरतीक खास अपन गुण छै तेँ कि नहि ओ धरतीसँ मानव-प्राणीकेँ सोझे जोड़ि दै छै? आ, एहि दृष्टिएँ जेना ब्राह्मी वेलाक फूल हरसिंगार वा शेफालिका चेतनाक कोनो स्वर्गीय द्वारक उद्घाटन करैत छै, निद्रालस प्राणक तन्तुकेँ जगाकऽ शुचिताक एक गंगा-धारामे डुबा दै छै; तहिना सूर्यमुखियोक एक अपन दिनमान छै, प्रखर-प्रोज्वल चेतनाक एक अनाविल अस्तित्व छै! सृष्टिकर्ताक प्रति एक विनम्र आत्मनिवेदन छै!"

सूर्यमुखी सूर्यास्त होइतहि मुरझा जाइत अछि। ओकर जीवन-अवधि केवल भरिए दिनक रहैत छैक तैं की, ओतबहु कालक जीवनकेँ तँ ओ सार्थक कऽ लैत अछि, लोकक सहानुभूति तँ अपन दिस घीचि लैत अछि, अपन लघु किन्तु कोमल प्रस्फुटनसँ दिनक शृंगार तँ करैत अछि। एतबो लेल ओकरा विधाताक कृतज्ञ होयबाक चाहिऐक—

धन्यवाद तोँ दहुन कृतज्ञ हृदयसँ करुणाप्लावित
सहानुभूति करै छथि सदिखन तोरा प्रति जे भावक!
तोँ वंचित रहि गेली सर्व-साधनसँ सुख-सौभाग्यक
धन्यवाद तोँ दहुन, भस्म नहि कऽ देलकहु युग-पावक!

वास्तवमे युग-पावकक लपेटमे मनुष्य जतबे-जे जनकल्याणाक काज कऽ पबैत अछि, ताहू प्रति ओकरा विधाताकेँ धन्यवाद देबाक चाहिऐक। आकांक्षाकेँ ऊपर बहुत दूर धरि लऽ गेने मानवमे निराशाक भाव जगैत छैक, जे ओकर जीवनकेँ निस्सार बना दैत छैक। तेँ ओकरामे उत्साह हरदम आवश्यक छैक। उत्साहे तँ युवत्वक सूचक थिक। युवा-शक्तिए क्रान्तिक पर्याय थिक—

मरण स्वीकार कऽ लै छै
मुदा ने रुकि सकै छै ओ
सकै छै टूटि ओ सरिपहुँ
मुदा ने झुकि सकै छै ओ
पतालक पानिमे ओ आगि
विद्रोहक लगा दै छै
प्रभाती गीत गा-गा कऽ
अनागत युग जगा दै छै
जुआनी नावमे पतवारि ने
ने पाल तानै छै
युवा जे क्रान्ति जीवी रक्त
की अवरोध मानै छै !

एकर विस्तृत भूमिका एहि पुस्तकक महत्त्वकें आर बढ़ा देलैकक अछि, जाहिमे कवि स्वयं विस्तारसँ कवितापर अपन विचार प्रकट कयलनि अछि तथा ओहि बिन्दुसभकें स्पर्श कयलनि अछि जे कविकें सतत प्रेरणा प्रदान करैत रहलनि अछि। एहि कविपर आ हिनक काव्यपर विशेष अध्ययन कयनिहार विद्वान ओ छात्रकें ई भूमिका आधारक काज करत।

हिनक काव्यगत प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत प्रो० रमानाथ झा कहने छथि—"हिनक ओहन रचना सर्वाधिक महत्त्वक अछि जाहि मध्य हिनक आत्मा अनुगुंजित होइत अछि। हिनक आत्मा थिक सहजात गीतकारक, जन्मजात प्रकृति-प्रेमीक, सत्-शिव-सुन्दरक प्रति असीम सहानुभूतिसँ भरल समाज-सापेक्ष मानवक। तेँ हिनक सभ प्रकारक रचनामे गीतकारक स्वर-माधुर्यक संग-संग आत्माभिव्यक्तिक तल्लीनताक सेहो दर्शन होइत अछि।"

एकर विपरीत, डा० जयकान्त मिश्र हिनक उद्‌बोधनात्मक काव्यकें हिनक सर्वश्रेष्ठ कृति स्वीकार करैत लिखैत छथि—"His best poem is one in which he declares that the time has come for blowing the bugle— obviously in the fight against anti Maithil elements."

डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार "हिनक रचनाक मुख्य गुण थिक सरल, कोमल ओ मधुर शब्द-विन्यास एवं सहानुभूतिपूर्ण संवेदनशील भावाभिव्यंजन। भुवनजीक पश्चात् आत्माभिव्यक्तिक अकृत्रिम रागात्मकताक दृष्टिएँ हिनक रचना सर्वाधिक मर्मस्पर्शी भेल अछि। संस्कृतनिष्ठ शब्दविन्यास रहितहुँ प्रसाद-गुणक सदैव स्थिति हिनक रचनाक विशेषता थिक जे अपन माधुर्यसँ चित्तकें ओतप्रोत कऽ दैत अछि।"

हिनक प्रशस्तिमे कहल गेल ई उक्ति हिनक व्यक्तित्वक प्रायः अनुकूल अछि—

स्वयं आरसी वर्तमान साहित्य स्वरूपक
वाग्देवीक प्रसाद स्वयं छी तुलसीदल सन
ततबे नहि, छी सिंह मातृभाषा-द्रोही लग
मन नवनीत, विनीत, अमल सारस्वत जीवन

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'

पण्डित उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' मैथिली काव्य-भण्डारकें लगभग अर्द्ध शताब्दी धरि अपन उत्तमोत्तम कृतिसँ भरलनि। वृत्तिसँ ई पत्रकार छलाह, किन्तु हिनक हृदयमे जे विपुल भावना संचित छल से छन्दक रूपमे निरन्तर प्रवाहित होइत रहलनि। हिनक गीत बड़ हृदयग्राही अछि, ओकर भाव बड़ गम्भीर रहैछ, किन्तु क्लिष्ट नहि। वस्तुतः 'मोहन' अपन पीढ़ीक अत्यन्त प्रतिभावान कवि छलाह। हिनक काव्यक सम्यक् अध्ययन-समालोचना भेला उत्तर हिनक स्थान अपन समकालीन कोनो कविसँ न्यून नहि मानल जयतनि।

सन् १९१३ ई०मे दरभंगा जिलाक चतरिया नामक गाममे हिनक जन्म भेलनि। ई प्रथम श्रेणीमे साहित्याचार्य कयलनि। बड़ौदा राजक राजकीय विद्वत्-परीक्षासँ 'साहित्य-रत्न'क उपाधिसँ सेहो ई अलंकृत भेलाह। नेपाल तथा बम्बईमे किछु किछु दिन जीविका कयलाक बाद ई पटना चल अयलाह। दैनिक 'आर्यावर्त'क प्रकाशनक आदिएसँ ई ओकर संशोधन-विभागमे जीविकापन्न भऽ गेलाह। बादमे, १९६० ई०मे ई 'मिथिला मिहिर'क पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेला उत्तर पहिने ओकर उपसम्पादक, तदनन्तर सहायक सम्पादक बनलाह, जाहि पदपर १९७७ ई० पर्यन्त, सेवानिवृत होयबासँ पूर्व धरि, रहलाह। २४ मइ १९८० कें दरभंगामे हिनक निधन भऽ गेलनि।

पत्रकार होयबाक कारणेँ समसामयिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक गति-विधिक ई अध्ययन-मनन कयलनि तथा अपन चिन्तनकें, अपन दृष्टिकोणकें, अपन मान्यताकें विभिन्न छद्मनामसँ व्यक्त करैत रहलाह। विजयानन्द, कुंजरजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, वामन शास्त्री, वामन, काश्यप, श्री ठाकुर, आदि विभिन्न छद्मनामसँ प्रकाशित हिनक समस्त रचनावलीकें जँ एक ठाम कऽ देल जाय तँ हिनक चतुर्मुख स्फीति दृष्टिक परिचय तँ भलबे करत, हिनक गद्य-लेखनमे परिपक्वताक प्रमाण सेहो भेटि जायत। ओना, गद्यमे हिनक कोनो पुस्तक प्रकाशित नहि अछि। प्रकाशित अछि हिनक मैथिली काव्यक तीन गोट पोथी। पहिल थिक फुलडाली, जे मुख्यतया श्रृंगारिक गीतक लघु पुस्तिका छल आ जे बहुत दिन पूर्व छपल छल आ छपिते वेस चर्चित भेल छल। आब ई अनुपलब्ध अछि। दोसर सन् १९७७ ई०मे १०१ कविताक संकलन, ४४ पृष्ठक वृहत् भूमिकाक संग, 'बाजि उठल मुरली'क नामसँ ई छपौलनि। एहि कृतिपर कविकें १९७८ क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि। तेसर पोथीक नाम थिक 'नतिश्री', जे कविक देहान्तक पश्चात् १९८२मे प्रकाशित भेल।

मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृतमे ई सेहो काव्य-रचना करैत छलाह। 'उग्रवंश-प्रशस्तिः' नामक संस्कृतमे एक टा प्रशस्ति-काव्य हिनक प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त, 'मिथिला मिहिर'मे जीवनक अन्तिम काल धरि प्रचुरतासँ हिनक काव्य छपैत छलनि। सूक्तिक रचना सेहो ई पर्याप्त कयने छथि, जे बहुत मार्मिक अछि। सूक्ति तँ कतिपय वर्ष धरि सप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क प्रत्येक अंकमे, सम्पादकीय पृष्ठक ऊपरमे, छपैत रहल।

प्रो० रमानाथ झा हिनक काव्य-प्रवृत्तिकेँ विश्लेषित करैत कहने छथि—"ई विभिन्न वस्तु, विभिन्न भाव लए कविता लिखने छथि। एक दिसि यदि सामाजिक वैषम्य, दलित-पीड़ितक दीनता-विपन्नताक चित्रण कएल तँ दोसर दिसि समाजमे नवोदभूत ओजस्वी चेतनाक सेहो चित्रण कएल। जाहि-जाहि कविता मे आत्मानुभूतिक वैयक्तिक चित्रण भेल अछि, ताहिठाम मोहन जी जीवनमे निहित शाश्वत नैराश्य एवं करुणाक चित्रण कएल अछि।" प्रो० रमानाथ झाक ई उक्ति अक्षरशः सार्थक अछि। हिनक समस्त कविता एकर प्रमाण अछि।

बाजि उठल मुरली—प्रारम्भसँ लऽकऽ वर्तमान काल धरिक 'मोहन'क चूनल १०१ कविताक ई संकलन थिक। आधुनिक कालक एक कविक एक सय एक कविता एक ठाम उपलब्ध भऽ जाय, तेहन प्रायः ई पहिल संकलन थिक। दोसर महत्त्व एकर ई अछि जे 'मोहन'क सुदीर्घ काव्याराधनाक विभिन्न पक्षकेँ, विभिन्न अवधिक, विभिन्न विचार-धाराक, विभिन्न अनुभूतिक ज्ञान करयबाक लेल ई संकलन पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करैत अछि। एकर अतिरिक्त, भूमिका लऽकऽ एकर महत्ता आरो बढ़ि गेल अछि। एकर भूमिका मैथिलीक शास्त्रीय कविताक प्रामाणिक मार्गदर्शन करबैत अछि। ने केवल शास्त्रीय कविताक विषयमे अपितु तथाकथित विभिन्न वादयुक्त नवकविताक विषयमे सेहो कवि अपन दृढ़ मत व्यक्त कयलनि अछि।

भूमिका-रूपमे 'कवि आ कविता : दशा आ दिशा' शीर्षकसँ हिनक जे मान्यता व्यक्त होवऽ लागल अछि से आगाँ जाकऽ विभिन्न उपशीर्षक ग्रहण करैत विचार-परिधिमे विस्तार पबैत गेल अछि। साहित्य आ व्यवहार-ज्ञान, प्राचीन निर्देशक सिद्धान्तक झाँखी, नव-पुरान कविता : सुविधा-असुविधा, नव-पुरान : शाश्वत कल्याण, सामयिक (?) संवेदना-स्तर, साहित्यमे राजनीति : नव स्थापनक अभियान, ध्वनिवादी काव्य आ राजनीतिक साहित्य, नव कविता : अस्पष्टता—दुरुहता आ अपरिचेय रोष-आक्रोश—ई उपशीर्षकेसभ सूचित करैछ जे भूमिकामे कतेक विस्तारसँ मैथिली काव्यक विवेचन-विश्लेषण कयल गेल अछि।

राधाकृष्णसँ सम्बन्धित विरह-व्यथाक मार्मिक वर्णन जँ एक दिस हिनक गीतमे भेटैछ सँ दोसर दिस उद्बोधनात्मक काव्य सेहो; एक दिस जँ ऋतु-वर्णन देखबामे अबैछ तँ दोसर दिस दार्शनिक निराशामूलक कविता सेहो; एक दिस जँ अभियान-गीत गबैत कवि भेटैत छथि तँ दोसर दिस फगुआक रंगमे सराबोर होइत सेहो हिनका देखैत छियनि। वस्तुतः हिनक काव्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत अछि। छन्दपर कविक अधिकार विलक्षण अछि—रंग-विरंगक छन्दक ई सफल प्रयोग कयने छथि। छन्दक विविधता, भावक विविधता, वर्णनक विविधता तथा शिल्पक वैविधता एहि पुस्तकमे अनायास देखबामे आबि जाइछ। कोमल-भावना हिनक कवितामे केहन रमणीय भऽ उठैत अछि, तकर बानगी निम्न पाँतीमे द्रष्टव्य—

श्याम-घन ओ घुमड़िते-झमकिते रहल
नूपुरक कंकणक ताल झुमिते रहल

आहि रे दैव, मन ई कहरिते रहल
दूर कतहु मदिर वेणु रटिते रहल
त्रास भरिते रहल, टीस बरिते रहल
क्वाथ मथिते रहल, माथ बथिते रहल
सुधि सुनगिते रहल, बुधि पजरिते रहल
दूर कतहु मदिर वेणु रटिते रहल

हिनक सम्बन्धमे प्रो० शैलेन्द्र मोहन झा कहने छथि—"मानवताक भावनाक विकास हिनक रचनामे पूर्ण रूपसँ भेल अछि। संसारक विषम वातावरण हिनक द्रवणशाल हृदयकेँ बड़ प्रभावित कयलक अछि आ दीन दुखियाक करुण क्रन्दन हिनक कंठसँ कविताक धार बनि फुटि पड़ल अछि।" वातावरणक विषमताकेँ केहन मार्मिक अभिव्यक्ति देलनि अछि कवि—

स्वप्न छल जे घन-घटा नभमे सजत
अमृत बरिसत, प्राण पुलकित भऽ उठत
टिमटिमाइत जानि ने दीपो रहत
वास्तविकता जे निकट, से कर्ण-कटु
कल्पना दूरक सोहाओन ढोल अछि

तहिना, निराशाक ई भावना कते जीवन्त भऽ गेल अछि—

आब नहि आमोद-परिमल भोगि पायब
स्मृति मधुर अछि हृदयमे संयोगि गायब
कण्टकक बेधन किए नहि अन्त लगइछ
अरे दुर्दिन, किए व्रणमे लवण पड़इछ
तेज-ऊर्जा अकिंचित्कर खसल-हारल
जीवनक ऊष्मा सेरायल जा रहल अछि
स्नेह-रस नहि, छुच्छ बाती कते जरतै
दीप टिमटिम सन मिझायल जा रहल अछि

किन्तु, कवि खाली निराशाक गीत गाबि-गाबि अपन असमर्थतापर पश्चात्तापे कऽ नहि रहि जाइछ, अपितु अपन पौरुषक, अपन जवानीक आह्वान सेहो करैछ—

तोड़ि-फोड़ि चट्टान, वेग दुर्धर लेने पदपदमे
झर-झर धड़धड़ाय बहइछ निर्झर, से असल जोआनी
रोकत-छेकत के एकरा ? बिनु झुकनहि झोँक सहत के ?
उद्भट विकट प्रभंजन ई दुर्दान्त प्रचण्ड जोआनी !

यद्यपि ई प्राचीन परिपाटीक कवि छथि, किन्तु नवीनताक आग्रही सेहो ई रहलाह अछि। 'नवगछुली'क स्वागत करैत ओकर जयकार करबाक पाछाँ नवीन पीढ़ीपर कविक आस्था प्रकट होइत अछि—

जयति नवगछुली समृद्धि निधान शीतल
बढ़ि हरओ जनताप, फलसँ भरओ हीतल
गुणक सौरभ दिगदिगन्त विकीर्ण होअओ
पुरनका खसते, उठओ नवका जय-ध्वज

देखा · देखओ अपन रूप विराट् !
सरल-६.बरल · गाछ, उसरल हाट !

इतिश्री—कविक ‍‌‍्यक अनन्तर, हिनक उपलब्ध अप्रकाशित समस्त कविताकेँ एहिमे समटि गेल अछि, जकर संख्या अस्सी अछि। 'बाजि उठल मुरली'क प्रकाशनक बादक लिखल, किन्तु सर्वथा अप्रकाशित कविताक ई संग्रह थिक। एतऽ ओहि कविता सभकेँ नाह लेल गेल अछि, जे मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि, कविक जीवन-कालमे वा बादो। वस्तुतः ई तँ हिनक समस्त बचलहा कविताक संकलन थिक। प्रकाशक हिनक कविताक अंतिम संकलन मानि एकर नामकरण 'इतिश्री' कऽ देने अछि। किन्तु, एक आर संकलन जोग हिनक कविता 'मिहिर'क अंक सभमे छिड़ि.ायल अछि। तहिना, जतेक सूक्ति 'मिहिर'मे प्रकाशित भेल छल, तकर अतिरिक्त जे सूक्ति लिखल छल, से एहिमे लऽ लेल गेल, जकरा 'कर्म-धर्म' शीर्षकक अन्तर्गत राखल गेल अछि। हिनक सूक्ति केहन सटीक, केहन प्रभावी अछि, तकर दू दृष्टान्त एतऽ द्रष्टव्य—

'पछड़ल-दलित कि शोषित-पीड़ित' शब्द प्रपंची
राजनीति लड़बाक अस्त्र ई, धूर्त विपंची,
यैह मंत्र जपि बहुतो निज नेतृत्व जगाबय
जकर नाम-जप्, तकर न किछु हित, माले दाबय

तथा—

अहाँ कहब जे काजे नहि, की पानि डेङाबी ?
हमर कहब जे बैसी नहि, बरु पानि डेङाबी
कर्मठता रखनहि रहबे फरहर आ चरफर
नहि तँ देह जकड़ते, बनबे अहदी आ जड़

जेना श्री आरसी प्रसाद सिंहकेँ फूलक प्रति विशेष आसक्ति; तहिना 'मोहन'केँ बाँसुरीसँ बेसी आकर्षण। बाँसुरीक प्रति ततेक हिनक रुझान छलनि जे एकर जतेक पर्यायवाची शब्द प्रचलित छैक—मुरली, वेणु, बाँसुरी—सभपर सुन्दर गीतक रचना कऽ देलनि ततबे नहि, अपन एक कविता-संग्रहोक नाम 'बाजि उठल मुरली' रखलनि। 'इतिश्री'क पहिले कविता बाँसुरीपर अछि—बाँसुरिया डँसि लेलक'

दूर वनमे कतहु नाग ठनकल, बँसुरिया डसि लेलक
मन छिनलक कि निन्नो अरौलक, फँसरिया कसि देलक
ई केहन कृष्ण-नागक प्रभावे ?
मारि सिसकी, करय घोर घावे ?
दाढ़ नहि, पुनि किए बिक्ख पसरय ?
ढील देहो कि चैतन्य ससरय ?
आँखि झँपि जाय तनि जाय नस-नस, बँसुरिया डसि लेलक

जहिना ई गीत-परम्पराक आधुनिक शिल्पी छथि तहिना आधुनिक बोधक सनातनी चिन्तक-कवि सेहो छथि—

अप्रकाश आ अज्ञानक जँ जगमे जमत प्रशस्ति
आसुर भाव बढ़त, मचि जायत घात-मृत्यु-अस्वस्ति

बाघ साप थिक एक निम्म ? छै बल हिंसक दुस्तत्वे
तेँ ओ सैंतल-मारल जाइछ वन्दनीय शिव-सत्वे

एहि पोथीक कवितासभ विलक्षण शब्द-शिल्प, नाना छन्द, भाव-गाम्भीर्य, भावुकता आदि विशेषतासँ वेष्टित अछि।

पोथीक अन्तमे 'किछु मूल्यवान स्मृति आ प्रसंग' शीर्षकसँ कवि द्वारा अपन जीवनक झाँकी प्रस्तुत कयल गेल अछि, से जतबे मार्मिक अछि ततबे प्रेरणादायको। सभसँ आखिरमे कविक किछु संस्कृत श्लोक सेहो अछि, जे व्युत्पन्न कविक संस्कृतक पाण्डित्यकेँ प्रकट करैछ।

कोनो प्रकारक चित्रण किएक ने हो, हिनक गीत हार सभ ठाम जगजियार भऽ जाइछ। डा० जयकान्त मिश्र तँ हिनका मूलतः गीतकार मानलनि अछि "Upendra Thakur 'Mohan' is essentially a lyric poet, He knows that our sweetest songs are those that tell of saddest thought. He is here a popular singer of erotic songs. In some of the songs he raises his voice against social evils too."

हिनक गद्य सेहो प्राजल आ प्रभावपूर्ण होइछ। एकर प्रवाह देखबा योग्य होइछ। एतऽ द्रष्टव्य एक उदाहरण—"कवि माने प्रस्फुटित पुष्प, जतऽसँ पराग झरय आ मकरन्द सरबय। कवि माने उदित इन्दु, जतऽसँ मादक ज्योत्स्ना पसरय आ आह्लाद बरिसय। कवि माने स्वच्छ उच्छल निर्झर, जतऽसँ निर्मल सलिल-स्रोत बहय आ झरझर संगीत-सुर निनादित होइत रहय। कविता माने कविक जीवन-जगतक दर्शन-रूपी तड़िपत-पोथी। कविता माने कविक आचार-विचारक चित्रित मूर्तरूप, चिन्तन-मननक यथातथ्य बिम्ब-प्रतीक। कविता माने कविक व्यक्तित्व-कृतित्वक निचोड़।"

'मोहन' बहुत दिन धरि पत्रकारक जीवन सेहो व्यतीत कयलनि। ओहि अवधिमे देश-विदेशक राजनीतिक-सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक-औद्योगिक शान्ति-अशान्तिमय सुघटना-दुर्घटनामे ई निरन्तर अवगत होइत रहलाह तथा ओहिपर अपन प्रतिक्रिया लगले व्यक्त करैत रहलाह, जे विभिन्न छद्मनामसँ मिथिला मिहिरमे बराबरि अबैत रहल। मूलतः संस्कृत पण्डित होइत, परम्परागत आचार-संस्कारसँ घेरल-बेढ़ल रहैत हिनक जिज्ञासु मन निरन्तर नित नव-नव वस्तुक संधानमे रुचि लैत रहल, किन्तु से बेसी साहित्येतर विषयमे। हिनक यैह रुचि जँ विश्व-साहित्यक नव-नव प्रयोगक प्रवाह दिस पड़ैत तँ अवश्य हिनक काव्य-धारा नवीन मोड़ लैत जे हिनक काव्य-व्यक्तित्वक महान उपलब्धि तँ प्रमाणित होयबे करैत, संगहि ओहिसँ मैथिली साहित्यमे नव क्षितिजक उद्घाटन भऽ सकैत छल। किन्तु, जेह अछि से अपन ढंगक अछि आ महत्त्वपूर्ण अछि।

वस्तुतः 'मोहन'क कविता तथा गद्य दूनू मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। कविक रूपमे तँ हिनक स्थान, निर्विवाद, अपन पीढ़ीमे ककरोसँ न्यून नहि छैक।

श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क अवदान मैथिली साहित्यकेँ अनेक रूपमे प्राप्त छैक। हिनक बहुविध सर्जनात्मक प्रतिभासँ ई साहित्य लाभान्वित भेल अछि। कविक रूपमे, उपन्यासकारक रूपमे तथा कथाकारक रूपमे हिनक स्थान अपन समकालीनमे अग्रगण्य रहल अछि। एकर अतिरिक्त ई यात्रा-साहित्यक निर्माण कयने छथि। अपन अमेरिका-यात्रा ओ प्रवासक वर्णन बड़ चित्ताकर्षक रूपमे लिखने छथि। ई बालबोध लोकनिक हेतु मैथिलीक माध्यमे अक्षर-ज्ञान कराबऽबला पहिल पोथीक रचना सेहो कयने छथि। कोनो विधा हो, सभमे ई नवीन प्रयोग कयने छथि। मौलिक रचनाक अतिरिक्त ई अनुवाद-कार्य सेहो कम नहि कयलनि अछि—से विभिन्न भाषासँ, विभिन्न विधामे।

अद्यपर्यन्त विभिन्न विधामे हिनक निम्नलिखित पुस्तक प्रकाशमे आबि चुकल अछि—उपन्यासमे कुमार (१९४६) तथा दू पत्र (१९६८)। कथासंग्रहमे विडम्बना (१९५२)। खण्डकाव्यमे संन्यासी (१९४८) तथा पतन (०९६६)। मुक्तक काव्य-संग्रह—प्रतीक (१९७६)। यात्रा-साहित्यमे विदेश-भ्रमण (१९७८)। बाल-साहित्यमे अक्षर-परिचय (१९८४)। एकर अतिरिक्त श्रीमद्भगवद्गीता, स्तोत्रांजलि, रुबाइयात ए-उमर खैयाम, बाभनक बेटी तथा विप्रदास (दुनू उपन्यास)—ई अनुवाद थिक। हिनक अपने द्वारा कायल 'दू-पत्र'क हिन्दी-अनुवाद 'दो पत्र'क नामेँ साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित छनि।

मधुबनी जिलाक हरिपुर बख्शी टोल निवासी श्री व्यासक जन्म १६ जुलाइ १९१७ केँ भेल छनि। ई अपन देशमे इन्जिनियरिंगक शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद उच्च अध्ययनक हेतु अमेरिको गेल छथि। विहार सरकारक लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभागक ई मुख्य अभियन्ता पद धरि पहुँचलाह। ओहिसँ अवकाश-ग्रहण कयलाक किछु दिनक बादसँ तीन वर्ष पर्यन्त ई मैथिली अकादमी, पटनाक निदेशक-सह-सचिव पदपर रहलाह। सम्प्रति ई मिथिला-मैथिलीसँ सम्बद्ध पटनाक साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाक अग्रणीमेसँ छथि तथा साहित्य-सर्जनमे लागल रहैत छथि। हिनका 'दू पत्र' उपन्यासपर १९६९ क साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानितकयल गेल छनि। अंगरेजी पढ़ि, अभियन्ताक उच्च पदपर रहि, विदेश पर्यन्तसँ भ्रमण कऽ आयल 'व्यास' मूलतः पण्डित छथि, सदाचारी छथि तथा मिथिलाक परम्परा ओ संस्कृतिक प्रति दृढ़ अस्थावान छथि। ई संस्कृत ओ बंगला भाषामे सेहो पर्याप्त गति रखैत छथि।

व्यास मूलतः कवि छथि। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे ''हिनक कविता वर्णनात्मक होइत अछि जाहिमे सृष्टिक वाह्य सौन्दर्यक वर्णनसँ विशेष चमत्कारक होइत अछि अन्तर्जगतक सौन्दर्यक वर्णन। प्रकृतिक चित्रणसँ विशेष ई मानव-हृदयक विश्लेषणमे पटु छथि। जीवनक मधुरिमासँ विशेष ओकर गरिमा हिनका आकृष्ट करैत अछि। कल्पना अछि हिनक प्रौढ़, ओतेक चंचल नहि। शब्दमे हिनक ओज

रहैत अछि, माधुर्य ओतेक नहि। अपन भावनाक सुव्यक्त अभिव्यंजनाक आवश्यक लालित्य अथवा प्रसादक हिनकर अपेक्षा नहि रहैत छनि।''

भाषा हिनक होइछ संस्कृतनिष्ठ, संश्लिष्ट, किन्तु छन्दमे ई नूतनताक पक्षपाती छथि। अंगरेजीक सॉनेट तथा ब्लैंकवर्स शिल्प ओ छन्दकेँ, जकर प्रयोग मैथिलीमे सर्वप्रथम प्रो० तंत्रनाथ झा कयने छथि, ईहो अपनौलनि। ब्लैंक-वर्समे किछु मुक्तक काव्यक अतिरिक्त एक गोट खण्डकाव्य 'संन्यासी'क रचना, ईहो ई कयने छथि।

हिनक कविता होइछ भावना-प्रधान, तेँ प्रसाद-गुणक अभाव ओहिमे रहैछ। ओकर अर्थ सहजेँ लागल नहि चल जाइछ, तेँ ओकरा क्लिष्टो कहल जा सकैछ। यैह कारण थिक जे एतेक उच्च कोटिक कवि होइतो अपेक्षित लोकप्रियता हिनका नहि भेटि सकलनि।

'प्रतीक'मे एकर प्रकाशन-अवधि धरिक हिनक लगभग सभ टा मुक्तक काव्य एकठाम संगृहीत भेल अछि। ई विज्ञानक वेत्ता छथि, इंजिनियर छथि, तेँ ठाम-ठाम काव्योमे ओकर स्पर्श आबि गेलनि अछि। ई 'मानभूमि' कवितामे कोइलाखानक मजदूरक कठोर जीवनकेँ—ओकर हास-रुदनकेँ साकार कयलनि अछि। एहि कवितामे 'हिनक विज्ञानक ज्ञान कविताक रूपमे अभिव्यक्त भऽ एक नूतनता उपस्थित करैत अछि।' तहिना हिनक 'हत्या' कविता सेहो बड़ प्रसिद्ध अछि। नोवेल शान्तिपुरस्कार-प्राप्त अमेरिकाक मार्टिन लूथर किंगक हत्याक सन्दर्भमे लिखल गेल एहि कवितामे युगक विषमता, आपाधापी, अत्याचार बड़ मार्मिकतासँ अभिव्यक्त भेल अछि तथा एहिसँ उबरबाक संदेश सेहो देल गेल अछि।

देह-पात भेल किन्तु अमर हिनक वाणी अछि
शान्ति-सन्देश दैत,
अमर हिनक आत्मा अछि
संतत सचेष्ट
जे पृथ्वीपर प्राणिमात्र
प्रेम-भाव भरल रहओ,
सभकेओ चिर सुखी रहओ।
चल तोँ अनुरूप हुनक—
स्वप्न कर साकार!

हिनक 'प्रतीक' शीर्षक कवितामे आधुनिक समय आ लोकक वाह्य चाकचिक्य तथा अन्तरक शून्यता पर मार्मिक व्यंग्य अछि—

किन्तु सभ्य शिक्षित विवेकी कत मानव मिलि
बुद्धि विज्ञान, ज्ञान
बिपुल धन बल लगाय
कयलक हमर निर्माण!
सोचै छी,
हम की प्रतीक थिकहुँ
अथवा प्रक्षेप विकृत

आधुनिक सभ्यताक।
बाहरसँ आकर्षक
उन्नत शिर दम्भपूर्ण
दूर दृष्टि आकर्षक,
किन्तु अति मलिन हृदय
अन्तस्तल धह-धह जर
करुणा-रस-स्नेह हीन !

हिनक एक अन्य महत्त्वपूर्ण कविता अछि 'शारदा-विजय'। एहिमे शंकराचार्य-मंडन मिश्रक ओहि शास्त्रार्थक कथा वर्णित अछि, जकर मध्यस्थता मंडन मिश्रक विदुषी पत्नी भारती, जनिका कवि शारदा कहने छथि, कयने छलीह। मण्डन मिश्रक परास्त भऽ गेलापर शारदा स्वयं शास्त्रार्थ कऽ शंकराचार्यकेँ परास्त कयलनि। शंकराचार्य एक वर्षक समय लऽ कामशास्त्रक शिक्षा ग्रहण कऽ पुनः अयलाह आ शारदा केँ परास्त कऽ मंण्डन मिश्रकेँ संन्यासक दीक्षा देलनि।

एहि ठाम शारदाक उक्तिक ओहि अंशकेँ उद्धृत कयल जाइछ जाहिमे जखन मण्डन मिश्रक हारिक बाद ओ स्वयं शंकर सँ शास्त्रार्थ करबाक प्रस्ताव रखैत छथि तखन शंकर हुनक प्रस्तावकेँ अभिमानपूर्वक ई कहि जे एक तँ एकर परिणाम ज्ञाते अछि आ दोसर नारीक संग शास्त्रार्थ करब उचित नहि, टारि दैत छथि, तखन शारदाक चुनौती, भरल उक्तिमे मार्मिकता, विद्वत्ता, नारीजातिक प्रति पुरुषक हेय-दृष्टिक भावनाक विरोध. कर्त्तव्यक पाठ आदि अनेक वस्तु एके संग आबि गेल अछि-

देल उतर शारदा—शंकर परम विद्वान !
उचित नहि अछि अहँक ई अभिमान,—
अपन निश्चित विजय, अरु पुरुषत्व, निज विज्ञान—
मोहवश अहँ कयल नारीजातिकेर अपमान !
इष्ट वीणापाणि शक्तिक रूप,
ब्रह्मवादिनि भेल छथि गार्गी, हुनक अनुरूप
अनेको विदुषी एतय जे वेद-ज्ञान-प्रकाश
देल जगकेँ, जनिक उज्वल कीर्तिसँ इतिहास
रहत चिर भासित हुनक ! महिलागणक अपमान
ब्रह्मज्ञानी पुरुष राखथि हेय दृष्टिक ध्यान ?
उचित नहि ई अहाँ सन आचार्य !
भाववश नहि उचित त्यागब कार्य।

एहि कविताक प्रसंग आचार्य रमानाथ झा कहने छथि—"काव्य अछि कथा-प्रधान परन्तु कथाक गति शिथिल अछि, प्रधान अछि भाव ओ भावना, तथा मनो-वैज्ञानिक पद्धतिसँ कथाक उद्घाटन एकर वैशिष्ट्य अछि।......भाषा अछि संस्कृत-बहल तथा छन्दक विन्यासमे लयक प्रधानता अछि। परन्तु एहिमे एकटा जे ओज अछि, शारदा अथवा मण्डनक व्यक्तित्वक जे एक टा चित्र अछि, से अत्यन्त चतुरतासँ विन्यस्त भेटत।"

संन्यासी मैथिलीक एहन पहिल खण्डकाव्य थिक जकर रचना अमित्राक्षर छन्दमे भेल अछि। डॉ० दिनेश कुमार झाक शब्दमे "संन्यासी अमित्राक्षर छन्दमे रचित श्री व्यासक अनुपम खण्डकाव्य अछि। एहिमे शिवनाथक वैराग्य-भाव, घर छोड़ि हिमालयपर चल जायब तथा कर्ममार्गक महत्त्वक ज्ञान भेलापर पुनः परिवारमे घुरि अयबाक कथा वर्णित अछि। मुदा ओ तखन घरैत छथि जखन विरह-वेदना सहैत-सहैत हुनक पत्नीक अन्तसमय सन्निकट छल। अतः एकर अन्त दुःखान्त अछि।"

'पतन'क कथावस्तु महाभारतसँ लेल गेल अछि। तीन सर्गक एहि खण्डकाव्यक मूलकथा अछि "त्रिसिरा ओ वृत्रक नितान्त अनुचित रूपेँ हत्या कयलाक पश्चात् इन्द्र पाप ओ आत्मग्लानिसँ अभिभूत भऽ, स्वर्गक सिंहासन छोड़ि गुप्त रूपेँ कतहु तपस्या करऽ चल गेलाह। देवता ओ ऋषि सभहिक अनुरोधसँ पृथ्वीक प्रतापी एवं धर्मात्मा राजा नहुष स्वर्गक सिंहासन ग्रहण कएल। किन्तु स्वर्गक राज्य पाबि राज-मद ओ कामक वशीभूत भए नहुष जखन शचीकेँ अपन स्त्री बनबए चाहल, तँ शची सुर-गुरु बृहस्पतिक शरण गेलीह। बृहस्पति नहुषकेँ कतबो बुझाओल, ओ मानब नहि। तखन देवता ओ बृहस्पतिक विचारेँ शची किछु अवधिक समय माङि उपश्रुति देवीक आराधना कएल एवं हुनक कृपासँ हिनकर अपन स्वामी इन्द्रसँ भेँट भेलन्हि। शची इन्द्रक परामर्शसँ नहुषकेँ ऋषियानपर चढ़ि आबए कहलथीन्ह। अगस्त्य (जे एक यान-वाहक छलाह) केँ नहुष लात मारल। क्रोधित अगस्त्यक शापसँ नहुष सर्प भए पृथ्वीपर खसलाह।"

यद्यपि व्यास संख्याक हिसाबेँ कथा बेसी नहि लिखने छथि, किन्तु कथा-वस्तुक परिधिकेँ विशेष व्याप्ति प्रदान करबाक कारणेँ हिनक स्थान कथासाहित्यमे सुरक्षित भऽ गेल अछि। हिनक सात गोट कथाक संग्रह 'विड़म्बना' नामसँ प्रकाशित अछि, किन्तु एक टा कथा, जे हिनक ख्यातिकेँ बहुत आगाँ बढ़ा देलक, से थिक 'रूसल जमाय'। एहिमे "एक टा छोट-छीन घटनाकेँ लऽ-कऽ जाहि तरहेँ रोचक, प्रवाहपूर्ण शैलीमे कथाक रोमान्टिक विन्यास कयल गेल अछि, से अपूर्व भेल अछि।"

हिनक कथामे यद्यपि बंगलाक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि, किन्तु सुच्चा मैथिलत्वक छाप सभठाम उगड़ल भेटैछ। मैथिल-संस्कृतिकेँ जतेक नीक जकाँ अभिव्यक्ति ई देलनि अछि, से आन ठाम दुर्लभ अछि।

कुमार ओ दू पत्र—ई दुनू उपन्यास हिनक बड़ प्रसिद्ध भेल।

कुमार—डा० 'श्रीश' लिखैत छथि—"व्यासजी अपन अमर उपन्यास 'कुमार'क रचना १९४३ मे कएल, मुदा प्रकाशित भेल ई० १९४६ ई० मे। एहिमे व्यासजी विमल नामक नवयुवकक मनोभावनाक उत्थान-पतनक चित्रण कएल अछि जखन ओ मानभूमिक प्रवासी मैथिल ब्राह्मण-परिवारक सम्पर्कमे अबैत अछि। असफल प्रेमक कारणेँ निराश भए ओ आजीवन कुमार रहबाक व्रत लैत अछि- किन्तु अन्ततोगत्वा मृत्युशय्यापर पड़लि भौजीक इच्छा रखबाक हेतु विवाह करैत अछि। एहि उपन्यासमे विमलक अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण चित्रण मुख्य आकर्षणक वस्तु थिक। विमलक भाव-संघर्ष तखन चरम सीमापर पहुँचि जाइत अछि जखन ओ आजीवन कुमार रहबाक अपन व्रतक प्रति पश्चात्ताप व्यक्त करैत अछि। एहि मध्य देओर-भाउजिक आदर्श प्रेमक वर्णन सेहो बड़ आकर्षक भेल अछि।"

एह उपन्यासपर शरच्चन्द्रक छाप अछि। स्थल-स्थलपर वर्णन बड़ रोचक भेल अछि। कथा-प्रवाह कतहु अवरुद्ध नहि होइछ, वाक्यविन्यास बड़ सहज अछि। डा० अमरेश पाठकक अनुसार "कुमारक कथानक सुगठित एवं विकसित अछि। पात्रक गतिशीलता एहि उपन्यासक सभसँ पैघ विशेषता थिक। शरदुजगतक पात्रक सदृश 'कुमार'क पात्र कमल, विमल कुमुदिनी आदिक आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद, विभिन्न अनुभूतिक चित्रण सहज रूपेँ भेल अछि।"

दू पत्र—'दू पत्र' सेहो व्यासक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपन्यास अछि—विषय तथा शिल्प दुनू दृष्टिसँ।

एहि उपन्यासमे केवल दू टा पत्र अछि। दुनू पत्र महिलेक थिक—एक भारतीय महिलाक, दोसर अमेरिकन महिलाक। भारतीय महिला श्रीमती इन्दु देवी अपन स्वामीकेँ, जे नओ वर्षसँ अमेरिकेमे रहैत छथिन जे पत्र लिखलथिन अछि से थिक पहिल पत्र। एहि पत्रक अंगरेजी अनुवादक प्रतिलिपि इन्दु देवीक ममियौत भाइ रमेश, जे किछु वर्ष पूर्व स्वयं अमेरिका गेल छलाह, एक अमेरिकन बान्धवीकेँ अपन पत्रक संग पठा दैत छथिन। ओ महिला जे हिनका उत्तर दैत छथिन, से थिक दोसर पत्र।

दुनू पत्रमे दुनू देशक संस्कृति, सभ्यता, संस्कार आदि साकार भऽ उठल अछि। विवेचकलोकनि एकरा 'उपन्यास' मानथु वा नहि, किन्तु मैथिलीमे एहि प्रकारक वस्तु सर्वथा नवीन अवश्य अछि।

डा० अमरेश पाठक लिखने छथि—"चारि गोट मात्र पात्रपर सम्पूर्ण वृत्तान्त आधारित अछि। ओ पात्र छथि—इन्दु, सुरेन्द्र, जेसिका एवं रमेश। भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे एहि पात्रसभकेँ राखि मानसिक द्वन्द्व एवं संघर्षक चित्रण द्वारा जे चित्र व्यासजी अंकित कयल अछि, से सत्यानुरूप भेल अछि।"

डा० 'धीरेश'क अनुसार—"विशेषतः भारतीय ओ पाश्चात्य दृष्टिकोणमे स्त्रीगणक सामाजिक ओ मानसिक स्थिति ओ आदर्शमे की अन्तर छैक, तकरा स्पष्ट करैत अन्ततः भारतीय ललनाक शालीनताक ओ श्रेष्ठताक बड़ सजीव प्रतिपादन भेल अछि। मानसिक द्वन्द्व ओ संघर्षक सूक्ष्म ओ कलात्मक आकलन एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।"

अनुवाद-कार्यमे सेहो 'व्यास' सिद्धहस्त छथि। शरच्चन्द्रक दू गोट उपन्यासक अनुवाद कऽ ओकरा प्रकाशित करौने छथि—बामनक बेटी आ विप्रदास। अनुवाद मूलसँ सन्निकट अछि—से कहल जाइछ। एकर अतिरिक्त संस्कृतसँ श्रीमद्भगवद्गीता ओ स्तोत्रांजलिक अनुवाद हिनक अछि। स्तोत्रांजलिमे तीन गोट स्तोत्रक अनुवाद अछि—श्रीमद्भागवतक 'श्रुति-स्तुति', शिवमहिम्न स्तोत्र तथा भगवतीक सौन्दर्य-लहरीक। अन्तमे तीनू स्तोत्रक मूल संस्कृत श्लोक सेहो शामिल कऽ देल गेल अछि। फारसीक सुविख्यात ओमर खैयामक रुबाइक सेहो ई मैथिली-अनुवाद कयने छथि। ओमर खैयामक रुबाइक अनुवाद ई मूलतः फारसीसँ नहि कऽ ओकर अंग्रेजी अनुवादक रूपान्तर कयने छथि। ईहो अनुवाद रोचक भेल अछि।

□

श्री मणिपद्म

मिथिलाक लोक-गाथाक विशेषज्ञ श्री मणिपद्मक स्थान मैथिली साहित्यमे अनेक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि। कवि, उपन्यासकार, कथाकार, नाटककारक रूपमे तँ ई ख्यात छथिहे, हिनक लिखल संस्मरण तथा वैचारिक निबन्धसभ सेहो साहित्यक गौरव थिक। शिकार-साहित्यक सेहो ई रचना कयने छथि। ई मिथिला-मैथिलीक सजग प्रहरी छथि तथा हिनक भाषण बड़ ओजपूर्ण आ भावोत्तेजक होइत अछि।

हिनक जन्म ७ सितम्बर १९१८ ई० केँ भेलनि। दरभंगा जिलाक बहेड़ा गाममे ई निवास करैत छथि। बहेड़ा आधुनिक मैथिलीकक अनेक साहित्यकारक कर्मभूमि ओ जन्मभूमि थिक। ई मैथिली, हिन्दी, अंगरेजी आ बंगलाक गम्भीर अध्ययन कयने छथि। एकर अतिरिक्त ई होमियोपैथीक नीक ज्ञाता छथि। ई बेहड़ेमे रहि चिकित्सा-कार्य तथा साहित्य-साधनामे लागल रहैत छथि।

पुस्तकाकार हिनक उपन्यास आ नाटक मात्र प्रकाशित भेल अछि, जे निम्नलिखित अछि—विद्यापति (१९६०), कोब्रागर्ल (१९७०), लोरिक-विजय (१९७०), नैका बनिजारा (१९७२), राजा सलहेस (१९७२), लवहरि-कुशहरि (१९७६), राव रणपाल (१९७६) फुटपाथ (१९७८) दुलरा दयाल तथा अर्धनारीश्वर (१९८१)—उपन्यास। अर्धनारीश्वर पहिने मिथिला मिहिरमे धारावाही रूपमे छपि गेल छल। हिनक दू गोट आओर उपन्यास अछि जे पत्रिकामे प्रकाशित अछि, किन्तु पुस्तकाकार नहि भेल अछि। ओ थिक—सोनामाटिमे प्रकाशित 'कनकी' तथा मिहिरमे प्रकाशित बाल-उपन्यास 'भारतीक बिलाड़ि'। नाटक हिनक दू गोट प्रकाशित अछि—कण्ठहार, तथा झुनकी (१९७७)। दू गोट हिनक अनूदित पुस्तक सेहो अछि—श्री विभूति भूषण मुखोपाध्यायक बंगला उपन्यास 'कुशी प्रांगणेर चिठी'क मैथिली अनुवाद 'कोशी प्रांगणक चिट्ठी' क नामसँ (१९७९ मे) तथ डॉ० सुकुमार सेनक अंगरेजीमे लिखल बंगला साहित्यक इतिहासक मैथिली अनुवाद (१९८४)। एकर अतिरिक्त साहित्यक प्रायः एहन कोनो विधा नहि होयत जाहिमे हिनक लेखनी नहि चलल हो।

यद्यपि कविता लिखब एम्हर ई अपेक्षाकृत कम कऽ देलनि अछि, किन्तु जतबे लिखल छनि से थोड़ नहि अछि आ महत्त्वपूर्ण अछि। प्रो० रमानाथ झाक मतेँ "हिनक कवितामे प्रवाह अछि, सृष्टिक सौन्दर्यक दिशि दृष्टि अछि, भावक प्रधानता अछि, परन्तु संगहि संग आदर्श ओ वस्तुस्थितिक मध्य जे विषमता ई देखैत छथि तकर करुण ध्वनि हिनक कवितासँ बहैत रहैत अछि।"

वस्तुतः ई बड़ भावुक कवि छथि। कोनो वस्तुक चित्रण करऽकाल ई भावनामे बहि जाइत छथि। अतएव हिनक कविता सभसँ पहिने ध्यान आकृष्ट करैछ अपन प्रवाह दिस। एहि सन्दर्भमे 'कौसर'क निम्न पंक्ति द्रष्टव्य—

ई मादक सौन्दर्यक मेला लागि रहल अछि
अमर प्रेरणा मधुर कल्पना जागि रहल अछि

विद्यापतिकेर काव्य-चित्र साकार होइत अछि
सूतल जागल स्वप्न मृदुल आकार लैत अछि
दिव्य भावना उड़ि-उड़ि घुरि-घुरि नाचि रहल अछि
हमरे अन्तर पढ़ि-पढ़ि मन्तर बाँचि रहल अछि
हरित नील आच्छाद रम्य मिथिलाकेर कौसर
लहरि-लहरि ओ सिहरि-सिहरि प्रमुदित ई सरवर

भावनामे ततेक तन्मयतासँ ई बहि जाइत छथि जे कतहु-कतहु छन्दमे व्यतिक्रम सेहो भऽ जाइत छनि।

ई लोक-गाथाक गम्भीर अन्वेषक छथि, तेँ हिनक कवितामे ठाम-ठाम तकरो छाप देखबामे आबि जाइछ, मिथिलाक उपेक्षित जन-जीवनक प्रति अनुराग ओ श्रद्धाक भाव जागि जाइछ। कवि प्रकृतिक पूजेगरी छथि। प्रकृति-चित्रणमे हिनक तन्मयता देखबा योग्य होइछ। प्रकृतिक सूक्ष्म पर्यवेक्षण ई करैत छथि, आ से हिनक आत्माभिव्यक्ति-मूलक कवितोमे आबि जाइत अछि—

अन्तरालक सौन्दर्यक सोनाघाटीमे
गुड्आइत—फेनाइत
झकझक प्रवहमान
काल-सरिताक तटपर
कुसुमित—सुरभित काननमे
बल्हरैत-मल्हरैत हे हमर मृग-मन !
अपने अलख-नाभिसँ
उठैत सुगन्धसँ मदमातल
क्षणे-क्षणे उन्मन होइत
ककरा प्रतीक्षामे उद्ग्रीव भेल
उदित चान दिस निहारऽ लगैत छी ?

हिनक दार्शनिक गीतमे सेहो अपन विशिष्ट अर्थवत्ताक संग प्रकृति विराजमान अछि।

स्वप्नक पाछू दौड़ल जाइछी सत्य तकै ले'
सत्य हमर रूसल जाइ-ए स्वप्न बनै ले'
धरती छोड़ि मेघपर अयलौं अम्बर छूबै ले'
बुन्नि बनि-बनि मेघ बरिसल धरती चूमै ले'

'कविकोकिलसँ भेंट' शीर्षक कवितामे वर्तमान मिथिलाक अधोमतिक जीवन्त चित्र सोझाँमे ठाढ़ कऽ देलनि अछि—

तोहर शिवसिंह लागनि घेने
आगू बड़दक जोड़ी लेने
लखिमा कानथि अन्न बिना रे
चोटकल शिशुकेँ कोरा लेने
तोहर राधा जारनि तोड़थि
कृष्ण पसर उठि महिंस चरावथि

नन्दक घर छनि गाय तीन टा
एक बुन्न घोरो नहि पाबथि

हिनक कविता क्लिष्ट शब्दक मायाजालमे कतहु ओझरा नहि जाइछ। ओहिमे प्रसाद गुण प्रायः सर्वत्र दृष्टिगत होइछ। चीनी आक्रमणक समयमे लिखल हिनक कवितामे ओज आ आह्वानक स्वर कतेक तीव्र भऽ गेल अछि, से देखल जा सकैछ—

सय-सय गंगाजलसँ धोने
नहि छूटैं इतिहासक दाग
एक बेर भूलुंठित भेने
फेर चढ़य नहि माथा पाग
सोना-बेटा कटैं युद्धमे
तखन कोन सोनाकेर मोल
रे प्रताप जूझैं हल्दीमे
भामाशाह ! खजाना खोल
कंचनजंघा डगमग-डगमग
मानसरोवरमे तूफान
'जय-जय भैरवि असुर भयाउनि'
अधर-अधरपर गूजय गान

हिनक काव्यक प्रसंग डा० 'श्रीश'क उक्ति यथार्थ अछि जे -'लोककाव्यक विशेषज्ञ मणिपद्म जीक रचनामे लोकगीतक लय जो प्रवाहक एहन समन्वय भेल अछि जे मैथिली प्रगीति काव्यकेँ अभिनव माधुर्य तथा मार्दव तथा अकृत्रिम भाव-सौष्ठव प्राप्त भेलैक अछि। हिनक कविताक मुख्य गुण थिक वर्तमानक सहानुभूतिपूर्ण चित्रण ओ अभिव्यक्तिक नवीनता।'' हिनक भाषा-शैलीक प्रसंग प्रो० शैलेन्द्र मोहन झा लिखने छथि—''मणिपद्म जीक रचनाक सभसँ पैघ आकर्षण ओहिमे जनभाषाक कोमल प्रयोग अछि। हिनक भाषा-शैलीपर लोकगीतक अपरिमित प्रभाव भेटत। तेँ हिनक भाषामे तत्समताक मोह देखबनि।''

हिनक कविता अछि विविध विषयपर, विविध भाँतिक, विविध शैलीमे, किन्तु मूल तत्त्व जे हिनक कविताक अछि से थिक भाषामे प्रवाह, शब्द-चयनमे प्रांजलता, लोक-जीवनक प्रति झुकाव, उपेक्षितक प्रति सहानुभूति ओ ऐतिहासिक पात्रकेँ वर्तमानक परिप्रेक्ष्यमे चित्रण करब हिनक कविकर्मक खास विशेषता थिक।

कथाकारक रूपमे सोहनगर भाषा-शैली आ माँटि-पानिक सुगन्धक लेल ई उल्लेखनीय छथि। 'बालगोविन्द' हिनक सुप्रसिद्ध स्केच थिक। माटि-पानिक सुगन्ध, सोहनगर भाषा-शैली आ वातावरणक सजीव चित्रण आदिक कारणेँ हिनक कथा विशिष्ट भऽ जाइछ। कथाक परिधिकेँ ई विशेष व्याप्ति प्रदान कयलनि अछि—शिकार-कथा, प्रेत-कथा आदि कतेको नव विषयपर हिनक लेखनी अबाध गतिएँ चलल अछि। हिनक भावुकता हिनक कथोमे जगजियार भऽ जाइत अछि।

मणिपद्मक सभसँ व्यापक व्यक्तित्व उपन्यासकारक अछि। एक दिस ई ऐतिहासिक पात्रपर आधारित 'विद्यापति' उपन्यास लिखने छथि तँ दोसर दिस सनसनीखेज जासूसी चरित्रक 'कोब्रागर्ल'। किन्तु, सभसँ अधिक हिनक मन लोक-गाथाक अन्वेषणमे रमैत अछि। लोकमहाकाव्यपर आधारित हिनक उपन्याससभ थिक

लोरिक-विजय, नैका बनिजारा, राजा सलहेस, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल तथा दुलरा दयाल। 'नैका बनिजारा' पर हिनका सन् १९७३ ई० क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेल छनि।

'विद्यापति' उपन्यासक प्रसंग डा० 'श्रीश' लिखने छथि—"एहिमे वर्माजी विद्यापतिक व्यक्तित्वक विभिन्न रूपकें सरस शैलीमे चित्रण कयने छथि। एहि उपन्यासक प्रमुख आकर्षण थिक वर्माजीक ओजस्वी ओ कवित्वपूर्ण गद्य। मुदा ऐतिहासिक उपन्यासक जे गरिमा चाही, तकर एहिमे अभाव अछि। कथाक शृंखला सेहो सुगठित नहि अछि तथा चित्रांकन सेहो उपन्यासोचित नहि कहल जा सकैत अछि।"

लोकगाथापर आधारित हिनक उपन्यासक विषय-वस्तुकें स्पष्ट करैत डा० 'श्रीश' कहैत छथि—"राजा सलहेस ओ लोरिक-विजय द्विजेतर, क्रमशः दुसाध ओ यादव-संप्रदायक अत्यन्त प्राचीन लोकगाथापर आधारित उपन्यास थिक तँ नैका बनिजारा बनिजारा-सम्प्रदायक लोकगाथापर आधारित अछि। एहि तीनू उपन्यासमे जीवन्त गद्यशैलीक हेतु प्रसिद्ध उपन्यासकार लोकगाथामे चित्रित तत्कालीन सवर्णेतर समाजक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कयल अछि। कथा-युगक सांस्कृतिक ओ धार्मिक भावधाराक चित्रांकनमे सेहो उपन्यासकार कुशलताक परिचय देने छथि। शैव, शक्ति ओ बौद्ध धर्मक सन्धि ओ समन्वयक सन्तुलित सामाजिक चित्रणक दृष्टिएँ हिनक ई तीनू उपन्यास मैथिली साहित्यक इतिहासमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि।"

लोरिक-विजयक भाषाक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्रक मत अछि—'Dr. Verma has made out in excellent prose the heroism of Lorika, giving a taste of the idiom of the great folk ballad itself. We seem to breathe in the age of Lorika and the reader begins to see everything in the heroic manner of ancient days."

किन्तु, एकर चरित्रक दुर्बलताक प्रसंग डा० अमरेश पाठक विचार करैत लिखने छथि—"उपन्यासक चरित्रकें महाकाव्यक नायकक उदात्त चरित्रक मर्यादासँ मण्डित करबाक चेष्टा कयल जायत तँ ओ चरित्र उपहासास्पद भए जायत।"

नाटक ओ एकांकीकारक रूपमे सेहो मैथिली साहित्यमे हिनक स्थान छनि। डॉ० 'श्रीश'क शब्दमे हिनक "ऐतिहासिक एकांकीमे अतिभावुकता रहैत अछि तँ सामाजिक एकांकीमे व्यंग्य।" आधुनिक तकनीकक दृष्टिसँ यद्यपि हिनक नाटक पूर्ण सफल नहि मानल जायत, किन्तु मैथिली नाटकक वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे हिनक नाटकक अवहेलना नहि कयल जा सकैछ। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित एकांकी-संग्रहक संपादक-मण्डलमे एक ईहो थिकाह।

'हुनकासँ भेंट भेल छल' निवन्धमालामे एहि युगक दिवंगत मैथिली साहित्यकार, मिथिलाक राजनेता तथा आनो क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण व्यक्तिक संस्मरण ई लिखने छथि। तहिना 'ओहि ठाम गेल छलहुँ' नामक स्तम्भमे कतेको स्थानक यात्रा-वर्णन ई कयने छथि।

वस्तुतः मणिपद्म बहुमुखी प्रतिभाक तेजस्वी लेखक छथि। हिनक जतेक कृति प्रकाशित अछि, ताहिसँ कतेक गुण अधिक अप्रकाशित। हिनक कृतित्वसँ मैथिली साहित्य गौरवान्वित भेल अछि।



श्री योगानन्द झा

श्री योगानन्द झाक नाम मैथिली साहित्यमे 'भलमानुस' उपन्यास लऽकऽ विख्यात भेल। हिनक ई उपन्यास हिनक नामकें साहित्यमे अमर कऽ देबा लेल पर्याप्त अछि। उपन्यासकारक अतिरिक्त ई कथाकार आ नाटककारो छथि, अनुवादक आ सम्पादक सेहो छथि।

मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे विद्वत् परिवारमे हिनक जन्म २८ फरवरी १९२२ ई० केँ भेलनि। ई अंगरेजी मे एम० ए० कयलाक बाद १९४५-४६ मे चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगामे प्राध्यापक छलाह, तकर बाद बिहार सरकारक राजपत्रित पदाधिकारीक रूपमे विभिन्न पदपर १९८१ धरि काज कयलनि। पुनः तीन वर्ष, १९८४ धरि, मैथिली अकादमी, पटनाक निदेशक-सह-सचिव पदपर रहलाह। ओहि पदसँ मुक्त भेलाक बाद बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमीमे भाषाविदक पदपर सुप्रतिष्ठित छथि।

हिनक प्रकाशित कृति अछि—भलमानुस (१९४४) आ पवित्रा (१९६६)—उपन्यास; मुनिक मतिभ्रम (१९५३)—एकांकी; उड़ैत वंशी (१९८४)—कथा; महात्मा गान्धीक आत्मकथा 'हमर सत्यक प्रयोग' (१९८१)—अनुवाद; आमक जलखरी (कथा-संग्रह १९४५)—संपादन। एकर अतिरिक्त 'अन्तिम रामचरित' तथा 'अमृतक बटबारा' एकांकी सम्प्रति असंकलित अछि। मैथिली अकादमीक किछु पोथीक सम्पादक-मण्डलमे हिनक नाम भेटैत अछि, जेना—मैथिली-कथा-सरिता, उमापतिक पारिजात-हरण। मैथिली अकादमीक निदेशकक हैसियतसँ 'मैथिली अकादमी पत्रिका'क तीन वर्ष धरि ई सपादको रहलछथि।

भलमानुस—भलमानुस मिथिलाक कुलीन प्रथापर चोट करैछ। कथासूत्रक बुनावटि, ओकर स्वाभाविक विकास, वातावरणक सजीवता, सामाजिक यथार्थक चित्रण आ समस्त बेसी औपन्यासिक तत्त्वक सम्यक् निर्वाहक कारणे ई कृति मैथिली उपन्यास-साहित्यमे अत्यन्त श्रेष्ठ स्थानक अधिकारी अछि।

डा० अमरेश पाठकक शब्दमे—"भलमानुस समस्यामूलक सामाजिक उपन्यास अछि। सामाजिक जीवनक यथार्थ परिस्थितिक निर्माण कए ओकर अन्तरालमे कथानककें विश्वनीय एवं प्रभावोत्पादक वनायब लेखकक चेष्टा रहलनि अछि।" डा० पाठक दोसर ठाम कहैत छथि "भलमानुसमे श्री योगानन्द झा समाज मध्य प्रचलित रूढ़िग्रस्तता एवं कुलीनताक प्रति मिथ्या मोह तथा नारी-जातिक असमर्थताक आकर्षक चित्र उपस्थित कयने छथि। नैतिकता, जाति-पातिक मिथ्याभिमान एवं भलमानुसक जीवन-पद्धतिक चित्रण कए ओहिसँ मुक्ति पएबाक चेष्टा एहिमे भेल अछि।"

एहि दुःखान्त उपन्यासकें डा० जयकान्त मिश्र महान कृति मानलनि अछि। किन्तु हुनका एकर कथावस्तुसँ बेसी एहिमे वर्णित मनोरंजक सामाजिक चित्र आकृष्ट कयलकनि अछि। हुनक शब्दमे—Yoga Babu's Bhalamanus is a

great tragedy and its social theme, the caste prejudices in the marriage of the Kulin Community, has aroused much attention but like Harimohan Babu's Yoga Babu's work also appeals to me for its excellenent smoll touches of social comedy and not for its social theme."

डा० 'श्रीश' मानैत छथि—"एहि उपन्यासमे उच्च कोटिक उपन्यास-कलाक बीज निहित अछि। ऐहिमे सर्वाधिक उल्लेखनीय ओ प्रसंग थिक जखन निर्मला ओ जगदीशक प्रथम मिलन होइत अछि तथा जखन जगदीश विवाहक पश्चात सासुरसँ गाम घुरैत अछि आओर अपन पत्नी ओ सासुरक प्रसंग मित्र-मण्डली मे गप्प-सप्प करैत अछि। एतए वर्णनक सांगोपांगता एवं यथार्थता बड़ मार्मिक भेल अछि।"

हिनक भलमानुसक लोकप्रियताक प्रमाण यैह थिक जे एकरे प्रतिक्रिया-स्वरूप 'जयबार' आ तकर प्रतिक्रियास्वरूप 'वनमानुष'—एहि दू गोट उपन्यासक सृष्टि भऽ गेल।

पवित्रा—ई हिनक दोसर उपन्यास थिक। लेखकक अनुसार यद्यपि एहि उपन्यासकेँ ओ १९५० ई० मे लिखब समाप्त कयलनि, किन्तु इ प्रकाशित भेल १९६६ ई० मे।

एकर भूमिकामे प्रो० रमानाथ झा एकरा उपन्यासक अपेक्षा दीर्घकथा कहब बेसी समीचीन मानलनि अछि। एकर कथानकपर सेहो ओ आपत्ति प्रकट कयने छथि। एकर कथा-नायिका—पवित्रा—केँ ओ वेश्याक समकक्ष मानने छथि। अपन मतकेँ स्पष्ट करैत ओ कहने छथि—'विवाह तँ विधि थिक, असल वस्तु थिक देहसमर्पण। क्रम एहन सन लगैत अछि जे पवित्रा विवाहकेँ महत्त्व देअए, गुप्त संगमकेँ सह्य बुझए। तखन पवित्रा आ वेश्या मे अन्तर की?"

उपन्यासकार अपन ढंगसँ एहि आरोपक उत्तर देने छथि। समाजमे जे उत्पीड़न छैक, कुंठा छैक, दुवृत्ति छैक, ताहि दिससँ साकांक्ष उपन्यासकार अपन आँखि कोना हटा सकैछ? "की ओ अपन देशक राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषमताकेँ देखिकऽ आँखि पर पट्टी बान्हि लेत? जखन ओ अपन चतुर्दिक भीषण हाहाकार देखि रहल हो आ परम्परा, प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, धर्म, जाति आ वंशक अभि-मानक नामपर व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवनक उत्पीड़न तथा शोषण देखैत हो तखनो की ओ अपन मुँहमे पानिक घोँट भरने रहत जे किछु बजा ने जाय?"

ई तँ गम्भीर विवेचनक वस्तु थिक। एतबा तँ अवश्य जे "बाल-विधिबाक समस्या लऽकऽ लिखल गेल हिनक ई उपन्यास मैथिली उपन्यासक विकासमे, विशेषतया चरित्र-चित्रण एवं वातावरणक निर्माणक दृष्टिएँ, महत्त्वपूर्ण स्थान रखैछ।"

डा० अमरेश पाठकक मतानुसार—"बाल-विधबाक समस्या लए लिखल गेल एहि उपन्यासमे सामाजिक जीवनक विभिन्नताक चित्रणमे सेहो लेखकक प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि। उत्सुकताक क्रमिक विकास एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक।"

प्रो० रमानाथ झा सेहो स्वीकार कयने छथि— "कथामे गति अछि, उत्सुकता कतहु क्षीण नहि होअय पओलक अछि, भाषामे प्रवाह अछि, सरलता अछि, स्वच्छता अछि, स्वाभाविकता अछि, वर्णन प्रभावोत्पादक अछि, वातावरण सुसंगत अछि, हास्यरसक संतुलित समावेश अछि।"

उड़ैत वंशी—हिनक ११ गोट कथाक संकलन 'उड़ैत वंशी'क नामसँ प्रकाशित अछि। सभसँ प्रसिद्ध कथा अछि—'आम खयबाक मुँह'। ई १९४४ ई० मे लिखल गेल। अन्तिम कथा 'उड़ैत वंशी' ओकर चालीस वर्षक बाद लिखल गेल। अतएव, लेखकक ई कथा-संग्रह हिनक चालीस वर्षक कथा-लेखनक अवधि केँ समटने अछि। हिनक कथा सभ 'रोचक एवं हृदयग्राही' शैलीक कारणेँ मैथिलीमे अपन विशिष्ट स्थान बना चुकल अछि। 'आम खयबाक मुँह' एक रोमांटिक कथा थिक जाहिमे 'स्निग्ध भावप्रवणता एवं मधुर विन्यास' अतीव आकर्षक अछि। हिनक कथा लोकप्रिय होइत अछि कारण ओ पाठकक कोमल हृदय-तंत्रीकेँ झनझना दैत अछि। प्रो० जयदेव मिश्र हिनक कथाक सफलताक कारणकेँ तकैत कहैत छथि—'कोन प्रकारक विवरण देलासँ, कोन प्रकारक दृष्टिभंगी अपनौलासँ, कोन प्रकारक अंतिम व्यंग्य (Suggestion) उपस्थित कयलासँ लोकचित्त स्पन्दित होयत, एकर रहस्य श्री योगाबाबूकेँ जानल छनि।" अपन एही कौशलक कारणेँ बड़ थोड़ कथा लिखिकऽ महत्त्वपूर्ण कथाकारक पाँतीमे ई बैसि गेल छथि। हिनक कथाक विषय-वस्तु यद्यपि मामूली रहैछ, सक्षिप्त रहैछ, सोझसाझ रहैछ, किन्तु तकरा रोचक आ आकर्षक रूपमे प्रस्तुत करबामे कथाकारक दक्षता सिद्ध होइत अछि। हिनक कथाक महत्त्व वातावरणक निर्माण आ चरित्र-चित्रणमे निहित अछि, तथा ओहिमे वर्णनक बारीकी आ भाषाक प्रवाह सहज रूपमे ध्यान आकृष्ट करैछ। हिनक पात्र निम्न-मध्य वर्गक लोक अछि, जकरामे साधारण मनुष्यक सभ कमजोरी आ विशिष्टता विद्यमान रहैछ। रोमांटिक स्थल हिनक कथासभमे विशेष उद्भासित भऽ उठल अछि। सभ दृष्टिएँ 'आम खयबाक मुँह' एखनहुँ हिनक प्रतिनिधि कथा अछि।

'मुनिक मतिभ्रम' नामक हिनक नाटक मैथिली नाट्य इतिहासमे सुचर्चित भेल अछि। एकर कथावस्तु पौराणिक अछि। च्यवन आ सुकन्याक कथा लऽकऽ लेखक उच्च कोटिक साहित्यि नाटक तैयार कयलनि अछि। एकरा मंचपर अभिनीत करब दुष्कर अछि, तेँ ओहि दृष्टिसँ ई दुर्बल कहल जा सकैछ, किन्तु नाटकक अध्ये-ताकेँ एहिमे नीक काव्यात्मक तृप्ति भेटैछ, ताहिमे सन्देह नहि। अभिनय-गुणक अभाव रहलाक कारणेँ डॉ० जयकान्त मिश्र एकरा महान नाटक नहि मानैत छथि—"I have always felt that though Munil Matibhvama is a fine piece of literature, it is not a great drama as it cannot be staged".

ई बहुत परिमार्जित गद्य लिखैत छथि तथा हिनकामे अनुवादक क्षमता सेहो उच्च कोटिक अछि—तकर प्रमाण थिक महात्मा गांधीक आत्मकथाक अनुवाद। अनुवादमे मूलक आनन्द प्राप्त होइछ। भाषामे ततेक प्रवाह अछि, वाक्य-विन्यास ततेक विलक्षण अछि जे मैथिली गद्यकेँ विशिष्ट स्तरीयता प्रदान करैछ। अनुवाद-साहित्यक एकरा मानक ग्रन्थ कहल जा सकैछ।

हिनक कृति मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण अछि। लगभग २५ वर्ष धरि लेखनसँ संन्यास लेलाक बाद फेर ई सृजनशील भऽ गेलाह अछि, से हर्षक विषय थिक। □

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'मिथिला मिहिर'क बाइस वर्ष (१९६० सँ ८२) धरि सम्पादक रहलाह। एक टा नीक सम्पादकके जेहन साहित्यिक दृष्टि आ सृष्टिक क्षमता होयबाक चाही, से यथेष्ट मात्रामे हिनकामे छनि। पत्रिकाकेँ लोकप्रिय बनयबाक हेतु, ओकर स्तरकेँ अक्षुण्ण रखबाक निमित्त जखन जाहि वस्तुक प्रयोजन हिनका बुझना गेलनि, से ई लिखलनि। तेँ, हिनक अवदान साहित्यक प्रायः सभ विधाकेँ भेट कि। उपन्यास, कथा, नाटक, एकांकी, रेडियो-रूपक, समालोचना, निबन्ध, कविता—सभ टा ई लिखने छथि विभिन्न छद्मनामसँ। जे वस्तु ई लिखने छथि, से अधिकारपूर्वक, माजल हाथेँ, नवीन दृष्टिक परिचय दैत, तेँ हिनक जे वस्तु अछि से अछि मौलिक, सुपाठ्य, विवेचनीय आ तेँ चर्चित।

किन्तु, अपनाकेँ ई मूलतः आ मुख्यतः नाटककार मानैत छथि। नाटकक तकनीकक हिनका नीक व्यावहारिक अनुभव छनि, तेँ हिनक नाटक अभिनयक दृष्टिसँ सेहो सफलता प्राप्त कयने अछि।

अद्यावधि हिनक तीन गोट नाटक, चारि उपन्यास तथा एक गोट समालोचनात्मक निबन्धक संग्रह प्रकाशित अछि। भफाइत चाहक जिनगी (१९७५), लेटाइत आँचर (१९७९) तथा पहिल साँझ (१९८२)—नाटक थिक। तर पट्टा ऊपर पट्टा, ई बतहा संसार, दरिद्रछिम्मड़ि तथा निवेदिता—उपन्यास थिक, जाहिमे 'ई बतहा संसार' १९७९मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल आ १९८०क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कयलक। शेष तीनू उपन्यास मिथिला मिहिरमे धारावाही रूपेँ छपल अछि। 'ई बतहा संसार' सेहो पहिने मिथिला मिहिरेमे आयल छल।

हिनक समीक्षात्मक निबन्धक संग्रहक नाम थिक—सन्दर्भ (१९८१)। एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, एकांकी, निबन्ध कतहु असल तँ कतहु 'पराशर'क छद्मनामसँ तथा कविता कामरूप'क छद्मनामसँ प्रकाशित अछि।

समसामयिक सामाजिक राजनीतिक आ आर्थिक विषमताक उद्घाटन हिनक नाटक आ एकांकीक मुख्य ध्येय रहैत छनि। जहाँ धरि संभव होइछ, कमसँ कम पात्रक उपयोग कऽ बड़ प्रभावोत्पादक नाटक ई लिखैत छथि, जाहिमे पात्रक बाह्य आचरणसँ बेसी मानसिक द्वन्द्वक विवेचन करब हिनका प्रिय छनि। 'लेटाइत आँचर'क विषय-वस्तु यद्यपि अनछुअल नहि अछि, कातर-प्रथाकेँ लऽ कऽ वैवाहिक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि, किन्तु ओकर ट्रीटमेन्ट तेहन अभिनव अछि जाहिसँ नाटक महत्त्वपूर्ण भऽ गेल अछि। तहिना 'भफाइत चाहक जिनगी'क सेहो एहि लऽ कऽ महत्त्व अछि जे बिना कोनो बेसी टीम-टामक, एक टा फुटपाथी चाहक दोकानपर भेल वार्तालापक क्रममे वर्तमान कालक अनेको विषमता एक-पर-एक उद्घाटित भेल चल जाइत अछि, से एकदम सहज रीतिएँ, जकर प्रभाव पाठक किंवा दर्शकक मानस-पटलपर चिरकाल धरि अंकित रहि जाइत छैक।

एकांकी सेहो ई पर्याप्त लिखने छथि। एहुमे हिनक उक्त विशेषता प्रदर्शित होइछ। डा० 'धीरे'क अनुसारेँ "हिनक एकांकी विषयक संतुलित नियोजन तथा यथोचित नाटकीय संघर्षक सम्पादनक दृष्टिएँ उत्कृष्ट कोटिक कहल जा सकैत अछि। कलात्मक प्रौढ़ता हिनक एकांकीक प्रमुख गुण थिक। हिनक 'हथट्टा कुर्सी' कोनो भाषाक उत्कृष्ट एकांकीसँ समता कऽ सकैत अछि।"

तहिना, रेडियो-रूपक लिखबामे सेहो हिनका प्रकृष्टता प्राप्त छनि। हिनक प्रसिद्ध रेडियो-रूपक 'जय सोमनाथ' आकाशवाणी, पटनासँ कतेक बेर प्रसारित कयल जा चुकल अछि, तकर लेखा नहि। एहीसँ हिनक लोकप्रियताक अनुमान लगाओल जा सकैछ।

मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे सेहो हिनक नाटक, उपन्यास आ कवितासंग्रह प्रकाशित अछि। पहिने हिन्दीएमे ई धुरझाड़ लिखैत छलाह। प्रो० 'सुमनक' प्रेरणासँ मैथिलीमे प्रवेश कयलनि। आ, आब तँ पूर्ण रूपसँ मैथिलीक प्रति समर्पित भऽ गेल छथि।

दरभंगाक मिश्रटोलामे हिनक जन्म ३ नवम्बर १९२२ केँ भेलनि। किछु दिन धरि कलकत्ता आ जमशेदपुरमे विभिन्न जीविका कयलनि, किछु दिन उच्च विद्यालयमे शिक्षक सेहो रहलाह। बादमे सर्वतोभावेन साहित्य-सर्जनामे रहि मसिजीवी साहित्यकार भऽ गेलाह। 'मिथिला मिहिर' पूर्व ई वैदेहीक संपादन सेहो कयने छलाह—प्रो० सुमन आ प्रो० कृष्णकान्त मिश्रक संग। हिनक सम्पादन-अवधिमे मैथिलीक नवीन पीढ़ीक कतिपय प्रतिभाशाली साहित्यकार प्रकाशमे अयलाह। पत्रिकाक सम्पादनक अतिरिक्त आलोचनात्मक निबन्धसंग्रह 'विवेचना' तथा विद्यालयस्तरक पाठ्यपुस्तक 'मैथिली साहित्य सुमन'क सम्पादन सेहो ई कयने छथि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित 'एकांकी-संग्रह'क संपादक-मण्डलमे 'सुमन' आ मणिपद्मक संग ईहो छथि।

ई बतहा संसार—प्रस्तुत उपन्यास हिनक सर्वाधिक चर्चित कृति थिक। एहि उपन्यासमे, लेखकक अनुसार, प्रेम आ वासनाकेँ व्याख्यायित कयल गेल अछि। जेना हिन्दीक प्रसिद्ध उपन्यास 'चित्रलेखा'मे पाप आ पुण्यक व्याख्या भेल अछि, प्रायः ताहीसँ प्रेरित भऽ कऽ लेखक अपन एहि कृतिमे प्रेम आ वासनाक गूढ़ तत्त्वकेँ विवेचयबाक प्रयास कयने छथि। किन्तु, जतऽ 'चित्रलेखा'क कथा-प्रवाह अत्यन्त गतिशील अछि, वर्णन-शैली अतीव मनोहारी अछि, ततऽ 'ई बतहा संसार' सभ स्थलपर श्लथ बुझि पड़ैत अछि। एहिमे ने कथा-प्रवाहे निर्बाध बढ़ैत अछि, ने वर्णने सहज-स्वाभाविक भऽ पौलक अछि आ ने घटने विश्वसनीय लगैत अछि।

चान आ धनंजय एहि उपन्यासक मुख्य पात्र छथि। एहि दुनूक माध्यमसँ उपन्यासकार ई सिद्ध करबाक चेष्टा कयलनि अछि जे ई संसारे कौतूहलक स्थली थिक आ एहि ठामक प्रत्येक पात्र कोनो-ने-कोनो रूपमे अलौकिक अछि। तेँ, एकक दृष्टिमे जँ दोसरक स्वभाव, क्रिया-कलाप, हाव-भाव आ बात-विचार अस्वाभाविक लगैत छैक तँ दोसरोक दृष्टिमे पहिलक व्यक्तित्व ओहिने असहज बुझल जाइत छैक। एहिमे एककेँ छोड़ि, प्रायः सभ पात्र सम्मत अछि, किन्तु ओकर कोनो-ने-कोनो व्यवहारपर पाठककेँ अलौकिकताक दर्शन होइत छैक। वासना क्षणभंगुर

थिक आ प्रेम शाश्वत। प्रेमक सम्मुख धन-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा सभ तुच्छ भऽ जाइछ, हेय भऽ जाइछ।

एकर ताना-बाना कोनो समकालीन समस्याकें लऽकऽ नहि बुनल गेल अछि, तें असामयिकताक दोष एहिपर आरोपित नहि कयल जयबाक चाही। एकरा मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहब समीचीन होयत, जाहिमे बाह्य घटना-चक्र बहुत थोड़ घुमैत छैक। पात्र सभक चिन्तन-धारा मनुष्यक नाना प्रकारक ग्रन्थिकें खोलबाक चेष्टा कयलक अछि। विषय-प्रतिवादनक सूक्ष्मता, पात्रक मानसिक स्तर-भेदक विश्लेषण-सूक्ष्मता, ओकर सभक विभिन्न क्रिया-कलापक पर्यवेक्षण-सूक्ष्मता सम्पूर्ण उपन्यासमे व्याप्त अछि, तें स्वाभाविक अछि जे एकर भाषा सेहो साधारण पाठकक पकड़सं बाहर रहि जाइछ।

श्रीमती शेफालिका देवीक छद्मनामसं १९६१मे 'तर पट्टा ऊपर पट्टा' तथा श्री पराशरक छद्मनामसं १९७४मे 'दरिद्रछिम्मड़ि' उपन्यास मिथिला मिहिरमे धारा-वाही प्रकाशित भेल अछि।

'दरिद्रछिम्मड़ि' यद्यपि उपन्यासक गुणसं मण्डित अछि, तथापि लेखक एकरा 'मनकथा' कहलनि अछि। एहि तरहें 'मनकथा' नामक एक टा स्वतन्त्र विधाक सृष्टि करबाक श्रेय हिनका प्राप्त छनि।

'तर पट्टा ऊपर पट्टा' सेहो पर्याप्त चर्चित भेल अछि। डा० अमरेश पाठकक शब्दमे "तर पट्टा ऊपर पट्टामे पात्रक मनोविश्लेषणक चेष्टा कयल गेल अछि। एहि उपन्यासक आदर्शवादी युवक परमा सामाजिक कुरीतिकें दूर करबाक हेतु प्रयत्नशील होइत अछि किन्तु लीलाधर बाबू ओकर प्रयासकें विफल करऽ चाहैत छथि। जमुनीक संग लीलाधर बाबूक सम्बन्ध तथा गंगाक मानसिक स्थितिक विश्लेषण कए लेखक सामाजिक जीवनक जे चित्र अंकित करैत छथि ताहिसं लेखकक दृष्टि-कोणक परिचय भेटैत अछि। चरित्र-चित्रणमे स्वाभाविकता अछि।" डा० 'श्रीश'क मतानुसार "एहि मध्य सामाजिक ओ मानसिक समस्याक संग-संग विलक्षण चित्रण भेल अछि जे उपन्यासक इतिहासमे अभिनव वस्तु थिक। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक दृष्टिएं सेहो एहि उपन्यासक विशेष महत्त्व अछि। चरित्र-चित्रणक सूक्ष्मताक दृष्टिएं एहि उपन्यासकें उत्कृष्ट कोटिक कहल जाए सकैत अछि।"

कथाकारक रूपमे 'भारती' लऽ कऽ ई मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयलनि आ लगले चर्चित-स्थापित भऽ गेलाह। 'भारती' आ ओहि समयक आनो कथामे बंगलाक भावुकताक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होइछ, किन्तु शिल्प आ विषय-वस्तुक समुचित उपस्थापन ओ तकर अन्त धरि सम्यक् निर्वाहक दृष्टिसं हिनक कथाक महत्त्व अपन समकालीन कथाकारलोकनिमे ककरोसं कम नहि अछि। फूल दीदी, सरस गल्प, फूटल घैल. छुतहर, एक सिंघाड़ा : एक चाय, छोट-छीन बात हिनक प्रसिद्ध कथा अछि। "प्रारम्भिक मैथिली कथाक शुद्ध सुधारवादी प्रवृत्तिमे बंगला-कथाक भाव-प्रवणताक पुट दैत व्यक्तिक अन्तःप्रवृत्तिमे पैसबाक चेष्टा हिनक कथामे भेटैत अछि।"

'सन्दर्भ'मे हिनक तीस गोट आलोचनात्मक निबन्ध अछि, जे सात खण्डमे बाँटल अछि, यथा—नाट्य सन्दर्भ (७ निबन्ध), कथा-संदर्भ (७ निबन्ध),

औपन्यासिक सन्दर्भ (१ निबन्ध), नवताक सन्दर्भमे (• निबन्ध), आलोचना-सन्दर्भ (१ निबन्ध), भाषा-साहित्यक सन्दर्भ (४ निबन्ध) तथा विविध सन्दर्भ (४ निबन्ध)। ... ई सूचित कऽ देल अछि जे एकर भूमिकामे लेखक कहैत छथि—"पोथीक नाममे ई सूचित ... सन्दर्भसं ... विषय-वस्तुक एहिमे चर्च नहि होयत। अर्थात् नाटक, कथा, उपन्यास, नवकविता आदि विविध विधाक साहित्यक प्रसंग जे समय-समयपर गोष्ठीक मध्य-मे वा आनो अवसर पर चर्च-चर्च होइत रहल अछि आ ताहिमे जे अनटोटल विचार ... तकरे आधार बनाकऽ सभ विधापर विचार कयल रखबाक प्रयास होइत रहल अछि, हमर विचार अथवा हमर विश्लेषण बहुतो व्यक्तिकें गेल अछि। भऽ सकैत अछि, ... भेल बुझि अनसोहांत आ एकांगी प्रतीत होइनि।" लेखक कतहु-कतहु एकदम कटु ... ओहि ठाम पड़ैत छथि। जतऽ आलोचना व्यक्तिविशेषकें लक्ष्य कऽ कयल गेल अछि, प्रायः किछु संयमक आवश्यकता छल। एहिमे व्यक्त विचार विवाद-रहित नहि अछि, मुदा आलोचना-क्षेत्रमे एकर महत्त्व निर्विवाद अछि।

कविक रूपमे सेहो हिनक यश अछि। हिनक काव्य-प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत प्रो० रमानाथ झा लिखने छथि— 'ई युगभावनाक स्पन्दनशील कवि छथि आओर जे किछु लिखैत छथि ताहिमे भाव-विन्यास स्पष्ट, अभिव्यक्ति-प्रणाली सरल एवं भाषा-शैली परिमार्जित होइत छनि।"

ई गतानुगतिक छन्दमे कोनो विषयपर जतबे सहजतासँ पद रचि सकैत छथि ततबे सहजतासं नव भावबोधयुक्त कविताक रचना कऽ सकैत छथि। हिनक रचनामे भ.गल यथार्थ भेटत, युगक वैषम्य भेटत, दीन-दलितक अन्तर्भाव भेटत। हिनक कवितामे संवेग नहि विचारक मन्थन अछि, कल्पनाक उड़ान नहि, यथार्थक चिन्तन अछि। तें हिनक कविताकें जँ से लोकप्रियता नहि प्राप्त भेलैक तं स्वाभाविके।

'तीन चित्र' हिनक महत्त्वपूर्ण कविता थिक, जाहिमे बाढ़िक प्रतीक लऽकऽ कवि आजुक युगक समतावादी विचारपर कसिकऽ व्यंग्य कयलनि अछि—

मानवताक विकास-बाढ़िमे ईर्ष्या नङ्टे नाच नचैए
प्रतिद्वन्द्विता लहरि-लहरैए, भेदभाव झंडा फहरैए
राजनीति तं ऊँच मचानक तऽरे-तऽर कटाओ करैए
दंभ बान्हकें तोड़ि रहल छै, गुट्ट नावकें फोड़ि रहल छै
जाति जड़िकें कोड़ि रहल छै, स्वार्थ-मृतककेर
आगाँ-पाछाँ बटुआ फोलि हथोड़ि रहल छै
मानवताक विकास बाढ़िमे छोट-पैघ सभ संग भसैए
नेना-बूढ़ जोआन भसैए, काबिल ओ विद्वान भसैए
लोक, बलेल, अकान भसैए
बाढ़ि अंकमे ऊँच-नीच सभ एके र समान भसैए

एहि कविताक प्रसंग प्रो० रमानाथ झा कहने छथि—"तीन चित्र'मे बाढ़िक प्रस्तुत-वर्णनक प्रतीक लए संसारमे भौतिकता एवं ईर्ष्या द्वेषादिक आधिक्यक वर्णन बड़ यथार्थ भेल अछि।" कामरूप-छद्मनामसं 'मिहिर'मे हिनक शताधिक कविता ओ गजल प्रकाशित भऽ चुकल अछि। हिनक एहन कवितासभमे जीवनक धाह अछि, प्रवाह अछि, चिन्तनक सूक्ष्मता अछि। एक उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

आँखिक एहि आकाशमे
क.व किछु नहि अछि
अभाव सभ कथूक अछि
आँ‍ि- एहि लेन्सपर
छल उरेहल नव-नव आखर
छल नेमा-भुटकाक थोरानुक्की
छल प्रथम मिलनक उत्सुकता
छल अपरिचितक प्रति शंका-आशंका
एही आँखिक निर्देशपर उठैत-खसैत छल डे।
मेटाइत आखरक स्था। जानि ने की लेत
लेन्सक आखरमे से नहि ज्ञात होइत अछि।

हिनक अतुकान्त कवितामे गद्यात्मकता आबि गेल अछि, तकर कारण ई भऽ सकैत अछि जे हिनक चिन्तनकेँ अभिव्यक्त करबाकाल हिनक 'पत्रकार' तेना भऽक प्रभावी भऽ जाइत अछि जे हिनक 'कवि'केँ धकियाकऽ पाछाँ कऽ दैत अछि। आधुनिक युगक यांत्रिकताक वर्णन करैत काल कवि स्वयं भावकविता-सर्जनाक तथाकथित यंत्रसँ चालित बुझि पड़ैत छथि। यंत्र-युगमे जेना भावुकताक अभाव देखल जाइछ, तहिना हिनक एहन कवितामे भावना-पक्ष लुप्त नहि तँ गौण अवश्य भेल लगैत अछि—

व्यक्तिगत दुःख आ सहानुभूतिक भावुकता
यंत्रक हेतु वर्जित अछि
यंत्रकेँ अपन एकत्वक कोनो अधिकार नहि छैक
एक यंत्र दोसर यंत्रसँ चालित अछि
तेँ यंत्रक यूनियन सर्वोपरि अछि
वेतनक बढ़ोत्तरी लेल हड़ताल-घेराव
हमरालोकनिक एकताक मूलाधार थिक
स्वार्थक एकताक आधारपर हम छी
अनचिन्हार स्वार्थ एहि एकताक बाधक अछि
तेँ एतऽ तकर गप्प नहि होयत।

गद्य हो कि पद्य—भाषा हिनक बड़ परिमार्जित होइछ, अभिव्यक्ति बड़ साफ होइछ, अपन हृदयक भाव बड़ शिष्ट-विशिष्ट रूपेँ पाठकक सोझाँ ई राखि दैत छथि।

मैथिली-आन्दोलनमे सेहो हिनक योगदान बिसरबाक वस्तु नहि थिक। 'मिहिर'क सम्पादकीय टिप्पणीमे मैथिलीक छोट-पैघ सभ समस्याकेँ ई स्वर दैत रहलाह अछि, जनमत जगबैत रहलाह अछि, सरकारक निन्न तोड़ैत रहलाह अछि, समय-समयपर मार्गदर्शन करैत रहलाह अछि।

संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे 'शेखर' मैथिली साहित्यक ओहन शिल्पी छथि जे जखन जे चाहैत छथि, गढ़ि लैत छथि। जे ई गढ़ैत छथि से मैथिलीक गम्भीर अध्येता-समालोचकसँ लऽकऽ सकलसाधारण पाठकक ध्यान समान रूपेँ आकृष्ट कऽ लैत अछि। हिनक स्थान, विभिन्न रूपमे, मैथिली साहित्यमे अमिट भऽ गेल अछि।



डा० श्री जयकान्त मिश्र

मैथिली साहित्यक प्रामाणिक इतिहास अंगरेजीमे लिखिकऽ एहि भाषाक गौरवमय प्राचीन ओ वर्तमानकालीन साहित्यसँ अन्यान्य भाषा-भाषीकेँ सर्वप्रथम परिचय करबाक श्रेय डा० जयकान्त मिश्रकेँ छनि। हिनक A History of Maithili Literatureक दुनू भाग ने केवल भाषान्तरेक विद्वानकेँ मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध परिचय देलक, अपितु अपनो समाजक लोककेँ एकठाम अपन साहित्यक छिड़िआयल मणिसँ परिचित करौलक अछि। हिनक मान्यतासँ ककरो असहमति भऽ सकैत छैक, किन्तु अनुसन्धान तथा तथ्य-संग्रहक लेल कयल गेल हिनक प्रयास ओ परिश्रमकेँ केओ नकारि नहि सकैत अछि। इतिहासकारक रूपमे, वर्तमान कालमे, हिनक स्थान अग्रगण्य अछि।

हिनक घर मधुबनी जिलाक गजहरा थिकनि। हिनक जन्म भेलनि १९ नवम्बर १९२२ ई०केँ, काशीमे। म० म० डा० उमेश मिश्रक जेठ बालक डा० जयकान्त मिश्र काशी आ प्रयागमे अध्ययन कयलनि। यद्यपि ई अंगरेजी साहित्यमे एम० ए० कयने छथि, किन्तु कौलिक संस्कारक कारणे संस्कृतक सेहो नीक ज्ञान रखैत छथि। १९४८ ई०सँ ई प्रयाग विश्वविद्यालयमे अंगरेजीक प्राध्यापक छलाह, जतऽ अंगरेजी विभागक अध्यक्षक उच्च पद धरिकेँ सुशोभित कयलनि। ओहिठामसँ ई १९८१मे अवकाश प्राप्त कयलनि। ई मैथिलीक मान्य इतिहासकार तँ छथिहे, ताहि कारणे अनुसन्धाता सेहो उच्च कोटिक छथि। देशक विभिन्न विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे मैथिली साहित्यक अवलोकन कयलाक बाद दू बेर—१९४६ ओ १९७मे—नेपालक यात्रा सेहो एहि प्रसंग ई कयने छथि। एहि क्रममे ई बहुतो ग्रन्थक अन्वेषण कयलनि, यथा ज्योतिरीश्वर-कृत मैथिली धूर्तसमागम। एकर अनुसन्धानक फलस्वरूप मैथिली-कविता एवं नाटकक प्राचीनता आओर एक शताब्दी पाछाँ घुसकि गेल अछि। ई एकर इतिहासकेँ विद्यापतिसँ पूर्व लऽ गेलाह—१३२५ ई०मे।

ई उच्च कोटिक समालोचक छथि। मिथिलाक प्रसिद्ध कीर्तनियाँ नाटकपर हिनक एक पोथी प्रकाशित अछि। प्रो० रमानाथ झा कीर्तनियाँकेँ नाटक नहि, नाच मानने छथि। किन्तु डा० मिश्र हुनक मान्यताकेँ विभिन्न प्रमाणसँ खण्डित करबाक चेष्टा कयलनि अछि आ अपन तर्कसँ ई सिद्ध कयलनि अछि जे कीर्तनियाँ वस्तुतः नाटके छल, नाच नहि। एहि विवादक निराकरण होयब यद्यपि एखन बाँकिए अछि, तथापि डा० मिश्रक तर्क ठोस धरातलपर अछि, तकरा अधिकांश विद्वान स्वीकार करैत छथि।

ग्रन्थ-सम्पादन-क्षमता सेहो हिनकामे विलक्षण छनि। लगभग दस टा महत्त्वपूर्ण प्राचीन मैथिली-ग्रन्थक सम्पादन, किछु स्वयं तँ किछु म० म० डॉ० उमेश मिश्रक संग मिलिकऽ, ई कयने छथि। ज्योतिरीश्वर-कृत मैथिली धूर्तसमागम तथा विद्यापतिक अवहट्ट ग्रन्थ कीर्तिपताकाकेँ सम्पादित कऽ पहिल बेर यैह प्रकाशित करौने छथि। हिनक सम्पादित अन्य ऐतिहासिक महत्त्वक ग्रन्थ

थिक—विद्यापतिक गोरक्ष-विजय, भूपतीन्द्रमल्ल कृत विद्या-विलाप, नन्दीपति-कृत श्रीकृष्णकेलिमाला, रमापति उपाध्याय कृत रुक्मिणी-परिणय, कान्हाराम-कृत गौरी-स्वयंवर, शिवदत्त-कृत गौरी-परिणय आदि। 'कीर्तनियाँ नाटक'क नामसँ एहि विषयक एक पुस्तकक लेखन-सम्पादन सेहो ई कयने छथि।

हिनक आलोचनाक यद्यपि एकमात्र पोथी 'कीर्तनिया नाटक' प्रकाशित अछि, किन्तु विभिन्न पत्र-पत्रिका तथा संकलन सभमे साहित्यक नव-पुरान अनेक विधापर हिनक रचना कम नहि आयल अछि। हिनक एहन रचना सभ विचार-प्रधान ओ अनुसन्धानपरक अछि। हिनक दृष्टिकोणसँ सभ ठाम सभकें सहमति होयब आवश्यक नहि, किंतु अपन मान्यताकें ई बड़ स्पष्टतासँ, खोलिकऽ, अपन आलोचनात्मक निबन्धमे रखने छथि। इतिहासकार तँ समालोचक होइतहिँ अछि, किंतु समालोचना केवल इतिहासे नहि थिक। इतिहासकारक रूपमे सुप्रतिष्ठित डॉ० मिश्रक समालोचकक यथार्थ रूपक दर्शन तखनहिँ भऽ सकत, जखन हिनक समालोचनाक कोनो पोथी आओत।

मैथिलीकें एखन सभसँ अधिक जरूर प्रयोजन अछि, ताहिमेसँ एक थिक शब्दकोश। एहिपर ई कार्य कऽ रहल छथि। एक खण्ड ओकर प्रकाशितो भऽ गेल अछि—'अ' अक्षरपर। जाहि साज-सज्जाक संग एकर ई खण्ड प्रकाशित भेल अछि, तहिना जँ काज द्रुत गतिएँ आगाँ बढ़ल जाय आ अन्यो अक्षरपर कोश छापल जाय तँ हिनक ई सेवा मैथिलीक लेल सर्वाधिक महत्त्वक मानल जायत।

प्रो० रमानाथ झाक देहावसानक बाद १९७२ ई०मे, ई साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह। एहि पदपर ई १९८२ धरि रहलाह। मैथिलीक प्रतिनिधिक हैसियतसँ अकादमी द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तक आ पत्रिका आदिमे मैथिलीसँ सम्बन्धित हिनक निबन्ध छपैत रहलनि अछि, जाहिसँ अन्याय भाषाभाषीक समक्ष मैथिलीक स्वरूप स्पष्ट होइत रहलैक अछि।

साहित्य अकादमीमे मैथिलीकें सम्मिलित करयबामे हिनक योगदान बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। दिल्लीमे मैथिली पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजित कऽ ओकर उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूसँ करा, एहि साहित्यक उत्कृष्टताक परिचय देशकें देबाक श्रेय हिनका छनि। साहित्य अकादमी द्वारा मैथिलीकें मान्यता भेटबामे एहि आयोजनक बहुत अधिक महत्त्व छैक।

एहि सभक अतिरिक्त मिथिलांचलमे प्राथमिक कक्षामे मैथिलीक माध्यमे शिक्षाकें अनिवार्य बनयबाक लेल सरकारपर ई बहुत दिनसँ दबाब दैत आबि रहलाह अछि। हिनक स्पष्ट मान्यता छनि जे मैथिलीक प्रगति तावत धरि नहि भऽ सकैछ जावत एकरा प्राथमिक कक्षामे शिक्षाक माध्यम नहि बनाओल जयतैक। एहि सम्बन्धमे ई जनमतकें जगयबाक लेल सेहो कोनो-ने-कोनो रूपें चेष्टा करैत रहैत छथि।

डा० जयकान्त मिश्रक ओना सभ अवदान मैथिलीक लेल महत्त्वपूर्ण अछि, किंतु ताहूमे जँ एक टाक चर्च कयल जायत तँ ओ हिनक इतिहास होयत। हिनक इतिहास सन् १९४९-५० ई०मे प्रकाशित भेल। तहियासँ ई मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध अध्ययनक लेल आइ धरि आधार-ग्रन्थ बनल अछि।

मैथिली भाषा आ साहित्यक सर्वेक्षणक प्रथम प्रयास कयलनि डॉ० मिश्र अपन एहि इतिहासमे। डॉ० अमरनाथ झा सेहो मुक्तकंठे एकरा स्वीकार करैत एकर भूमिकामे लिखने छथि—"The present work by Dr. Jayakanta Mishra is the first attempt to make a comprehensive survey of Mithila's language and literature. It is a work that must have entailed long and patient investigation. It will be a valuable addition to the histories of Indian literatures and will prove of great use to all scholars."

डा० सुनीतिकुमार चटर्जी एकर प्रशंसा करैत लिखने छथि—"It for the first time 'puts on the map'. so to say, by acquiring it for science, the literature of Maithili."

हिनक इतिहासक प्रथम भागमे आदिकाल आ मध्यकालक विवेचन अछि तथा दोसर भागमे आधुनिक कालक।

अंगरेजी साहित्यक प्रभाव जखन मैथिलीपर पड़ऽ लागल तखन एहू साहित्यमे आधुनिकताक प्रवेश भऽ गेल। आधुनिक युग चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि। हिनक इतिहासक दोसर भाग एतहिसँ शुरू होइत अछि। जहिया ई लिखल गेल तहिया आजुक स्थापित साहित्यकारसभ नवयुवक छलाह, तेँ हुनकालोकनिक प्रतिभाक सम्यक् विश्लेषण ओहिमे होयब संभव नहि छल। परिशिष्ट एहि लऽ कऽ महत्त्वपूर्ण अछि जे ओहिमे वर्तमान युगक अनेक साहित्यकारक संक्षिप्त जीवन-परिचय देल गेल अछि।

जेना मैथिली कवितामे

१९७६ ई०मे साहित्य अकादमी द्वारा हिनक एक टलैत मेलनि आ अंगरेजीमे प्रकाशित भेल अछि—History of Maithili Literature. एहिमे पूर्वोक्त इतिहासभ वर्णित विषयक संक्षेपमे चर्चा कयल गेल अछि तथा ओकर बाद विभिन्न विधामे भेल प्रगतिकें देखाओल गेल अछि। हिनक ई इतिहास हिनक पूर्वोक्त इतिहाससँ भिन्न अछि, कैक टा विन्दुपर। पहिल तँ ई जे हिनक पहिलुक इतिहास दू भागमे विभक्त अछि—आदिकाल आ मध्यकाल—पहिल भाग, आधुनिक काल—दोसर भाग। ई इतिहास तीनू काल एक्के जिल्दमे समेटने अछि। पूर्वक इतिहासमे जे मत ई प्रतिपादित कयने छलाह, तकर पक्षमे, मूलसँ उद्धरण सेहो प्रस्तुत कयने छलाह। अर्थात् ओहिमे सोदाहरण व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि, किंतु एहि इतिहासमे उदाहरणस्वरूप मैथिलीक कोनो अंश उद्धृत नहि कयल गेल अछि। पूर्वक इतिहासक दोसर भागमे, परिशिष्टमे मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार-सभक परिचयात्मक (जन्म, घर, कृति आदि) संक्षिप्त टिप्पणी देल गेल अछि, किंतु एहिमे तकर अभाव अछि।

पूर्व-इतिहासक दोसर भागक प्रकाशनक बादक प्रगतिकें एहिमे देखाओल गेल अछि अवश्य, किंतु ओकरा जतेक बेसी महत्त्व देबाक चाही, तकर किछु अभाव बुझना जाइछ फलत: नवीन साहित्यक प्रगतिकें ई ओतेक व्यापक रूपें ज्ञान नहि करा सकल छथि जतेक प्राचीन साहित्यक प्रगतिकें, जखन कि मैथिलीक सभ अंगमे एखन जे विकास भऽ रहल अछि, सेहो समान महत्त्वक अछि।

मैथिली तथा अंगरेजीमे प्रकाशित हिनक विविध निबन्ध विभिन्न कारणें महत्त्वपूर्ण अछि।

□

रामकृष्ण झा 'किसुन'

पण्डित रामकृष्ण झा 'किसुन' सहरसा जिलामे, बर्तमान कालमे, मैथिलाक ज्योतिकें घर-घर पहुँचौनिहार, मैथिली-आन्दोलनक सजग प्रहरी, साहित्यक अनेक विधामे विश्वासपूर्वक लेखनी चलौनिहार छलाह। मूलतः ई कवि छलाह, तखन कथाक रचना कयलनि, नाटको लिखलनि, निबन्ध, संस्मरण आ आलोचना दिस सेहो अपन प्रतिभाकें देखौलनि, पोथीक सम्पादनो कयलनि। ई कम अवधिमे कम नहि लिखलनि आ जे लिखलनि से सुविचारित लिखलनि, आलोचकक ध्यान अपना दिस आकृष्ट करबला लिखलनि, उच्च साहित्यक मानमूल्यक वस्तु लिखलनि ई विपुल प्रतिभाक संग आयल छलाह, किन्तु मैथिलीक दुर्भाग्य जे जखन ई अपन श्रेष्ठ वस्तु दैए रहल छलाह कि संसारसँ हठात उठि गेलाह।

सहरसा जिलाक सुपौलमे हिनक जन्म १ जनवरी १९२३ ई० कें भेल छलनि। संस्कृत साहित्यक ई मेधावी छात्र छलाह। सुपौल उच्च विद्यालयमे संस्कृतक अध्यापक जीवन पर्यन्त रहलाह। सहरसा जिलाक साहित्यिक गतिविधिक ई केन्द्र छलाह तथा पुरान आ नव दुनू विचारधाराक साहित्यकारक बीच एकरंग प्रतिष्ठित छलाह। १५ जून १९७० ई०कें पटनामे हिनक निधन भऽ गेलनि।

कविचूडामणि श्री मधुपक प्रेरणासँ ई मैथिलीमे प्रवेश कयलनि--कविक [illegible] परम्परागत शैलीमे गीत-कविता लिखैत छलाह, किन्तु जखन मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित [illegible] मैथिलीयोक साहित्यकार ओकर स्पर्शसँ अपनामे स्फूर्तिक मैथिलीक प्रतिनिधिक [illegible] गेलाह तँ अपन पीढ़ीमे सभसँ पहिने 'किसुनें' एहि वातावरणमे आदिमे मैथि[illegible] अपनाकें मिला लेलनि। हिनक जीवनकालमे प्रकाशित एकमात्र कविता-संग्रह 'आत्मनेपद' (१९६३) तकर प्रमाण थिक। एकर शुरूवला कवितासभ नवीन शिल्प-शैली आ आधुनिक भावबोधक अनुरूप अछि, किन्तु आखिरीक किछु कविता-गीत मैथिलीक परम्परागत शैलीमे लिखल गेल अछि। एहिमे कुल ३१ गोट कविता संगृहीत अछि। एकर भूमिका सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ओहिमे नवीन कविताक प्रकृति आ प्रवृत्तिक समालोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि तथा नवकविताक आंकालति सेहो कयल गेल अछि। वस्तुतः नवकवितापर राजकमलक 'स्वरगंधा'क भूमिकाक बाद वैज्ञानिक दृष्टिकोण एहीमे स्पष्ट कयल गेल अछि।

हिनक मृत्युक बाद, एम्हर आबिकऽ (१९८२ मे,) प्रो० मायानन्द मिश्र तथा केदार काननक संयुक्त संपादनमे हिनक समस्त उपलब्ध रचनाक 'किसुन-रचनावली'क अन्तर्गत तीन खण्डमे प्रकाशन भेल अछि। तीनू खंडक भिन्न-भिन्न तीन टा नाम अछि। पहिल खंडक नाम थिक 'क्रमशः' जाहिमे हिनक ९३ गोट काव्य-रचना संगृहीत कयल गेल अछि। एहिमे आत्मनेपदक कुल कविता सेहो आबि गेल अछि। दोसर खंड कथाक अछि, जकर नाम थिक 'स्वयंवर'। एहिमे २२ टा कथा अछि। तेसर आ अन्तिम खंडमे हिनक विविध विषयक निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, भूमिका, एक टा एकांकी आदि तीस टा गद्य-रचना अछि। एहि खण्डक नाम थिक 'वैचारिकी'।

हिनका द्वारा संकलित-संपादित 'मैथिली नवकविता' नामक महत्त्वपूर्ण काव्य-संकलन हिनक निधनक किछु दिनक बाद प्रकाशमे आयल। मैथिलीक नवीन कविताक ई पहिल संकलन थिक, जाहिमे श्री यात्रीसँ लऽ श्री रामानुग्रह झा धरि सोरह कविक केवल नवकविता संकलित अछि, संगहि सभ कविक परिचयक संग कविता पर कविक विचार सेहो देल गेल अछि। एकर सम्पादकीय 'किसुनें'क लिखल अछि आ एहुमे ई नवकवितापर नीक जकाँ विचार कयने छथि। नव कविताक पहिल संकलन होयबाक कारणें एकर ऐतिहासिक महत्त्व तँ अछिए, संगहि उच्च संपादन-दृष्टिक कारणें एखनहुँ नवकविताक ई एकमात्र प्रतिनिधि संकलन मानल जाइछ।

कवि स्वयं कविताकें 'अपनाकें अभिव्यक्त करबाक सभसँ उत्तम एवं सुलभ कोटिक आ बेसी सशक्त माध्यम' मानैत छथि। हिनक दृष्टिमे "दिन-राति दौड़ैत पड़ाइत जाइत संसारमे श्रान्त-क्लान्त व्यक्ति समक जीविका, जीवन आ आस्तित्वक संघर्षमे आत्मरक्षार्थ व्यग्र प्रयत्न, आर्थिक मारि, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक कठोरता, परम्पराक अरगड़ा, ऑटोमेटिक मशीनक प्रतिद्वन्द्विता आ मानवीय विवशता, अभाव, कुंठा, बेकारी-बेगारी, चाटुकारिता, अवसरवादिता, बॉसिज्म, मानसिक आ शारीरिक कृत्रिमता, धक्कमधुक्की, ग्लानि, आक्रोश, निराशा, जिजीविषा, संत्रास आ विद्रोह—एहि सभक आकृत्रिम अभिव्यक्ति थिक मैथिलीक नवकविता।"

मैथिली कविताक प्रायः कोनो प्रवृत्ति नहि बाँचल होयतैक, जाहिमे ई स्तरीय रचना करबाक सफल प्रयास नहि कयने होथि। पूर्वमे ई गीते लिखैत छलाह तँ मौलिक, प्रवाहपूर्ण, ओजस्वी ओ प्रसाद गुणयुक्त, किन्तु जेना-जेना मैथिली कवितामे नवीन प्रवृत्ति जोर पकड़ैत गेलैक, हिनक लेखनियों ओम्हरे मोड़ लैत गेलनि आ नवकविता आ तथाकथित अकविताक क्षेत्रमे ओहिना सहजतासँ प्रवेश कऽ गेलाह। मुदा, अत्याधुनिक नवकविता किंवा अकवितामे जे दुरूहता, अनास्था, अर्थापत्ति आ कतहु-कतहु अश्लीलता आदि दुर्गुण आबि गेलैक अछि, ताहिसँ ई साफ बाँचल छथि, एवं ओहिमे जे स्वाभाविकता, अनुभूतिक यथावत् प्रस्तुतीकरण, आडम्बरहीनता तथा वर्तमान दुरवस्थाक प्रति विद्रोह आदि विशेषता छैक, तकर हार्दिक समर्थक आ पूर्ण प्रचारक छथि। हिनका प्रगतिवादक प्रतिनिधि कविक रूपमे स्वीकार कयल जाइछ :

प्रो० रमानाथ झा हिनक काव्य-प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत लिखने छथि—"किसुनजी मैथिलीक प्रौढ़ कविमे छथि जे मैथिली काव्यक नवीनतम प्रवृत्तिकें आत्मसात करबामे ककरहुसँ पाछाँ नहि रहैत छथि। इएह प्रगतिशीलता हिनक काव्य-प्रवृत्तिक विकासक विशेषता थिक। ई एमहर प्रयोगवादी वा नव कविताक रचना दिशि विशेष प्रवृत्त भेल छथि आओर ताहिमे युग-जीवनक कुण्ठा एवं अनास्थाक चित्रण कयने छथि वैयक्तिक आ नवीन बिम्ब तथा प्रतीक ग्रहण कए। किसुनजीक अधिकांश रचनामे विषय ओ भावक बौद्धिक प्रतिपादन कविताक प्राण रागात्मकतापर आवरण सन दैत प्रतीत होइत अछि। तें जाहि रचनामे ओ बौद्धिकताकें त्यागि विशुद्ध भावाभिव्यक्तिक भूमिपर अवतरित होइत छथि, से शुद्ध कवित्वक दृष्टिएँ हिनक उत्कृष्ट रचना होइत अछि।"

वसन्त-वर्णन मैथिली कविक लेल प्रायः अनिवार्य रहल अछि। किसुन सेहो एकर आगमनक अनुभव करैत छथि, किन्तु बोध कतेक टटका आ कतेक प्रभावी अछि, से द्रष्टव्य—

सरिपहुँ अलि, आबि गेल भरिसक वसन्त
बाजि उठल गाछीमे कोकिल ई बात
देलक सन्देश सैह गन्धवह बसात
विहुँसि उठल विटप, बेलि किशुक, पलास
आम, जामु आ बबूर भऽ उठल सहास
सिहरि उठल रोम-रोम पावि मधुर स्पर्श
जन-मनमे गूँजि उठल मधुपक नव हर्ष
अनाहूत प्रणय-प्यास जागल अनन्त
सरिपहुँ अलि, आवि गेल भरिसक वसन्त

नव वर्षक एक प्रतिक्रियामे हिनक नवीन भाव-बोध कोना स्फुट भऽ गेल अछि, से देखबायोग्य अछि—

शास्त्री जी बजलाह विहुँसिकऽ
आयल सालक पहिलुक भोर
काल-गगनमे ऊड़ि रहल जे नियतिक गुड्डी
जोड़ि रहल संसार ताहिमे
जीवन-तागक पुनि ई नबका छोर

वर्तमानकालीन सामाजिक पतनकेँ जेहन सशक्त अभिव्यक्ति ई देलनि अछि से आन ठाम भेटब दुर्लभ—

भेला प्रभावित एक्सपर्ट जी
कोशिश-पैरवी कऽ अयलहुँ अछि
फल्लाँजीकेँ चाह पियाकऽ
'मेटनी शो' धरि देखलहुँ सङ-सङ
कहलनि जे 'फिर खोज करेंगे।'

हिनक निम्नलिखित गीतक एहि अंशमे ओज आ प्रसादगुणक तेहन मणि-कांचन संयोग अछि जे चित्तकेँ अनायास आकृष्ट कऽ लैछ—

हमरा स्वरमे गूँजि रहल अछि गगन असीमित
जागू यौवन, हे अनंत तेजोमय दीपित
जागू हे दुर्द्धर्ष शक्तिधर अटल अकम्पित
जागू उठू करू नव युगमे प्राण संचरित
अग्निवीणपर युगक गीत हम गावि रहल छी
लऽ उद्दाम प्रवाह प्रबल हम आबि रहल छी

प्रो॰ शैलेन्द्र मोहन झाक ई उक्ति सत्य अछि—"वर्तमान युगक संघर्षशील मानवक प्रगति-ऋचाक उद्गाता रामकृष्ण झा 'किसुन'क कविता मैथिली साहित्यमे

अपन महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि। वर्तमानकालीन कविताक प्रवृत्तिक विश्लेषण करबाक काल किसुनजीक विभिन्न रचना मानदण्डक काज करत। हिनक कवितामे नव युगक आशा आ विश्वासक झंकार स्पष्ट रूपसँ सूनि पड़ैत अछि।"

१९६० सँ, 'मिथिला मिहिर'क पुनर्प्रकाशन भेलापर ई कथा सेहो लिखऽ लगलाह आ दस वर्षक अवधिमे पर्याप्त कथा लिखि लेलनि। हिनक कतिपय कथा कथ्यक स्पष्टताक दृष्टिसँ, वातावरणक सटीक सर्जनक दृष्टिसँ तथा पात्रक उचित ट्रीटमेंटक दृष्टिसँ उल्लेख्य अछि। समाजक बदलैत मान्यता, संबंधक टूटन आदि हिनक कथाक वर्ण्यविषय अछि।

प्रो॰ मायानन्द मिश्र हिनक कथाक सम्बन्धमे विचार करैत कहने छथि—"हिनक गल्प सभक कथावस्तु कलात्मकता, घटना-विन्यासक चमत्कार, चरित्र-चित्रणक मनोवैज्ञानिकता, वातावरणक सजीवता ओ मांसलता तथा वर्णन-शैलीक रोचकता हिनक गल्प-शिल्पक अद्भुत परिचय दैत अछि। हिनक गल्पसभमे युगीन यथार्थवाद तथा रोमांटिकताक विलक्षण सामंजस्य भेल अछि जाहिमे पछिला युगक शिल्पबोध तथा अपना युगक प्रयोगधर्मिता दुनू अति संतुलित रूपमे भेटि जाइत अछि। 'हिनक पुरान पत्रः टटका बात', 'एक अंक तीन दृश्य' तथा 'सांकरक आधार' नामक गल्प निश्चित रूपेँ मैथिली गल्प-विकास-यात्राक एकटा मानक डेग रूपमे मानल जायत। एहि युगक अधिकांश गल्प जकाँ हिनकहु गल्प शैलिक सम्पत्ति तँ थिक, किन्तु युग-चेतनाक विन्दु-वैभव नहि।"

'उदना रे मोर कतय गेला' नामक नाटक सेहो हिनक लिखल अछि जकर अभिनय १९५६ ई॰मे अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक प्रथम अधिवेशनक अवसरपर दरभंगामे भेल छल। मंचक दृष्टिसँ एकरा जतेक सफल नाटक मानल जा सकैछ, साहित्यिक दृष्टिसँ ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि।

'वैचारिकी' मे संकलित समालोचनात्मक निबन्ध, जे पत्र-पत्रिकामे पूर्व प्रकाशित छल, मुख्यतः नवकवितापर आधारित अछि। ओहि आधारपर हिनका नवकविताक प्रवक्ता मानल जाय लगलनि। हिनक निबन्धक मुख्य विषय साहित्यिक अछि जाहिमे लेखकक अनुसन्धानात्मक दृष्टि परिलक्षित होइत अछि। किछु अन्यो विषयपर लेख अछि—यथा वैयक्तिक संस्मरण, सामाजिक समस्यापर आधारित निबन्ध—जाहिमे लेखकक हृदय आ मस्तिष्क—अभिव्यक्ति कला आ वस्तु-विवेचन—परिलक्षित होइत अछि। प्रो॰ मायानन्द मिश्रक विचारेँ "हिनक निबन्ध-रचना मैथिली निबन्ध विकास-आन्दोलनमे अपन परिमाणक दृष्टिमे भने महत्त्वपूर्ण नहि हो, किन्तु स्थापन-प्रवर्तन एवं शोध-प्रवृत्तिक कारणेँ मैथिली आलोचना-साहित्यक एकटा ऐतिहासिक उपलब्धि अवश्य कहाओत।"

स्वयं तँ साहित्यक प्रणयन करिते छलाह, अपन सम्पर्कमे अयनिहार कतेको गोटेकेँ ई मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा सेहो देने छलाह। अतएव, हिनका साहित्यकारक निर्माता सेहो कहल जाय तँ अत्युक्ति नहि होयत।

□

राजेश्वर झा

जतेक कम अवधिमे राजेश्वर झा जतेक संख्यामे पोथी लिखिकऽ प्रकाशित करौलनि, से सराहनीय थिक। एक दशकमे एक दर्जनसँ ऊपर पोथी लिखब, से अनुसन्धानात्मक गूढ़ ग्रन्थसँ लऽकऽ हास्यरसक सहज-सुलभ पोथी धरि, बिलक्षणे प्रतिभाक लोक बुते संभव थिक। राजेश्वर झा एहने प्रतिभाक लोक छलाह।

हिनक जन्म सहरसा जिलाक रघुआर नामक गाममे २५ अप्रैल १९२३ ई०के भेल छलनि। मैट्रिक कयलाक बाद हिनका विश्वविद्यालयीय शिक्षाक सुयोग नहि लगलनि तथा जीविका करबाक लेल विवश भऽ जाय पड़लनि। किछु दिन राजदरभंगाक सर्कलमे, किछु दिन पटनास्थ इंडियन नेशन प्रेसमे नौकरी कयलाक बाद ई पटनाक रीसर्च सोसाइटीमे जीविका प्राप्त कयलनि। ओही ठाम विभिन्न प्रकारक दुर्लभ ग्रन्थ पढ़बाक तथा विभिन्न तरहक विद्वानसँ सम्पर्क करबाक सुयोग प्राप्त भेलनि। ओतहि हिनकामे मातृभाषाक भण्डारकेँ अपन कृतिसँ भरबाक धुनि सवार भेलनि। आ, जहियासँ से धुनि सवार भेलनि तहियासँ अन्तिम साँस पर्यन्त मैथिलीक लेल ई सोचैत रहलाह, तन-मन-धनकेँ मैथिलीक पीठीपर उत्सर्ग करैत रहलाह। हिनक देहावसान २३ अप्रैल १९७७केँ भऽ गेलनि। मृत्युक बाद हिनक गवेषणात्मक पुस्तक 'अबहट्ट : उद्भव ओ विकास' पर हिनका १९७७क साहित्य अकादमी-पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलनि।

हिनक समस्त कृतिकेँ मोटा-मोटी तीन भागमे बाँटल जा सकैछ— अनुसन्धानात्मक, सर्जनात्मक तथा ऐतिहासिक-पौराणिक-लोकगाथापर आधारित।

अनुसन्धानात्मक कोटिमे सभसँ प्रमुख नाम अछि 'अबहट्ट : उद्भव ओ विकास'क, कारण एकरा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेल छैक। एकर अतिरिक्त निम्नलिखित पोथी प्रकाशित अछि— मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, पूर्वांचलक मध्यकालीन वैष्णव साहित्य।

सर्जनात्मक साहित्यमे अछि अपरिणीता (उपन्यास), दुखिया बाबाक खटरास (हास्य), एकादशी (कथा), शास्त्रार्थ, कन्दर्पीघाट, महाकवि विद्यापति (नाटक) आदि।

ऐतिहासिक-पौराणिक-लोकगाथापर आधारित कृतिक नाम थिक—विद्याधर कथा, उर्वशी, मेनका, धर्मव्याध-कथा, जट-जटिन, श्यामा-चकेबा, लोकगाथा-विवेचन, आदि।

अबहट्ट : उद्भव ओ विकास—अबहट्ट मध्यकालीन युगक पूर्वांचलक भाषा थिक, जकर प्रत्यक्ष प्रभाव आइ-काल्हि पूर्वांचलक समस्त भाषा यथा मैथिली, बंगला, असामी, उड़िया, नेपाली आदिपर पड़ल छैक। अबहट्टमे सातम शताब्दीसँ पन्द्रहम शताब्दी धरि अनेको उत्कृष्ट साहित्यिक कृतिक प्रणयन भेल। ई उक्त अवधिमे संबंधित क्षेत्रक 'सामान्य लोकक जीवनक परस्पर भाव-विनिमय एवं व्यवहारक भाषा छल जकरासँ पश्चात् काल समस्त उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय भाषाक उद्भव भेल।'

मैथिलीक प्रायः सभ प्राचीन युगक कविक रचना एहि भाषामे प्राप्त अछि। एहन भाषाक उद्भव कोना भेल आ एकर विकास कोन रूपमे होइत गेल, तकर विवेचन प्रस्तुत कृतिमे कयल गेल अछि।

अध्ययनक सुविधार्थ विषयकेँ तीन अध्यायमे बाँटल गेल अछि--अबहट्ट: उद्भव एवं प्रस्तावित क्षेत्र, प्रारम्भिक साहित्य, परिनिष्ठ एवं रास-साहित्य। एकर अतिरिक्त प्रारम्भमे प्रस्तावना आ अंतमे उपसंहार अछि।

एकर उद्भव एवं विकासकेँ भाषा-विज्ञान तथा व्याकरणक कसौटीपर कसि सम्यक् रूपमे विचार कयल गेल अछि। अन्तिम अध्यायमे मैथिल कविक अबहट्ट-कृतिक विषय-वस्तु एवं अन्य ज्ञातव्य तथ्यसँ अवगत करयबाक चेष्टा कयल गेल अछि। दीनानाथ झा एकर 'आमुख'मे उचिते लिखने छथि--"मैथिलीमे अबहट्टपर रोचक एवं सारगर्भ ग्रन्थ लिखिकऽ पण्डित राजेश्वर झा अपन मातृभाषाक बड़ पैघ सेवा कयलनि अछि। अनेक दृष्टिसँ पुस्तक मौलिक अछि।"

एकर अतिरिक्त अनुसन्धानात्मक अन्यो ग्रन्थ गम्भीर विचार ओ प्रामाणिकतासँ युक्त अछि। विद्वान आलोचकलोकनिकेँ सभ पोथीमे किछु-ने-किछु कहबा ले' भेटि जयतनि किन्तु ताहिसँ ग्रन्थक महत्तामे बट्टा नहि लगैछ।

हिनक सर्जनात्मक साहित्यमे उपन्यास, नाटक आ कथाक संग्रह अछि। आधुनिक प्रगतिशील साहित्यसँ तुलना कयलापर यद्यपि हिनक ई कृतिसभ मानक नहि मानल जायत, किन्तु एहिमे सभ स्तरक पाठककेँ मनोरंजनक सामग्री भेटि जयतनि, ताहिमे सन्देह नहि।

तेसर श्रेणीक पोथीसभ ज्ञानवर्द्धक अछि। मैथिलीक लोकमहाकाव्य; लोककथा एवं लोकसंस्कृतिपर सूचनात्मक ओ समीक्षात्मक सामग्री प्रस्तुत कयल गेल अछि। हिनक लोकगाथात्मक कृतिक प्रसंग डॉ० वीरेन्द्र मल्लिक कहैत छथि—"नैना-जोगिन मिथिलामे विवाह कालक एक गोट गीत थिक जकर सम्बन्ध नयन-वशीकरणसँ अछि। मिथिला प्राचीन कालहिसँ तन्त्र-साधनाक केन्द्र रहल अछि। मिथिलाक संस्कृतिमे 'डाइन-जोगिन' शब्दक प्रयोग बड़ विचित्र विपर्ययमे पाओल जाइछ। नैना-जोगिन ओहि तांत्रिक परम्पराक एक अवशेष थिक जे अद्यावधि मैथिल ब्राह्मण एवं कर्णकायस्थक विवाहक एक विधक रूपमे वर्तमान अछि। श्यामा-चकेबा स्त्रीशक्तिक पूजाक अवशिष्ट अंश थिक जकर विकास तांत्रिक पृष्ठभूमिमे भेल अछि। जट-जटिनमे एकर ऐतिहासिक दार्शनिक एवं कलात्मक रहस्यक उद्घाटन कऽ संगहि काल-कवलित एवं साहित्य-उपेक्षित लोकपरम्पराक नृत्यगीतकेँ प्रकाशमे आनि महती कार्य कयलनि अछि। लोकगाथा-विवेचनमे विद्वान लेखक द्वारा क्रमशः लोरिकाइन, नैका बनिजारा, राजा सहलेस, दीनाभद्री एव राजा गोपीचन्द प्रभृति पाँच गोट लोकगाथाक संकलन एवं ओकर सभक वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत कयल गेल अछि।" मैथिल-संस्कृतिक अनुसन्धातालोकनि लेल हिनक एहि प्रकारक कृतिक विशेष महत्त्व अछि। पुस्तकक अतिरिक्त ओ मैथिलीमे अनुसन्धानात्मक त्रैमासिक पत्रिका 'मिथिला भारती'क प्रकाशन एवं यथार्थतः ओकर सम्पादन सेहो कयलनि। हिनकामे जतबा सर्जनात्मक प्रतिभा छलनि, ताहिसँ बेसी संघटनात्मक क्षमता रहनि। पटनाक 'मैथिली साहित्य संस्थान' हिनके उत्साहक सुफल थिक।

हिनक साहित्यिक कृतिक सम्यक् एवं निष्पक्ष मूल्यांकन होयब एखन बाँकी अछि, किन्तु एतबा तँ स्पष्ट अछि जे सर्जनात्मक क्षमतासँ अधिक हिनकामे अनुसन्धान-मूलक चयनात्मक क्षमता छलनि, जकर समुचित उपयोग कऽ मैथिलीक भण्डारकेँ भरबाक ई स्तुत्य काज कयलनि। □

श्री गोविन्द झा

बहुमुखी प्रतिभाक धनी पण्डित गोविन्द झा मैथिली ओ संस्कृतक गम्भीर विद्वान छथि, मातृभाषाक सरस साहित्यकार छथि तथा मान्य भाषा-वैज्ञानिक छथि। हिनक रुचि जेहने अनुसन्धानमे छनि तेहने मनोरम कविताक रचनामे सेहो। ई कवि छथि तँ अपन समयक अग्रगण्य, नाटककार छथि तँ अतिश्रेष्ठ, कथाकार छथि तँ ओहूमे विशिष्ट स्थानक अधिकारी, निबन्ध आ समालोचनाक क्षेत्रमे सेहो अगुआ छथि, अनुवादक तँ सेहो सिद्धहस्त। भाषा-विज्ञानपर हिनक रचित पोथी—मैथिली आ हिन्दी दुनूमे—चर्चित-प्रशंसित अछि। व्याकरण आ छन्दशास्त्रपर सेहो हिनक अधिकार विलक्षण अछि। विभिन्न विधामे हिनक प्रकाशित पोथीक नाम थिक—बसात (१९५४), राजा शिवसिंह (१९७२), अन्तिम प्रणाम (१९८२)—नाटक; छन्दःशास्त्र (१९६०), लघुविद्योतन (१९६३), उच्चतर मैथिली व्याकरण (१९७९)—व्याकरण; मैथिलीक उद्‌गम ओ विकास (१९६८)—भाषाविज्ञान; उमेश मिश्र (१९८४)—जीवनी; मालविकाग्निमित्र (१९४७), चण्डीदास (१९८३)—अनुवाद; विभागसार (१९७५), वर्णरत्नाकर (१९८०), विद्यापति-गीतावली (१९८१), गोविन्ददास-भजनावली (१९८२), स्मृति-संध्या भाग—२ (१९८४)—सम्पादित। एहिमे वर्णरत्नाकरक सम्पादन संयुक्त रूपसँ ई प्रो० आनन्द मिश्रक संग कयने छथि। एकर अतिरिक्त पुस्तकक भूमिका-रूपमे तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल कतोक रचना अछि।

मधुबनी जिलाक इसहपुर नामक गाममे १० अक्टूबर १९२३कें हिनक जन्म भेलनि। अपन पिता, महावैयाकरण पण्डित दीनबन्धु झाक पाण्डित्यक प्रभाव हिनकापर प्रचुर मात्रामे पड़ल छनि। हुनके सान्निध्यमे ई विद्यार्जन कयलनि, फलतः संस्कृत शास्त्रक, ओकर व्याकरण, साहित्य ओ दर्शनक प्रगाढ़ ज्ञान प्राप्त कयलनि। एकर अतिरिक्त ई अंगरेजी आ बंगला साहित्यक सेहो अध्ययन कयने छथि। अपन अध्यवसायसँ अर्जित ज्ञानकें ई मैथिली-साहित्यक उन्नयनमे लगा रहल छथि।

तीन गोट मौलिक नाटक हिनक प्रकाशित अछि, जाहिमे बसात तथा अन्तिम प्रणाम सामाजिक समस्यापर आधारित अछि आ राजा शिवसिंह ऐतिहासिक घटनापर।

बसात—ई १९५४ ई०मे प्रथम बेर प्रकाशित भेल आ लगले प्रसिद्धिकें प्राप्त कऽ लेलक। एहि सामाजिक नाटकमे नवीन युगक आदर्शकें विवेचित कयल गेल अछि। एकर नामक सार्थकता प्रतिपादित करैत डा० 'श्रीश' कहैत छथि—"बसातसँ जेना निर्जीव खढ़पात उड़ि जाइत अछि तहिना नवीन युग-प्रवृत्तिक चेतनासँ प्राचीन मान्यता समाप्त भऽ रहल अछि तथा नारी-जागरण भए रहल अछि। बसातमे मैथिल-ललनाक त्याग-भावानक बड़ सुन्दर दर्शन भेल अछि। एहि नाटकसँ हुनक आदर्शवादी युगबोधक ज्ञान होइत अछि। एहिमे ओ नाटकक नवीन शिल्प तथा चित्रांकनक नवीन प्रणालीकें अपनाओल अछि। एकर सभसँ मुख्य वस्तु अछि अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण।"

ई मंचोपयुक्त नाटक अछि तथा मिथिलामे एकरा अगणित बेर अभिनीत कयल जा चुकल अछि। डा० जयकान्त मिश्र एकर एहि सफलताक चर्चा कयने छथि। ओ लिखैत छथि "It is also quite a success on the stage and has in it effective 'conflict' in the plot—it represents some amount of sacrifice on the part of its heroine and a desire to reform modern Maithila womanhood."

किन्तु, ओ एकर आलोचनामे कहैत छथि जे नाटक वास्तविकतासँ दूर अछि, प्रभाव सेहो खूब नहि छोड़ैत अछि तें एहिमे महान साहित्यिक सौन्दर्य देखबामे नहि अबैछ।

हिनक ऐतिहासिक नाटक 'राजा शिवसिंह' सेहो महत्त्वपूर्ण अछि—ऐतिहासिक तथ्य लऽकऽ ओतेक नहि, जतेक कथोपकथनक स्वाभाविकता लऽकऽ आ मंचक उपयुक्तता लऽकऽ अछि। एहिमे एको टा स्त्रीपात्रक समावेश नहि कयल गेल अछि। डा० 'श्रीश'क शब्दमे—"नाटकीयता ओ साहित्यिकता दुनू दृष्टिएँ राजा शिवसिंह सफल नाटक थिक। एहिमे ओ विद्यापतिक चरित्रक अभिनव पक्षपर प्रकाश देल अछि। यावत काल धरि ओ विद्यापतिक परामर्श लए राजनीतिक आश्रय लेल तावत काल धरि तत्कालीन दुरूह परिस्थितियोंमे हुनक उन्नतिक मार्ग प्रशस्त रहल ओ जखनहि चतुर्सिंहक प्रतारणामे आबि हुनक विचारक अवहेलना कएल, हुनक राजनैतिक आधारशिला धराशायी भए गेल।"

'अन्तिम प्रणाम'क विषयवस्तु लोकक शहरोन्मुखी होयबाक समस्यापर आधारित अछि। एहिमे कहल गेल अछि जे गामसँ लोक कोन परिस्थितिमे शहर दिस पलायन कऽ रहल अछि। पात्रानुरूप भाषा, संवाद-शैली, दृश्य-संयोजन तथा समेकित प्रभाव—सभ दृष्टिएँ एकरा उत्कृष्ट कहल जा सकैछ।

नाटकक अतिरिक्त ई एकांकी सेहो लिखैत अछि। ई अपन एकांकीमे "परिस्थितिक यथोचित निर्माण कए कथाकें कौशलक संग विकसित करैत मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण करैत छथि।" हिनक 'मिथिलाक प्रतिनिधि' प्रसिद्ध एकांकी थिक। हिनक एकांकीक कथा-वस्तु सामाजिक आ ऐतिहासिक रहैछ। वर्तमान युगक मान्य एकांकीकारमे हिनक गणना अग्रिम पंक्तिमे होइछ।

कथाकारक रूपमे हिनक स्थान अपन समकालीनमे महत्त्वपूर्ण अछि। "मानवीय सम्बन्ध तथा भावनाक परिष्कृत-प्राञ्जल रूप हिनक कथामे भेटैछ। एक टा करुण संवेदना हिनक कथाक आवश्यक तत्त्व रहैछ, जे पाठककें एक टा मधुर भावनात्मक तुष्टि दैत छैक।" हिनक प्रसिद्ध किछु कथाक नाम थिक—फूलक चोट, अन्तिम एकन्नी, सामाक पौनी, कोसीक कात आदि।

कविक रूपमे हिनक प्रसिद्धि आ लोकप्रियताक कारण थिक हिनक कविताक प्रवाह, प्रसादगुण, मनोरम वर्णन विन्यास, भावानुरूप शब्द-चयन तथा मार्मिक व्यंग्य। हिनक कवितामे प्रगतिशीलताक सेहो दर्शन होइछ। हिनक प्रगतिशीलताक विश्लेषण करैत प्रो० रमानाथ झा कहने छथि—"ई प्रगतिशील छथि युगीन समस्याक ग्रहणक हेतु, प्रयोगशील छथि भावाभिव्यक्तिक नव-नूतन उक्ति-भंगिमाक हेतु। वस्तुतः हिनक रचनामे प्रगतिशीलता एवं प्रयोगशीलताक मणिकांचन-

संयोग एतेक स्वाभाविक रूपेँ भेल अछि जे मैथिली-काव्य-परम्पराक प्रतिक्रियामे नहि, विकासमे घटित भेल प्रतीत होइत अछि।"

ई एक दिस ओजपूर्ण काव्य-निर्माणमे दक्षताक परिचय देने छथि तँ दोसर दिस प्रेम-सम्बन्धी मधुर कवितामे परिपक्वताक सेहो; एक दिस जँ हिनक काव्यमे उपेक्षितक प्रति सहानुभूतिक भाव देखैत छी तँ दोसर दिस समाजपर कठोर व्यंग्य करैत सेहो ई भेटि जाइत छथि—

हिनक काव्यमे ओज द्रष्टव्य—

चमकल विद्रोहक बह्नि प्रबल
आन्दोलित भेल मही मण्डल
लऽ निज गणसब
रचइत ताण्डव
हम नचइत हर भऽ अयलहुँ
हम नूतन स्वर लऽ अयलहुँ

हिनक मधुर भावनाक ई भंगिमा कतेक मोहक अछि—

प्रेम-पुरस्सर निभृत यत्नसँ
हमर नाम टा लीखि लेब सखि अपना उरमे
हमर प्राणमे उठय गान जे
तकर तान टा सीखि लेब सखि पद-नूपुरमे

प्रकृति-वर्णनक संग उपेक्षितक प्रति सहानुभूतिक भाव लेल "मिथिलामे अगहन'क हिनक ई पाँती बड़ महत्त्वपूर्ण अछि—

जकरा निमित्त भरि कातिक गामक बाला
तुलसीक आगु तारैं छलि दीपक माला
अयला से अगहन-पाहुन प्रकृतिक घरमे
लयला वरदान सोहागक मंगल करमे
×
खजनी खयबे जँ पान कने तँ खा ले
कतिकहरबा सूखल मूँह फेर चमका ले
अगहन-पाहुन नहि आब अधिक दिन रहता
दिन-दिन तँ फेर गरीब-देवता सहता

हिनक एक प्रसिद्ध कविता अछि 'युग-पुरुष'। एहि कवितामे चन्द्रमापर कृषि-कार्य करबाक वैज्ञानिक अनुसन्धान सफल भेलापर कृषकके अपन धरती छोड़ि आकाशमे जयबाक कल्पना कविक हेतु आह्लादक नहि अछि। किन्तु, जाहि संजीवनीके ताकऽ ओ ऊपर जाइत अछि, तकरा प्रति कविक शुभकामना अछि—

भऽ जेतह 'स्पुतनिक युग'क अभिमान छनमे भंग
जखन देखबह अपन दूनू आँखिसँ प्रत्यक्ष
दूध विनु भ्रियमाण शत-शत बाल
अन्न विनु भ्रियमाण नर-कंकाल
वस्त्र बिनु भ्रियमाण मोइक लाज
माँगि चुकलह अपन सप्तद्वीप धरती

मथि गेलाह अगाध सातो सिन्धु
किन्तु नहिएँ कतहु भेटलहु एकर औखध हाय !
जाय रहलह तहि गगनमे आइ संजीवनी जोहय ?
जाह हे युग-पुरुष सुखसँ जाह
शिवास्ते पंथाह !

'एक मूर्खक अनुभव' हिनक महत्त्वपूर्ण कविता थिक, जाहिमे ई समाजक एक वर्गपर कसिकऽ चोट कयने छथि। एहि कविताक व्यंग्य कतेक मर्मवेधी अछि से द्रष्टव्य—

सौंसे दुनियाँ हमरा बड़का बूढ़ि बुझै अछि
से किएक तँ—
सौंसे दुनियाँ हमरा बुढ़िए बूढ़ि सुझै अछि
दुनियाँ हमरा टाङ पकड़िकऽ खसबय बलसँ
से किएक तँ—
हम दुनियाँकेँ चित्ते यसबय चाहल छलसँ
हम दुनियाँक गोबरखत्तामे सड़ि रहलहुँ अछि
से किएक तँ—
हम दुनियाँ सँ सभ दिन एहिना लड़ि रहलहुँ अछि

सहृयता हिनक सभ काव्यमे भेटत। अतएव हिनक कवितासभ चित्ताह्लादक होइत अछि। ई एहि युगक अग्रणी कविमे प्रमुख छथि।

अपन पिताक सुविख्यात व्याकरणक कृति 'मिथिलाभाषा विद्योतन'क संक्षिप्त संस्करण ई लघुविद्योतनक नामसँ प्रकाशित करौने छथि। अपन्हुँ ई 'उच्चतर मैथिली व्यारण'क नामसँ उच्चस्तरीय छात्र ओ जिज्ञासुक हेतु नवीन तकनीक अनुसार एहि विषयक उत्तम कोटिक ग्रन्थक निर्माण कयने छथि। मिथिलाभाषा विद्योत्तन एक तँ आब उपलब्ध नहि अछि, दोसर ओकर सूत्र-शैलीक अनुचिन्तन कयनिहारक संख्या थोड़, तेँ आधुनिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत एहन नव ढंगक एहन व्याकरणक प्रयोजन भऽ गेल छल। छन्दपर सेहो हिनक पोथी अछि, जकर अध्ययन कयलासँ छन्द-शास्त्रक सामान्य ज्ञान पाठककेँ भऽ जाइछ।

भाषा-विज्ञानक हिनक एक पुस्तक 'मैथिली भाषाका विकास' यद्यपि हिन्दीमे छपल अछि किन्तु ओ विषय थिक मैथिलीक। मैथिलीमे सेहो एक टा संक्षिप्त पोथी हिनक प्रकाशित छनि 'मैथिलीक उद्गम ओ विकास'। मैथिली भाषामे भाषा-विज्ञान पर प्रायः ई पहिल पोथी थिक। यद्यपि अछि ई संक्षिप्त, भाषाविज्ञानक बहुत पक्ष एहिमे छूटल अछि, तथापि भारतीय भाषा-परिवारमे मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताकेँ एहिमे नीक जकाँ सिद्ध कयल गेल अछि।

विद्यापतिक 'विभागसागर'क ई टीका आ सम्पादन कयने छथि। मिथिलातत्त्व-विमर्शक संपादन सेहो हिनका द्वारा भेल अछि। एहि दुनू पोथीक वृहत् भूमिका तथा अन्य समीक्षात्मक निबन्ध हिनक समालोचक आ अनुसधानक सूक्ष्म दृष्टिक द्योतन करैत अछि।

वस्तुतः पण्डित गोविन्द झाक अवदान मैथिलीक लेल गौरवक वस्तु थिक।

□

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

जनिक कविता बेसीसँ बेसी लोकक कान आ मन-पाणकेँ आह्लादित कयने होयत, वर्तमान कालक एहन कविमे पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क नाम सभसँ पहिने लेल जायत। हास्य-व्यंगक कविक रूपमे, सन् १९४० ई०मे ई मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयलनि, तहियासँ आइ धरि अनवरत, विभिन्न विधामे, विभिन्न प्रकारक वस्तुक रचना करैत; मैथिलीक भंडारकेँ भरैत आबि रहलाह अछि। मैथिलीक साधारण पाठक-श्रोता आइयो हिनका हास्य-व्यंग्यक कविएक रूपमे चिन्हैत अछि, किन्तु एहि साहित्यक अध्येता हिनक सर्वांगीण प्रतिभासँ सुपरिचित अछि।

हिनक प्रतिभाक विकास विभिन्न दिशामे भेल अछि। साहित्य-सर्जन, साहित्यकार-निर्माण, मैथिली आन्दोलनक उत्प्रेरण, कवि-सम्मेलनक माध्यमसँ देश भरिमे मैथिलीक प्रचार—चारू दिस हिनक गति प्रायः समान अछि। मैथिलीक प्रचार-प्रसारक लेल जे काज आवश्यक बुझयलनि से ई कयलनि। रंगमंच आ रजतपट, दुनू ठाम ई अभिनय सेहो कयने छथि।

साहित्यक क्षेत्रमे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, एकांकीकार, आलोचक, निबन्धकार आदिक रूपमे ई ख्यात छथि। एकर अतिरिक्त, सम्पादन-कार्यमे सेहो हिनक योगदान भेल अछि।

आचार्य 'सुमन' हिनक सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ एक ठाम समटिकऽ सूत्रबद्ध कऽ देने छथि—"गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, उपन्यास लघुकथा, व्यंग्य विनोद, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण—साहित्य-शतदलक प्रत्येक दलपर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत। जहिना लेखन तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-संधान तहिना संग्रह-संकलन—प्रत्येक 'समकोणक द्विभुज समतूल अछि।"

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक खोजपुर नासक गाममे २ मार्च १९२५ ई० केँ भेलनि। अपन प्रख्यात पिता पण्डित मुक्तिनाथ मिश्रक सान्निध्यमे ई संस्कृतक अध्ययन कयलनि आ व्याकरणाचार्यकऽ १९४७ मे लहेरियासरायक एम०एल०एकेडमीमे मैथिलीक शिक्षक भऽ गेलाह। ओहि ठामसँ १९८३ मे अवकाश-ग्रहण कयलनि। आब दरभंगामे स्थायी रूपसँ निवास करैत मैथिलीक चिन्तना तथा साहित्य-साधनामे अनुखन लागल रहैत छथि। ई स्वाध्यायसँ मैथिलीक प्राचीन आ अर्वाचीन साहित्यक प्रचुर ज्ञान अर्जित कयलनि आ श्री 'सुमन'क मुख्य प्रेरणासँ मैथिलीमे हास्य-व्यंग्यक कविता लिखऽ लगलाह।

सम्प्रति मैथिलीमे विभिन्न विधाक एक दर्जनसँ अधिक पोथी हिनक प्रकाशित अछि। गुदगुदी, युगचक्र, ऋतुप्रिया, उनटा पाल आ आशा-दिशा—कविता; समाधान—एकांकी; वीर कन्या, विदागरी—उपन्यास; जल-समाधि—कथासंग्रह; मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, मैथिली साहित्य परिषद्क इतिहास—निबन्ध; मैथिली पत्रकारिताक इतिहास—आलोचना; म० म०

मुरलीधर झा—जीवनी; एच० एन० आप्टे—अनुवाद; विजय-शंख, कविवर जीवन झा रचनावली—सम्पादन; त्रिफला, मुहाबरा ओ लोकोक्ति—विविध। 'कविवर जीवन झा रचनावली'क सम्पादन ई डॉ० रामदेव झाक संग कयने छथि। एकर अतिरिक्त 'कविता-संग्रह' 'विद्यापति के देशमें' प्रभृति किछु अन्यो संकलन ओ पत्र-पत्रिकाक सम्पादन, किछु एकसरे, किछु संग मिलि—हिनका द्वारा भेल अछि। 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' ग्रन्थपर हिनका १९८३क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भऽ चुकल अछि।

'गुदगुदी' हिनक पहिल कविता-संग्रह थिक, जाहिमे हास्यरसक प्रारंभिक कविता संकलित कयल गेल अछि। एकर बाद हिनक युगचक्र प्रकाशित भेल। एहि लघुकाय संग्रहक तीक्ष्ण व्यंग्य-समन्वित हास्यरसक कविता ततेक प्रसिद्ध भेल जे कविकेँ एहि रसक सिद्धहस्त रचनाकारक रूपमे स्थापित कऽ देलक। 'अभिव्यंजना एवं-युग चेतना, सामाजिक दायित्व आ ऐतिहासिक सत्यक दृष्टिएँ 'युगचक्र' उत्तम कोटिक काव्य' कृति थिक। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "युगचक्र कविक विख्यात कृति थिक जे हास्य-व्यंग्यक अपूर्व निदर्शन तँ अछिए संगहि ओहिमे युगजीवनक प्रति कविक दृष्टि सेहो स्पष्ट भेल अछि!" स्वतन्त्रता भेटलाक बाद भ्रष्टाचार कतेक बढ़ि गेल अछि, स्वयंभू नेता कोना फड़ि गेल अछि, तकर जीवन्त चित्र कवि अपन एक कवितामे खींचि देने छथि—

हमर कथा कियो कान दैत अछि
जे खोपड़ी छारबा ने सकै छल
से सब ऊँच मकान दैत अछि
खिष्ठी ले' दँतखिष्ठी जकरा
जोड़ा बड़द द्वारिपर तकरा
घरक निकलुआ राजनीति-सागरमें
गुड़कान दैत अछि

युगचक्र आब अप्राप्य अछि, किन्तु ओकर सभ कविता 'उनटा पाल'मे आबि गेल अछि।

'ऋतुप्रिया'मे हिनक प्रकृत-सम्बन्धी काव्य संगृहीत अछि। वर्षमे छओ ऋतु होइछ, दू-दू मासकें एक ऋतु मानल जाइछ। सभ ऋतुक अपन खास विशेषता होइछ। पहिने कवि ऋतुक वर्णन करैत छलाह तँ ओहिमे शास्त्रीय पक्षपर बेसी ध्यान हुनका रहैत छलनि, लौकिक पक्ष गौण पड़ि जाइत छलनि। एकर विपरीत, 'अमर' लौकिक पक्षपर, मिथिलाक संस्कृति आ व्यवहारपर विशेष नजरि रखैत बारहो मासपर फराक-फराक कविता लिखिकऽ ओकरा 'ऋतुप्रिया'क नामसँ संकलित कऽ देलनि अछि। अछि ई मास-वर्णन, मुदा एहिमे स्वतः सभ ऋतुक वर्णन आबि गेल अछि। एहि सभ वर्णनमे कविक हास्य-प्रियता, सूक्ष्म चित्रण-क्षमता, उर्वर चिन्तन-शक्ति, वर्णन-कौशल आदि विलक्षणता बड़ नीक जकाँ प्रदर्शित भेल अछि। पूसक वर्णनच्छटा द्रष्टव्य—

पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस
हाखेँ मुदा बियाहि लेल 'जाँछ
दू-दू टा बहु मूस

सोनक रङमे बाट रङल छल
सकल गृहस्थक मोन ठङल छल
मनक कल्पना कोबर-गर सन
रंग-विरंगक रङल-ढङल छल
कटल बाध पलटल दुख दीनक
दिन लगइछ मनहूस
दिवस सुटुकि बनला गोहा सन
रातुक पेट बढ़ल कोहा सन
उदयाचलपर रविक दीप्त मुख
लगइत छनि घीपल लोहा सन
रातुक पलड़ा लघ्त भेल आ
दिवसक पलड़ा मूस

'आशा-दिशा' हिनक महत्त्वपूर्ण काव्यकृति थिक। ई १९८५ ई० मे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे कविक विभिन्न ढंगक ४५ गोट कविता संकलित अछि।

एहि संग्रहसँ ई सिद्ध भऽ जाइछ जे कवि केवल हास्य-व्यंग्यक नहि, गंभीरो रचना समान दक्षतापूर्वक कऽ सकैत छथि। एहिमे ओजपूर्ण काव्य, शान्ति रसक पद, अभियान-गीत, स्वदेश-वन्दना आदि विभिन्न भावबोधक, छन्दोबद्धसँ मुक्तवृत्त धरि, विभिन्न शिल्प-शैलीक, विभिन्न मनःस्थितिक, विभिन्न विचारधाराक रचनाक स्वाद भेटि सकैछ।

भाषापर हिनक अद्भुत अधिकार अछि, शब्द-शब्दसँ भाव टपकैत बूझि पड़ैत अछि। चीनी आक्रमणक संदर्भमे रचित एहि गीतमे शब्द-संयोजनक विलक्षणता मनकेँ हठात् मुग्ध कऽ लैछ—

आइ उमकि-उमकि बमकि रहल बंकरा जवान
देब देश हेतु जान
मातृभूमिकेर राखि लेब मान ओ गुमान
शत्रु सीमापर फानि, आबि ठाढ़ तोप तानि
चानि चूरि चीनकेर करब चूल्हिमे चलान
अंग-अंगमे उमंग, देखि दुष्ट दैत्य दंग
संग-संग जंगकेर रंग-ढंग घमासान

हिनक भाषा-प्रयोगपर विचार करैत प्रोफेसर शैलेन्द्र मोहन झा लिखैत छथि—"अमरजीक रचनामे भाषाक सुष्ठुतम प्रयोग भेटत। सरलसँ सरल भाषाक प्रयोग ई अपन रचनामे कयने छथि। जनसाधारणमे प्रचलित शब्दकेँ ग्रहण करबाक आकांक्षा हिनक रचनामे सर्वत्र परिलक्षित होयत फलतः काव्यमे स्वाभाविकताक सहज प्रस्फुटन होइत अछि। लोकगीतक परम्पराकेँ ग्रहण कऽ ई अपना कवितामे वेश माधुर्यक समावेश कऽ देने छथि।"

ई कथा सेहो पर्याप्त मात्रामे लिखने छथि। हिनक कथा गम्भीर आ हल्लुक दुनू ढंगक अछि। किन्तु, सहज सरल अभिव्यक्तिमे व्यंग्यक प्रखरता कतहु-कतहु आकृष्ट कऽ लैत अछि।

हिनक ९ गोट कथाक एकटा संग्रह 'जलसमाधि'क नामसँ सन् १९७२ ई० मे प्रकाशित भेल अछि।

हिनक कथाक मूल तत्त्वपर प्रकाश दैत डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा लिखैत छथि—"जीवनमे यथार्थक अन्वेषण सैह जेना वास्तविक कथाक अन्वेषण थिक। अमरजीक कथामे अन्वेषणक यैह प्रयास परिलक्षित अछि। अनुभवक मर्म हिनक कथाकेँ सुवासित करैत अछि तथा समीक्षात्मक प्रवृत्ति ओहिमे स्वाद जगबैत अछि। हिनक कथा सभ शून्यमे प्रसारित वक्तव्य मात्र नहि रहि एक अन्य समानधर्माक उपस्थितिक आभास दैत अछि। वस्तुतः कथा एवं पाठक दुनूक अवस्थिति जीवनक विडम्बना, असत्य एवं विद्रूपकेँ अस्वीकृत कऽ ओकरा सत्य, सौन्दर्य ओ सुरुचिसँ युक्त करैछ आ तखनहि जीवन जीबाक योग्य बनि सकैछ। अमरजीक कथाक मूल तथ्य यैह थिकनि।" हिनक किछु प्रसिद्ध कथाक नाम थिक—जलसमाधि, जाड़ा फेनो अओतौ, सुराही, हल्लुक चोट, गोबरछत्ता आदि।

वीरकन्या ओ विदागरी—ई दू गोट उपन्यास सिद्ध करैत अछि जे ई नीक उपन्यासकार सेहो छथि। विदागरीमे वैवाहिक समस्याकेँ उठाओल गेल अछि आ तकर समाधान करबाक चेष्टा लेखक अपना दिससँ कयलनि अछि। वर्णनसभ ठाम-ठामक बड मनोरंजक अछि।

एकांकीकारक रूपमे सेहो ई प्रसिद्ध छथि। 'समाधान' नामसँ हिनक एकांकीक एक संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न संकलनमे हिनक एकांकी प्रकाशित अछि। हिनक एकांकीक गुण कथोपकथनक सजीवता तथा मंचनक उपयुक्तता थिक।

'मैथिली आन्दोलन: एक सर्वेक्षण'—प्रथमतः वैदेहीमे प्रकाशित एहि दीर्घ निबन्धमे मैथिली आन्दोलन कोना शुरू भेल आ कोन समयमे एकर की रूप रहलैक—सभटा पर सम्यक् आ तथ्यपूर्ण प्रकाश देल गेल अछि।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक बहुत दिन धरि ई प्रधान मन्त्री छलाह। ओकर संक्षिप्त इतिहास लिखिकऽ सेहो ई प्रकाशित करा देने छथि।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास—ई पुस्तक लेखकक अनुसन्धानात्मक प्रवृत्ति, समालोचनात्मक क्षमता, गद्य-रचनाक प्रांजलता तथा तथ्यक विश्वसनीयताक कारणेँ पर्याप्त चर्चित भेल अछि। १९०५ सँ लऽकऽ १९७९ धरि छपल—कुल सतासी गोट पत्र-पत्रिकाक प्रसंग प्रस्तुत कृतिमे विवेचनात्मक प्रकाश देल गेल अछि।

मैथिलीक पहिल पत्र—मासिक—'मैथिल हित-साधन' मिथिला क्षेत्रसँ बहुत दूर, जयपुरसँ १९०५ ई० मे प्रकाशित भेल छल। दोसर पत्र सेहो मिथिलांचलसँ बाहरे वाराणसीसँ बहरायल छल—मिथिला मोद—ईहो मासिके आ पाँचे ईसवीमे। मिथिलाक अंचलमे जे पहिल पत्र प्रकाशित भेल छल, ओ छल 'मिथिला मिहिर' जकर प्रकाशन साप्ताहिक रूपमें १९०९ सँ आरम्भ भेल छल। ओकर बाद पत्रिकाक संख्या बढ़ऽ लागल आ एकर क्षेत्र आ स्वरूपमे सेहो क्रमशः विस्तार-परिष्कार होइत गेल। दुर्भाग्य यैह जे बेसी पत्रिका अल्पजीवि प्रमाणित भेल।

मैथिलीक पुरान पत्र-पत्रिका आब दुष्प्राप्य अछि। अतः किछु इतिहासकार ओ आलोचकगण बिना ओकरा सभकें देखनहुँ ओहिपर अपन टिप्पणी दऽ दैत गेलाह अछि। विद्वानलोकनि सरसरी नजरियें मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकाक इतिहासपर विचार करैत अयलाह अछि। फलतः मैथिलीक मुख्य-मुख्य पत्रक सम्बन्धमे उचित न्याय नहि भऽ पाबि सकल छल। ई मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक भ्रामक धारणाकें तँ खण्डित करितहिँ अछि जे मैथिली पत्रकारिताक गौरवपूर्ण अतीतसँ पहिल बेर विस्तापूर्वक परिचय करबैत अछि। ई पुस्तक पत्रकारिताक इतिहास जतेक दूर धरि रहओ, पत्र-पत्रिकाक इतिहास तँ थिके, सगहिँ ई वर्तमान शताब्दीक आरम्भहिसँ मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक विभिन्न समस्या तथा बदलैत परिस्थितिक चित्र सेहो उपस्थित करैत अछि। सम्पादकीय टिप्पणी तथा अन्यो महत्त्वपूर्ण प्राचीन दुर्लभ रचनाक उद्धरणसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक क्रमिक विकासक अवलोकन कयल जा सकैत अछि। आधुनिक कालक किछु पत्रिकाक सम्बन्धमे लेखकक विचारसँ सर्वांशतः सहमत नहियों भेल जा सकैत अछि; तथापि एकर महत्त्वमे ताहिसँ कमी नहि अबैत अछि।

आलोचना सेहो ई लिखनें छथि। 'एकांकी : वर्तमान दशक'—रचना-संग्रहक पहिल भागमे प्रकाशित हिनक एहि आलोचनाक साहित्य-जगतमे पर्याप्त चर्चा भेल अछि। ई अपन दृष्टिकोणकें बड़ स्पष्टतासँ, तर्कसहित, ओहि आलोचनात्मक निबन्धमे उपस्थित कयने छथि।

समय-समयपर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक निबंध, संस्मरण आदि कथा-कवितेतर रचना सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। ओकर संकलनसँ ई सिद्ध भऽ जायत जे एहू क्षेत्रमे हिनक योगदान कम नहि अछि।

वैदेहीक कतेको वर्ष धरि ई सम्पादन कयने छथि। हिनक संपादित कृतिमे प्रमुख अछि हिन्दी-मैथिली कविताक संकलन—'विद्यापतिके देशमें' एवं चीनी आक्रमणक बाद १९६३ मे भेल द्वितीय अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक कवि-सम्मेलनमे पठित ओजपूर्ण कवितासभक संग्रह—'विजय-शंख'।

नगरक साहित्कारलोकनिकें एक मंचपर अनबाक लेल 'नबरत्न गोष्ठी' नामसँ एक टा संस्थाक सेहो ई निर्माण कयने छथि। पहिने ई स्वयं ओकर सचिव छलाह। नगरक साहित्यकारलोकनि मासमे एक वा दू बेर निश्चित रूपसँ एक निर्धारित स्थानपर समवेत होइत छलाह तथा नव-नव रचनाक प्रणयन ओ वाचन करैत छलाह। एहिसँ एक दिस जँ मैथिली साहित्य समृद्ध होइत छल तँ दोसर दिस साहित्यकारमे सम्पर्क, सौमनस्यक वृद्धि होइत छलैक। मैथिलीक तत्कालीन विविध सामाजिक समस्यापर सेहो ई गोष्ठी विचार करैत छल। एहि गोष्ठीक सम्पर्कमे आबिकऽ कतेको गोटे साहित्यकार बनलाह। एहि गोष्ठीक तत्त्वावधानमे मैथिलीक बहुत काज भेल अछि, ३० सँ ऊपर पोथी अद्यावधि प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

अपन सम्पर्कमे अयनिहार प्रत्येक व्यक्तिकें, ओकर क्षमतानुसार, मैथिलीक सेवा करबाक प्रेरणा-प्रोत्साहन ई प्रदान करैत छथि।

आचार्य 'सुमन'क शब्दमे—"वस्तुतः यथार्थनामा चन्द्रक अमर रश्मिसँ मैथिलीक वर्तमान साहित्य सनाथ अछि।" □

डा० श्री शैलेन्द्र मोहन झा

डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा, मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक प्राचार्य ओ विभागाध्यक्ष, मिथिली साहित्यमे उपन्यासकारक रूपमे, कथाकारक रूपमे, निबन्ध ओ ललित निबन्धकार रूपमे, अनुसन्धाता ओ समालोचकक रूपमे एवं सम्पादकक रूपमे सुपरिचित छथि। ई साहित्य-क्षेत्रमे प्रवेश यद्यपि कविताक संग कयलनि, किछु नीक कविता प्रकाशितो छनि, किन्तु कविकर्मकें प्रारम्भेमे त्यागि देलनि।

हिनक जन्म दरभंगा जिलान्तर्गत नेहरा नामक गाममे २ जनवरी १९२९ कें भेल छनि। हिन्दी ओ मैथिलीमे एम० ए० कयलाक बाद पहिने चाइबासा कालेजमे हिन्दी-प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। बादमे चन्द्रधारी मिथिला कालेज; दरभंगा चल अयलाह मैथिली विभागमे। १९६५ ई०मे बिहार विश्वविद्यालय द्वारा 'आधुनिक मैथिली साहित्य'पर पी-एच० डी०क उपाधि प्राप्त कयलनि तथा १९६८ ई०मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिली साहित्यक प्रभावक सदर्भमे व्रजबुली साहित्यक उद्भव ओ विकासपर डी० लिट्०सँ विभूषित भेलाह।

विभिन्न विधापर प्रकाशित हिनक पोथीक नाम थिक—प्रतिमा (१९४९), मधुश्रावणी (१९५६)—उपन्यास; पथ हेरथि राधा (१९६३)—ललित निबन्धसंग्रह; परिचय-निचय (१९५०), विद्यापति (१९७७), ज्योतिरीश्वर (१९८३)—आलोचना; कथा-पुराण (१९६०), कथा-कहानी (१९६१)—वालोपयोगी; विद्यापति-गोष्ठी, जयदेव (१९८३) असमिया साहित्यक इतिहास (१९८४), शरच्चन्द्र: व्यक्ति एवं कलाकार (१९८५), चन्दा झा (१९८५)—अनुवाद; व्रजबोली-साहित्य (१९५४)—हिन्दीमे शोध; अगिलही एवं अन्य कथा, सुदामा-चरित, गद्यश्री, निकष, संकलन—सम्पादित। एहिमे सुदामा-चरित तथा संकलनक सम्पादन आन विद्वानक संग कयने छथि। हिनक एक आर आलोचनात्मक कृति अछि 'मैथिली साहित्य: प्रमुख कवि', किन्तु ओकर रचयिताक नीचाँ हिनक छद्मनाम अछि—प्रो० मेधातिथि। पुस्तक ओ ततेक महत्त्वपूर्ण अछि आ ततेक ठाम ओकर विचारक उल्लेख भेल अछि जे आब ओकर रचयिताक नाम गुप्त रहब समुचित नहि। अतएव, एहि पोथीमे ओहू पुस्तकसँ लेल गेल उद्धरणकें लेखकक वास्तविक नामक संग उल्लेख कयल गेल अछि।

प्रतिमा आ मधुश्रावणी—हिनक ई दुनू उपन्यास मैथिली उपन्यास-भंडारकें समृद्ध कयलक अछि। 'प्रतिमा' हिनक प्रारम्भिक कृति थिक आ एकरा लघु उपन्यासक श्रेणीमे राखब उचित होयत। एहि उपन्यासक विषय-वस्तु ओ विशेषताक प्रसंग श्री सुमनक कथन अछि जे ई "दुइ आकर्षणशील किशोर-किशोरीक प्रणय-पिपासासँ प्रारम्भ अछि। किन्तु, घटना-क्रम तेना घुमल जे मिलनक आशावरीक स्थानमे चिरवियोगक विहागक करुण 'सुर' कथाकारक वीणामे झंकृत भेल। किन्तु 'सुर' तेहन हृदयस्पर्शी अछि जे पाठकक हृदयपर करुण-मधुर छाया सघन कऽ दैछ। उपन्यासक अन्तमे उपेक्षिता नारीक प्रेमक अपेक्षा एहि स्वाभाविकतासँ अंकित भेल

जे घटना क्लान्त चित्तकें सहसा शीतलता प्रदान कऽ जाइछ। उपन्यासक प्रमुख गुण—रोचकता—एहिमे पूर्ण छैक। घटना संकेतमुखें कुशलतासँ वर्णित अछि। व्यर्थ वर्णनक अवसर एहिमे नहि भेटत।"

मधुश्रावणी उपन्यास अधिक लोकप्रिय भेल। यद्यपि ई बंगलाक भावुकताक प्रभाव लेने अछि, तथापि वर्णनशैली मौलिक ओ प्रभावी भेल अछि। घटनाक्रम बड़ सहज ढंगे आगाँ ससरल जाइछ। ई दुःखान्त उपन्यास थिक। भाषाक प्रवाहक दृष्टिएँ, वातावरणक निर्माणक दृष्टिएँ, प्राकृतिक घटाक्रमक वर्णन-वैशद्यक दृष्टिएँ, चरित्रक सफल चित्रणक दृष्टिएँ तथा सर्वोपरि लेखकक सहृदयता ओ भावुकताक दृष्टिएँ उपन्यास महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।

हिनक उपन्यासक विषयमे प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीक मत अछि—"His novels deal with the social life of Mithila and his characterisation, details and story deserve careful consideration. His 'Madhusravani' is a very famous novel of modern Maithili Literature."

उपन्याससँ कम प्रसिद्ध हिनक आठ गोट ललित निबन्धक संग्रह 'पथ हेरथि राधा' नहि अछि। ई मैथिली साहित्यमे ललित निबन्धक पहिल संग्रह थिक। ललित निबन्ध आ एहि संग्रहक प्रसंग लेखकक अभिमत अछि—"पथ हेरथि राधामे संकलित रचनासभ निबन्ध थिक, जकरा साहित्यक इतिहासमे व्यक्तिगत निबन्ध (Personal Essay) कहल जाइत अछि। व्यक्तिगत निबन्धक परिभाषा जँ एक दिस 'A loose sally of mind' कहिकऽ देल जाइछ तँ दोसर दिस एकरा "Lyric in prose' सेहो कहल गेलैक अछि। अर्थात् आत्मनिष्ठता एहि तरहक निबन्धक प्रधान गुण बुझल जाइछ। परन्तु व्यक्तिगत निबन्ध न तँ 'संस्मरण' थिक ने 'जीवनी'। वस्तुतः अपन विषयगत सुकुमारता एवं अभिव्यक्तिक स्वच्छन्दताक कारणें निबन्ध, गद्यमे रचित होइतहुँ गीतक आनन्द दैत अछि। ओना तँ हमर धारणा अछि जे प्रस्तुत संग्रहक निबन्धक माध्यमसँ पाठकलोकनिकें कहानीक वस्तु-आकर्षण ओ कविताक भाव-उच्छ्वास दुनूक समन्वित आस्वाद प्राप्त होयतनि। एही लालित्यक कारणें एहि संग्रहकें व्यक्तिगत निबन्धक संग्रह नहि कहि, ललित निबन्धसंग्रह कहि परिचय देल अछि।"

उपर्युक्त कथनक आलोकमे ई सिद्ध भऽ जाइछ जे जकरा अंगरेजीमे Personal essay कहल जाइछ, ताहिसँ किछु भिन्न ललित निबन्ध थिक। वस्तुतः हिनक ई निबन्ध पाठककें काव्यक आनन्द दैत छैक—निबन्धक शुष्कताक आभास कतहु नहि होबऽ दैत छैक। आठो निबन्धक नाम थिक क्रमशः पुनर्नवा देखल नयन सत्य, ताज-दर्शन, पलास-फूल, एक कहानी : एक गीत, रसाल-सौरभ, छिड़िआयल स्मृति ओ उपराग स्वर तथा पथ हेरथि राधा। स्पष्ट अछि जे अन्तिम निबन्धक नामपर पोथीक नामकरण कयल गेल अछि।

कथा यद्यपि ई बीससँ ऊपरे लिखने छथि, किन्तु ओ एक ठाम संगृहीत नहि छनि। हिनक कथामे 'हृदयक कोमल रागात्मक पक्ष', विशेषतया दाम्पत्य जीवनक

माधुर्य उमड़ि कऽ आयल अछि। हिनक किछु प्रसिद्ध कथाक नाम थिक—मृणालक सूत नवीना, स्पर्द्धा, रोड़ोक जल, नरक, भरत-वाक्य, आदि।

हिनक मैथिली साहित्यक किछु प्राचीन कविक परिचयात्मक आलोचनात्मक निबन्धक संग्रह 'परिचय-निचय' नामसँ प्रकाशित अछि। विद्यापतिपर हिनक सर्वाङ्गपूर्ण समालोचनात्मक ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि जे लेखकक अनुसंधान-प्रवृत्ति तथा विद्यापति-सम्बन्धी साहित्यक गंभीर अध्ययनक परिचायक थिक। तहिना, 'ज्योतिरीश्वर'मे हुनक जीवन ओ कृतिक सम्बन्धमे समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कयल गेल अछि। लेखकक भाषा ततेक प्रवाहपूर्ण आ ललित अछि जे जटिलो विषय पाठकक समक्ष बड़ सहजतासँ संप्रेषित भऽ जाइछ। अनुसन्धानार्थी ओ गंभीर अध्येतालोकनिक लेल ई ग्रंथ अत्यन्त उपादेय अछि।

कविक रूपमे यद्यपि हिनक प्रसिद्धि नहि अछि, तथापि किछु कविता बड़ सुन्दर ई लिखने छथि जे साहित्यक वस्तु भऽ गेल अछि। हिनक काव्य-प्रवृत्तिक सम्बन्धमे प्रो० रमानाथ झाक मत अछि—"ई कविता बड़ कम लिखने छथि, किन्तु जे किछु लिखने छथि ताहिमे अनुभूतिपूर्ण रागात्मकताक स्वाभाविक उद्घाटनक दृष्टिएँ कोमल कैशोर भावनाक बड़ यथार्थ एवं आह्लादक निष्पत्ति प्रस्तुत भेल अछि। कवितामे निबद्ध सुकोमल भावनाक अनुकूल शब्द-योजना मध्य लालित्य, माधुर्य एवं प्रसादक पूर्ण निर्वाह भेल अछि। प्रो० रमानाथ झाक उक्तिक उदाहरणक रूपमे 'मुक्त कुन्तला'क किछु पंक्तिकें एतऽ उद्धृत कयल जाइछ—

तोँ विहुँसली झड़य लागल फूल
खसि पड़ल सहजहिँ—
तोहर प्रसन्नताकें जानि श्वेत दुकूल....
हे हमर चिर कल्पने, हे चिर युवति !
निश्चय तोहीं छल हेबह विद्यापतिक वर यौवति
तोँ अमर छऽ अमिट तोर मुस्कान
चिर पियासल हृदय पौलक हे सखे वरदान
मुक्तकुंतल राशिमे छविमान
हमर अछि अनुमान
छलीह तोँ कयने सद्यः स्नान।

किछु दिन धरि नेहरासँ अपन सम्पादनमे ई साहित्यिक पत्र 'पल्लव'क प्रकाशन कयलनि। जतबा अंक ओकर छपि सकल, से साहित्यिक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि, अपन स्थान पत्रकारिताक इतिहासमे सुरक्षित करा लेने अछि तथा हिनक दक्ष सम्पादन-क्षमताक सुन्दर परिचायक अछि।

एम्हर ई सर्जनात्मक साहित्यसँ अपन ध्यानकें हँटाकऽ अनुसंधान ओ समालोचना दिस केन्द्रित कऽ लेलनि अछि। किन्तु, जे वस्तु ई लिखने छथि से साहित्येतिहासमे उल्लेखनीय अछि।

□

राजकमल चौधरी

राजकमल मैथिली साहित्यमे धूमकेतु जकाँ अवतरित भऽ, अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ सभकेँ प्रभावित कऽ—मैथिली कथा, कविता आ उपन्यासकेँ समृद्ध करैत, अल्पायुएमे संसारसँ रूठि गेलाह। मैथिली कविता आ कथामे ई नव मोड़ आनि देलनि। विशेषतः मैथिली कविताक अन्तिम महत्त्वपूर्ण मोड़ एखन धरि यैह छथि। जतबे विवादास्पद हिनक कृति रहल अछि, ततते हिनक व्यक्तित्वो। हिन्दी साहित्यमे, यात्राक बाद, सभसँ अधिक प्रतिष्ठा यैह अर्जित कयलनि—उपन्यासकार, कवि, कथाकार ओ अनुवादक-रूपमे।

मूल नाम हिनक मणीन्द्र नारायण चौधरी छलनि, जन्म १३ दिसम्बर १९२९के भेल छलनि, पैतृक छलनि महिषी (सहरसा)। बी० कॉम० धरि अध्ययन कयलाक बाद ई पटना सचिवालयमे नोकरी धऽ लेलनि। हिनक उद्दाम प्रतिभा सचिवालयक संचिकाक बीच बेसी दिन धरि औनाइत नहि रहि सकल आ ओ लगले स्वतन्त्र भऽ सम्पूर्ण देशमे परिव्याप्त भऽ गेल। राजकमल नोकरी छोड़ि कलकत्ता, मसूरी आदि बिभिन्न स्थानमे रहि अपन अध्ययनकेँ परिपुष्ट आ दृष्टिकेँ स्फीत करैत—साहित्यकेँ नव-नव प्रयोगसँ अन्त धरि मंडित करैत रहलाह। कैंसरसँ हिनक निधन १९ जून १९६७ ई० कें पटनामे भऽ गेलनि।

अपन जीवनकालमे 'आदि कथा' नामक उपन्यास ओ 'स्वरगंधा' नामसँ कविताक संग्रह मात्र ई प्रकाशित करा सकलाह। ई दुनू पोथी १९५८ ई० मे छपल। हिनक निधनक बाद 'आन्दोलन' नामक उपन्यास पहिने 'आखर'मे धारावाहिक प्रकाशित भेल, बादमे पुस्तकाकार कयल गेल १९६८मे। 'पाथर-फूल' नामक सेहो एक हिनक उपन्यास अछि; किन्तु से अप्राप्य अछि। १९६८ मे प्रोफेसर रमानाथ झाक संपादनमे हिनक ९ गोट कथाक एक टा संकलन 'ललका पाग' नामसँ प्रकाशित भेल। १९८० मे हिनक १३ टा कथा तथा एक उपन्यास 'आन्दोलन'क प्रकाशन, प्रो० आनन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजक सम्पादनमे 'कृति राजकमलक' नामसँ भेल। पुनः १९८१ मे, मोहन भारद्वाजक सम्पादनमे राजकमलक उपलब्ध मैथिली कविताक संकलन 'कविता राजकमलक'क नामसँ प्रकाशित भेल। ओहिमे 'स्वरगंधा'क कविता सहित राजकमलक ९० गोट कविता संकलित कयल गेल अछि जे ओहि समय धरि संपादकके उपलब्ध भऽ सकलनि। ओकर परिशिष्टमे 'स्वरगंधा'क सुचर्चित भूमिका तथा नवकवितापर हिनक लिखल निबन्धके सेहो शामिल कयल गेल अछि। १९८३ मे, 'एक टा चम्पाकली एक टा विषधर' नामसँ हिनक कथाक दोसर संग्रह प्रकाशित भेल, जाहिमे तेरह गोट कथा शामिल अछि। एकर सम्पादक केओ नहि छथि, संकलन कयने छथि—डॉ० मनोरंजन झा, प्रो० वशीकान्त अमलतास आ तारानन्द वियोगी। हिनक संग्रह तँ एखन धरि एतबे भऽ सकल अछि। एहिसँ अतिरिक्तो कथा, किछु कविता तथा अन्य लेख पत्र-पत्रिकामे छपल अछि, जकर संगृहीत रूप सोझाँ आयब बाँकी अछि। हिन्दीमे सेहो हिनक कथा-उपन्यासक अनेक पोथी प्रकाशित अछि।

१९५८ मे 'कथा-पराग' नामक संग्रहक ई संपादन कयलनि।

स्वरगंधा—मैथिली नवकविताक व्याख्या सर्वप्रथम राजकमले कयने छथि अपन स्वरगंधाक भूमिकामे। छन्दक बन्धन हिनका स्वीकार नहि भेलनि ततबे नहि, भावक स्तरपर सेहो ई क्रान्तिकारी परिवर्तन आनि देलनि। पहिने कविताक लेल बहुत-किछुक प्रयोजन होइत छलैक—काव्यशास्त्रे बनल छलैक—जाहि पटरीपर कविलोकनि कविताक गाड़ी दौड़बैत छलाह। किन्तु राजकमल एहि सभकेँ नकारि देलनि। ओ कहैत छथि—"हमरा विचारेँ कविताक लेल आवश्यक नहि अछि जे छन्द, लय, गीतात्मकता, प्रस्तार-विधि, यति-प्रणालीकेँ मान्यता देले जाय। कविताक लेल एके वस्तु आवश्यक अछि—शब्द। शब्द बिना कविता नहि कयल जा सकइए, बस। कविता गद्य नहि थिक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधान मानिकेँ चलत।" किन्तु, तेँ ई बुझि लेब जे जे किछु लिखि लेब से कविता भऽ जायत, भ्रम थिक। कविक एक विशेष दृष्टि होइछ। ओही विशेष दृष्टिसँ कोनो वस्तुकेँ ओ देखैत अछि आ तकरा अपना ढंगे अभिव्यक्त करैत अछि—एहीमे प्रतिभाक प्रयोजन पड़ैत छैक। राजकमलमे ई प्रतिभा बहुत स्फीत छलनि, फलतः हिनक कविता एतेक प्रभावी भेल।

स्वरगंधामे कुल २१ गोट कविता संकलित अछि।

अपन पत्नीक सुधिमे विभोर राजकमलक अभिव्यक्तिक मार्मिकता द्रष्टव्य—

अहिना बहुतो किछु मोन पड़इए
मोनक जागल व्रणपर नोन पड़इए....
कतेक सिनेहक घटना, गप-शप, हास
जीवन सिन्हसँ, इजोतसँ घर-आङनमे होइ छल प्रकाश
मुदा, आब तँ बचल मात्र ई स्मृतिक दाह
दरिद्रता महरानीसँ करै छी नितप्रति निवाह
नितप्रति विवाह
करै छी सभ-किछु सुड्डाह।

पूर्णिमाक चन्द्रमा कविक लेल युग-युगसँ प्रिय रहलनि अछि। हिनक ततेक रूपमे वर्णन होइत आयल अछि जकर लेखा नहि। राजकमलोक दृष्टि हुनकापर जाइत अछि। किन्तु ई हुनकासँ जे कहैत छथि आ जेना कहैत छथि, सैह स्पष्ट करैछ परम्परावादी आ नव कविक दृष्टिकोणकेँ—

जागल छी, कती राति बीतल अछि
ज्ञान ने होइए किछओ
रूसल प्रिया जकाँ नहि करऽ मान-अभिमान
चान हे, आबऽ, लालटेनक बदलामे
दान देह किछु ज्योति
दुइए पाँती लिखबा लेल आब अछि चिट्ठी
अप्पन रानीकेँ।

अपन प्रेयसीकेँ रातुक एकान्तमे प्रेम-पत्र लिखबाक लेल, टामटेन मिझा गेला उत्तर, किछु किरण-दान करबा लेल चन्द्रमासँ कविक अनुरोध अछि। पाँती

कतेक सहज अछि, छन्द आदिक अभाव अछि, किन्तु अभिव्यक्ति कतेक सुच्चा अछि, निश्छल अछि ! यैह विशेषता राजकमलक कविताकेँ बहुत आगाँ पहुँचा दैत अछि।

कहल जाइछ जे स्वरगंधाक महत्त्व ओकर कविता लऽकऽ जतेक अछि ताहिसँ बेसी महत्त्व अछि ओकर भूमिका लऽकऽ। ओकर भूमिकाक अनुरूप कविता राजकमल बादमे लिखलनि। वस्तुतः स्वरगन्धाक बादक कविता जे 'कविता राजकमलक'मे संगृहीत अछि ओ बेसी सशक्त, बेसी तेज, बेसी धाह लेने अछि। 'समय एक टा आन्हर साप'क निम्न पंक्ति दष्टव्य—

समय : एक टा आन्हर साप :
समय : एक टा अन्हार रास्ता।
आ व्यक्ति अजगरक पेटमे छटपटाइत पक्षी।
आ व्यक्ति चौरस्तापर मरल-पड़ल कुकूर केबल
मृत आँखिमे अभिव्यक्ति।
केवल, मृत आँखिमे पसरल सौंसे इतिहास,
सभ टा परम्परा
विक्षिप्त बराहक दीर्घ दन्तपर राखल सौंसे वसुन्धरा
आ चारू कात समुद्र। चारू कात समुद्र।

राजकमलक कवितापर, कोनो-कोनो आलोचक, दुरूहताक आरोप लगौने छथि। वस्तुतः, जेना एखन धरि कविताकेँ बूझल जाइत रहल अछि, कविताक पाँती लगाओल जाइत रहल अछि, तेना राजकमलक कविताक पाँतीकेँ, अथवा ककरो नवकविताक पाँतीकेँ नहि लगाओल जयवाक चाही। नवकविताक एक-एक पाँतिक अर्थसँ बेसी महत्त्वपूर्ण होइछ ओकर 'हिट', ओकर 'एप्रोच', ओकर अभिव्यंजना-सामर्थ्य। नवकविताक कवि लिखबाक लेल नवकविता नहि लिखैत अछि, अपितु ओ जे 'जीवैत' अछि, जे भोगैत अछि, तकर अभिव्यक्तिक छटपटाहटिक कारणेँ, कविता लिखब ओकरा हेतु अपरिहार्य भऽ जाइत छैक। तेँ, नवकविताक सम्बन्ध सोझे-सोझ जीवनसँ जुटि जाइत छैक। एकर अर्थो जीवनेक पोथीमे ताकल जा सकैछ; समीक्षो जीवनेक 'आलोचना-शास्त्र'क आधारपर कयल जा सकैछ।

राजकमल स्वयं एक ठाम कहने छथि—"सबसँ पहिने हमर अपन मनुक्ख. मने हम ! अर्थात् हमर अपन कविताक सबसँ पहिल आ सबसँ महत्त्वपूर्ण विषय हम स्वयं छी। हम आ हमर अस्तित्व, हम आ हमर अहं, हम आ हमर व्याकरण।...... कविता एक एहन कला थिक जे व्यक्ति-कारणमे आस्था रखैछ। कविता मानवक मायाजाल नहि थिक।... व्यक्तिसत्य आ वस्तुसत्य कोनो स्वप्नावेष्टित आदर्शसँ अधिक महत्त्वपूर्ण नहि। अर्थ-नीति आ ऑटोमेटिक मशीनक एहि युगमे कविताक शास्त्रीय अरण्यरोदन अथवा अशास्त्रीय प्रलाप दुहूमे किछुओ हमरा पसिन्न नहि अछि।......हमरा जीवन आ हमरा कवितामे कोनो भेद, कोनो दूरी नहि अछि। हमरा कविता हमरा आन्तरिक जीवन आ हमरा अस्तित्वक रहस्य, यथार्थ आयोजना सबकेँ अभिव्यक्त एवं अंकित करैत अछि। यदि हमर कविता हमरा मुक्त नहि करैत अछि, तँ हम ओकरा एक वक्तव्य मात्र मानैत छी, कविता नहि।"

राजकमलक जीवन आ कविताक मन्थन कयलाक बाद प्रो० रमाकान्त मिश्र सेहो एही निष्कर्षपर पहुँचैत छथि—"स्वरगंधासँ लऽकऽ आजक अनेक कविता तँ आत्मकथात्मके अछि। ठीके, राज महादेव जकाँ एहि जंगलसँ ओहि जंगल भटकैत रहल रहय, अपना कान्हपर अनेक उपालम्भ, अनेक राग, अनेक उपराग, अनेक दोषक व्ययाक लहास लदने।"

अपनाकेँ सुसंस्कृत-परिष्कृत विचारक मानऽवला व्यक्ति वस्तुतः कतेक स्वार्थान्ध होइत अछि, संभ्रान्त मनुक्खमे कोना बताह जानवर नुकायल रहैत छैक आ बेर-कुबेर कोना ताण्डव करैत छैक, ई 'बात' कोनो नव नहि थिक, किन्तु नव थिक एकर कहबाक 'शैली', नव थिक कविक व्यग्रताकेँ अभिव्यक्त करऽवला एकर 'भाषा,' नव थिक व्यक्तिगत अनुभूतिकेँ सामाजिक अनुभूतिमे बदलि देबऽवला 'अभिव्यंजना'—

जँ सत्त बाजब अपराध नहि घोषित भेल हो एखन धरि
गाम आ नगरमे
सुसंस्कृत मनुक्ख आ बताह जानवरमे
कोनो अन्तर नहि, कोनो अन्तर नहि बेली-चमेली
आ अंगरेजी गुलाबक सुखायल ठोरमे
एक्के पराग
गबैत अछि सौंसे प्रकृति समस्त देश-कोस एक्के सुरमे
एक्के टा गीत, एक्के टा राग।

प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे—"राजकमल चौधरी मैथिली प्रयोगवादी काव्यधाराक प्रथम व्याख्याता छथि। हिनक कविताक शब्द-शब्दमे नवीनता झलकैत रहैत अछि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति-शैलीमे।"

डा० जयकान्त मिश्र लिखैत छथि—"He aims at using the technique that is capable of truly representing human experience in all its shades and nuances."

'ललका पाग'क भूमिकामे प्रो० रमानाथ झा हिनक कविताक प्रयोगशीलतापर टिप्पणी करैत लिखने छथि—"कवितामे हुनक नव प्रयोग हम सफल नहि मनैत छिऐन्हि कारण कवितामे ओ प्रयोगकेँ मुख्यता दैत रहलाह, कथावस्तु हुनका सम्हारमे नहि रहैन्हि। केवल रीतिकेँ प्रमुखता देब आ वस्तुकेँ रीतिक अनुकूल उपस्थित करब कलाक प्रदर्शन थिक, कला नहि थिक। हुनक काव्यसर्जनमे जीवनक मौलिक स्पन्दन तँ अछि मुदा आलोकमय नाहि, भावसंवेदनक तीव्र बौद्धिक विपथगामितासँ ऊपर नहि ऊठि सकलाह। ओ केवल जड़गत रूढ़िक विरुद्ध विद्रोह करैत छथि मुदा लोकजीवनमे मंगलक भावना हुनक काव्यमे नाहि आएल।"

राजकमल कथामे सेहो प्रयोग कयलनि, किन्तु कविता जकाँ कथाकेँ प्रयोग छापि नहि लेलक अछि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहमे हिनक कथाक मूल बिन्दुकेँ बहुत नीक जकाँ पकड़ल गेल अछि—"राजकमलक कथा मिथिलांचलक मध्यमवर्गक ओहि समस्त संस्कारपर जमिकऽ प्रहार करैत अछि जे ओकर आर्थिक सामाजिक संघर्षमे बाधक थिकैक। मिथिलांचलक मध्यमवर्गक आभिजात्य, छद्मक विद्रूप राजकमलक कथाक मूल तत्त्व कहल जा सकैत अछि।

आरोपित मर्यादा आ आदर्शक पाछाँ नुकायल अन्हारकेँ नाङट करब हिनक कथाक मूल उद्देश्य रहल अछि।"

राजकमल पहिने कथाकार छथि, तखन कवि। हिनक किछु कथा चित्रणक अति कऽ देबाक कारणेँ तत्कालीन समाजमे बड़ विवादास्पद रहल जेना—ननदि भाउजि। किन्तु घड़ी, माछ, सत्ती धनुकाइनि, कोपड़, माहुर, साँझक गाछ आदि मैथिलीक विशिष्ट कथाक कोटिमे अछि।

राजकमलक कथाक सभसँ पैघ विशेषता आचार्य रमानाथ झा मानलनि अछि कथामे कथाकारक व्यक्तित्वक प्रतिबिम्बन। ओ कहैत छथि—"सिकरेटसँ यौन आकर्षण धरि राजकमलक जीवनसँ जे परिचित छथि से कहि सकताह, प्रत्येक कथामे राजकमलक चारित्रिक वैशिष्ट्य कोनहु-ने-कोनहु रूपमे अवश्य भेटत।"

'अपराजिता' आ 'ललका पाग'सँ कथा-जगतमे प्रवेश कऽ 'बहिनदाइ; अस्पताल, बनगाम आ कोनो एक टा सपना' धरिक हिनक कथा-यात्रा विशिष्ट रूपमे उल्लेखनीय अछि।

कुलानन्द मिश्रक अनुसार "हुनक अधिकांश कथा प्रथम दृष्टिमे काव्यात्मक संवेदनाक आधारपर बुनल बुझाइ पड़ैछ, मुदा सत्य सभवतः ई थिक जे ओहि कथा सभमे कथाक संवेदना अपन बलपर कविताक सीमा धरि पहुँचि गेलैक अछि। कोनो कथाकेँ एक टा सम्पूर्ण विम्बमे जीवित रहब आ पुनः ओकर 'मिथ'मे वदलि जायब प्रायः कथाक शक्तिक आकर्षक अन्तिम विन्दु होइछ आ राजकमल एहि बिन्दुपर अपन कतेको मैथिली कथामे ठाढ़ नजरि अबैत छथि। एक दिस समकालीन स्थिति आ दोसर दिस आधुनिक जीवनक सत्य—एहि दुहूक मध्य विराजमान तनाव आधुनिक जीवनक संकट थिक आ एहि संकटक आत्मीयतापूर्ण आ मानवोचित रागसँ युक्त प्रस्तुति दिस राजकमलक कथा साधिकार ध्यान घिचैत अछि। ओ अपन मैथिली कथा सभमे विशुद्ध रूपसँ मैथिल छथि, ई एक टा दोसर महत्त्वपूर्ण तथ्य थिक।"

हिनक 'आदिकथा' व्यक्तिपरक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास थिक। डा० अमरेश पाठकक शब्दमे—"कथावस्तुमे विश्वसनीयता अनबाक हेतु उपन्यासलेखक विभिन्न रीतिक अनुसरण करैत छथि। एहिमे वृद्ध अनिरुद्ध बाबूक संग विवाह भए गेलाक कारणेँ सुशीलाक अतृप्त वासना ओकरा अपन भागिन देवकान्तक दिश आकृष्ट होयबाक हेतु वाध्य करैत छैक। एहिमे सुशीलाक चित्तवृत्तिक सूक्ष्म अध्ययन कयल गेल अछि।"

हिनक दोसर ऊपन्यासक नाम थिक 'आन्दोलन'—जे हिनक मृत्युक बाद प्रकाशित भेल। एकर कथा-वस्तु मैथिली आन्दोलनक घटनावलीसँ संबद्ध अछि। कलकत्तास्थ मैथिलक दशा एहिमे बड़ यथार्थ रूपमे उद्घाटित भेल अछि।

नवकविताक व्याख्या ई कैक टा निबन्धमे कयने छथि, जे एक ठाम संकलित नहि अछि। ओहिमे हिनक समीक्षात्मक दृष्टिक तीक्ष्णता देखबामे अबैछ।

वस्तुतः राजकमल जतबा कम समयमे मैथिलीकेँ जतबा अधिक समृद्ध कयलनि से हिनक दुर्दान्त प्रतिभाक द्योतक छल।

□

श्री धूमकेतु

मैथिलीमे थोड़ लिखिकऽ विशेष प्रतिष्ठा अर्जित कयनिहार गनल-गुथल साहित्यकारमे धूमकेतु अबैत छथि। धूमकेतु अपन सीमित कथा-कविताक बलपर ओकर उच्च मूल्यवत्ताक कारणेँ सातम दशकक प्रतिनिधि साहित्यकारक पाँतीमे प्रतिष्ठित गेलाह। कथा एवं कविता—दुनूमे ई अद्यतन शिल्पमे विलक्षण रचना कौशलक परिचय देने छथि। हिनक कथा 'अगुरवान' तथा कविता 'एक बेर फेर राजधानीमे' साहित्यक शाश्वत मूल्यक वस्तु अछि।

हिनक पूर्ण नाम भोलानाथ झा थिकनि। घर मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे छनि, जतऽ हिनक जन्म २५ जनवरी १९३२ ई०केँ भेलनि। अर्थशास्त्रमे एम० ए० कयलाक बाद बहुत दिन धरि ई जनकपुरक आर० आर० कैम्पसमे प्राध्यापक छलाह। पुनः किछु-किछु दिन एकाधिक कालेजमे प्रधानाचार्य रहलाह। फेर, बादमे त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डूसँ सम्बद्ध भऽ गेलाह।

पोथीक रूपमे हिनक एकमात्र कथा-संग्रह प्रकाशित अछि—'अगुरवान आ अन्य कथा'। ई १९८०मे छपल। एहिमे हिनक ९ गोट प्रसिद्ध कथा संगृहीत अछि, जकर शीर्षक थिक—बिरड़ो, अगुरवान, कुलटा, बिलाड़ि, टिटिम्हा, छहोछित, देह, दंश, सम्बन्ध-सूत्र। एतेक कथा आर होयत जे मुख्यतः 'मिथिला मिहिर'मे प्रकाशित अछि। कविताक कोनो संग्रह यद्यपि नहि अछि, किन्तु पत्र-पत्रिका ओ संकलनसभमे प्रकाशित कविताक संख्या एकटा संग्रहयोग्य अवश्य अछि।

प्रो० रमानाथ झा जेहन सफल कथालेखनमे हिनका मानलथिन अछि, तेहन कविता-रचनामे नहि। प्रो० रमानाथ झाक एहि टिप्पणीक बाद हिनक कवितासभ जे प्रकाशमे अयलनि, सेहो कम महत्त्वपूर्ण नहि छनि आ ओ कविताक रूपमे हिनका सफल ओ श्रेष्ठ प्रमाणित कऽ दैत छनि। किन्तु, मूलतः ई कथाकार थिकाह तथा हिनक साहित्य-सर्जनाक प्रकृत दिशा ओही दिस गेल छनि।

धूमकेतुक कथा नवीन भावबोधक सृष्टि करैछ, कथातत्त्वक उच्च मूल्यक प्रतिष्ठापन करैछ, अभिव्यक्तिक मनोरम छटाक दर्शन करबैछ। हिनक कथा विशिष्ट बनि जाइछ तँ तकर कारण अछि कथ्यक टटका संस्पर्श आ शिल्पक अनुपम सौन्दर्य। हिनक कथा-मानव तिरस्कृत रहितो दया नहि उपजबैछ, जघन्य काज करितो घृणाक पात्र नहि बनैछ। अपन 'चरित्र'केँ प्राण फूकि देबामे जेहने ई माहिर छथि, तेहने दक्ष छथि ओकरासँ जीवनक तह-पर-तह खोलबा देबामे सेहो। संसारक कंटकाकीर्ण बाटपर कौशलपूर्वक बढ़ैत हिनक चरित्र हृदयक कोमलतम तन्तुकेँ छूबिकऽ गुदगुदाबयो दैत अछि तँ अत्याचारक विरुद्ध तनिकऽ ठाढ़ो होइत अछि, परम्पराक भजनो करैत अछि तँ अजुको विसंगतिक आँखिमे आङुर भोंकि दैत अछि। से कुटकुटाकऽ तँ लगैत छैक जरूर, मुदा ओकरापर क्रोध कहाँ उपजैत छैक पाठककेँ? ओकरा प्रति सहानुभूति किएक जगैत छैक हृदयमे? सामान्य धरातलपर

कथाकें यैह तत्त्व विशिष्टता प्रदान करैत अछि तथा कथाकार [illegible] अछि।

हिनक अद्‌भुत अधिकार अछि। पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग, ठेठ [illegible] वित. वातावरणक प्रभावकारी निर्माण जेहन हिनक कथामे [illegible] ठाम विरल अछि। हिनक कथा 'व्यक्तिक ग्रन्थिकें सोझराकऽ [illegible] उद्‌घाटित करैत अछि।

[illegible] एहि बातकें स्वीकार करैत छथि। कथाक प्रसंग हिनक मान्यता [illegible] वक्तव्यसँ स्पष्ट होइछ—

[illegible] जे किछु घटित भऽ रहल अछि—दैनन्दिन अखबारी [illegible] कें आ कि राजनीतिक दाव-पेंच—ताहि सभकें हम [illegible] जीवनक विस्तार भीतर छैक, जतऽ निरन्तर गहनतम [illegible] छी। मनुक्खक वैह संघर्षपूर्ण अन्तस् स्वयंसँ लड़बाक सनातन [illegible] छैक। [illegible] भूमि थिक।

[illegible] लारेन्सक कथन छनि जे मनुक्खक कोनो देवता नहि छथि, जे [illegible]—डार्क गाड्स। से सर्पो। मनुक्खक अन्हार अन्तसमे ई [illegible] किचकिचा-किचकिचा आत्माकें भम्होड़ि-भम्होड़ि लहू-लुहान [illegible] कोनो अतल-तलमे दबल ई अन्हार प्रतीक, व्यक्तिकें स्वयं अपने [illegible] छैक आ अन्तः वाह्यमे ठान जाइत छैक।

[illegible] व्यक्ति आ करिक्का छाया, ताल ठोकिकऽ आमने-सामने ठाढ़ [illegible] जखन झूठ सत्यकें बलात् झाँपऽ लगैत छैक तँ हमर [illegible] होइत छैक।"

[illegible] उक्त वक्तव्यक आलोकमे हिनक कथाकें नीक जकाँ बूझल जा [illegible] उदाहरणस्वरूप 'अगुरवान'कें लऽ सकैत छी। "आर्थिक आ शारीरिक [illegible] नैतिक आ मानवीय धरातलपर सेहो कतेक पगु भऽ जाइत अछि, [illegible] सामाजिक मर्यादा आ नैतिकताक परबाहि नहि करैत उच्छृंखल [illegible] व्यक्तियोक आत्मसम्मान कतेक दुर्दान्त भऽ जा सकैत छैक, से [illegible] जा सकैत अछि। ई कथाशिल्पीक अनुपम विशेषता अछि जे [illegible] कोनो दया नहि उपजबैत अछि आ तिरस्कृत चरित्र जघन्य [illegible] सहज सहानुभूति पाबि लैत अछि। चरित्र जे कथामे ठाढ़ [illegible] जे चरित्रकें ठाढ़ करैछ दुनू मिलिकऽ कथाकें अद्‌भुत दमगर [illegible] छैक।"

[illegible] अगुरवानकें मैथिलीक श्रेष्ठतम पाँच-सात कथामे गनल जा सकैछ।

[illegible] कविताक प्रसंग प्रो० रमानाथ झाक मन्तव्य छनि—"हिनक कविता [illegible] भाव-चित्रण प्रस्तुत करैत अछि। विषयकें प्रभावपूर्ण रीतिसँ प्रस्तुत [illegible] कविताक प्रमुख विशेषता थिक जकर केन्द्रमे निहित रहैत अछि युग- [illegible] हिनक प्रकृति-विषयक रचनहुँ मे स्पष्ट रहैत अछि।"

[illegible] भावबोध-समन्वित मुक्त छन्दमे विशिष्ट कविता लिखबामे दक्ष [illegible] उत्कर्षक ओ उद्‌बोधनात्मक छन्दोबद्ध काव्य सेहो लिखने छथि;

जे परम्परिक विषयक अछैतहुँ नव स्वाद दैत अछि। कोनो कवि एक ठाम कहने छथि—'मिथिला तरुआरिक बलें न कथमपि जीवि सकत' अर्थात् मिथिलाक इतिहास एहि ठामक शौर्यक हेतु प्रसिद्ध नहि अछि। किन्तु, धूमकेतु एकरा नहि मानैत छथि। हुनक मान्यता छनि जे जँ मिथिलाकें जीबाक छैक तँ एकरा तरुआरि पकड़हि पड़तैक, अपन अधिकारकें लेबहि पड़तैक—

मिथिला तरुआरिक बिना न कथमपि जीवि सकत
ई कालकूट पायी-चरणोदक पीबि सकत ?
मिथिला तरुआरिक नोकें सँ कविता लिखलक
आ मैथिलीक फाटल आँचर नहि सीवि सकत ?
हिलकोर लेतँ कन्दर्पी घाटहुमे यौवन
युगनायक बिमलगुए तरुआरि उठाबथु तँ !

गीतक लुत्तीसँ अगराही छी लगा रहल
धरती आ अम्बरमे कहियो लगतैक आगि
बीयरिसँ बहरायत कमला-कातक गहुमन
तँ सभ सपेरिया मारि अहुरिया जायत भागि

अधिकार अपन देवहुसँ लड़ि लेबे करबनि
जन-गण मनमे विश्वास अदम्य जगाबथु तँ !

'एक बेर फेर राजधानी'मे धूमकेतुक दीर्घकविता थिक, जे देशमे 'आपात-काल' लागू भेलापर एहि ठामक जनताक अन्तरक आहिकें आ धाहकें बड़ सशक्त स्वर देलक अछि। जनता अपने गाममे भोतिया गेल अछि चिन्तक कवि राजधानीमे पहुँचैत अछि, ओकरा अन्हार भेटैत छैक, अन्हारमें एक टा 'तीन दस वर्ष'क छौंड़ी स्वतन्त्रता भेटैत छैक—

जकरा संग नेन्नेसँ
कयल गेलै ततेक बलात्कार
जे कोखिए निछा गेलै,
कूही भऽ कुहरऽ लगैत छै !

दृश्य-परिवर्तन होइत अछि। कवि औनाइत अछि, अपन घर तकबा ले', अपन जमीन तकबा ले' फिफिआइत अछि—

हम तकै छी
पहिल अछारक सोन्हगर सौरभ मातल
तप्पत. सक्कत अपन जमीन,
अपन हेड़ायल देश।
हम गुनै छी तरबा तरक माटि
जी हं !

मुदा, आदि महामात्य, अजोद्ध भारतरत्न, इतिहासक नागपुरुष, तांत्रिक मगहिया···' जबाब दैत छै—

अपन जमीन तकै छऽ
तकै छऽ से ताकऽ
मुदा से अपराध थिकै

घसकऽ, जल्दीसँ भागऽ।
चर्चा छै, कविताक मासु
स्वादिष्ट होइत छै,
दिन-राति घूमै छै माहिर शिकारी
राजाक कुकूर।

वार्तालाप-शैलीमे कविता आगाँ बढ़ैत अछि आ परिस्थितिक भयावहताकेँ रेखांकित करैत बात अभिव्यक्तिक संकट पर चल अबैत अछि—

कथ्य कते तिक्ख तप्पत
कसमसाइत अछि
किन्तु अमुक बात कहबामे
कविता लजाइत अछि।

मुदा, कविता लजाइतो-लजाइतो कविक चिन्ताकेँ, वेदनाकेँ, आक्रोशकेँ बड़ तीव्रतासँ उभारि दैत अछि तथा अन्त होइत-होइत पाठकक मस्तिष्ककेँ झकझोरि दैत अछि।

हिनक कविता वैचारिक अधिक होइत अछि, भावात्मक कम। किन्तु, जे विचार कवि अपन कविताक माध्यमे प्रकट करऽ चाहैत अछि से ओकर मानसिक उर्वरताक परिचायक तँ थिकहे, संगहि वर्तमानकेँ गंभीरता सँ देखबाक ओकर सूक्ष्म दृष्टिक सूचक सेहो थिकैक। 'समाधिस्थ'क निम्नलिखित पंक्ति एहि परिप्रेक्ष्यमे द्रष्टव्य थिक—

हमरा गाममे रहैत छैक बारहो मास कालरात्रि
शीर्षस्थ छनि काकभुसुण्डीक खोँता
जखन-जखन पड़ह फाटऽ लगैत छैक
ई सपुत्र डारि पाँखि पसारि लैत छथि
दूरागतक आभाससँ साकांक्ष
सोनितायल सिसोहल घेँट हिनक
कालसर्प जकाँ तनतनाय लगैत छैक।
हमरा गामक मुर्दा जरि
कोइला मोइनिक सड़ल कादोमे डूबल छैक
गाम हमर ओहिमे चकभाउर दैत लेढ़ा रहल अछि
आ गामक मूर्छित आत्मा अपन चोँचामे बैसल
पथरायल दृष्टिएँ भट्ठा दिस त्राटक लगौने
विपरीत गतिक सम्मोहनमे समाधिस्थ बुझैत अछि।

हिनक कविता प्रतीकात्मक होइत अछि, तेँ कविक विचारकेँ हृदयंगम करबा लेल पाठककेँ थोड़ेक मानसिक व्यायाम करऽ पड़ैत छैक, आ से हृदयंगम भऽ गेलापर अतीव संतोष दैत छैक।

एहि कोटिक कविता सामान्य लोकप्रियताक अपेक्षा रखितो नहि अछि।



ललित

मैथिली कथा जखन एक दिस बंगलाक भावुकतामे ओझरायल चल जाइत छल, तथा दोसर दिस पाश्चात्य शिल्प-शैलीकेँ उचडबा लेल सुरफुराय लागल छल, तखनहि ओहिमे एक झटका लगलैक आ ओ अपन धरातलकेँ कसिकऽ पकड़ि लेलक। कथाकेँ ई झटका लगौनिहार छथि ललित। भाव-बोध, भाषाशिल्प, सूक्ष्म विश्लेषण, आधुनिक परिवेश तथा व्यापक विषय-वस्तुक दृष्टिकोणसँ मैथिली कथामे ई क्रान्ति आनि देलनि। हिनके सान्निध्यमे अयलाक बाद राजकमल मैथिली कथा-जगतमे प्रवेश कयलनि तथा श्री प्रभास कुमार चौधरीक मुख्य प्रेरक सेहो यैह छलाह। हिनक ओना तँ लगभग ४० कथा प्रकाशित अछि, किंतु ११ गोट कथाक एक टा संग्रह अछि—प्रतिनिधि। 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास—पहिने १९६४ मे मिथिला मिहिरमे धारावाही प्रकाशित भेल, १९६५मे पुस्तकाकार छपल; ८४मे द्वितीय संस्करण भेल।

पुस्तकाकार हिनक यैह दू टा वस्तु अछि—जे मात्राक हिसाबे अधिक नहि मानल जायत, किंतु गुणक हिसाबेँ एकर महत्त्व अवश्य विशिष्ट अछि।

हिनक पूरा नाम ललितेश मिश्र छलनि। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक बसैठ-चानपुरा नामक गाममे ६ अप्रैल १९३२ केँ भेल छलनि। शुरूमे किछु दिन धरि ई लहेरियासरायक एम० एल० एकेडमीमे विज्ञान-शिक्षक छलाह। तकर बाद बिहार सरकारक राजपत्रित पदाधिकारी रूपमे विभिन्न पदपर काज कयलनि। बेतियामे ए० डी० एम० पदपर पदासीन रहैत यकृत रोगक कारणेँ १४ अप्रैल १९८३ केँ हिनक निधन भऽ गेलनि।

कथा-साहित्यमे हिनक विशिष्ट योगदानक मूलतत्त्वकेँ रेखांकित करैत मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित कथासंग्रहमे हिनक परिचयक प्रसंग यथार्थ कहल गेल अछि—"मैथिली कथा अपन आधुनिक स्वरूपकेँ निस्सन भऽकऽ सभसँ पहिने श्री ललितक कथामे चिन्हलक। जे मध्यवर्गीय चेतना आ जनजीवनक आर्थिक-सामाजिक संघर्ष तत्कालीन भारतीय कथा-साहित्यमे पुष्ट रूपमे अभिव्यक्ति पाबि रहल छल, से मैथिलीमे श्री ललितक कथामे आबिकऽ पूर्णरूपेण प्रस्फुटित भेल। जनसाधारणक आशा-आकांक्षा, ओकर हास-परिहास, सुख दुःख, जय-पराजय जाहि जीवन्त आ प्रामाणिक रूपमे आयल से पहिने नहि भेल छल। श्री ललितक कथाकार सामाजिक व्याधिक कारणकेँ तकैत ओहि विंदु धरि पहुँचैत अछि जे समस्त व्याधिक मूल थिकैक।"

ई १९५० ई०मे लिखब शुरू कयलनि। 'कबुला' हिनक पहिल कथा थिकनि, किन्तु जे कथा हिनका ख्यातिक शिखरपर चढ़ौलक से थिक रमजानी। समाजक निम्न वर्गक लोकमे चेतनाक बीज कोना फुटि रहल छैक, तकर जतेक निस्सन अभिव्यक्ति 'रमजानी'मे भेटलैक, से प्रायः दोसर कोनो कथामे नहि। वस्तुतः नवीन जागरणक पहिल उत्स प्रथमतः ओही कथामे देखल जा सकैछ।

हिनक अन्य महत्त्वपूर्ण कथा थिक—मुक्ति, ओवरलोड, उड़ाम, नव-पुरान, कंचनियाँ, प्रश्न चिह्न, जंगल आ रास्ता, प्रतिनिधि आदि।

प्रो॰ मायानन्द मिश्र मिश्रक अनुसार—"ललितक कथाक मूल मंत्र छलैक—मार्क्स। निम्नवर्ग अथवा निम्नमध्य वर्गक जीवनक जे जटिल संघर्ष, तकर व्यापक, समर्थ, स्वाभाविक ओ मार्मिक चित्रण जतेक ललितक कथामे भेल अछि, अन्य कोनो मैथिली कथामे नहि। कथामे बिम्ब-नियोजन आ ताहि बिम्ब-विधानसँ कथाकेँ सशक्त एवं प्रभावोत्पादक बनयबाक शिल्प ललितक अपन शिल्प-विशेषता थिक जे एकटा श्रेष्ठ कथाकारक अन्यतम गुण मानल जाइत अछि। चित्रांकनमे ललित बेसी सावधान रहैत छलाह। एक-एक चरित्रकेँ गढ़ैत छलाह, ओकर अपन पृष्ठभूमिक अनुकूल स्वाभाविक विकास दैत छलाह। आ तेँ हुनक चरित्र मनोवैज्ञानिक, स्वाभाविक तथा जीवन्त होइत छल। वातावरणक अभिव्यक्ति एतेक सशक्त होइत छल जे कथासँ माटिक गन्ध उड़ऽ लगैत छल।"

ललितक कथाक अद्वितीय वैशिष्टयक कारणपर विचार करैत राजमोहन झा कहैत छथि—"ललित जीक कथा यद्यपि पृथक-पृथक भावभूमिक छनि आ सभमे संवेदनात्मक उत्कर्ष समरूपसँ छनि, मुदा तेँ ई नहि जे हुनक कथासभ अपन मानसिकतामे एक-दोसरासँ विच्छिन्न आ छिड़िआयल होइनि। वस्तुतः हुनक कथासभमे एकसूत्रताक एक टा सूक्ष्म रेखा स्पष्ट भेटत आ से अछि विभिन्न क्षेत्रमे होइत सामाजिक परिवर्तनक प्रति सजग दृष्टि आ नवताक प्रति स्वस्थ, आशावादी, आग्रहपूर्ण दृष्टिकोण। विविधताक संग-संग संवेदनात्मकता तथा कलात्मकताक समरूप निर्वाह आ ताहि संग एहि वैचारिकताक निरन्तर समन्वय—ई एकटा बड़ पैघ लेखकीय क्षमताक बात छैक आ एहिमे ललित जी धरि ने त्रिमूर्ति (ललित-राजकमल-मायानन्द)क दुनू सदस्य पहुँचैत छथि आ ने बादक कोनो लेखक। ललित जी एखन धरि अपन स्थानपर एकसर छथि।" राजमोहन झा उँ आधुनिक कालक आरम्भ वस्तुतः ललित सँ मानैत छथि।

ललितक कथामे तिक्ख यथार्थक तीव्र अनुभूति होइछ। एकर कारणक तहमे जाइत, हिनक मित्र आ समीक्षक प्रो॰ रमाकान्त मिश्र हिनक जीवनक यथार्थसँ कथाक यथार्थकेँ जोड़ैत छथि—"जखन हम सभ (ललित-सहित) युवावस्थाक देहरिपर किलकारी दैत रही आ भविष्यक चिन्ताक एकमात्र अधिकारी पिते टाकेँ बूझी, एक अल्पवेतनभोगी गुरुजीक पुत्र ललित—अपन दू तीन बहिनक कन्यादानक चिन्तासँ ग्रस्त ललित—निकट भविष्यमे पिताक रिटायरमेंटसँ उत्पन्न होबऽवला आर्थिक भयावहतासँ त्रस्त ललित—सरस्वती स्कूलमे तत्काले मास्टरी पेशाक पुनरावृत्तिक व्यंग्यात्मक स्थितिबोधसँ तिक्त ललित—अपनहुँ परिवार (स्त्री-बच्चा)क परिवहनक उपरिष्ठात चिन्तासँ आवेष्टित ललित—बूढ़ भऽ गेलाह। तेँ ललितक कथासभमे ओतेक तिक्ख यथार्थक दर्शनक होइत अछि। यैह ओ समय छल जखन ललितकेँ आत्मानन्दक एकमात्र स्रोत लेखन भेटल रहनि। हुनक कल्पनाक कड़ाहमे सदिखन कोनो-ने-कोनो कथा-व्यथा खोलैत रहैत छलनि।"

हिनक कथामे सेक्स प्रचुरतासँ आयल अछि। वस्तुतः ई अपन कथामे पहिल बेर सेक्सक सफल प्रयोग कयलनि। उदाहरणक रूपमे हिनक मुक्ति कथाकेँ

राखल जा सकैछ। एहि कथामे प्रयुक्त सेक्सक प्रसंग श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मान्यता अछि—"यात्री जीक बाद आ राजकमल-मायानन्दसँ पहिने पहिल-पहिल ललित अपन 'मुक्ति' नामक कथामे दैहिक आवश्यकताक सत्य प्रतिपादित कयलनि। जँ पारोमे फायडक कामचेतनाकेँ रक्तक संबंधसँ ऊपर देखयबाक चेष्टा लक्षित भेल तँ ललितक कथा-नायिकाक अन्तर्दशाक चित्रणसँ ई स्पष्ट भेल जे कामक तृप्ति ओकर दैहिक आवश्यकता छलैक, दैहिक विवशता छलैक। हम मात्र ललितकेँ एहन ऐतिहासिक कथाकार मानैछ छी जे पहिल-पहिल मैथिली कथासाहित्यमे 'सेक्स'क सफल प्रयोग कयलनि। ई एक तथ्य अछि जे मैथिली कथामे ललितक कथाक बादे विविध रूपसँ यौन-सम्बन्धपर आधारित नीक-नीक कथा लिखबाक परिपाटी चलि पड़ल।"

हिनक कथाक समीक्षा करैत श्री जीवकान्त एक ठाम लिखने छथि "ललित अपन कथासभमे शोषणकेँ बहुत तेज इजोतमे देखार कयलनि अछि। ओ कोनो शल्यचिकित्सकक तेज धारवला चक्कूसँ शोषणक क्रूरताकेँ नाङट कयलनि अछि, मुदा हुनक रचनासँ नियतिवादी निर्वेद उघड़ैत अछि, कोनो शस्त्रपर शान चढ़यबाक चेष्टा नहि भेटैत अछि। ओ शल्यचिकित्सा कऽ संतुष्ट भऽ जाइत छथि, बारुद जोगयबाक प्रयास नहि करैत छथि।"

वस्तुतः जीवकान्तक टिप्पणी गम्भीर विचारक अपेक्षा रखैछ, किन्तु ललितक कथाक संबंधमे एतबा तँ निस्संकोच कहल जा सकैछ जे आधुनिक कथा जे एतेक विकसित-परिष्कृत भेल अछि, तकर मुख्य श्रेय हिनके कथासभकेँ जाइत छनि।

पृथ्वीपुत्र—ई हिनक उपन्यास थिक जे अनेक दृष्टिएँ मैथिलीक उल्लेखनीय औपन्यासिक कृति मानल जाइछ। एहिमे नवजागरणक उन्मेख भेटैत अछि। किसान, जे यथार्थतः पृथ्वीपुत्र थिक, भूमिपतिक अत्याचार सहन करैत-करैत जखन आजिज भऽ जाइत अछि तँ प्रतिक्रियामे विद्रोह कऽ दैत अछि। डा॰ अमरेश पाठकक शब्दमे 'जमींदारी उन्मूलनक फलस्वरूप उपस्थित समस्याकेँ लए लिखल गेल ललितक पृथ्वीपुत्रमे सामाजिक परिवर्तनक स्वर अधिक मुखरित भेल अछि।" एकर कथावस्तुक प्रसंग डा॰ पाठक कहैत छथि जे एहिमे "बदलैत सामाजिक स्थितिक चित्रण अछि जाहिमे निम्नवर्गीय जीवनक परिवर्तित रूपक विश्लेषण भेल अछि। सामाजिक बन्धनक चित्रण कए ललित एक नव अध्यायक श्रीगणेश करैत छथि। धिसेखी, सरूपा, गेनमा आदि एहि उपन्यासक विभिन्न पात्र अपन अधिकार बुझैत अछि। ओकरा अपन खेतक प्रति ममता छैक। पृथ्वीपुत्रक कथानकक बन्धन कतहु शिथिल नहि भेल अछि। एकर चित्रणमे स्वाभाविकता एवं घटनाक वर्णनमे प्रवाह छैक। अनुकूल वातावरणक पृष्ठभूमिमे घटनाक निर्माण कथावस्तुकेँ विश्वसनीय एवं प्रभावोत्पादक बनबैत अछि।"

एहि उपन्यासक प्रसंग प्रो॰ रमानाथ झाक विचार ध्यातव्य थिक--"जीवनक समस्या दिशि श्री ललित जी एहिमे जे दृष्टि अंकित कएल अछि से ततेक स्वस्थ अछि, भव्य अछि, सत्यपर अवलम्बित अछि जे एहिसँ हमहि टा आकृष्ट भेल छी से नहि, ज केओ एकर गम्भीरतापूर्वक विचार करताह, बिनु आकृष्ट भेलें नहि रहि सकैत छथि। कर्तव्याकर्तव्य, बुद्धि-विवेक, जीवनक ममता, सहजात प्रवृत्तिकेँ

एहि सहजात प्रवृत्तिके प्रधानता दए श्री ललित जी एहि उपन्यासमे मानव-
ओ एहि सहजात प्रवृत्तिके प्रधानता दए श्री ललित जी एहि उपन्यासमे मानव-
स्वाभावक नैसर्गिक प्रवृत्ति ओ भावनाकके जे प्रधानता देल अछि, से हुनक स्वस्थ
दृष्टिकोणक द्योतक थिक। ई उपन्यास कोनहु वर्गविशेषक अथवा समाज-विशेषक
नहि, प्रत्युत मानव जातिक मूलभूत भावना आ वासनाक चित्र उपस्थित करैत
अछि। अतएव अनेक दृष्टिसँ श्री ललित जीक पृथ्वीपुत्र हमरा अङरेजीक
विश्वविश्रुत कथाकार टामस हार्डीक उपन्यास मोन पाड़ि दैत अछि।" डा०
जयकान्त मिश्रक शब्दमे "He has given a vision and profundity to the
poorest classes in rural Mithila. Though he reveals an immatu-
rity in handling the great moments in the life of his characters,
yet on the whole one can say that he has truly achieved a place
for the 'lowly' hero or heroine in the Maithili novel." डा० 'श्रीश'क
अनुसार "ललित जीक उपन्यास बड़ सुनियोजित भेल अछि ओ उपन्यासकलाक सभ
गुण वर्तमान अछि, मुख्यतः सुनियोजित ओ रोचक कथात्मक प्रवाह, अनुकूल वातावरण
एवं व्यक्ति, चरित्र आ घटनाक सांगोपांग चित्रणक दृष्टिएँ।"

यात्री, हिनक निधनक बाद, पत्रात्मक शैलीमे हिनक लेखकीय सामर्थ्यके
एहि शब्दमे व्यक्त कयलनि—"रूसी कलाकार चेखब एवं गोर्कीक विलक्षण समन्वय
मात्र कहि देलासँ तोहरा हम निरूपित नहि कऽ पबैत छी। हमरालोकनिक कुलीन
वर्ग अथवा सर्वहारा समाज दिस तोहर अपन एक टा खास दर्शन विकसित होइत
गेलहु—पृथ्वीपुत्र तकर चरम दृष्टान्त थिकहु. . . रमजानीसँ लऽ कऽ पृथ्वीपुत्र धरि
तोहर सूक्ष्म एवं सार्वभौम अनुशीलन व्याप्त छहु....।"

यद्यपि ई कथाकार तथा उपन्यासकारक रूपमे विख्यात छथि, किंतु एकर
अतिरिक्त ई हृदयग्राही मार्मिक संस्मरण सेहों लिखने छथि। प्रो० रमानाथ झापर
हुनक अभिनन्दन-ग्रन्थमे प्रकाशित हिनक संस्मरण विशिष्ट कोटिक अछि।

ओहि संस्मरणमे हिनक कथाकारक व्यक्तित्व उभड़ि कऽ आयल अछि। ई
जे प्रो० रमानाथ झाक स्वरूप ठाढ़ कयलनि अछि से एक टा कथा-नायकक उदात्त
चरित्रके मोन पाड़ि दैत अछि। किंतु, एकर आशय ई नहि जे ओ कथा भऽ कऽ
रहि गेल अछि—वास्तविकतासँ दूर अछि। सत्य तँ ई थिक जे, ओ एहन वास्तविक
संस्मरण थिक आ तेहन आत्मीय लोकक लिखल थिक जे प्रो०रमानाथ झाक व्यक्तित्वक
समस्त गम्भीरता तथा उदीयमान साहित्यकारके विपुल प्रोत्साहन देबाक हुनक
उदारताके झलका दैत अछि।

वस्तुतः ललित मैथिली कथाके समकालीन बोध आ शिल्पसँ युक्त कऽ कोनहु
भाषाक आधुनिक कथाक समकक्ष ठाढ़ कऽ देलनि।

□

श्रीमती लिली रे

साहित्यमे लिली रेक पदार्पण मैथिलीक भेल महान घटना थिक। महिला
होयबाक कारणे केवल लेखिकेलोकनिक सीमित रचनाक सन्दर्भमे हिनक कृतित्वक
मूल्यांकन करब हिनका प्रति अन्याय होयत। वस्तुतः ई अपन वैभवपूर्ण रचना-क्षमतासँ
मैथिली कथा ओ उपन्यासके नव क्षितिज पर पहुँचा देलनि अछि।

साहित्य-क्षेत्रमे व्यक्तिगत-रूपे ई बहुत दिन धरि अपरिचिता रहलीह, यद्यपि
हिनक कथा 'रंगीन परदा' कथा-साहित्यमे हरविरड़ो मचा देने छल, अपन समयक
सभसँ चर्चित कथा भऽ गेल छल। 'रंगीन परदा', जाहिमे सासु-जमायक शीलहीन
सम्बन्ध आ उद्दाम सेक्सक वर्णन अछि, 'कल्पनाशरण'क छद्मनामसँ १९५६मे वैदेहीक
कथा-विशेषांकमे प्रकाशित भेल आ एकाएक मैथिली कथा-साहित्यपर लेखिकाक
परिछाँही पड़ि गेल। वैदेहीमे हिनक कुल ५ टा कथा छपल छनि, पाँचो कल्पना-
शरणक नामसँ। रोगिणी (जुलाइ ५५), ठकपाती (सितम्बर ५५), की कहू ?
(जनवरी ५६), तकर बाद 'रंगीन परदा' ओ अन्तमे 'हमर गप्प (फरवरी ५७)।

ओकर बाद, मैथिलीमे कतहु हिनक रचना नहि आयल, आ ई एतबा दिन
धरि मैथिली पाठकक बीच 'रहस्ये' रहलीह।

एहि रहस्यपरसँ पर्दा २२ जनवरी १९७८क मिथिला मिहिरक अंकमे उठल,
जखन पूरे बाइस वर्षक बाद ई पाठकलोकनिक समक्ष 'अन्तराल' नामक दीर्घकथा
लऽकऽ, एहि बेर अपन पूरा परिचितिक संग, पुनः उपस्थित भेलीह।

ओहि अंकमे हिनक चित्र आ संक्षिप्त जीवन-परिचय पहिले-पहिल प्रकाशित
भेल। 'अन्तराल' चारि अंकमे जाकऽ समाप्त भेल, मुदा लिली रेक नामक चर्चा,
हिनक कथाक चर्चा जे तहियासँ शुरू भेल से एक-पर-एक उपलब्धि प्राप्त करैत आइ
धरि चलिए रहल अछि। एहि बीच हिनक दू गोट उपन्यास प्रकाशित भेल—दुनू
अपना ढंगक विशिष्ट। अनेक पत्र-पत्रिकामे अनेक कथा सेहो छपल अछि।

हिनक जन्म २६ जनवरी १९३३के भेल छनि। कटिहार जिलाक दुर्गागंज
हिनक सासुर थिकनि, एवं पूर्णिया जिलाक रामनगर नैहर। नैहर-सासुर—दुनू
अभिजात परिवारमे। स्कूली शिक्षा तँ हिनका अधिक नहि भेटि सकलनि, किन्तु
स्वाध्यायसँ मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंगरेजी आदि भाषा पर समान अधिकार प्राप्त
कऽ लेलनि।

'पटाक्षेप' नामक हिनक पहिल उपन्यास मिथिला मिहिरमे १ जुलाइसँ ७
अक्टूबर १९७९क बीच प्रकाशित भेल। दोसर उपन्यास 'मरीचिका' दू खण्डमे
१९८१ एवं ८२मे छपल। 'मरीचिका'क पहिल खण्ड पर लेखिकाके १९८२क
साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलनि।

एकर अतिरिक्त ई कथा सेहो कम नहि लिखलनि अछि, जे विभिन्न पत्र-
पत्रिकामे छपैत रहल अछि, हिनक किछु कथाक शीर्षक थिक—बिहाड़ि अन्हारसँ

पहिने, चक्र (मिहिरमे); दुविधा (अनामा-४मे), जिव, चन्द्रमुखी, माया (कथा-दिशामे); रानू देवी राना (आरंभ-३मे) पाहुन (मैथिली अकादमी पत्रिकामे) तथा गुलाब जान (माटिपानिमे)।

पटाक्षेप—प्रस्तुत उपन्यास मैथिलीमे एक नव जमीनकें कोड़लक। आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल ई पहिल उपन्यास थिक जाहिमे नक्सलवादी आन्दोलनक समस्त गतिविधिकें, जीवन्त भाषामे अत्यन्त स्वाभाविकताक संग, सफलतापूर्वक प्रस्तुत कयल गेल अछि। सम्पूर्ण उपन्यासमे आदिसँ अन्त धरि विश्वसनीयता कतहु खंडित नहि होइत छैक। उपन्यासक पात्रसभ सँ पाठक आत्मीय सम्बन्ध स्थापित कऽ लैत अछि।

डॉ० 'श्रीश'क अनुसार—"पटाक्षेपमे उपन्यासकारक नक्सलवादी क्रान्ति-भावनाक प्रति सहानुभूतिपूर्ण प्रगतिशील प्रवृत्तिक दर्शन होइत अछि। परन्तु मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि उपन्यासक महत्त्व अछि नवीन ओ ज्वलन्त राजनीतिक विचार-धाराकें रोचक शैलीमे मैथिली उपन्यासक विषय बनाय नवीनताक सन्निवेश करबाक दृष्टिएँ।" श्री कुलानन्द मिश्रक अनुसार—"पटाक्षेपमे कोनो दिशा धरैत सामाजिक मनःस्थितिक चित्र ताकल जा सकैछ।"

मरीचिका—मैथिलीमे सभसँ दीर्घकाय, लगभग एक हजार पृष्ठक ई उपन्यास थिक, केवल एही कारणें नहि, अपितु अपन वर्णन वैभव कारणें, रोचकताक कारणें, कथाक गतिकें लगातार तीव्र बनबैत जयबाक कारणें, तीन-तीन पीढ़ीक फलक पर राजघरानाक अन्तःपुरमे चलैत द्वन्द्वक सटीक चित्रणक कारणें, अध्यवसायक बलें मनुष्यक उत्कर्षक प्रेरणापूर्ण सन्देशक कारणें तथा भाषाक सहज गतिमयताक कारणें सेहो प्रस्तुत उपन्यास महत्त्वपूर्ण अछि।

'मरीचिका' दुनू खण्ड मिलाकऽ पूर्ण होइत अछि। वस्तुतः खण्डक विभाजन लेखिका द्वारा नहि, प्रकाशक द्वारा, प्रकाशनक सुविधाक हेतुएँ, कयल गेल अछि। अतः किछु आलोचकक ई आक्षेप जे मरीचिकाक दोसर खण्ड नहि लिखल जाइत तँ नीक छल, दोसर खण्डक महत्ताकें कम नहि करैत अछि।

'मरीचिका' भ्रमकें कहल जाइछ। प्रस्तुत उपन्यासमे प्रेमक मरीचिका अछि कि अर्थक—ई विशेष विवेचनक अपेक्षा रखैछ। अर्थक पाछाँ बौआइत एकर पात्रकें, सम्पत्तिपर सम्पत्ति बनौने जाइत रहितो, अतृप्तिक बोध आ मरीचिका—जे एकर दोसर खण्डमे देखल जाइछ, वास्तवमे सेह 'मरीचिका' थिक कि राजा सरकार आ हीराक बीच रागात्मक सम्बन्ध आ प्रेमक मरीचिका, जे एकर पहिल खण्डमे वर्णित अछि, से 'मरीचिका'—एहि सम्बन्धमे आलोचकक बीच मतभेद अछि। किन्तु, एहिमे कोनो मतभेद नहि अछि जे ई मैथिली उपन्यासक इतिहासमे एक टा नव कीर्तिमान स्थापित करैत अछि।

डॉ० 'श्रीशक' शब्दमे—"एहि मध्य तीन पीढ़ीक बदलैत जीवन-स्तर, परिवर्तित मानव-मूल्य ओ मान्यता एवं स्खलित होइत ओ टुटैत परम्पराक यथार्थ चित्र अंकित कयल गेल अछि। श्रीमती लिली रेक चरित्र सृष्टिमे राजमाता, मुरलीधर पाठक, राजा साहेब, रानीजी, नवरानी एवं हीराक विशेष रूपें उल्लेख कयल जाय सकैत अछि, एना एहि मध्य लेखिका अनेकानेक पात्र ओ प्रसंगक सृष्टि कयने छथि,

विशेषतः नारी-चरित्रक, जे अपने-अपने परिस्थिति ओ पर्यावरणक सीमित वृत्तमे अपन-अपन वर्गक प्रतिनिधित्व करैत छथि तथा परम्परागत सामन्तवादी संस्कृतिक गुणदोषकें उद्घाटित करैत छथि।......एहि मध्य देश, काल ओ पात्रकें सांगोपांग विशदताक संग रोचक ओ सजीव शैलीमे स्वाभाविक रीतिएँ प्रस्तुत कयल गेल अछि, परिस्थिति ओ पर्यावरणक यथार्थ सन्दर्भमे चरित्र सबहिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रतिपादित भेल अछि। कथाक अत्यन्त संतुलित विकास, संग-संग जीवनक बदलैत मूल्य ओ मान्यताक सूक्ष्म विवेचन भेल अछि एवं सहजताक संग परिष्कृत ओ परिशुद्ध मिथिलाभाषाक स्वाभाविक ओ प्रांजल प्रयोग भेल अछि।"

किंतु, श्री कुलानन्द मिश्र एहि उपन्यासपर आलोचनात्मक दृष्टिसँ विचार कयलनि अछि तथा एकर गुण-दोषकें निम्नलिखित अंशमे परिछौलनि अछि

"मरीचिकासँ पूर्व प्रायः कोनो मैथिली उपन्यासमे चरित्रक गढ़निपर एतेक यत्नपूर्वक काज नहि कयल गेल छल। लेखकलोकनि चरित्रविशेषक रूपरेखे टा प्रस्तुत कऽ काज चला लैत छलाह, ताहिमे रंग-टिपकारी भरबाक काज धैर्यपूर्वक करब संभव नहि होइत रहलनि अछि। ओ चरित्रसभ मांसल कम आ 'टाइप' अधिक होइत रहल अछि। लिली रे मरीचिकामे हीरा, राजा साहेब, राजमाता साहेब, रानीजी, नेना सरकार, पाठक जी, मनुदाइ, नवरानी, शहजादी, कदम लाल, मनीबाबू आ हुनक पत्नी सन जीवंत चरित्रक निर्माण पहिल बेर कयलनि अछि। ......मरीचिकामे चित्रित कालखण्ड आधुनिक होइतो एखनुक नहि थिक आ तें ई उपन्यास साम्प्रतिक चेतनासँ कोनो आत्मीयताक संग सम्बन्ध स्थापित नहि करैछ। ई उपन्यास एकटा दुनियाँ-विशेषक कलहुका सत्यकें उद्घाटित करैत अछि।

मरीचिकाक पहिल खण्ड हीराक जिजीविषाक कथा कहैछ आ दोसर खण्डमे एक टा पड़ावपर पड़ल हीराक कथा अछि जे आब कतहु जा नहि पौती, मुदा जयबा लेल अन्तरमे निरन्तर छटपटाइत रहती। मुक्ति हुनक नियति नहि छनि।"

डा० सुभाष चन्द्र यादवक अनुसार—"हीराक दुनू लोक (प्रेमलोक आ दाम्पत्य लोक) बिगड़ि गेल छैक। ओ पतियोकें तेजि दैत छैक आ परपीड़ित प्रमोद (Masochism)मे लिप्त भऽ जाइत। जीवनक उद्देश्य आ अर्थ मासोकवाद (Masoclism) नहि भऽ सकैत छैक तें हीराकें अपन जीवन उद्देश्यहीन-अर्थहीन बुझाइत छैक। लेकिन उपन्यासमे एहि मासोकवाद लेल एक टा औचित्य स्थापनक प्रयास भेल छैक जे जीवन मरीचिका थिकैक, ओ लोककें भरमाबैत छैक। हीराक जीवन सही लेखकीय दृष्टि (Vision) सँ युक्त छैक। एहि दृष्टिमे निहित जीवनक प्रति अनास्थावादी-निराशावादी रवैया बहुत रुग्णकारी प्रभाव छोड़ैत छैक। रुग्णता चाहे ओ कोनो तरहक हो, कल्याणकारी आ सुन्दर नहि भऽ सकैत छैक। भरिसक हीरा भारतीय स्त्रीक पारम्परित भाग्यवादक आधुनिक विकसित रूप छैक।"

हिनक कथासभमे सेहो पात्रक विविध रंग-रूप आ जीवन-स्थिति भेटैत अछि तथा ओहो पाठककें अनुभव-सम्पन्न करैत अछि।

■

श्री रमानन्द रेणु

श्री रमानन्द रेणुक प्रवेश मैथिली साहित्यमे गीतकारक रूपमे भेलनि। तखन ई आधुनिक कविताक निर्माण करऽ लगलाह, फेर कथा विधामे घुरलाह लिखऽ लगलाह आ उपन्यास लिखिकऽ ओहू विधामे अपनाकें स्थापित कऽ लेलनि। 'रेणु' कवि, कथकार आ उपन्यासकार—एहि तीन विधाक सशक्त रचनाकार छथि, एहि तीनू विधामे हिनक कृति प्रकाशित छनि, प्रशंसित भेल छनि। हिनक कृतिसभ हिनक बहुमुखी प्रतिभाक द्योतन करबामे सर्वथा समर्थ प्रमाणित भेल अछि। विभिन्न विधाक हिनक कृतिक नामावली एहि रूपक अछि—दूध-फूल (१९६७)—उपन्यास; कचोट (१९६९), त्रिकोण (१९७४), अन्तहीन आकाश (१९८२)—कथा-संग्रह; अन्ततः (१९६९), ओकरे नाम (१९७२)—कविता।

हिनक पूर्ण नाम थिकनि रमानन्द लालदास, जन्म भेल छनि ३ जनवरी १९३४कें दरभंगा जिलाक उसमामठ नामक गाममे। टेलीफोन एक्सचेंज, दरभंगामे ई कार्यरत छथि। हिन्दीमे एम० ए० छथि तथा मैथिली साहित्यक वहुविध सेवामे सदा लागल रहैत छथि।

हिनक गीत बड़ हृदयग्राही, कोमल आ भाव-प्रधान होइत अछि, किन्तु नवीन शैलीक कविता ओतेक सहज नहि होइत अछि। हिनक गीत हो कि कविता —ओहिमे मैथिलीक ग्रामीण शब्दक प्रचुर प्रयोग भेटैछ। 'अन्ततः' नामक हिनक काव्य-संकलनमे नवीन शिल्प-शैलीक ४५ गोट कविता संगृहीत अछि। हिनक कविताक विषय 'आजुक समाजमे व्याप्त असंतोष, क्षोभ, घृणाक वातावरणसँ आकुल मनुक्खक अनुभूति' रहल अछि। एहि प्रसंग हिनक 'चक्रचालि' शीर्षक कविताक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य—

वर्गवादी पूजी
आ अर्थवादी सत्ता
सभ तरिसँ निछक्का
सुरेवगर आकृति दिस आतुर आ व्याकुल
चिकरैत 'साइरन' अछि कहियासँ ने कहैत ?
चेत की तैयो भेल ?
ज्यामितिक दृष्टिसँ समस्याक सिद्धि हो
विकल्पक व्याकरण बनियोकऽ की कयलक अछि ?

उक्त उदाहरणसँ ई स्पष्ट अछि जे ई पूजी आ सत्तापर दलित-उपेक्षितकें कब्जा करबाक आह्वान करैत छथि, ओहिपर जे एकाधिपत्य अछि, तकर निष्कासन चाहैत छथि।

हिनक नवकविता दुरूह होइछ, से कवि स्वयं स्वीकार करैत छथि आ तकर कारणकें स्पष्ट करैत 'मैथिली नव कविता'मे देल अपन वक्तव्यमे कहैत छथि—'हमर आस्था, हमर असंतोष, कुंठा, त्रास आ व्यावहारिक परिवेशमे प्रत्येक शब्द संयोजित अछि, यद्यपि हमरा विश्वास अछि जे सम्पूर्ण भाव-राशिक अभिव्यक्ति हमरा कवितामे एखन पर्यन्त नहि भऽ पबैत अछि आ यैह कारण अछि जे भाव-बोधक आधिक्य आ विस्तार कविताकें किछु जटिल बना दैत छैक। जाहि क्षण भावक विराटता आबि जाइत अछि अभिव्यक्तिक प्रणालीमे तैयो कोनो अन्तर नहि रहैत अछि—वैह पूर्वहि जकाँ सामान्य स्थिति, तें लऽकऽ अर्थबोधमे किछु अंश धरि दुरूहता आबि जाइत छैक। हमर पाठक एवं श्रोताकें सभ दिनुक ई उपराग एखनो पूर्ववते अछि जे हमर कविता दुरूह होइत अछि। किन्तु, एकर निराकरण कोना करी, हमरा कठिनाह सन लगैत अछि।"

ई हृदयसँ गीतकार छथि, तें हिनक प्रतिभा गीतमे जतबा निखरैत अछि, ततबा नवकवितामे नहि। कवितोमे हिनक गीतकार कतहु-कतहु हाबी भऽ जाइत अछि। हिनक प्रसंग प्रो० रमानाथ झा लिखने छथि जे ई "अपन नवीन गीत-रचना द्वारा मैथिली काव्यप्रेमीक ध्यान आकृष्ट करबामे समर्थ भए सकलाह अछि। हिनक कवितामे कोमल कल्पना एवं मधुर ललित आनुप्रासिक शब्द-योजनाक बड़ सुन्दर समन्वय भेटैत अछि। ई बौद्धिक प्रयोगवादी रचना दिस सेहो प्रवृत्त भेलाह अछि, किन्तु रेणुजी गीत-रचना द्वारा सएह यशस्वी रहताह; 'वाद'क रचना हुनक व्यक्तित्वक परिधिमे नहि अबैत अछि। एहि दृष्टिएँ ई गीत द्रष्टव्य—

समय सोन सन चमकय मनमे हलचल अछि बड़ जोर
रूपक हाट पसारल सगरो आतुर बिजुरी-कोर
आँचर भीजल—धरती गाबय साओनसँ भऽ स्नात
आँचर भीजल—परती कहइछ चमकक हाय परात
आँचर भीजल—बाट बटाबय कछमछ राही गात
आँचर भीजल—बाध बजाबय बादरिकेर बरिसात
धाह तनुका लेल अषाढ़ी उमकय अन्तर-पोर
ललकय प्राण, जुआनी रभसय, आँचर भीजल......
बाझय पात पसाही बहसय, आँचर भीजल......
छिछलय छाँह अनाड़ी बरिसय, आँचर भीजल......
डोलय नीति हवेली कौखन, आँचर भीजल......
बरखाकें कनहेठि मास-स्वर बोधय आत अथोर

'ओकरे नाम' हिनक दीर्घ कविता थिकनि। ई शोक-काव्य थिक जकर निर्माण कवि अपन पुत्र कृष्ण कुमारक आकस्मिक निधनसँ व्यथित भऽ कयलनि अछि। एहिमे 'मृत्युक वास्तविकताकें लगीचसँ देखल आ ओकरा स्वीकृति' देबाक चेष्टा कयल गेल अछि। हिनक कविताक सम्बन्धमे डा० जयकान्त मिश्रक कहब अछि—"Ramanand Renu has expressed the revolt and disqust in the present-day society but his idom and diction have not yet adjusted themselves to his rhythems—he seems to be unmusical and more a writer of prose than of lyrical poetry."

हिनक तीन गोट कथा-संग्रह प्रकाशित अछि—कचोट, त्रिकोण आ अन्तहीन आकाश। 'कचोट'मे १२ गोट, 'त्रिकोण'मे १८ गोट तथा अन्तहीन आकाशमे १० गोट कथा संगृहीत अछि। हिनक कथाक मूल विशेषताक प्रसंग मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहमे कहल गेल अछि—"मिथिलाक निठट्ठ देहातसँ निम्नमध्यवर्गीय पात्र लऽ ओकरे भाषामे ओकर कथा कहब हिनका प्रिय

छथि । पाखंड, जातिवाद, शोषण, गरीब आ सामाजिक रूढ़िमे पिसाइत जनसाधारणक पीड़ाकें अभिव्यक्ति देब हिनक कथाक उद्देश्य रहैत अछि । मोहभंग आ अनिर्णयक वातावरणमे बाट तकबाक अकुलाहटिमे जिबैत हिनक पात्र निम्नमध्यवर्गक प्रतीक जकाँ बनि गेल अछि ।"

हिनक किछु प्रसिद्ध कथाक नाम थिक—कचोट, अग्निव्यूह, सन्नुक, दूगरक जन्म, घट्ठर, अग्निजीवी, लल्ल, युद्ध आदि । 'घट्ठर'मे कहल गेल अछि जे 'जिनगीक एकरसता एक टा सीमाक बाद ने यंत्रणा रहि जाइत छैक, ने कोनो संवेदने जगबैत छैक, ओ एक टा सहज गति बनि जाइत छैक । आर्थिक रूपें क्षमारल व्यक्तिक ई नियति 'घट्ठर'क माध्यमसँ व्यक्त भेल अछि ।"

हिनक कथाक भाषागत विशेषता मुख्यत: उल्लेख करबाक योग्य अछि । मिथिलाक गाम-घरमे निम्न-मध्यवर्गक बीच बाजल जायवला शब्दकें, जे आब लुप्तप्राय भेल जा रहल अछि, साहित्यमे अनबाक हिनक चेष्टा श्लाघनीय मानल जायत । पात्रक अनुरूप भाषा-प्रयोगमे ई सिद्धहस्त छथि । हिनक कथामे मिथिलाक उपेक्षित वर्गक वेदना व्यक्त भेल अछि । डा० जयकान्त मिश्र सेहो हिनक प्रसंग एही प्रकारक विचार व्यक्त कयने छथि—"He is seen at his best in his realistic stories where he chooses form the commonest life 'incidents' and 'soul stirring situations.' He has allowd dialect to make an appearance, now and then, so that his realism may look more real."

दूध-फूल—ई हिनक एकमात्र उपन्यास अद्यावधि प्रकाशित अछि, किन्तु यैह एकमात्र कृति हिनका मैथिलीक नवीन उपन्यासकारक पाँतीमे ठीक जकाँ प्रतिष्ठित कऽ देलकनि अछि । डा० अमरेश पाठकक मतानुसार—"हिनक दूध-फूल मैथिली उपन्यास-क्षेत्रमे नव प्रयोग अछि । ग्रामीण जीवनक सूक्ष्म निरीक्षणक कारणें एकर कथानक प्रतीयमान एवं चरित्र-चित्रण स्वाभाविक भेल अछि । एकर कथानकमे गति अछि तथा उत्सुकताक क्रमिक विकास भेल अछि । सभसँ विशेष वर्णनक स्वाभाविकताक कारणें चरित्रक स्वाभाविक विकास सम्भव भेल अछि ।"

डा० 'श्रीश' एकर कथानक आ अन्य विशेषताक प्रसंग कहैत छथि—"बाल्यावस्थासँ जीवनक मध्याह्न धरि एकर नायक रामसरन नियति द्वारा निर्दिष्ट जीवनप्रवाहमे बहैत रहैत अछि तथा भिन्न-भिन्न परिस्थितिकें भोगैत रहैत अछि । रेणुजी नायकक चरित्रांकन भिन्न-भिन्न परिस्थितिमे ओकरा राखि कयने छथि जे संयोगात्मक ओ आदर्शात्मक भेल अछि । रामसरनक बादाजी होएबाक ओ गाम घुरबाक प्रसंग बड़ नाटकीय भेल अछि । एहि कृतिक प्रमुख गुण थिक उपन्यासक निविष्ट घटना आ ओहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति वा परिस्थितिक संगोपांग वर्णन, स्थान-स्थानपर मनोविश्लेषण सेहो बड़ मार्मिक रूपें उपनिबद्ध अछि ।"

वास्तवमे रेणुक ई कृति कथावस्तुक दृष्टिएँ, शैलीक दृष्टिएँ, भाषाक सहजताक दृष्टिएँ तथा मनोविश्लेषणक चारुताक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि । हिनक सेवासँ मैथिली-साहित्य समृद्ध भेल अछि ।

श्री सोमदेव

कवि, उपन्यासकार, कथाकार, समालोचक, सम्पादक—एहि सभ टाक समन्वित रूप सोमदेवक व्यक्तित्वकें महान बनबैत अछि । यद्यपि उक्त कोनो क्षेत्रमे हिनक अवदान नगण्य नहि अछि, किन्तु मूलत: ई कवि छथि, से आधुनिकतम प्रवृत्तिक नव्यतम शिल्प-शैलीमे रचना कयनिहार, किन्तु एक दिस ई मिथिलाक मौलिक परम्परागत भासपर उत्तम गीत रचैत छथि, प्राचीन छन्दमे कविता करैत छथि, चौपाइ-दोहा बनबैत छथि, तँ दोसर दिस उर्दू-गजलक परम्परामे मैथिलियोमे ई गजल लिखैत छथि तथा पश्चिमी धुनपर मैथिली शब्दकें सेहो सजबैत छथि ।

'कालध्वनि' हिनक स्फुट कविता-संग्रह तथा 'चरैवेति' संगीत-नाट्यकाव्य थिकनि । 'चानोदाइ' आ 'होटल अनारकली'—ई दू टा उपन्यास छनि । मराठीक 'नामदेव'क ई मैथिली-अनुवाद कयने छथि । एकर अतिरिक्त वैदेहीक किछु दिन धरि ई सौजन्य सम्पादक रहलाह—ताहि अवधिमे ओकरा ई नव रूप देबाक प्रयास कयलनि । 'अग्नि-संकलन' नामक अग्निजीवी कविक कविताक सम्पादन सेहो कयने छथि । उक्त प्रकाशित पुस्तकक अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कविता, कथा, समालोचनात्मक निबन्ध आदि प्रकाशित छनि, जकर संख्या थोड़ नहि ।

हिनक पैतृक भोजपुरी भाषाभाषी क्षेत्रमे छनि, मातृक छनि दरभंगा जिलाक बहेड़ाक समीपे नेओरी टोल, दाथ । हिनक पूरा नाम थिकनि श्री गौरीशंकर प्रसाद श्रीवास्तव । हिनक जन्म ५ मार्च १९३४ के भेलनि । हिन्दीमे एम० ए० कयलाक बाद विभिन्न स्थानमे किछु-किछु दिन रहि सम्प्रति महारानी कल्याणी कालेज, लहेरियासरायमे हिन्दीक प्राध्यापक छथि । हिन्दीमे सेहो हिनक कविता-पुस्तक प्रकाशित छनि ।

कालध्वनि—एहिमे हिनक ४५ गोट नवकविता संकलित अछि, जकरा एक विशेष वादक स्थापना कऽ ओहि अन्तर्गत राखल गेल अछि । ओहि विशेष वादक नाम थिक—सहजतावाद । संकलित किछु कविता सहज अछि, किछु क्लिष्ट—किन्तु सहजतावादक जे सात टा स्थापना-सूत्र अछि तकरा बुझब बहुतो बुते संभव नहि अछि । एकर भूमिकामे प्रो० धीरेन्द्र ई सिद्ध करबाक चेष्टा कयने छथि जे ई वाद कतहुसँ आयातित नहि, मैथिलीक अपन वस्तु थिक । सहजतावाद की थिक ? एकर उत्तर दैत श्री धीरेन्द्र कहैत छथि—"जीयब भोगब एवं ओकर उपलब्धिकें सहज मानवीय स्तरपर व्यक्त करब, यैह थिक सजतावाद । एकर लक्ष्य वर्तमान क्षणसँ पलायन नहि, अपितु ओहि क्षणकें अधिक जीबन्त एवं प्राणवान बनयबाक चेष्टा करब थिक ।" हुनक अनुसार "कालध्वनिमे युगक स्वर युगक निजी अभिव्यक्ति प्रणालीमे प्रकट भेल अछि । एकर भाव भोगल क्षणसँ सम्बद्ध अछि, आ एकर शिल्पमे सहजताक सामाजिक अभिबोध ।"

एहि वादक विवादमे बिना पड़नो कवितापर विचार कयल जायत तँ भेटत जे एकर किछु कविता विचारक दृष्टिएँ उग्र अछि, शिल्पक दृष्टिएँ नवीन अछि, भाव-बोधक दृष्टिएँ यथार्थ अछि तथा किछु कविता 'कूट' बनिकऽ रहि गेल अछि ।

परतन्त्रताक अन्हरसँ मुक्ति भेटलाक बाद कवि 'केहन विहान'क कामना करैत छथि से द्रष्टव्य—

तोरे ले' भिनसरसँ बैसल हम करैत छी कविता बखान।
सूरुज महान छथि, सूरुज कृपान छथि
हिनका ले' सभ छनि समान
तीसकपरे मूतल आ गोनरि तर सुटकल
राजा आ परजा किसान !
स्वागत हे अरुणशिखे !
पुवर्क आ फोकुसिनमय दीसन जनु सभकेर दलान
एहन विहान भैया एहन विहान !

देशक भाग्यविधाताकेँ सूर्यक समान दीप्त आ समदृष्टि रखबाक संकेत तथा ट्रेन अयबाक काल स्टेशनपर जेहन जीवन्तता आबि जाइछ तेहने जीवन्तता प्रत्येक व्यक्तिक घरमे हो, कविक ई कामना स्पष्ट होइत अछि।

तहिना, 'सुरजा डकैत' हिनक प्रसिद्ध कविता अछि, जे ठेठ शब्दक बहुलताक कारणेँ आ दृष्टिक मौलिकताक कारणेँ महत्त्वपूर्ण भऽ गेल अछि—

अन्हारक घरमे सेन्ह पड़ल अछि
डरे ने क्यो उठैत
अन्हारक घरमे लागल पसाह'छि
मकइए सुरजा डकैत

हिनक कविताक प्रसंग प्रो० रामनाथ झाक मत अछि—"सोमदेव आरम्भहिसँ ... प्रगतिशील एवं अभिव्यक्तिक क्षेत्रमे प्रयोगशील रहलाह अछि। हिनक कवितामे आत्मनिष्ठ तत्त्वक अपेक्षा वस्तुनिष्ठ तत्त्वक प्रधानता अछि तेँ भावाभिव्यंजन भावुकतापूर्ण नहि, बौद्धिकतापूर्ण भेल अछि। एहि बौद्धिकता कारणेँ कतहु ई बहुत दूरूह भऽ जाइत छथि। किन्तु ई दुरूहता विविध भासपर एम्हरका लिखल गीतमे नहि भेटैत अछि।"

प्रो० रमानाथ झाक ई टिप्पणी कविक 'काल ध्वनि'क कविताक आधारपर ... पड़ैत अछि। सोमदेवक बादक कवितामे युगबोध बड़ तीव्रतासँ आयल अछि, जकर भावक संप्रेषणमे हिनक भाषा अधिक ठाम बाधक नहि बनैत अछि। वर्तमान कालक आक्रोश, विस्फोटक माहौलमे परिस्थितिक औनाहटिकेँ हिनक 'आगि' कविता सहजोर स्वर दैत अछि—

हमर की अस्तित्व अछि ?
बाहर हरियर प्रकृति
आ भीतर पीयर लोक देखबासँ भिन्न।
ता एक टा धमाका भेलैक।
आ गाड़ीमे आगि लागि गेलैक
अन्हरा पछिला टीसनपर उतरि गेल छल
मुदा ओकर अधजरुआ बीड़ीसँ भऽ गेल छल ई विस्फोट !
हम देखलहुँ, ओहि किसान संस्कारक मजदूर
युवकक मुँहपर प्रसन्नताक रेख

जकर झोरीमे राखल बारुदसँ आगि धऽ लेने रहैक—
सभसँ बेसी चिन्तित रहल छल हमर संगी आ सेठ
मुदा गाड़ी रुकल नहि
आ पूरा डिब्बा धुआँ आ धधरासँ भरि गेल।

हिनक 'गान्धीक चश्मा'मे शासन आ शासकपर व्यंग्य देखबा-योग्य अछि—

पता नहि असली चश्मा पहिरि कऽ तँ ने क्यो 'तेहने सन'
बलशाली। गुंडा। थैलीशाह....बहुरुपिया
राष्ट्रपिता बनि बैसल अछि अपन इतिहास-ग्रन्थपर
पन्नाकेँ पन्नासँ भिन्न करैत
एक-एक पन्नासँ भिन्न-भिन्न ग्रन्थ बनबैत
भिन्न-भिन्न ग्रन्थक मोजरामे राष्ट्रगाताकेँ राग सहित कनबैत।
मंचपर 'कौमी एकता-दिवस' मनबैत !!

उर्दूक गजलमे जे तत्काल प्रभाव उत्पन्न करबाक क्षमता रहैछ, ताही तरहक प्रयास ई मैथिलीमे सेहो गजल लिखिकऽ कयलनि अछि। द्रष्टव्य थिक एक उदाहरण—

पसेनाक पोखरिमे औलसँ मरैत छी
अपन हाथ जिनगीक चौलसँ मरैत छी
चारि-चारि बेटाक माय विनु विवेक बाँझ
बेटीकेर बाप बधिक धौलसँ मरैत छी
क्रान्तिक बसवाड़ि लगा आयल से आम्रवन
आइ समय-काँप गड़ल, लौलसँ मरैत छी

लोकप्रियताक दृष्टिसँ ई गीतसभ भलेँ हिनक ख्याति-वृद्धि करत, किन्तु स्थायी महत्त्वक वस्तु वैह थिक जाहिमे ई स्वानुभूतिक ईमानदार अभिव्यक्ति कयने छथि, आ जे मैथिलीक नवीन कविताक भावभूमिपर रचित भेल अछि।

चरैवेति—'संगीत नाट्यकाव्य 'चरैवेति' अपन विधाक महत्त्वपूर्ण कृति थिक। एहि प्रकारक शिल्पमे रचनाक अभाव अछि। एकर कथावस्तु अछि पौराणिक। वैदिक ओ पौराणिक साहित्य-भण्डारमे विविध स्थानपर विभिन्न रूपेँ छितरायल कथाकेँ कवि एक ठाम जोड़लनि अछि, किछु काल्पनिक पात्रक सेहो सृष्टि कयलनि अछि तथा कथाकेँ रोचक, ओ आधुनिक सन्दर्भमे उपयोगी एवं प्रेरणादायक बनौलनि अछि। एहिमे काव्य-तत्त्वक संग नाटकीय तत्त्व सेहो प्रमुखतासँ आयल अछि। साहित्यिक मूल्यवत्ता ई एहू कारणेँ रखैत अछि जे समसामयिकताक समावेशक संगहि किछु एहनो तत्त्व छैक जे एकरा शाश्वत बनबैत छैक। एकर भाषामे प्रवाह अछि, कथामे गति अछि, कथोपकथनमे जीवन्तता अछि। एतऽ अभियान-गीतक किछु अंश द्रष्टव्य, जाहिमे छात्र-ओ युवाक आदर्शकेँ रेखांकित कयल गेल अछि—

आलस आसक्ति आ कि अन्तर अभिमान
त्रिगुण-फाँस दोषयुक्त उपजय अज्ञान
छात्र हेतु कामक
विलास खल

बुद्धिहीनता प्रमाद विषय-कामना
कर्मभ्रंग रज्जुमार्ग व्याधि भावना
लक्ष्यहीन युवा
कीटमय कमल।

डॉ० जयकान्त मिश्र सोमदेवक कविताक मुख्य वैशिष्ट्य इंगित करैत कहैत छथि—"Somadava appears to be more profound and more obseure than his language and symbolism can bear. He is much better in his simple poems than in his pseudo-'philosoplical' and 'profound' poems."

'चानोदाइ', जे पहिने वैदेहीक उपन्यास-विशेषांकक रूपमे बहार भेल, हिनक सामाजिक उपन्यास थिक आ होटल अनारकली (जे मिथिला मिहिर'मे 'ब्रह्मपिशाच'क नामसँ धारावाही छपल) जासूसी। चानोदाइकेँ ओतेक सफल नहि मानल गेलैक अछि जतेक होटल अनारकलीकेँ।

दुनू उपन्यासक प्रसंग डा० श्रीशक मत उल्लेख करबाक योग्य अछि—"चानोदाइमे लेखक अशिक्षाक कारणेँ उत्पन्न दूषित सामाजिक वस्तुस्थितिक चित्र प्रस्तुत कयने छथि। व्यक्तिपरक एहि उपन्यासमे उपन्यासकार नाटकीय कथोपकथनसँ युक्त मनोविश्लेषणात्मक चित्रण-प्रणालीक अनुसरण कएल अछि। मुदा उपन्यासक उत्तरार्द्ध अशक्त आ असन्तुलित अछि। होटल अनारकली लिखल अछि ओ तस्कर-व्यापार ओ कालाबाजारक समस्या लए आओर एहि व्यापारक दाओ-पेँचकेँ ओ बड़ यथार्थ रीतिएँ चित्रित कयल अछि। वस्तुतः ई मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यास थिक।"

कथाकारक रूपमे सेहो हिनक नीक मान्यता छनि। अपन कथामे ई रूढ़िपर चोट कयने छथि तथा मानवक अन्तर्द्वन्द्वकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कयने छथि। हिनकामे कथा गढ़बाक पूर्ण क्षमता अछि। हिनक किछु प्रसिद्ध कथा थिक—कालिन्दी नवयौवना, आगि ताम्बूल वनमे, द्रौपदी : बीसम शताब्दी, भात, आदि। अकालक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल हिनक 'भात' कथा स्वाभाविकताक कारणेँ तथा यथार्थवादी दृष्टिकोणक कारणेँ मैथिलीक किछु श्रेष्ठ कथामे स्थान पयबाक योग्य अछि।

ई पत्रकार सेहो छथि। वैदेहीक किछु दिन धरि सौजन्य सम्पादक रहलाह तथा दरभंगासँ 'मिथिलाभूमि' नामक साप्ताहिक पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कयलेनि। एहि पत्रिकाक यद्यपि साहित्यिक महत्त्व बेसी नहि छल, समाचारप्रधान दलविशेषक प्रचार एहि पत्रिकाक स्वर बुझना जाइत छल, तथापि ओहूमे कथा-कविता ई छपैत छलाह।

तन्त्र दिस हिनक प्रवृत्ति विशेष रूपेँ जाग्रत भेल अछि। साहित्यमे एकर प्रभाव पड़ल अछि, किन्तु कतऽ धरि, से विवेचनक वस्तु थिक।

आधुनिक मैथिली साहित्यक ई एक अमिट हस्ताक्षर सिद्ध भऽ चुकल छथि।

डा० श्री धीरेन्द्र

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न श्री धीरेन्द्र आधुनिक मैथिली साहित्यक संघर्षशील व्यक्तित्व छथि। हिनक प्रतिभाक विकास साहित्यक विविध विधामे क्षिप्रतासँ भेल अछि, फलतः बहुत वस्तु, से अनेक प्रकारक, लिखिकऽ राखि देलनि अछि। मूल रूपसँ अपनाकेँ कथाकार माननिहार ई कवि सेहो छथि उच्च कोटिक, उपन्यासकारक रूपमे सेहो प्रसिद्ध छथि, एकांकी सेहो हिनक लेखनीसँ निस्तुत भऽ लोकप्रिय भेल अछि, साहित्यक विभिन्न विषयपर हिनक समालोचनात्मक निबन्ध पठनीय-मननीय मानल अछि, बाल-साहित्यक रचयिताक रूपमे हिनक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइछ। संक्षेपमे, कवि, कथाकार, एकांकीकार, समालोचक तथा बाल-साहित्यक लेखकक रूपमे हिनक मान्यता, मैथिली साहित्यमे, अछि। सर्जनात्मक प्रतिभाक अतिरिक्त हिनकामे संघटनात्मक क्षमता सेहो पर्याप्त छनि। सम्पूर्ण नेपालमे मैथिलीक ज्योति विकीर्ण कयनिहार समस्त साहित्यकार ओ कार्यकर्ताक ई अगुआ छथि। जनकपुरमे रहि, ओहि ठामक नवीन पीढ़ीकेँ मातृभाषाक प्रेम जगयबाक मुख्य प्रेरणा हिनके छनि। पत्रकार सेहो ई रहलाह अछि—'धीया-पूता'क प्रकाशन-संपादन कऽ एहू क्षेत्रमे प्रतिष्ठा अर्जित कयने छथि।

हिनक पूरा नाम धीरेश्वर झा थिकनि, जन्म भेल छनि मधुबनी जिलान्तर्गत लोहना नामक गाममे १४ जुलाइ १९३४ ई० केँ। हिन्दी तथा मैथिलीमे ई एम० ए० छथि। किछु दिन धरि उच्च विद्यालयमे शिक्षण-कार्य कयलाक बाद ई जनकपुर चल गेलाह आ आर० आर० कैंपसमे प्राध्यापक भऽ गेलाह। सम्प्रति ओही कैंपसमे त्रिभुवन विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक रीडर आ अध्यक्ष छथि। हिनक कर्मभूमि जनकपुर रहलनि अछि। मैथिलीक अतिरिक्त नेपाली भाषामे सेहो ई लिखैत छथि।

हिनक प्रकाशित पुस्तकक संख्या प्रचुर अछि। विधानुसार ओकर नाम निम्नलिखित अछि—

भोरुकबा (१९६५), कादो आ कोइला (१९८०), ठुमुकि बहू कमला (१९८३)—उपन्यास; कुहेस आ किरण (१९८२)), पझाइत घूरक आगि (१९८४), शतरूपा ओ मनु (१९८४)—कथा; हेंगरमे टांगल कोट (१९८२)—स्फुट कविता; करुणा-भरल ई गीत हम्मर (१९८४)—गीत; त्रिपुण्ड (१८८४)—महाकाव्य; काव्यशास्त्रक रूपरेखा (१९८१)—समीक्षा; खैयामक संसार (१९६५)—अनुवाद; प्राचीन मैथिली कविता-धारा (१९७८), नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प (१९८४)—संपादन।

भोरुकबा—ई मैथिलीक प्रथम आंचलिक उपन्यास थिक। डा० अमरेश पाठकक शब्दमे "भोरुकबामे नवजागरणक संदेश भेटैत अछि। ठकबा परम्परावादी किसानक प्रतिनिधित्व करैत मालिकक पैघसँ पैघ अत्याचारक विरोधमे किछु नहि बजैत अछि, किन्तु बुधनाकेँ एहन समाजमे रहब सह्य नहि छैक। ओ शहरक बाट धरैत अछि संग-संग ओतए आए मालिकक बेटाक सहानुभूति प्राप्त करैत अछि।

उपन्यासकार ठकवा, राधे मिसर, मुसहरबाक चरित्र-चित्रणमे पूर्ण सफल भेलाह अछि। शोषित वर्गक मूक वेदनाक चित्रण भोरुकवामे भेटैत अछि। उपन्यासक पात्रसभ स्वाभाविक चित्रणक कारणेँ, सहानुभूतिक पात्र बनि जाइत अछि। 'भोरुकवा' वस्तुतः बदलैत सामाजिक वातावरणमे प्रातःकालक सूचना दैत अछि।"

मिथिलाक माटि-पानिक सौरभ भोरुकवामे भेटैछ। नवताक नामपर अपन परम्पराकेँ त्यागबाक जे क्षति एम्हरुका किछु लेखकके भऽ गेल छनि ताहिसँ धीरेन्द्र बाँचल छथि। मैथिली साहित्यमे कहाँ धरि नवता ग्राह्य थिक तकर सटीक व्याख्या श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरीक एहि पंक्तिमे भेल अछि—'राकेटक एहि युगमे धरती छोड़बाक कल्पनामे नवीन पीढ़ीक कतिपय उपन्यासकार-कथाकार अनर्गल वस्तु-सत्यक स्थापनामे लागल छथि जे भारतक भूमिक लेल वस्तु-सत्य भैए नहि सकैत अछि। नवीनताक झोंकमे हम यदि थारी-बाटीक स्थानपर प्लेट आदिक उपयोग करी तँ क्षति नहि, किन्तु दिलकोरक पातमे पिठारक स्थानपर अंडाक लेप चढ़बऽ लागब तँ साहित्यमे भारतक आ मिथिलाक अस्तित्व कतऽ भेटत ? कथा-साहित्यमे नवीन शिल्पक हम पक्षपाती छी, किन्तु कथन धरि हमर अपने होयबाक चाही।" भोरुकवाकेँ एहि कसौटीपर कसलासँ ओकर शुद्धता स्पष्ट परिलक्षित भऽ जाइछ।

डा० 'श्रीश'क शब्दमे एहि उपन्यासमे "ग्राम्य वातावरणमे नव-जागरण उपस्थित भेल अछि, नव आशा-आलोकक 'भोरुकवा'क उदय भेल अछि।" डा० जयकान्त मिश्र सेहो एकरा स्वीकार कयलनि अछि—His novel Bhorukava annou..ed the down in the life of the lower classes in the villages."

कादो आ कोइला—ई हिनक दोसर उपन्यास थिक। एकर धारावाही प्रकाशन १९६८ ई०मे मिथिला मिहिरमे भेल छल। एहि उपन्यासक प्रसंग डा० 'श्रीश'क विचार अछि—"निम्नवर्गीय जीवनपर आधारित एहि उपन्यासक सम्यक् महत्त्वकेँ अस्वीकारल नहि जा सकैत अछि। एहिमे एक निम्नवर्गीय विरनीक जीवनकथा अछि। विरनी गुलटेन सिंह द्वारा अपन बहिनक बलात्कार ओ अपन प्रेमिकाक हत्या देखैत अछि, अन्यायकेँ सहबाक हेतु विवश होइत अछि ओ अन्ततः विक्षुब्ध भए कादोसँ सानल गामकेँ त्यागि शहर विदा होइत अछि तथा दरभंगा पटना होइत कोइलासँ कारी जमशेदपुर पहुँचैत अछि। एहि मध्य विरनी ओ कौशल्याक प्रणय-चित्रण बड़ कवित्वपूर्ण भेल अछि, अन्यथा सर्वत्र ग्राम्य अथवा नगर-जीवनक कुत्सा मात्रक चित्रण अछि।" डा० जयकान्त मिश्रक शब्दमे—"Kado Aora Koila upraades the life of the lowly and the trodden in the cities."

'ठुमुकि बहू कमला' एके संग 'कथा-दिशा' (कथा-मासिक) क विशेषांक-रूपमे तथा स्वतंत्र पुस्तक-रूपमे प्रकाशित भेल। धीरेन्द्रक अपन भाषा छनि, अपन शैली छनि, कहबाक अपन विशिष्ट भंगिमा छनि। तकर दर्शन एहू उपन्यासमे होइत अछि। एहिमे गाममे उठैत परिवर्तनक हिलकोरकेँ—जकर प्रबल वेगमे सामन्ती देबालकेँ ढहैत तथा दलितक परती परांट आ बलुआह खेतमे नवीन उपजक उपयुक्त पाँकके भरैत—देखल जा सकैछ।

धीरेन्द्र कथाक निर्माण सेहो पर्याप्त संख्यामे कयने छथि, जाहिमे 'शतरूपा ओ मनु'मे १५गोट तथा 'पझाइत धूरक आगि'मे सेहो १५ गोट कथा संगृहीत अछि। हिनक कथाक मुख्य गुण स्वाभाविकता एवं भावुकता थिक।

मिथिलाक मध्यवर्गीय परिवारक सफल चित्रांकन हिनक कथामे भेल अछि। पारिवारिक द्वेष, कलह, कटुता, स्नेह, सम्मान—सभ टा हिनक कथामे उद्घाटित भेल अछि। नारीक विवशता ओ ओकर हृदयक नीक आ बेजाय पक्षकेँ हिनक कथा खोलिकऽ राखि दैत अछि। हिनक किछु प्रमुख कथा अछि—मामी, सुगरक बाप, कुबेर, यक्षिणी आदि। 'मामी'मे 'नारीक सामाजिक दुरवस्थाकेँ रेखांकित करबाक उद्देश्य' बहुत स्पष्टतासँ आ सांगोपाङ्ग भेल अछि।

त्रिपुण्ड—त्रिपुण्ड महाकाव्य थिक, जे उनैस 'स्वर'मे सम्पन्न भेल अछि। 'स्वर' एतऽ सर्गक स्थानापन्न अछि। एहि पुस्तकक सम्बन्धमे डा० आ... मिश्रक उक्ति द्रष्टव्य—"भारतीय साहित्यमे शिवक अनेक रूप उपलब्ध होइछ। शास्त्रहुमे हुनक चर्चा अछि जनिक रूप विभिन्न अछि। ओही शिवकेँ नवीन दृष्टिसँ देखैत छथि श्री धीरेन्द्र तथा चित्रित करैत छथि ओहि रूपकेँ अपन चिरनवीना लेखनीसँ, नव भंगिमासँ नव स्वरसँ।"

एहि महाकाव्यमे सतीक बलिदान, गौरीक परिणय, कार्तिकेय ओ गणेशक जन्म, दुनूक विद्वान बनब तथा शिव द्वारा दुनूकेँ संसारक कल्याणार्थ समर्पित कऽ देबाक वृत्तान्त अछि। 'सृजन-सिचन-संहार'क प्रतीक रूपमे शिवकेँ उपस्थित कयल गेल अछि, जे आकृष्ट करैत अछि, किन्तु सभसँ पहिने आकृष्ट करैछ एकर प्रवाहपूर्ण भाषा जे झरनाक जल जकाँ झरझर बहैत चलैत अछि; कतहु पाथरक टुकड़ी ओकरा भने कने काल लेल जे बिलका लौक, किन्तु लगले ओ ठोकर मारि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। सतीक बलिदानक बाद शिव एकसर भऽ जाइत छथि। ओहू महा-तपस्वीकेँ नारीक आवश्यकताक अनुभव होइत छनि। नारी सृष्टिक अनिवार्य आ शाश्वत वस्तु थिक जकर विना पुरुष पूर्ण नहि भऽ सकैछ—

नारी थिक पर्याप ममत्वक, सहनशीलता भारी
...ते बतहपन पुरुष करैए, सहय सदासँ नारी
सर्वसहा धरती थिक नारी आर पुरुष आकाश
जे वर्णन कऽ अपन मोनसँ उपजबैत अछि चास
नारी पुरुष कागत थिक जइपर लिखइछ ओ कविता
नरी शीतल चन्द्र ज्योत्स्ना रहओ ओना नर सविता

वर्णनक मोहमे कथाक गति अवरुद्ध नहि भेल अछि। एहिमे श्रमशक्तिक महिमाक गान कयल गेल अछि। यात्रीक 'धन्य हे श्रमशील मानव विश्वभरिमे व्याप्त—आन देवी-देवता दिस नहि नवँ अछि माथ'क भावनाकेँ कवि एतेक दूर धरि लऽ गेलाह अछि जतऽ शिव स्वयं 'श्रमशील मानव' बनि जयबाक उद्घोषणा करैत छथि—

कोन समस्या जखन स्वस्थ अछि हम्मर दुनू हाथ
स्वस्थ नेत्र सभ अंग स्वस्थ अछि, स्वस्थ जखन अछि माथ
ब्रह्मरूप ई हाथ दुहू अछि, ई सिरजय संहार
इएह सजावय जगती-तलके, इएह करय संहार
हम तँ कृषक आगतक मात्र राखी खाली आशा
श्रमिक बनब हम, जानी खाली हम बाँहिक बस भाषा

एकर अन्त शान्त ओ रौद्र—दू विपरीत रसक समन्वयक संग उत्साह-भावकेँ जगबैत, भेल अछि—

चयचम चमकय जेन त्रिशूलो मादल डिम्-डिम् बाजय
भोमहर डमरू नाद ब्रह्मकेर साज अपूर्व साजय
एक हाथ. शतदल छल तँ दोसरमे नरमुण्ड
भासमान ईशान-भालपर चमकय जेना त्रिपुण्ड

महाकाव्यक शास्त्रीय लक्षण सभ यद्यपि एहिमे घटित नहि होइछ, किन्तु उद्देश्य एकर महत् अछि, तेँ महाकाव्यक गरिमा एकरा भेट जाइछ। पं० गोविन्द झाक उक्ति द्रष्टव्य—"मिथिलामे प्रसिद्ध शिवविषयक समस्त आख्यान एवं समस्त भावना एहिमे विन्दुमे सिन्धु जकाँ समाहित अछि, आ संगहि यत्र-तत्र-सर्वत्र विशेषतः अन्तमे चित्रित अछि युगधर्मा कविक ओ चिन्तना, भावना एवं कल्पना जे 'हँगरमे टाँगल कोट'क यथार्थवादी कविसँ निश्चित रूपेँ प्रत्याशित अछि।"

हिनक स्फुट कवितामे नवीन धाराक जे सभ विशेषता छैक, यथा छन्दमुक्ति, गद्यात्मकता, जिजीविषा, कुण्ठा, संत्रास, भोगल यथार्थ, क्षणखण्डक यथावत चित्रण आदि. से सभ उचित मात्रामे विद्यमान अछि; किन्तु नवकविताक दुर्गुण जेना अपरिचित शब्द-प्रयोग ओ अर्थक अस्पष्टता—हिनकामे नहि अछि, तेँ पाठकके हिनक कविताक मर्म धरि पहुँचबामे ततेक मानसिक व्यायाम नहि करऽ पड़ैछ। भाषा होइछ हिनक प्रांजल एव अनुभूति-प्रधान जो समाजक विद्रूपताकेँ चित्रित करबामे ई व्यंग्यक आश्रय लैत छथि, आ ताहिमे सफल रहलाक कारणेँ हिनक कविता चमत्कार उत्पन्न कऽ दैछ। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "हिनक कवितामे युग-चेतना व्यंग्यक माध्यमसँ व्यक्त भए साहित्य ओ समाजक यथार्थ चित्रांकन करैत अछि एवं स्वर्ण भविष्यके सेहो इंगित करैत अछि।" मैथिलीक तथाकथित उन्नायक लोकनिपर हिनक व्यंग्य देखल जाय—

हे हमर मित्र, तोरासन मैथिलीक के होयत भक्त ?
छपल रहह तोहर फोटो ओहि ग्रूप मध्य
नाम छलैक जकर, मैथिली-उत्थान-समिति
सात गोट सिंघारा टा, तेरह कप चाह मात्र
पीबि तों रहि गेलाह संझुका जलपान-बेर
आ देलह गरमागरम भाषण
ई होअय, ओ होअय, एना होअय
(ओना तों किनैत छह फिल्म फेयर, रंगभूमि, चलचित्र मात्र टा)
मुदा कऽ देलह कमाल मुट्ठी बान्हि कहिकऽ
जे—किनैत छह दर्जनो मैथिलीपत्र तों
(ओना एतबा पत्र प्रकाशितो नहि होइछ)
मुदा ताहिसँ की ?
भाषण तँ भाषण थिक, जरूरी छैक सत्य होअय ?

समालोचनात्मक निबन्ध जे हिनक प्रकाशित भेल, से हिनक अनुसन्धान-वृत्ति आ सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक थिक। सोमदेवक सहजतावादक यैह व्याख्या कयने छथि हुनक 'कालध्वनि'क भूमिकामे। मैथिली एकांकी साहित्यमे हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि। हिनक एकांकी शिल्प आ कथ्य दुनु दृष्टिएँ पठनीय थिक। नेपाली साहित्यक ई मैथिली अनुवाद सेहो कयने छथि जे दुनू भाषामे हिनक समान अधिकारक द्योतक तँ थिके, हिनक अनुवाद क्षमताक सेहो परिचायक थिक। आधुनिक मैथिलीक उत्थानमे हिनक सेवा श्लाघनीय अछि। □

श्री मायानन्द मिश्र

प्रो० मायानन्द मिश्र कोमलप्राण कविक रूपमे मैथिली साहित्यमे अवतरित भेलाह आ अपन चतुर्मुखी प्रतिभाक बलेँ लगले कविता, कथा, उपन्यास, आलोचना आदि सभ विधामे अपन उत्कृष्टता प्रदर्शित कऽ देलनि। ई एक दिस परम्परागत छन्दमे भाव-प्रधान सुन्दर गेय पदक रचना कयने छथि तँ दोसर दिस आधुनिकतम शैलीमे चिन्तन-प्रधान कविताक सर्जन कयने छथि। हास्य-व्यंग्य कथा सेहो हिनक लिखल अछि तथा मनोविश्लेषणात्मक अन्तर्द्वन्द्वक कथाकारक रूपमे सेहो हिनक स्थान शीर्षस्थ अछि। मैथिली कविताक इतिहासकेँ ई अपन ढंगे कालबद्ध कऽ ओकर नामकरण कयने छथि तथा एक टा नव वाद—'अभिव्यंजनावाद'क सृष्टि ई कऽ देने छथि। 'अभिव्यंजना' नामक उच्चकोटिक पत्रिका सेहो ई चलौलनि—जकर सम्पादक ई स्वयं छलाह। हिन्दियोमे हिनक एक उपन्यास प्रकाशित अछि।

हिनक मैथिली-कृति निम्नलिखित अछि—भाङक लोटा (१९५१)—हास्य कथा-संग्रह; आगि मोम आ पाथर (१९६०) चन्द्रविन्दु (१९८३)—कथा-संग्रह; बिहाड़ि पात पाथर (१९६०)—उपन्यास; दिशान्तर—कविता-संग्रह। एकर अतिरिक्त, हिनक एक टा उपन्यास 'खोँता आ चिड़ै' धारावाही रूपेँ मिथिला मिहिरमे, १९६५ मे प्रकाशित भेल अछि, जे पुस्तककार होयब अद्यावधि बाँकी अछि।

हिनक जन्म सहरसा जिलाक बनैनियाँ गाममे १७ अगस्त १९३४ केँ भेल। हिन्दी आ मैथिलीमे एम० ए० कयलाक बाद किछु दिन ई आकाशवाणी पटनाक चौपाल विभागसँ सम्बद्ध छलाह। तकर बाद सँ अद्यपर्यन्त सहरसा कालेज, सहरसामे मैथिली विभागक प्राध्यापक छथि।

ई कोमलकान्त पदावलीक रचयिताक रूपमे मैथिलीमे प्रवेश कयलनि तथा हिनक विचार जेना-जेना परिपक्व होइत गेलनि, तेना-तेना ई अपन कवितामे मोड़ अनैत गेलाह आ आब तँ एकदम नव शैलीक काव्य सेहो रचैत छथि। हिनक एहने कविताक संग्रह 'दिशान्तर'क नामसँ प्रकाशित अछि। एम्हर हिनक रुचि गजल-रचना दिस विशेष बुझना जाइछ।

हिनक कविताक शिल्प-शैली आ भाव-बोधमे परिवर्तन अवश्य भऽ गेल, किन्तु तहिसँ भाषाक कोमलता, चित्तकेँ आह्लादित करबाक विशेषता तथा संप्रेषणक सहजता कनेको बाधित नहि भेल।

प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे "नवीन उपमा, नवीन विशेषण, नवीन प्रतीक-योजना अर्थात् नवीन भावाभिव्यंजना हिनक कविताक विशेषता थिक।" उदाहरणक रूपमे 'आस्था'क निम्न पाँती द्रष्टव्य थिक—

बाट केर असमर्थता आ अभावक सभ बाधिकें
हम बामनी एहि पथरसँ निश्चय करब गऽ पार
असम्मानक काँटसँ
एहिखन भने हो पयर ई लिधुराह
किन्तु मनकेर चेतनामे
नइ देवै लागऽ अवश्ये—आलसक ओ बीज।
हम अपन विश्वासकेर एहि घूड़मे
उत्साहकेर सदिखन लगायब ढङ।

तहिना, 'तवका पीढ़ीक विद्रोह'मे का क उक्ति अछि—

हमरा सभ एखन अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी
आ ताकि रहल छी बाट जर्जर वृद्धक मरबाक
आ तखन कब्रसँ बहरायब
कौरवसँ युद्ध करब
जोंककें थकुचब
गिद्धकें बैलायब,
मुदा ता हमरा सभ अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी।

प्रो० रमानाथ झाक अनुसार हिनक कवित्वक मूल प्रवृत्ति अछि गीतकारेक
हिनक नवीन कविता देखलाक बादो हुनक मत अछि जे "एतबा होइतहु आबहु
हिनक कवि-व्यक्तित्व प्रमुख रूपें भावुक गीतकाव्यकारेक व्यक्तित्व थिक जे हुनक
नवीन काव्यहु मध्य शब्द-विन्यासक मधुरता एवं वैयक्तिक अनुभूतिक मसृणताक
दृष्टिएँ स्फुट भए उठैत अछि।" हिनक एहि प्रकारक गीतमे 'कल्पना, लालित्य
एवं भाषाक माधुर्यक सरस मणिकांचन-संयोग' अछि। हिनक एहि प्रकारक गीतमे
सभसँ अधिक विख्यात भेल—'नभ आङनमे पवनक रथपर कारी-कारी बादरि
आयल।'

एतऽ 'छवि-गीत'क किछु पाँती द्रष्टव्य—

पहिने तिरछल नयन, वदनपर पुनि पसरल मुस्कान हे
आँचरसँ झँपइत छवि देखल, जनु झिनु गाओल गान हे
तन सागरमे उधियाइत सन, यौवन लहरि अपार हे
संगीतक मध्यम लयमे दुइ रागिनिकेर झंकार हे
रूसल मेंहपर हास कुटिल सन, वदरिक झलमल चान हे

डॉ० श्रीशक शब्दमे "हिनक गीतक विषय अछि मुख्यतः नारीप्रेम ओ नारी-
सौन्दर्य। हिनक प्रयोगवादी रचना कतहु अस्पष्ट नहि होइत अछि। प्रयोगवादकें
स्वस्थ दिशानिर्देश करबामे हिनक योगदान तें बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।"

'भाङक लोटा' हिनक प्रारम्भिक कथासंग्रह थिक जाहिमे बड़ सहज ढंगे
हास्य-व्यंग्यक कथा कहल गेल अछि। एकर विपरीत 'आगि, मोम आ पाथर' हिनक
प्रौढ़ कथाकारक परिपक्व कृति थिक जाहिमे मानव-मनक सूक्ष्म तन्तुकें उद्घाटित
विश्लेषित कयल गेल अछि। एहन आठ टा कथा एहि संग्रहमे संकलित अछि। एहि
आठ गोटमेसँ अन्तिम दू कथा—रुपिया आ मुरबा—मे मनोविश्लेषणक ओ सूक्ष्मताक
अभाव अछि जे ओहिसँ पहिनेक छबो टा कथामे भेटैत अछि। लेखकक ई दुनू
आरम्भिक कथा थिक।

मायानन्दक कथाक विशेषतापर प्रकाश दैत डा० रामदेव झा ओकर भूमिकामे लिखैत छथि—"शिल्प, वस्तु-विन्यास, पात्र-निर्माण, चारित्र-विश्लेषण, सहानुभूति ओ संवेदनाक उद्वेग सजग-असजग दुहू पाठककें संतोष देबामे पूर्ण समर्थ अछि।"

चन्द्रविन्दु—'चन्द्रविन्दु' हिनक तेसर कथा-संग्रह थिक। शीर्षक-कथा 'चन्द्रविन्दु' समेत विवेच्य संग्रहमे तेरह गोट कथा अछि। किछु मुख्य कथाक शीर्षक थिक—कालरेत, गाड़ीक पहिया, उपसर्ग, उत्तर चारित, चन्द्रविन्दु आदि।

हिनक कथा खूब साफ-सुथरा चिक्कन-चुनमुन बाटपर आगाँ बढ़ैत अछि, मानवक सुकोमल संवेदनशील तन्तुकें मृदुल स्पर्श करैत चलैत अछि, मनुष्यक हृदयमे धयल गद्यक हिमखण्डकें पद्य-रूपमे पघिलबैत ससरैत अछि। हिनक कथा मुख्यतः मध्यवर्गक कथा कहैत अछि, ओकर संघर्षक कथा कहैत अछि। संघर्षेक टा नहि, ओकर अपनताक कथा, ओकर नेह-छोहक कथा, ओकर हास-अश्रुक कथा सेहो कहैत अछि। पीढ़ीक अन्तरकें हिनक कथा बड़ सफल ढंगसँ, मार्मिक रूपमे उजागर करैत अछि। हिनक कथा निरन्तर गतिशील रहैत अछि—वाह्य जगतमे सेहो, अन्तर्जगतमे सेहो। जहिना हिनक पात्र आंगिक चेष्टासँ वाह्य जगतमे अपन गतिक नैरन्तर्य बनौने रहैत अछि तहिना ओ मनोजगतमे सेहो अनुखन गतिमान रहिते अछि। हिनक पात्र भनहि खूब पढ़ल-लिखल नहि हो, भनहि गम्भीर समस्याक कँटाह बेढ़मे ओझरायल नहि हो, भनहि जगतक व्यापक चाकचिक्यसँ सुपरिचित नहि हो, भनहि जीवनके मथि देबऽबला मथनीमे माथ नहि देने हो, मुदा निश्चेष्ट कतहुसँ नहि अछि, भोथ बुद्धिक कतहुसँ नहि अछि, अकबका कऽ रहि जायबला कतहुसँ नहि अछि। हिनक पात्रसभ तेज अछि, तें तेज बुद्धिकें नीक जकाँ झिकझोड़ैत अछि।

'चन्द्रविन्दु' शीर्षक कथामे अपर प्राइमरीक रिटायर्ड हेडपण्डित लक्ष्मीकान्त झा बेराबेरी अपन दुनू पुत्र लग जाइत छथि—मास-दू मास रहबाक लेल, मुदा टिकि कतहु नहि पबैत छथि। छोट-पुत्र गयामे मजिस्ट्रेट, जेठ पुत्र पटना कालेजक प्रोफेसर। दुनू पुत्र आज्ञाकारी। पितृभक्त। पिताक दुख-असौकर्य सहबा ले' तैयार। तहिना दुनू पुतहु सेहो। मुदा, ओ ने गामेमे, ने पटनेमे टिकि पबैत छथि। परिवारक सभसँ प्रधान, सभसँ महत्त्वपूर्ण, प्रमुख सदस्य रहितो ओ परिवारिक अंग भऽकऽ नहि रहि सकैत छथि, संग भऽकऽ नहि रहि सकैत छथि। चन्द्रविन्दु जेना अक्षरसँ ऊपर, ओकर रेखासँ सेहो ऊपर, टेटर जकाँ रहैत अछि, ऊपर रहि केवल शब्दकें, ओहि अक्षरकें आनुनासिक बना दैत अछि—ततबे धरि ओहि शब्द-खण्डसँ ओकर सम्बन्ध रहैत छैक, आर किछु नहि। अक्षरक ओ अंग नहि बनि सकैत अछि। सैह स्थिति मास्टर साहेबक भऽ जाइत छनि।

जेनरेशन गैपकें, पिता-पुत्रक सम्बन्धकें, दू पीढ़ीक विचार-धारामे अन्तरकें, दुनूकें एक-दोसरक सुख-सुविधा लेल अपन सुख-सुविधाकें विश्वासपूर्वक तिलांजलि देबाक भावकें, एक-दोसरक सुख-सुविधाक लेल एक दोसरकें किछु करबाक हार्दिक इच्छा, आतुरता, विकलताकें, मुदा ताहिमे लगातार होइत जाइत विफलताकें, दुनू पीढ़ीक कुण्ठाकें, सामंजस्यक अभावकें 'चन्द्रविन्दु' कथा बड़ मार्मिकताक संग उजागर करैत अछि।

एहिना लगभग तेरहो कथामे कोनो-ने-कोनो पात्र चन्द्रविन्दु बनि अबैत अछि—ओ ने अपन परिवार-समूहक अक्षर होइत अछि, ने मात्रा ...

चन्द्रबिन्दु जकाँ रहैत अछि जकर बाज परिवारकेँ बस आनुनासिक टा बनायब रहैत छैक। मुदा, ओ त्याज्य किन्नहु नहि अछि, हेय कथमपि नहि अछि। जीवनमे रंग जकाँ अनिवार्य अछि।

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथासंग्रहक लेखक-परिचयमे हिनक कथाक प्रसंग जे कहल गेल अछि से तथ्यपूर्ण अछि "श्री मायानन्द मिश्र केँ रेशमी भावनाक लेखक कहल जाइत छनि—चिक्कन, छहछह, कोमल, नेनु जकाँ। मुदा मात्र रेशमी कथाकारक लेबुलमे हिनक कथाकारकेँ पूर्णतः समेटल नहि जा सकैत अछि। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, फ्लैशबैक आदि शिल्पगत आधुनिक प्रयोग, नव मूल्यक स्थापनाक संग-संग गद्यमे छंदक लय, गति हिनक कथाक अप्पन विशेषता छनि। मध्य वर्गक नेह-प्रेम, ओकर टूटैत सामाजिक मर्यादा, आभिजात्य तथा संघर्षशील अपस्याँत यौवनक विविध पक्षकेँ ई अपन कथाक विषय बनौलनि अछि।"

'बिहाड़ि पात पाथर' तथा 'खोंता आ चिड़ै'—ई दू गोट हिनक औपन्यासिक कृति थिकनि।

'बिहाड़ि पात पाथर' व्यक्तिपरक उपन्यास थिक। अनमेल विवाहक समस्याकेँ मुख्य रूपसँ एहिमे लेल गेल अछि। डा० अमरेश पाठकक शब्दमे एकर "कथानकमे स्वाभाविकता छैक। मानव-जीवनक द्वन्द्वक चित्रण द्वारा कथानकके स्वाभाविकताक सत्यानुरूप बनाओल गेल अछि। एहि उपन्यासक मूल कथा थिक तिरवेनीक विवशताक चित्र अंकित करब। वृद्ध विवाहक कारणेँ उपस्थित भेल परिस्थितिक विभीषिकाक चित्रण स्वाभाविक रूपेँ कयल गेल अछि। घटनाक बाहुल्यक अपेक्षा चारित्रिक द्वन्द्वक चित्रणक कारणेँ एहि उपन्यासक कथानक आकर्षक भेल अछि।"

'खोँता आ चिड़ै'मे गामक बदलैत परिवेशक स्वाभाविक चित्र खींचल गेल अछि। मध्यमवर्गीय व्यक्तिक बीच स्वार्थ लेल संघर्षके देखाओल गेल अछि। एकर अतिरिक्त एहिमे निम्नवर्गीय युवतीक कोमल ओ उदात्त पक्षक बड़ कलात्मक वर्णन लेखक कयने छथि। डा० श्रीशक शब्दमे "मायानन्दजीक रचनामे समाजक बाह्य ओ अन्तः दुहू पक्षक बड़ मनोरम यथार्थ चित्र अंकित अछि, जाहिमे भावुक कविक सहानुभूति अद्‌भुत कवित्वक संचार कयने अछि।"

खोंता आ चिड़ैक प्रसंग डा० जयकान्त मिश्रक मत अछि —"I t is more successful in depicting this violence of passion in the life of a heroine of the lower class, whose husband is importent. The tenderness of her husband's affection, however, touches her so much that she rises to great and indeed tragic heights."

हिनक छिटफुट प्रकाशित निबन्धसभकेँ जँ एकठाम कऽ देल जाय तँ ओ मैथिली समालोचना-साहित्यक महत्त्वपूर्ण वस्तु भऽ जायत।

हिनका द्वारा स्थापित काव्यमे अभिव्यंजनावाद-सिद्धान्तपर विद्वानमे विवाद हो से सम्भव थिक, किन्तु ई तँ निर्विवाद अछि जे मैथिली साहित्यके हिनका द्वारा जे अवदान प्राप्त भेलैक अछि, से स्थायी महत्त्वक वस्तु थिक।

□

श्री राजमोहन झा

श्री राजमोहन झा विशुद्ध कथाकार छथि—सर्जनात्मक साहित्यक आन कोनो विधा दिस ई लेखनी नहि उठबैत छथि, कथे मात्रमे अपनाकेँ सीमित राखि अपन सम्पूर्ण प्रतिभाकेँ एकरे सजयबा-चमकयबामे लगा रहल छथि। मैथिलीमे लिखब शुरू कयने छलाह कवितासँ अवश्य, किन्तु किछुए दिनक बाद ई अनुभव कयलनि जे ओ हिनका लेल उपयुक्त विधा नहि छलनि। पहिल कथा यद्यपि सतावने इस्वीमे 'पल्लव'मे छपल छनि, किन्तु सातम दशकसँ नियमित रूपेँ पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा छपऽ लगलनि। अद्यावधि ई साठिसँ ऊपर कथा लिखि चुकलाह अछि। कथाक तीन टा संग्रहो प्रकाशित छनि—एक आदि : एक अन्त (१९६५), झूठ-साँच (१९७२), एक टा तेसर (१९८४)।

ई किछु उत्कृष्ट कोटिक समालोचना सेहो लिखलनि अछि। एहन हिनक कतोक रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छपैत रहल अछि। ओहीमे सँ बारह गोट समालोचनात्मक निबन्धक संग्रह 'गल्तीनामा'क नामसँ १९८३ मे प्रकाशित भेल अछि।

हिनक सम्पादन-दृष्टि ओ कौशल कतेक उच्चस्तरीय अछि तकर प्रमाण त्रैमासिक पत्रिका 'आरंभ'क चारू अंक थिक, जे मैथिली पत्रिकाक 'माइल स्टोन' कहल जा सकैत अछि।

साहित्यिकता हिनक परिवारक कौलिक वस्तु थिकनि। ई अपन परिवारक तेसर पीढ़ीक कथाकार थिकाह। पितामह पंडित जनार्दन झा 'जनसीदन' ओ पिता प्रो० हरिमोहन झाक साहित्यमय वातावरणमे पालित राजमोहन झा मस्तिष्क ओ हृदयसँ साहित्यिक सुरुचि-सम्पन्न लोक छथि। हिनक जन्म २७ अगस्त १९३४ ई०केँ भेल छनि। मनोविज्ञानमे एम० ए० कयलाक बाद ई बिहार सरकारक श्रम एवं नियोजन विभागमे पदाधिकारी भऽ गेलाह, जाहि पद पर अथाविधि कार्यशील छथि।

'एक आदि : एक अन्त' ओ 'झूठ-साँच' दुनू संग्रहमे बारह-बारह टा कथा संगृहीत अछि तथा 'एक टा तेसर'मे एकैस टा कथा।

हिनक कथाक वस्तु मानव-मनक कोनो सूक्ष्म ग्रन्थि होइछ, जकरा ई बड़ कुशलतापूर्वक खोलि दैत छथि। परिवेशक एक-एक तन्तुके जतेक बारीकीसँ ई पकड़ैत छथि ततेक मैथिलीक कोनो आन कथाकार नहि।

हिनक कथा-वस्तुक प्रसंग प्रो० शैलेन्द्र मोहन झा कहैत छथि—"कथा लिखबाक सामान्य फार्मूलासँ हटि ई कथानकक चयन करैत छथि जे सर्वथा नवीन ओ हृदयग्राही होइछ। हिनक कहानीकेँ पढ़ि प्रतीत होइछ जे कहानीकार कथारूढ़ि, कथावस्तु एवं घटनाक्रमक परम्परागत स्वरूपकेँ त्यागि कहानीक लेल एक टा सहज भूमि प्रस्तुत करबाक दिशामे प्रयत्नशील छथि। फलतः हिनक कहानीसभक सफलता कोनो आश्चर्यजनक घटनाक अवतारणामे नहि अछि, ने कोनो चरमसीमाक कुशल निर्वाहिमे, अपितु मात्र एक टा भाव अथवा स्थितिकेँ वस्तुरूपमे ग्रहण कऽ ई जीवनक द्वन्द्व एवं जटिलताकेँ प्रकट करबामे समर्थ भेलाह अछि।"

भाषाक उत्कृष्टता हिनक कथाकें अतिरिक्त गुणवत्ता प्रदान करैछ। हिनक भाषा ने काव्यक वायुयानपर उड़ैत अछि, ने दराड़ि फाटल गद्यक बाधमे ठेसैत अछि अपितु गद्यक कोमल समतल भूमिपर झूमैत चलैत अछि, झूमबैत लऽ चलैत अछि।

हिनक कथा देहातक कथा नहि कहैछ, देहातीक कथा नहि कहैछ, शहरमे बसल, मध्यम आ मध्यम-निम्न वर्गक परिवारक कथा कहैछ। कथा कहैछ—खिस्सा नहि। हिनक कथामे खिस्सा नहि भेटैछ। तें, एकर अर्थ ई नहि जे कथ्य नहि रहैछ। जे कथ्य ककरो कखनो हँसबामे रहैछ, ककरो कखनो खौझयबामे रहैछ, ककरो कखनो उद्विग्नतामे रहैछ, ककरो कखनो संदेहमे रहैछ, संदेह-भगनमे रहैछ, ककरो कखनो आबेसमे रहैछ, रूसब-बौंसबमे रहैछ, ककरो कखनो किछु सोचबमे रहैछ—ताही कथ्यकें लैत—ओकर रहस्यक जालीकें फाड़ैत, किन्तु ओकर छितरायल तागकें अपन विशिष्ट शिल्पमे बुनैत—हिनक कथा बढ़ैत अछि। तें हिनक कथा मनुक्खक बहरिया हलचलक कथा ओतेक नहि अछि, जतेक ओकर मनमे चलैत विचारक ट्रेनक धमक आ लचकक कथा अछि। किन्तु, ओहि ट्रेनकें हिनक कथा स्टेशन पहुँचा दैत अछि, पाठकके चलैत ट्रेनक पाछाँ दौड़िते नहि छोड़ि दैत अछि। हिनक पात्रक तनाव पाठकक तनाव भऽ जाइत अछि आ हिनक पात्रक तनाव-मुक्तिसँ पाठको आस्वस्तिक साँस लैत अछि—पाठकक संग एतेक सघन आत्मीयता स्थापित करब कथाकारक विशिष्ट सामर्थ्य द्योतक थिक—सामर्थ्य कथ्योक, शिल्पोक आ भाषाक सेहो।

मानव-मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण हिनक कथ्यक विशिष्ट गुण थिक। हिनक प्रायः प्रत्येक कथाक पात्र मानसिक तनावमे रहैछ। ओकर तनावकें अभिव्यक्ति देबामे कथाकार सभ ठाम सफल भेल छथि। "यैह हेतु अछि जे सूक्ष्मसँ सूक्ष्म स्थिति क्षणिकसँ क्षणिक मानसिक ऊहापोह एवं छोटसँ छोट अनुभूति कथाकारक सहज स्पर्शसँ समस्त पाठकसमुदायकें भावाभिभूत करबामे सक्षम भेल अछि।"

हिनक कोनो-कोनो कथा दू-दू तीन-तीन समान स्तरपर आगाँ बढ़ैछ आ अन्तमे जाकऽ खुजि जाइछ। उदाहरणक रूपमे 'युद्ध···युद्ध···युद्ध···'कें लेल जा सकैछ। "तृतीय भारत-पाक युद्धक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल ई कथा एके संग देश, परिवार तथा व्यक्तिक अन्तर्मनमे चलैत युद्धक स्थितिकें सहज-स्वाभाविक अभिव्यक्ति देलक अछि।" यैह कारण थिक जे ई कोनो खास 'सन्दर्भक सीमाकें तोड़ि शाश्वत प्रभावक कथा' भऽ गेल अछि।

हिनक कथाक मूल प्रवृत्तिकें विश्लेषित करैत कुलानन्द मिश्र एक ठाम कहने छथि—;'सघन आ विरल मानवीय संवेगक अत्यन्त सुकुमार वृत्ति सभपर आधारित राजमोहन झाक कथा-फलक बड़ छोट छनि, मुदा बड़ जीवन्त छनि। मानसिक धरातलपर पड़ैत अर्थतन्त्रक प्रभावमे बनैत-बिगड़ैत मध्यवर्गीय सम्बन्ध आ राग-उपराग आ अपन सीमित सामर्थ्यपर झखैत हुनक वर्ग-चेतना राजमोहन झाक कथा-संवेदनाकें मोहक आ रमणीय टिपकारी सभ रूपायित करैछ। राजमोहन झाक धड़कैत भाषा-संवेदना हिनक कथाक आत्माकें सुकुमार प्राणवत्ता प्रदान करैत छनि। अनर्गल, दंश, अप्पन लोक, बिचला समय, युद्ध···युद्ध···युद्ध आ एक टा

तेसर सन कथामे राजमोहन झाक विषयक प्रति उत्कट आत्मीयता, धड़कैत भाषा-संवेदना आ मोनस फिनिस कयल शिल्पक छटा देखल जा सकैछ।"

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथासंग्रहमे कथाकारक परिचयक क्रममे हिनकापर कहल गेल बात हिनक कथाक सभ मूल विन्दुकें स्पर्श करैत अछि—"छोट-छोट पारिवारिक स्थितिक सहज अभिव्यक्ति हिनक कथामे बड़ स्वाभाविक ढंगसँ भेल अछि। पात्रक मनोजगतकें खोलिकऽ राखब, बदलैत सामाजिक मूल्यक सन्दर्भमे सम्बन्धकें व्याख्यायित करब आ आधुनिक मध्यम वर्गीय शहरी जीवनक विसंगति, आडम्बर, कुण्ठा आदिकें 'पिन-प्वाइण्ट' करब हिनक कथाक मूल विन्दु रहैछ। सामयिक बोधसँ जुड़ल कथ्य लऽ नव आयाम तकबाक प्रवृत्ति हिनक कथामे भेटैत अछि। भाषाक सहजता आ शिल्पगत वैशिष्ट्य हिनक कथाक अपन फराक पहिचान बना लैत अछि।"

कथासंग्रहक भूमिकामे हिनक किछु कथाक उदाहरण दऽ उक्तिकें आर स्पष्ट करबाक चेष्टा कयल गेलैक अछि—"श्री राजमोहन झाक 'अप्पन लोक' कथामे टूटैत सम्बन्धकें तँ देखार कयले गेल अछि, आर्थिक कारणसँ उत्पन्न आन्तरिक शून्यताक मनोवैज्ञानिक रूप सेहो भेटैछ। हिनक 'अनर्गल' कथा देखबैत अछि जे भाड़ापरक घरक मोह लोककें भऽ सकैत छैक, ओकर बदलबाक पीड़ा मनुक्खक निन्नकें, सुख-शान्तिकें भंग कऽ सकैत अछि, मुदा पत्नीकें छोड़बामे ओकरा कोनो कष्ट नहि होइछ। वस्तुतः विभिन्न स्तरपर मानवीय संकटकें अन्तरंग बनाकऽ देखबाक जे कौशल राजमोहन झाक कथामे भेटैछ, से आन कथाकारमे नहि। राजमोहन झाक 'एक टा तेसर' आन कथो नहि, अपने छाया थिक जे कखनो चैन नहि लेबऽ दैछ।"

आपातकालीन स्थितिक लगले बाद हिनक कथा प्रकाशित भेल—'अन्ततः'। शहरमे बिजली गुम्म भेलापर घरमे आ बाहर जे सन्नाटा आबि जाइछ, आतंक पसरि जाइछ—मनमे नाना प्रकारक भय पैसि जाइछ—सभक बड़ सटीक आ सूक्ष्म वर्णन अछि। बिजली आबि जयबाक कामना—ओकर प्रतीक्षा—फेर निराशा, किन्तु हठात् चकूदऽ पर बाहर भऽ उठब आ प्रकाशक ओहि स्वागतमे उठल घोलमे अनजान अपनो स्वर सम्मिलित भऽ जायब—आपातकाल आ ओकर बादक घटनाक सन्दर्भमे एकदम सटीक बैसैछ। जकरा आपातकालमे कोनो प्रकारक यातना नहियो भोगल रहैक, ओहो तत्कालीन सरकारक पतनसँ प्रसन्न भेल, उल्लासमे अनजाने अपनोकें सानि लेलक।

प्रो० शैलेन्द्र मोहन झाक ई कथन अक्षरशः सार्थक अछि—"राजमोहन जीक कहानीमे किछु एहन वस्तु अछि जे पाठकक मानसक अन्तस्तलमे उतरि, जगा दैत अछि—आ ओ अछि जीवनक निरन्तर प्रवाहित धारा। एहि प्रवाहक अनुसरण करैत कहानीकार सामान्य जीवनक अभाव अभियोग, आशा-आकांक्षा, नेह-छोह, कुण्ठा-विद्रोहक विश्लेषण कयने छथि। हिनक अनेक कथा मध्यम वर्गक अन्तर्दृष्टिक एक-एक टा तहकें खोलिकऽ रखबाक सामर्थ्य रखैत अछि जाहिमे आर्थिक दृष्टिसँ टुटैत समाजक मर्मव्यथा व्यंजित भेल अछि।"

राजमोहन झा ओहन सशक्त कथा-शिल्पी छथि जे वाह्य जगतक साधारणसँ साधारण वस्तुकें, जीवनक कोनो क्षणमे घटल मामूलीसँ मामूली घटनाकें पकड़ि

कऽ ओकर तह धरि जाइत छथि तथा ओकर समस्त संभावनाकें विश्लेषित करैत छथि। अतएव हिनक कथाक रसास्वादन करबाक लेल एक टा विकसित मस्तिष्क चाही, कथाक सूक्ष्मताकें पकड़बा लेल मनोवैज्ञानिक बोध चाही। केवल खिस्सा तकनिहार हिनक कथासँ निराश भऽ सकैत छथि।

अपन पीढ़ीमे, मैथिलीमे अपना तरहक ई प्रायः एकमात्र कथाकार छथि जे मैथिली कथामे मनोवैज्ञानिक तत्त्व भरिकऽ कथ्य आ शिल्प दुनू दृष्टिएँ एकरा एतेक समृद्ध कयलनि अछि। मनोवैज्ञानिक कथाक दोसर श्रेष्ठ शिल्पी प्रो० मनमोहन झा छथि, जे हिनक परवर्ती पीढ़ीक थिकाह।

हिनक भाषा हिनक कथाक एक प्रमुख विशेषता थिक।

हिनक किछु कथा हिन्दीमे सेहो प्रकाशित-प्रशंसित भेल अछि। हिनक मैथिली-कथा कोनो उन्नत भाषाक श्रेष्ठ कथाक समकक्ष राखल जा सकैछ।

कथाकारक अतिरिक्त हिनक आलोचक रूप सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक ई गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कयने छथि तथा इतिहास, किंवा आनो निबन्ध-समालोचनामे जतऽ जे विसंगति हिनका भेटलनि, तकरा लोकक समक्ष निस्संकोच राखि देलनि अछि। एहि प्रकारक हिनक निबन्ध, समीक्षा ओ टिप्पणीसँ विषयक गम्भीर पकड़क हिनक क्षमता तँ प्रमाणित होइते अछि, मैथिलीक इतिहास-कार ओ समालोचक लोकनिक तथ्यमूलक अज्ञानताक सेहो पर्दाफाश भऽ जाइत अछि। प्राध्यापकीय भाषा ओ प्राध्यापकीय समालोचनाक हिनका द्वारा तेहन धज्जी उड़ाओल गेल अछि जे ई जातिबोधक शब्द आब प्रवृत्ति-बोधक बनि गेल अछि। हिनक एहि प्रकारक आलोचनाक किछु शीर्षक थिक—प्राध्यापकीय दायित्व ओ निर्वाह, प्राध्यापकीय भाषाक बानगी, प्राध्यापकीय भाषाक पछाड़मे पड़ल मैथिली आलोचना, आदि।

हिनक 'गल्तीनामा' जँ इतिहासकार ओ आलोचक लोकनिक विवेकके जगा सकत तँ मैथिलीक बड़ पैघ उपकार होयत।

□

डाक्टर श्री रामदेव झा

मूलतः आ मुख्यतः कथाकार डा० रामदेव झा बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार छथि। कथा-विधाकें हिनक अवदान समृद्ध कयलकैक अछि। कविता सेहो ई लिखैत छथि मार्मिक, एकांकीकारक रूपमे सेहो ई अपन स्थान सुरक्षित करा लेलनि अछि, हिनक प्रकाशित निबन्धक आधारपर कहल जा सकैछ जे ओहू विधामे हिनक हाथ माँजल छनि, किन्तु आब हिनक मोन अनुसंधान ओ शास्त्रीय समालोचनामे रमि गेल छनि, आ क्रमशः साहित्य सर्जन छूटल जाइत छनि। अनुसंधानोमे हिनक दृष्टि तेज आ साफ छनि ओहि दिस रुचियो विशेष छनि. तें ओहि क्षेत्रमे हिनकासँ बहुत आशा कयल जाइछ। मैथिली साहित्यक किछु नव तथ्यकें ई प्रकाशमे अनबो कयलनि अछि।

हिनक कथाक दूटा संग्रह प्रकाशित अछि—एक खीरा : तीन फाँक (१९६५) तथा मनुक सन्तान (१९६६)। इजोती रानी (१९६७)—ई हिनक बालोपयोगी खिस्सा थिक। व्यक्तित्व-कृतित्वक समीक्षात्मक ग्रन्थ 'उमापति' (१९८०) तथा शोधग्रन्थ मैथिली शैव साहित्य (१९७९) ओ मैथिली शैव साहित्यक भूमिका (१९८२) हिनक प्रकाशित अछि। एकर अतिरिक्त नन्दीपति-गीतमाला (१९६५), रामविजय नाट (१९६७), हरगौरी विवाह नाटक (१९७०) तथा नेपालक शीलोत्कीर्ण गीत (१९७२)क ई सम्पादन कयने छथि। प्रोफेसर सुरेन्द्र झा 'सुमन'क संग 'मैथिली प्राचीन गीतावली' ग्रन्थक सम्पादन हिनका द्वारा भेल अछि, जाहिमे ८७ पृष्ठक गवेषणामूलक विद्वत्तापूर्ण भूमिका यैह लिखने छथि तथा चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क संग 'कविवर जीवन झा-रचनावली'क सम्पादन सेहो ई कयने छथि। ताहूमे भूमिका हिनके लिखल अछि।

दरभंगा जिलाक कबिलपुर (लहेरियासराय) नामक गाममे हिनक जन्म १९३६ मे भेल छनि। मैथिली साहित्यक ई मेधावी छात्र छलाह। पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे एम० ए० कयलाक उपरान्त पहिने किछु दिन धरि दुमका कालेज, दुमकामे पश्चात् सी० एम० कालेज दरभंगामे रहलाह। सम्प्रति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे स्नातकोत्तर मैथिली विभागक यशस्वी प्राध्यापक छथि। १९७० ई०मे हिनका पटना विश्वविद्यालय द्वारा 'मैथिली शैव साहित्य' नामक शोध-प्रबन्धपर पी-एच० डी०क उपाधि प्राप्त भेलनि।

ई ललित-राजकमल-मायानन्द पीढ़ीक उल्लेखनीय कथाकारक रूपमे स्थापित छथि। हिनक कथामे डा० शैलेन्द्र मोहन झाक अनुसार "लेखकक कल्पनाशीलताक संगहि यथार्थ जीवनक संतुलन वर्तमान भेटत। हिनक सभ कहानीमे जीवनक प्रति गहन अनुभूतिक दर्शन होइछ। चेतनाक तहमे उतरि कहानीकार तथ्यक अन्वेषण कयलनि अछि तथा उपयुक्त वातावरणक निर्माण कऽ व्यक्ति-समाजसँ संबद्ध अनेक समस्यापर सहानुभूतिपूर्वक विचार कयलनि अछि।" डा० रामदेव झाक कथा "सुन्दर उपस्थापन-शैली, वस्तु-पात्रक वैविध्य, मर्मस्पर्शी भावना, मनोवैज्ञानिक चित्रण, कोनो स्थिति वा भावकें प्रतीकक माध्यमे प्रस्तुतीकरण, सरसता एवं मनोरम ग्रामीण शब्दावली आदि अनेक विशेषनासँ समृद्ध" अछि।

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक कथाकार-परिचयक प्रसंग हिनक कथाक 'विशेषता माटि-पानिक सोन्हाओन गन्ध, जनजीवन आ लोक-संस्कृतिसँ सुरुचिपूर्ण संपृक्ति आ स्वाभाविक ठेठ भाषा' मानल गेल अछि। वस्तुत: "मानवीय सुकुमार संवेदना, मनोवैज्ञानिकता आ सामाजिक चेतनाक स्पन्दन हिनक कथामे भेटैत अछि।" हिनक किछु प्रसिद्ध कथा थिक—मनुक सन्तान, एक खीरा तीन फाँक, बटगाछक छाहरि, एक टा रहय उतमी, परती आदि।

'एक खीरा: फाँक'मे हिनक आठ गोट कथा संगृहीत अछि तथा 'मनुक संतान'मे सात गोट। 'मनुक संतान' कथा हिनक बहुत उत्कृष्ट कथा तँ अछिए, मैथिली साहित्यक दस टा उत्कृष्ट कथामे सेहो ई स्थान पयबाक अधिकारी अछि। एहिमे 'परिवेशक अन्तरंग परिचिति एवं जनजीवक यथार्थक चित्रण जतऽ कथाकेँ अत्यन्त सोहनगर बना दैत अछि, ततहि मनोवैज्ञानिकताक संग सामाजिक चेतना दिस संकेत कऽ कथा बड़ विलक्षण रूपेँ एक टा पैघ बात कहि जाइत अछि।'

डॉ० नवीनचन्द्र मिश्रक अनुसार रामदेव झाक कथाक "एक-एक गोट पात्र ओ परिस्थिति जेना वर्तमान मिथिलाक जनजीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। निम्नवर्गीय समाज आर्थिक विषमतासँ अनवरत संघर्ष करितहुँ प्रसन्न भावेँ जीवन-पथपर अग्रसर भऽ रहल अछि, तकर सूक्ष्म पर्यवेक्षण अपन कथाक भित्तिपर अंकित कऽ गल्पकार तकरा अमर बना देने छथि।" डॉ० जयकान्त मिश्र सेहो एकरा स्वीकार करैत एहनाहे मत व्यक्त कयने छथि—Dr. Ramdeo Jha has attempted to paint similar aspects of life, particularly among the lower elasses in the new manner taking up litile, insignificant things that matter for a happy and sucecssful life."

हिनक कविता हृदयग्राही होइत अछि। कोनो वादसँ ई ग्रस्त नहि छथि। छन्द आ स्वच्छन्द—दुनू प्रकारक रचना करैत छथि—किन्तु विचार हिनक कतहु विच्छृंखलित नहि होइत अछि। कंथे जकाँ हिनक कवितामे मिथिलाक गाम-घर, सामान्य जनक हास-अश्रु, इच्छा-आकांक्षाकेँ अभिव्यक्ति भेटलैक अछि।

हिनक किछु गीत उत्कृष्ट कोटिक अछि। प्रो० रमानाथ झाक शब्दमे हिनक 'गीत मध्य प्रकृति एवं नारी-सौन्दर्यक अनुभूतिपूर्ण वर्णन भेल अछि, कतहु कतहु नवयुगक सेहो अभिनन्दन भेल अछि।" ई बड़ ललित शब्दक योजना अपन गीतमे करैत छथि। भावक गम्भीरताक संग-संग गेयधर्मिता आ कर्णप्रियता हिनक गीतक मुख्य विशेषता थिकनि। उदाहरणक रूपमे निम्न पाँती द्रष्टव्य—

आकुल प्राण पियासल तकइछ नीलम नयन-कटोरमे
सुधा-सिंधु संचित राखल छल हँसित संपुटित ठोरमे
चंचल सिंधु अचंचल लहरी
डूबि रहल जलयान हे
अनुभव विफल, भेल अछि खंडित
नाविक केर अभियान हे
स्वयं किनार उतरि रहलै अछि डूबऽ ले' हिलकोरमे
आकुल प्राण पियासल तकइछ नीलम नयन-कटोरमे

'भारत जननी' हिनक सुप्रसिद्ध कविता अछि जाहिमे प्रो० रामनाथ झाक शब्दमे 'भावुक कवि किशोर भावनाक शाद्वल भूमिके पार कए यथार्थक ठोस भूमिपर अग्रसर होइत प्रतीत होइत छथि।' कविक देशभक्तिक लेल ई पंक्ति द्रष्टव्य—

लागि नहि सकते अहँक तन
लघुहु कुशक कलेप।
केकि नहि पाओत कतहु कथो छोट-छानो ढेप
छी सतर्क सचेत, तत्पर सतत रक्षा हेतु
केतु फहरय व्योममे निर्द्वन्द्व।
मन्द नहि हो ई मुखर मुस्कान
जननि हे अर्पित हमर हो कोटि-कोटि प्रणाम।

रामदेव झा एकांकीक रचना सेहो कयने छथि। 'पिपासा' आ 'दुलारक भूख' हिनक प्रसिद्ध एकांकी थिक। अपन एकांकीमे मध्य आ निम्न वर्गक समस्याकेँ लऽ बड़ सहज रीतिएँ ओकरा उद्घाटित करबाक प्रयास लेखक कयने छथि। कथोपकथन पात्रानुकूल अछि, छोट-छोट अछि; वातावरण कतहु जटिल नहि अछि, अतएव मंचनोक दृष्टिसँ हिनक एकांकी सफल मानल जायत।

हिनक अनुसन्धानात्मक निबन्धसभ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। 'उमापति' नामक कृतिमे हुनक सम्बन्धमे प्रचलित कतेको धारणाकेँ ई तथ्य द्वारा भ्रामक सिद्ध कयलनि अछि तथा हुनक सम्बन्धमे अपन पुष्ट मत विद्वानलोकनिक समक्ष रखलनि अछि।

हिनक दू गोट शोधग्रन्थ प्रकाशित अछि, जे वास्तवमे एके ग्रन्थक दू खण्ड थिक। मैथिली शैव साहित्यक भूमिकामे शिवक विभिन्न शास्त्रमे उल्लेख, हुनक शास्त्रीय आ लौकिक महत्त्व, मैथिल समाजमे शिवक महत्त्व, उपासना पद्धति, मैथिलीक आदिकालीन रचनामे शिवक रूप आदिपर गम्भीर विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'मैथिली शैव साहित्य (यद्यपि ई प्रकाशित भेल पहिने, किन्तु असलमे थिक ई दोसर खण्ड)मे शिव-विषयक प्रचुर आ सुदीर्घ साहित्यक विस्तृत आयामकेँ समटैत शैव साहित्यक विद्वत्तापूर्ण आ विशद विश्लेषण प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई ग्रन्थ विद्वान लेखकक गहन अध्ययन, सुदीर्घ अनुसन्धान आ सूक्ष्म विवेचन-बुद्धिक सुपरिणाम थिक। किन्तु, आधुनिक कालमे जतऽ अनेक कविक शिव-विषयक रचनापर लेखक दृष्टिपात कयलनि अछि ततऽ कविवर सीताराम झाक शिव-विषयक रचना छुटि गेल अछि। तहिना, चीनी आक्रमणक समयमे अनेक कवि द्वारा कयल गेल प्रलयंकर रुद्रक व्यापक आवाहनकेँ सेहो विद्वान लेखक अपन विचार-कोटिसँ बाहर रखलनि अछि। तथापि, ई कृति मैथिली समालोचना ओ अनुसन्धान-साहित्यक मानक ग्रन्थ थिक।

ई नेपाल जाय, ओतहुसँ बहुत-किछु मैथिलीक प्राचीन दुर्लभ वस्तुकेँ ताकि कऽ अनने छथि आ क्रमशः ओकरापर अपन अभिमत व्यक्त करैत, ओकर ऐतिहासिक, साहित्यिक महत्ता प्रतिपादित करैत प्रकाशमे आनि रहल छथि। उपर्युक्त सम्पादित पोथीमे किछु एही कोटिक थिक।

डॉ० रामदेव झाक साहित्य मैथिली-भण्डारक विशिष्ट सामग्री थिक। ई जे लिखने छथि तकर तात्कालिक आ स्थायी, दुनू महत्त्व छैक। □

श्री जीवकान्त

जीवकान्त अपनाकें मूलतः कवि मानैत छथि। हिनक प्रवेश यद्यपि मैथिली साहित्यमे कवितेक संग भेल, किन्तु लगले ई अपन स्थान कविताक अतिरिक्त कथा आ उपन्यासोमे सुरक्षित करा लेलनि। एहि तीनू विधामे ई खूब लिखने छथि आ से समान गतिसँ, समान क्षमतापूर्वक, आ तें उक्त तीनू विधाक हिनक रचना समान उच्चस्तरीय अछि। वस्तुतः मैथिली साहित्यकें जतेक शीघ्र आ जतेक उत्कृष्ट रचनावलीसँ ई समृद्ध कयने छथि ततेक हिनक समकालीन प्रायः आन क्यो नहि।

विभिन्न विधामे हिनक कृति निम्नलिखित अछि—दू कुहेसक बाट, पीयर गुलाब छल, नहि कतहु नहि, पनिपत आ अगिनबान—उपन्यास, एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे, सूर्य गलि रहल अछि, वस्तु—कथा-संग्रह; नाचू हे पृथ्वी—कविता-संग्रह।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक ड्योढ़ (घोघरडीहा) गाममे २५ जुलाइ १९३६ कें भेल छनि। उच्चतर अध्ययनकें जारी नहि राखि ई खजौली (मधुबनी)क उच्च विद्यालयमे शिक्षक नियुक्त भऽ गेलाह। संप्रति भोला उच्च विद्यालय, ड्योढ़मे कार्यरत छथि। स्वाध्यायसँ ई मैथिलीक अतिरिक्त भारतीय तथा अनेको विदेशी भाषा-साहित्यक उत्कृष्ट ग्रन्थक अध्ययन कऽ ज्ञानार्जन कयने छथि। ई अपन रचनामे ओहिमे ज्ञानक उपयोग तँ कयने छथि, किन्तु ओहिमे परिवेश सभक अपन छैक, संस्कृति मिथिलाक छैक, एहि ठामक माँटि-पानिक सोन्हगर गंध छैक।

ई नव्यतम शिल्प-शैलीमे कविताक रचना कयने छथि। मैथिली कविता कोनो भावकें कतेक नीक जकाँ पचयबाक क्षमता रखैत अछि, तकर प्रमाण हिनक कविता थिक। हिनक कविता भावनाक नहि, चिन्तन-मननक वस्तु थिक, तें एहिमे लोकरंजनक तत्व नहि भेटैछ, भेटैछ वर्तमान युगक वैचारिक संघर्ष, अकुलाहट, खौंझ। अतएव हिनक काव्य सर्वसाधारणक हेतु क्लिष्ट अवश्य भऽ जाइछ, किन्तु नवकविताक चिन्तकलोकनिकें हिनक काव्यमे उत्कृष्टताक दर्शन होइछ—चित्रणक दृष्टिएँ, बिम्ब विधानक दृष्टिएँ, भाषाक समुचित प्रयोगक दृष्टिएँ, यथार्थक ठोस अभिव्यक्तिक दृष्टिएँ तथा अनुभूतिक गम्भीरताक दृष्टिएँ।

'नाचू हे पृथ्वी' हिनक एहने नव भाव-बोध-समन्वित, वैचारिक ठोस धरातलपर रचित काव्यसंग्रह थिक, जाहिमे एक टा कछमछी, एकटा क्रोध आ प्रतीक्षाकें नहि उघि सकबाक कारणें उत्पन्न एक टा खीझकें स्वर देल गेल अछि। डा० जयकान्त मिश्र यात्रीक बाद हिनक एहि कवितासंग्रहकें वर्तमान मैथिली कविताक 'मील-पाथर' मानैत छथि। हुनक शब्दमे 'Jeevakant seems to me to be the maturest and the best. His collection of poems 'Nachoo He Prithivi' is a landmark in the march of new poetry after Yatri and in its poems like these that one feels that the 'new' poetry has been fully vindicated."

हिनक ई कविता-संग्रह १९७१ ई०मे प्रकाशित भेलनि। ओकर बादो ई बहुत कविताक रचना कयलनि अछि जे क्रमशः आर बेसी परिपक्व होइत गेलनि अछि। हिनक एक टा आधुनिक कविताक एहि पाँतीकें सन्दर्भक कसौटीपर कसने एकर प्रभाव हृदयकें छुबैत अछि—

राजा भरथरीक घर साबिकोमे धर्मशाला छलनि
राजा भरथरीक घर आइयो धर्मशाला छिकनि
मुदा आब शृंगारक कविता लिखब जहिना
बचकानी थिक
तहिना वैराग्योक कविता करब बचकानी थिक
आब प्रत्येक मनुक्ख एक टा आँखिकें
आन्हर कऽ लेने अछि
आ एक टा कानकें बहीर कऽ लेने अछि
मुदा मनुक्ख ने आन्हर अछि आ ने बहीर
आब ओ चेतन भऽ गेल अछि
अपना आङनमे बेली लोढ़निहार
पचासो व्यक्तिकें देखि
आब ओ भर्तृहरि जकाँ
राजपाट नहि छोड़ैत नछि।

तहिना, कविक ई यथार्थवादी स्वर मानव-प्रकृतिपर, मनुष्यक विवशतापर कतेक सटीक बैसल अछि!

तोँ अपने इच्छाक पोसा कुकूर छह, मीत
आ ओकरा हाथक सिकड़ीमे बान्हल
ओकर पाछाँ-पाछाँ घिसिआयल जाइत छह
—चैंछाइत

मीत, तोँ अपने भयक पीरीपर
आँखि मुनने पड़ल छह गोहरबैत
ने देखऽ चाहैत छह अयनामे अपन मुँह
आ ने ताकऽ चाहैत छह अपन हेड़ायल हाथ-पयर
तोँ सड़क जकाँ मीत!
पीठ ओड़ने पड़ल छह!

मनुक्ख सड़क जकाँ पीठ ओड़ने युग-युगादिसँ पड़ल अछि आ युगयुगादिसँ काल एकर पीठपर दऽकऽ चलैत छैक तथा युगयुगान्त धरि मनुक्ख पीठ ओड़ने सड़क बनल पड़ल रहत आ युग-युगान्त धरि काल एकर पीठपर देने चलैत रहतैक। ई यथार्थ समसमायिक होइतो शाश्वत थिक।

हिनक कथा 'भाषाक प्रवाह, माँटि-पानिक सोन्हाइन, गन्ध आ स्वरक तीव्रताक कारण' महत्वपूर्ण स्थान रखैछ। हिनक 'एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे'क सभ कथा एके भावभूमिपर आधारित अछि। औद्योगीकरणक प्रभावक कारणें मिथिलाक ग्रामांचलमे व्याप्त निम्नमध्यवर्गीय समाजक असन्तुलनकें हिनक कथासभ

मार्मिक रूपेँ उजागर कयलक अछि। डा० जयकान्त मिश्र हिनक कथाक महत्त्वकेँ मुक्तकंठे स्वीकारैत छथि —"Eksari Tharhi Kadam Tara Re is a presentation of the deep alienation which increasingly everyday seems to isolate the life of modern man both in the cities and in the villages in the new machina age."

हिनक दोसर कथा-संग्रह 'सूर्य गलि रहल अछि'मे हिनक १४ टा प्रसिद्ध कथा संगृहीत अछि, यथा—सीड़क, अतत्तह, फँसरी, धरती, युद्धबन्दी शिविर, इजोरियाक कफन, अठन्नियाँ पट्टी, पुरान गाछक कनोजड़ि, फूटल डोल, अपन-अपन दाओ, फनिगा, स्तवन, कीलन तथा उजरा रंगक पसार।

अपन कथाप्रवृत्तिपर कथाकार स्वयं पकाश दैत कहैत छथि—"हमर धारणा अछि जे निम्नमध्यवर्गीय लोक बेसी कुहा रहल अछि। समाजमे जे मानदण्ड ई वर्ग बनौलक अछि, सैह ओकरा कपारपर बज्र बनि खसि पड़ल छैक। तेँ हम निम्नमध्य वर्गीय पीड़ाकेँ, ओहि समाजक प्रत्येक मनुक्खकेँ, कागतक पातपर छटपटाइत देखाबऽ चाहैत छी।"

लेखकक एहि कथनक आलोकमे विचार कयलापर हिनक कथासभ वेसी स्पष्ट रूपेँ बुझबामे अबैछ।

"हिनक फँसरी एक टा निम्नमध्यवर्गीय परिवारमे प्राचोन पीढ़ीक सहज असामंजस्यक परिणति देखबैछ तँ 'सीरक'मे एहि सत्यकेँ निधोख भऽ कऽ राखल गेल अछि जे काँच माउसक लोभ, चाहे ओ जुगुप्सिते सन्दर्भमे किएक ने हो, विभिन्न स्तरक लोककेँ एक्के दामिमे बन्हने अछि।"

श्री फुलानन्द मिश्र जीवकान्तक कथाक समीक्षा करैत कहने छथि—"जीवकान्तक कथामे कथा-संवेदनाक आर वृहत्तर क्षेत्रमे प्रसार होइछ। जीवकान्तक कथामे औद्योगीकरणक प्रभावसँ बढ़ल जाइत एकाकीपन आ असुरक्षा-बोधकेँ समर्थ अभिव्यक्ति भेटैछ। ओ मध्यवर्गक सुख-दुखमे रसल-बसल ग्राम-कथा सेहो कहलनि अछि। निम्न-मध्यवर्ग वा मध्यवर्गक समस्त पीड़ा हुनक विषय नहि छनि। अपना लेल ओहि क्षेत्रमे ओ अपन प्रवृत्तिक अनुरूप विषयक चुनाव करैत छथि। जीवकान्त कोनो संवेदना-विशेषपर रमल नहि रहि सकैत छथि। ओ वेगसँ कथा कहैत छथि आ ई तथ्य हुनक कथाकेँ आ अभिव्यक्तिकेँ समान रूपेँ 'काव्य-गरिमा' प्रदान करैत छनि। एहि दशकक आस-पास जीवकान्तक 'इनकिलाब' सन कथा सेहो प्रकाशमे आयल। एहिमे मनुक्खकेँ अपन दुरवस्थामे वस्तुतः प्रतिरोधक मुद्रामे ठाढ़ देखल जा सकैछ। मुदा 'इनकिलाब' सन निर्णायक स्वरक कथा जीवकान्त दोसर नहि लिखलनि आ एहि काल धरि आनो कथा-लेखक द्वारा एहि मनःस्थितिकेँ रागक संग नहि चित्रित कयल गेल। जीवकान्तक सीरक, फँसरी आ धरती सन कथामे हुनक सामाजिक सजगता आ युगीन चेतनाक दर्शन होइछ। ओ स्वतन्त्र्योत्तर भारतक मिथिलासँ परिचित छथि, वर्तमान स्थितिमे प्रतिरोधक आवश्यकतो बुझैत छथि, मुदा तकर आगाँ हुनका गतिहीनताक स्थिति नजरि आबय लगैत छनि। ई बात हुनक सीमा बनैछ आ ई अपना आपमे बहुत करुण थिक।"

वस्तु—'वस्तु'मे जीवकान्तक १८ टा कथा संगृहीत अछि। 'वस्तु' नामक एक टा कथा सेहो अछि, जे संग्रहक पहिले कथा थिक। नानी, इनकिलाब, शहर,

बिहाड़ि, ऊर्जा प्रभृति किछु कथा एहन अछि जे प्रकाशित होइते बेस चर्चित भऽ गेल छल।

हिनक कथा मिथिलाक कथा कहैत अछि, एहि ठामक माटि-पानिक कथा, बाध-बोनक कथा, घर-खरिहानक कथा, आङन-दलानक कथा कहैत अछि। निम्न-मध्य वर्गक मोहभंग, जे स्वतंत्राक पश्चात् विस्फोटक रूपमे भेल अछि; तकरा हिनक कथा स्वर दैत अछि। तहिना, हिनक कथा ओहन जनक पीड़ाकेँ मुखरित करैत अछि जाहिमे औद्योगीकरणक परिणाम-स्वरूप व्यक्ति अपनाकेँ गाम-घरसँ निर्वासित अनुभव करैत अछि। हिनक कथा एक दिस सत्ताक दुरभिसन्धिमे पिसाइत लोकक आहिकेँ आकार दैत अछि तँ दोसर दिस जमीन्दारी आ सामन्ती व्यवस्थाक विरूपताकेँ बिकछा कऽ सोझाँ रखैत अछि। भाषा हिनक सहज, सरल-स्वाभाविक आ सटीक होइत अछि। हिनक कथा ने गद्यक पहाड़ी एकपेड़िया पर चलैत अछि, ने पद्यक फेनोज्वल मखमली कल्पनाक पाँखिपर उड़ैत अछि। ओ ने गद्य अछि, ने पद्य अछि—ओ केवल कथा अछि। एहन कथा—जे हमरा होइत अछि जे हमर कथा थिक, हमर गाम-घरक कथा थिक;—जे अहाँकेँ होइत अछि जे अहाँक कथा थिक, अहाँक गाम-घरक कथा थिक।

एखनो निम्न-मध्य बर्गीय गृहस्थ-परिवारमे स्त्रीकेँ कोनो आश्रमी वस्तुसँ अधिक महत्त्व नहि देल जाइत छैक। ओकरा मनुक्ख नहि, 'वस्तु' बूकल जाइत छैक। मनुक्खो उपयोगी, वस्तुओ उपयोगी। तखन, मनुक्ख वस्तु एहि कारणेँ नहि थिक जे ओकरा लग हृदय छैक। वस्तु वस्तु थिक, कारण जे ओकरा लग सभकिछु रहितो हृदय नहि छैक। वस्तुकेँ मनुक्ख अपन उपयोग लेल, उपभोग लेल व्यवहार करैत अछि। स्त्रीकेँ सेहो आइ धरि मनुक्ख अपन उपयोग-उपभोग लेल व्यवहार करैत आबि रहल अछि। मुदा, आजुकाल्हिक देहातियो स्त्री ई बोध करा दैत अछि जे ओ पुरुषक उपयोग-उपभोग लेल तँ अछि, मुदा खाली वस्तुए नहि अछि, मनुक्खो अछि—जकरा लग हृदय छैक, संवेदना छैक, सिनेह-आवेस छैक, घृणा-वितृष्णा छैक, प्रेम-सेहन्ता-मनोरथ छैक।

यैह हृदय, संवेदना, सिनेह-आवेस, घृणा-वितृष्णा, प्रेम-सेहन्ता-मनोरथ मनुक्ख होयबाक बोध—जीवकान्तक कथाक केन्द्रबिन्दु थिक, जे विवेच्य संग्रहक अठारहो कथामे नीक जकाँ देखल जा सकैछ।

हिनक कथासभ, निर्विवाद, मैथिलीक कथा-आयामकेँ विस्तार देलक अछि। हिनक कथाक विशेषतासभकेँ रेखांकित करैत डा० जयकान्त मिश्र लिखने छथि—"The acute power of observation, the tender poetic touches of characterization, the profound meaning of his aesthetich experience, the harsh realism and above all the vigorous style of Jeevakant make him perhap the greatest short-story writer of today. After Harimohan Babu the new trend that has been taking a shape in modern Maithili story writing has reached acme in the works of Jeevakant.

हिनक पाँच टा उपन्यास अद्यावधि प्रकाशित अछि। ने केवल संख्याक

दृष्टिएँ अपितु औपन्यासिक तत्त्वक नीक निर्वाहक दृष्टिएँ सेहो हिनका मैथिलीक प्रमुख उपन्यासकारमे परिगणित कयल जाइछ।

डा० श्रीशक शब्दमे—"दू कुहेसक बाट'मे स्वाभिमानी, संकोची, भावुक, कल्पनाशील एवं अन्तर्मुखी निर्धन छात्र जितेन्द्रक विधभावनाक अन्तःसंघर्षक विश्लेषण अछि। एहि उपन्यासके पढ़लासँ भावलोक सम्बन्धी लेखकक गम्भीर अन्तर्दृष्टिक तथा सूक्ष्म विश्लेषणक पटुताक दर्शन होइत अछि। 'परिपत'मे एक व्यक्तिक रूपमे नायक (अरविन्द)क मनोविश्लेषण होइतहुँ सामाजिक समस्याक यथार्थ चित्रणक प्रवृत्ति सेहो अछि। एहिमे स्थान-स्थानपर ग्राम्यजीवनक विशता, अन्धविश्वास, कुलागत स्पर्धा, ईर्ष्याद्वेष, छल-कपट प्रभृतिक चित्रण बड़ यथार्थ ओ मर्मस्पर्शी भेल अछि। 'अगिनबान' जीवकान्तक सशक्त लघु उपन्यास थिक जाहि मध्य ओ ग्राम्यजीवनक सम्पन्नता ओ विपन्नता दुहू पक्षक चित्रण कए ओहि मध्य भोगैत जीवनक अन्तरंगके अपन सजीव शैलीमे उद्घाटित कएल अछि। 'नहि कतहु नहि' सेहो मनःस्थिति-चित्रणप्रधान उपन्यास थिक। एहिमे सरकारी योजनाक निस्सारता ओ प्राचीन संस्कार, रुचि तथा ममत्व-भावनाक बड़ सजीव चित्रण कयल अछि।"

डा० जयकान्त मिश्रक शब्दमे—"The author has brought freshness in subject-matter and his style is pulsating with life; and one can see the richness of soil reflected in the homely and symbolic idiom everywhere."

उक्त तीनू विधामे प्रमुखतासँ लिखबाक संगहि ई आनो प्रकारक रचना कयने छथि यथा—निबन्ध, सामयिक समस्यापर टिप्पणी, समालोचना, समीक्षा, पुस्तक-परिचय आदि। किछु साहित्यिक समालोचन, जे हिनक प्रकाशित अछि, बहुत गम्भीरतासँ लिखल गेल अछि तथा सोचबाक लेल ओ पर्याप्त सामग्री प्रदान करैत अछि।

यद्यपि ई पत्र-सम्पादक नहि छथि, किन्तु विभिन्न पत्र-पत्रिकामे नाम-अनामसँ छपल हिनक वस्तु ई प्रमाणित करबा लेल पर्याप्त अछि जे पत्रकारिताक क्षेत्रमे हिनक दृष्टि बड़ तीक्ष्ण छनि। समाचारक नसके पकड़ि ओकरा ताहि रूपमे रखैत छथि जे हठात् लोकक नजरिमे ओ महत्त्वपूर्ण भऽ जाइछ।

भाषापर हिनक विलक्षण अधिकार छनि। ई अपन लेखनक एक टा विशेष शैलीके अपना लेने छथि, से ततेक बेछप अछि जे हिनक किछुओ रचनाक अध्ययन कयनिहार हिनक वस्तुकेँ, बिना हिनक नाम देखनो, चीन्हि जायत।



श्री हंसराज

हंसराज आधुनिक कालक किछु प्रतिष्ठित कवि-कथाकारमे उल्लेखनीय छथि। कविता आ कथाक अतिरिक्त साहित्यके ई आनो वस्तु प्रदान कयलनि अछि, जेना—भेँट-वार्ता, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, समीक्षा आदि। ई बारह वर्ष धरि पत्रकारक जीवन व्यतीत कयलनि, तेँ ओहि अवधिमे पत्रिकाक हेतु जखन जे वस्तुक आवश्यकताक अनुभव कयलनि, से लिखलनि। आ, जे लिखलनि से बामा हाथे नहि लिखलनि। मैथिली साहित्य हिनक बहुविध रचनासँ समृद्ध भेल अछि।

हिनक प्रकाशित कृति निम्नलिखित अछि—

सतञ्जा (१९७१)—कथा, जे किने से (१९७२)—लघुकथा; सन्धान (१९५४)—कविता; ओ जे कहलनि (१९७१)—भेँट-वार्ता; बिसरल-बिसरल (१९७३)—संस्मरण; विद्यापति पुनर्मूल्यांकन (१९६९) तथा एगो रहथि राजा (१९७०)—सम्पादित।

हिनक मूल नाम थिकनि मन्त्रनाथ झा तथा हिनक जन्म २८ अक्टूबर १९३८ केँ भेल छनि। दरभंगा जिलाक उजान गामक ई वासी थिकाह। हिनक अध्ययन-क्रम रुकैत-ससरैत आगाँ बढ़ैत गेल तथा जीवन-क्रम सेहो बहुत व्यवस्थित रूपेँ, बनल-बनाओल लीकपर, नहि बढ़ल अछि। वस्तुतः ई स्वयं लीक बनबैत आगाँ बढ़ैत गेलाह अछि। १९६३ सँ ७५ धरि ई साप्ताहिक मिथिला मिहिरक सुप्रसिद्ध उप-सम्पादक रहलाह। ई अवधि हिनक साहित्यिक अवदानक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण मानल जायत। ई किछु दिन धरि टी० एन० बी० कालेज, भागलपुरमे प्राध्यापन कार्य कयलनि तथा १९७५ सँ चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगामे मैथिलीक प्रतिष्ठित प्राध्यापक छथि।

हिनक सात टा कथाक संग्रह 'सतञ्जा'क नामसँ प्रकाशित अछि। हिनक कथामे निम्न-मध्य वर्गक रूढ़ि तथा ताहि कारणेँ कुंठाक सहज अभिव्यक्ति भेटैत अछि। 'मानवीय सम्बन्धक तन्तुपर ठाढ़ हिनक कथा भावनाक ग्रन्थि खोलैत चलैत अछि।' चोर, छिद्र, अप्पन लोक, उग्रास, तिनवट्टी हिनक उत्कृष्ट कथा थिक। "अपन छोट कलेवरमे 'चोर' एक टा पैघ बात कहि जाइत अछि। निम्न वर्गक आर्थिक आ सामाजिक असुरक्षाकेँ बड़ प्रभावपूर्ण ढंगसँ ई कथा अभिव्यक्ति दैत अछि। सगहि, असुरक्षाक विरुद्ध संघर्षगत लोकक सोझाँ पसरल कुहेस ओकरा अनिर्णयक केहन विस्फोटक विन्दुपर आनिकऽ ठाढ़ कऽ दैत छैक, तकर प्रतीति नीक जकाँ ई कथा करबैत अछि।"

डॉ० जयकान्त मिश्र 'सतञ्जा'पर आलोचनात्मक दृष्टि दैत हंसराजक कथाक विशेषताक प्रसंग कहैत छथि—"Hansraj's stories in 'Satanja' are not always powerful but they are quite frequently interesting. His later stories are better than the earlier ones, as a more pointedely acute criticism of life has been presented in them. He can make us laugh or weep as readily as he likes and, therefore,

he leaves an impression of the variegated texture of human exhistence. He is one of the few writers who it likely to grow more profound in the years to come."

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी 'सतंजा'कें मैथिली कथाक अवदान मानैत छथि—"Hansraj's collections of stories 'Satanja' is contribution to the field of Maithili short stories."

हंसराजक एक संग्रह अछि—'जे किने से'। यद्यपि लेखक एकरा 'हास्य एवं व्यंग्य' कहने छथि, किन्तु एकर सभ रचना लघुकथाक लक्षणसँ युक्त अछि। छोटसँ छोट घटनाकें एहिमे बारीकीसँ पकड़ल गेल अछि आ तकरा ताहि ढंगे प्रस्तुत कयल गेल अछि जे पाठकक मनपर गंभीर प्रभाव छोड़ि जाइछ। ओ छोट घटना पैघ बात बनि जाइत अछि आ मस्तिष्ककें झकझोड़ि दैत अछि। एहिमे ३५ टा लघुकथा अछि—जे घटनो अछि, गप्पो अछि—ताहिमे हास्यो अछि, व्यंग्यो अछि। एहि प्रकारक प्रायः मैथिलीमे ई पहिल पोथी थिक।

हंसराज प्रधानतः तँ कथाकार छथि किन्तु मूलतः ई कवि थिकाह। एक आलोचकक अनुसार 'अपन कवि तथा कथाकारकें पर्याप्त फराक-फराक रखैत एक संग लऽ चलि सकबाक सामर्थ्य हिनक एक टा दुर्लभ विशिष्टता अछि।

हिनक कविता चिन्तन-प्रधान होइत अछि, जाहिमे नव-नव प्रतीकक प्रयोग तँ करितहिँ छथि जे ऐतिहासिक पात्रकें वर्तमानक सन्दर्भमे सेहो उपस्थित कऽ दैत छथि, जाहिसँ ओ पात्र सभ व्यक्तिवाचक नहि रहि कऽ जातिवाचक भऽ जाइत अछि। ओतऽ कवि एक नव दृष्टिबोधक संग उपस्थित होइत छथि। हिनक एक कविता अछि—'निद्रारूपेण संस्थिता', जाहिमे ई कहैत छथि—

अहर्निश बजारमे बौआइत छथि चार्वाक
प्रात होइत द्वारि ठाढ़ पेट हँसोथैत मार्क्स
साँसहि मन-पुष्प पैसि खोधैत फ्रायड-कीट
जठरानलमे जपैत अछि मानवक सौन्दर्य-बोध
छठि गेल विश्वास आ मनुक्ख नहि मनुक्खाह
घेँट दऽ दाबि देव कयलहुँ जे उपकार
अनाचारक धुआँसँ आच्छादित आकाश
सहन-शक्ति नष्ट भेल, पसरल असन्तोष
अर्थकरी विद्या पढ़ि कुंठित सभ आत्मलीन
डेग-डेग चौंकि धरय, खेलय शतरंज-चालि
दि ट्रबुल्ड मिड नाइटमे निन्न नहि होइछ जें
मिथ्या लगैछ तें निद्रारूपेण संस्थिता

उक्त कवितामे वर्तमान युगक विसंगतिक बीच मानवक अन्तरमे चलैत अशान्तिक झंझावातकें देखल जा सकैछ। वर्तमान युगमे 'मानवक 'सौन्दर्य-बोध' 'जठरानल'मे जरि रहल अछि—कतेक सत्य अछि! तहिना 'अनाचारक धुआँसँ 'आकाशकें' आच्छादित' भऽ जायब, मनुष्यक विवेक मरि जायब, बड़का-बड़का चिन्तकक सिद्धान्त फूसि भऽ जायब—आजुक युगक अभिशाप अछि, तकर कारण होइत

अछि, दोसर विस ओतबे दूर धरि विषमतो बढ़ैत जाइत अछि। बीचमे ततेक फाँट भेल जाइत अछि जे आम जनता ओहीमे धँसि रहल अछि, अशान्त भऽ रहल अछि।

प्रो० रमानाथ झाक अनुसार हंसराज "नवीनतम काव्यधाराक लब्धप्रतिष्ठ कविलोकनि मध्य गण्यमान्य छथि। हिनक रचनामे आधुनिक वैज्ञानिक उत्कर्षक ध्वंसक उपयोगक प्रति विरोध-भावनाक चित्रण बड़ सुन्दर जकाँ भेल अछि।"

'संधान' हिनक कविता-संग्रह थिक, जाहिमे नवीन भावबोधक ४२ टा कविता संगृहीत अछि।

व्यथासँ छटपटाइत मनुष्यक मास्तिक मन भगवानकें कोन रूपमे देखैत अछि, से हिनक 'ईश्वर' कवितामे द्रष्टव्य—

पहाड़क खाधिमे जनमल
एहि गोबरछत्ताक एक टा दोगमे
शरशय्यापर पड़ल
अहर्निश उकासी
भरि अढ़िया कफ आ रक्तक वमन
दस टा रोगग्रस्त बन्धुक बँच
एकसर हम सोचि रहलहुँ—
यंत्रणाक सीमा ईश्वर!

ओहि भीषण यंत्रणाक क्षणमे ईश्वरक स्मरण ओक अवचेतनमे मलहमक काज करैत छैक, यंत्रणाकें सीमाबद्ध कऽ दैत छैक तथा केहनो तिरस्कारपूर्वक लेल जाय, हुनक नाम दोसराइत बनि जाइत छैक, आसरा बनि जाइत छैक, सेह एहिमे व्यंजित भेल अछि।

हिनक 'गन्ध' कविता मनुष्यक संघर्षशीलता ओ नवका पीढ़ीक स्फूर्तिदायक सुखद भविष्यक समर्थनमे उठल कविक आह्लादकारी स्वर थिक—

सुखायल फूल-पात नहि—
थाकल बसात नहि
हमरा आँखिमे अछि एक टा आभास
एकटा नवका आकाश
अथच हमरा नीक लगैत अछि गन्ध
मनुक्खक चामक घामक गन्ध!

कविक 'आँखिक आभासमे' याबीक ई कामना कतेक सटीक रूपमे उतरि जाइत अछि—'नवतुरिय आबओ आगाँ—ढेकी नहि कूटी अपने अमरत्व टाक तथा हुनक श्रमशील मानवक जयजयकार—'जयति जय जनशक्ति' आ, ओही श्रमशील संघर्षरत जनशक्तिक चामक, चामक गन्ध कविकें नीक लगैत छैक।

हिनक किछु कवितामे मनुष्यक रागात्मक भावक बड़ कोमल स्पर्शक आह्लादक अनुभूति भेटैत अछि।

ओ जे कहलनि—'ओ जे कहलनि' हिनक 'भेंट'-वार्ता' थिक, जाहिमे मैथिलीक दस गोट विभूतिसँ साक्षात्कार कऽ साहित्यक प्रसंग हुनक विचार लेल गेल अछि। एहि पोथीक महत्वकेँ रेखांकित करैत दीनानाथ झा कहैत छथि—"एहि पोथीक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। बीसम शताब्दीक आरम्भसँ आइ धरि जे मैथिलीक उत्थानक आन्दोलन भेल अछि तकर एहि पोथीमे प्रामाणिक सर्वेक्षण कयल गेल अछि। संगहि प्रतिपादनक शैली सरस रहलाक कारणेँ एकर साहित्यकहु महत्त्व कम नहि। कवि एवं कथाकार रहने श्री हंसराज नीरस इतिहासकेँ सरस साहित्यमे परिवर्तित कऽ देल अछि। रोचकता एवं प्रवाहमे कतहु अवरोध नहि उत्पन्न भेल अछि। तेँ कहब कठिन जे ई पोथी रचनात्मक साहित्य भेल कि आलोचनात्मक साहित्य अथवा ई कहि सकैत छी जे दुनूक सुन्दर समन्वय, जे मैथिली साहित्यकेँ नव विधा प्रदान करैछ।"

एहिमे निम्नलिखित दस महान साहित्यकारक इंटरव्यू अछि—हरिमोहन झा, कुमार गंगानन्द सिंह, कांचीनाथ झा 'किरण', कविशेखर बदरीनाथ झा, रमानाथ झा, कविवर सीताराम झा, गिरीन्द्र मोहन मिश्र बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य, ऋद्धिनाथ झा तथा नरेन्द्र नाथ दास।

डा० 'श्रीश'क अनुसार—"एहि साक्षात्कार-परिचर्चा मध्य मैथिली साहित्यक हेतु कयल गेल संघर्षक इतिवृत्तिकेँ प्रस्तुत करबाक चेष्टा कयल गेलैक अछि, संग-संग मैथिलीक विभिन्न समस्या पर आचार्य-विशेषक मन्तव्यकेँ सेहो प्रामाणिक रीतिएँ प्रस्तुत करबाक आयास भेल अछि। एहि परिचर्चा सभकेँ हंसराज जी लिखल अछि रिपोर्ताज-कथा शैलीमे। मुदा थिक धरि ई साहित्यक इतिहासक वस्तु, कारण, ओहि मध्य ओहि ओहि व्यक्तिक दृष्टि ओ युगबोधक परिचय भेटैत अछि।"

डा० जयकान्त मिश्रक शब्दमे—"Hansaraja's 'O Je Kahalani' is a recent addition to the class of literature that depicts in autobio. graphical from literary interviews with eminent literatteurs in an eminently interesting and touching style. The personality of some of the leading Maithili witers and crities has been made to appear through these interviews in such a manner as nothing else perhaps could have done. I consider this volume an able contribution to the personal essay in Maithili that deserves being move widely appreciated."

'विसरल-बिसरल' हिनक संस्मरण-पुस्तक थिकनि जाहिमे चारि गोट साहित्यकारक स्मृति संचित अछि। ई किछु समीक्षा सेहो लिखने छथि जाहिमे हिनक सूक्ष्म दृष्टि भेटैत अछि। 'श्री हीरा'क नामसँ मिथिला मिहिरमे हिनक स्तम्भो प्रकाशित अछि, जे मनोरंजनक संगहि ज्ञानवर्धन सेहो करैछ। हिनक अनुवादो मूले रचनाक स्वाद दैत अछि।

□

श्री कुलानन्द मिश्र

कुलानन्द मिश्र नव तेवरक प्रमुख कवि तथा स्फीत दृष्टिक प्र आलोचक छथि। हिनकामे आकर्षक सम्पादन दक्षता एवं जीवन्त अनुवाद-क्षमता छनि। हिनक प्रवेश कथोलेखन दिस नीक छनि।

हिनक मूल नाम भालचन्द्र मिश्र थिकनि तथा घर थिकनि सीतामढ़ी जिलाक पकड़ी कोठी म। संस्कृत-विद्वानक परिवारमे हिनक जन्म २ जून १९३९ केँ भेलनि। बी० ए० धरि शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद ई पटना सचिवालयमे जीविकापन्न भऽ गेलाह। सम्प्रति ई ओतहि कार्यरत छथि।

मैथिलीमे हिनक प्रवेश सम्पादकक रूपमे भेलनि। मोहन भारद्वाजक संग-संपादनमे ई 'सन्निपात' नामक पत्रिकाक प्रकाशन कयलनि, जे छपिते मैथिलीक गम्भीर पाठक-आलोचकक ध्यान अपना दिस आकृष्ट कऽ लेलक, संगहि दुनू सम्पादककेँ सेहो स्थापित कऽ देलक।

'सन्निपात' १९७१मे छपल आ ओकर तीन अंक मात्र प्रकाशित भऽ सकल। किन्तु, ओही तीन अंकमे ओ अपन एक स्वरूप निश्चित कऽ लेलक। ओ स्वरूप छल—मैथिलीमे स्वस्थ, सबल, आधुनिक आलोचना-प्रणालीकेँ विकसित करब। यद्यपि सन्निपातमे सभ रंगक वस्तु प्रकाशित भेल—कविता, कथा, निबन्ध, अनुवाद। किन्तु, ई प्रसिद्ध भेल आलोचना लऽकऽ आ इतिहासमे ओही कारणेँ स्मरण कयल जायत।

मैथिलीमे सर्जनात्मक आधुनिक साहित्य तँ लिखा रहल अछि, किन्तु आधुनिक आलोचनाक अभाव अछि। 'सन्निपात'क प्रकाशन-कालमे तँ आधुनिक आलोचनाक दृष्टियोक प्रायः अभाव छल। आधुनिक रचनाक आलोचना जा धरि आधुनिक ढंगसँ नहि कयल जायत, तावत ओकरा विश्लेषित नहि कयल जा सकत। यैह 'चिन्ता' सन्निपातक सम्पादककेँ भेलनि आ तेँ ओकर चरित्र आलोचना प्रधान पत्रिकाक बनौलनि। स्वयं आलोचना लिखलनि आ नव आलोचकक रचना प्रकाशित कऽ आलोचनाक स्वरूप-निर्धारणमे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलनि। सन्निपात बन्द भऽ गेल, किन्तु ई नवीन दृष्टिबोधक प्रखर आलोचकक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेलाह।

सन्निपातक बाद 'फराक' नामक एक आओर पत्रिकाक ई संपादन कयने छथि, जाहिमे सेहो हिनक उक्त प्रतिभा देखल जा सकैछ। 'फराक' सहयोगी पत्रिका छल।

१९७२ सँ कवितो लिखैत छथि। पहिल कविता-संग्रह १९८३मे प्रकाशित भेलनि—'तावत एतबे'। एखन धरि हिनक मौलिक प्रकाशित कृति यैह थिक।

हिनक अनुवादक दू टा पोथी छपल अछि। पहिल अछि डॉ० ग्रियर्सनक अंगरेजी पोथी The Linguestic Survey of India'क मैथिली अंशक अनुवाद। ईहो अनुवाद मोहन भारद्वाजक संग प्रकाशित अछि। दोसर अछि यात्रीक सुप्रसिद्ध उपन्यास 'पारो'क हिन्दी-अनुवाद।

कुलानन्द मिश्रकेँ संस्कृतक परम्परा छनि, अंगरेजी साहित्यक अध्ययन छनि,

आधुनिक दृष्टि छनि, अभिव्यक्तिक क्षमता छनि, जीवन-संघर्षक अनुभव छनि, आत्मविश्वास छनि, निर्भयता छनि— तेँ ई जे लिखैत छथि, से ठोस धरतीपर पयर रोपिकऽ लिखैत छथि, जे अनुभव करैत छथि, तकरा ठाँहि-पठाँहि कहि दैत छथि, तेँ हिनक कवितामे 'तल्खी' भेटैत अछि। किन्तु, भाषापर जेँ कि अधिकार छनि, तेँ अभिव्यक्तिमे 'तिक्तता' केँ नहि आबऽ दैत छथि।

हिनक झुकाव 'वाम' दिस छनि अवश्य, किन्तु तेँ हिनक कविता कतहुसँ 'प्रचार' नहि भऽ जाइत अछि, शत-प्रति-शत 'साहित्य' रहैत आछ। हिनक 'इतिहास-पुरुष'क निम्न पंक्ति द्रष्टव्य, जाहिमे परम्पराकेँ एकदमसँ नकारि नहि देल गेल अछि, परम्पराक गर्भसँ नवीन युगक जन्म होइत अछि—एहि बातकेँ स्वीकार करैत युगसत्यक लक्ष्य दिस बढल गेल अछि, क्रमशः आगाँ अबैत पीढ़ीमे श्रमशक्तिक महत्त्वकेँ रेखांकित कयल गेल अछि, देशक सुरक्षाक दायित्व किसानेपर होयबाक संकेत देल गेल अछि, 'कोदारिक धारसँ तरुआरिक काज' लेबाक संभावना व्यक्त कयल गेल अछि—

हम मानल जे
हमर चरित-नायक एक टा कोकनल ढेङ छथि
मुदा एहि ढेङक नीचाँ डोभी दैत नवान्न
बिनु चश्मो हम साफ-साफ देखैत छी
कोदारिक धार पिजबैत
चरितनायकक अगिला खाढ़ीपर हमर नजरि जाइछ
हमरा लगैछ
एहि कोदारिक धारसँ
तरुआरिक काज लेल जा सकैछ
एकर फाटल लाल गमछासँ
अपना मोनक अनुरूप
एक टा झण्डा बनाओल जा सकैछ।

हिनक एक प्रसिद्ध कविता अछि 'ओना कहबा लेल बहुत-किछु छल हमरा लग' जाहिमे कवि आइ-काल्हिक समस्त विसंगति, 'बलात्कार-भ्रष्टाचार-पदलोलुपता स्वार्थान्धता-थकुचल जाइत जनताक आहि आदिकेँ अत्यन्त प्रभावी प्रतीकक माध्यमे स्वर देने छथि जे एक दिस देशक दुर्दशाकेँ खोलिकऽ राखि दैत अछि तँ दोसर दिस ओकर प्रतिकारमे अशक्त मनुक्खक लाचारीकेँ सेहो स्पष्ट करैत अछि—

जेना
जंगली फूलसँ टपकैत ओस
अहाँक सती देह
हमर थकुचल पौरुष
डीह—डीहवारमे नहु-नहु पसरैत सांध्य-राग
उतरैत रातिक चिन्तामे
बड़क गाछ तर
सिपहा लगाओल बैलगाड़ीक पाँती
पजेबाक चुल्हिसँ नमरैत धुआँ
ओना कहबा लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

उक्त अंशमे राति भेला उतर, बैलगाड़ीकेँ सिरपाहिपर अटकाकऽ, कोनो बड़क गाछक नीचाँ पजेबाक चुल्हि बनाकऽ बहलमान द्वारा भानस करबाक दृश्य आँखिक आगाँ नाचि जाइछ। पूँजीपतिक सम्पत्तिकेँ उघनिहार स्वयं कतेक विपत्तिमे राति कटैत अछि आइ-काल्हिक श्रमिक—एकर असहायताक बोधक संग मिथिलाक गामक रातिक एक झाँकी सेहो प्रस्तुत कऽ दैत अछि। कविताक ई अतिरिक्त विशेषता थिक।

हिनक कविताक मुख्य स्वर सर्वहाराक सबल समर्थन तँ अछिए। किन्तु, हिनक ओहनो कविता कम नहि अछि जे रागात्मक भावसँ उत्पन्न अछि। एहन ठाम कविक कोमल हृदयक मधुर धड़कन स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि। किन्तु एहनो रागात्मक कविताक स्वर नवीन अछि, प्रयोग टटका अछि, बिम्ब स्पष्ट अछि—

ओ कहि सकैत छल जे
मधुश्रावणीमे आब गीतक विधिए टा पुराओल जाइछ
आ कोजागरामे गाम भरि
आब लोक मखान नहि बटैत अछि
कि कितलहे चूड़ सँ
बेसी गोटे तिलासंक्रान्ति मनबैत छथि
गामक कीर्तन-मण्डलीक टुटबाक गप्पो ओ कहि सकैत छल
ओकरा निश्चित रूपेँ बूझल रहल हेतैक जे
गामक अधिकांश ललनालोकनि
अपन लाल किंवा मैयाँकेँ
चाहे अपन ननदि वा जैधीकेँ छाती लगा
सूतल-जागल रातिकेँ परतारैत छथि
अपन-अपन मुन्न-पड़ल आँखिमे
सुखायल पड़ल नोरकेँ सम्हारैत छथि।

तावत एतबेक बाद सेहो हिनक कविता प्रकाशित अछि, जाहिमे उत्तरोत्तर शिल्पमे संश्लिष्टता ओ कथ्यमे अनुभूति-जन्य परिपक्वता दृष्टिगत होइत अछि।

यद्यपि कथाक संख्या कम अछि, किन्तु जतबा ई लिखने छथि से कथातत्त्वक दृष्टिएँ सफल मानल जायत। 'शैशव-यौवन'क संधिस्थलपर पहुँचल एक बालिकाक स्थितिपर लिखल हिनक कथा 'ज्ञान-प्रान' चर्चित-प्रशंसित अछि।

'ज्ञान-प्रान कथा केवल एहि लेल महत्त्वपूर्ण नहि अछि जे ओ एक नव कथावस्तुक पृष्ठभूमिमे रचित अछि, बल्कि ओहि विषयकेँ जाहि ट्रीटमेंटक संग उपस्थित कयल गेल अछि, से ओकरा उल्लेखनीय बना दैछ।' हिनक अन्य प्रमुख कथा 'कृष्ण एखनो जीवैत छथि', 'देहक दुख विधि दारुण देल' आदि सेहो आकर्षित करैत अछि।

आलोचनाक हिनक कोनो पुस्तक प्रकाशित नहि छनि, किन्तु पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अनेको आलोचनात्मक निबन्ध हिनक प्रगाढ़ अध्ययन, विषयक पकड़, आकर्षक अभिव्यक्ति-क्षमता, सहृदयता ओ तटस्थताक गुणकेँ नीक जकाँ प्रतिपादित करैत अछि। ई मैथिली-आलोचनाकेँ एक ठोस भूमि प्रदान कयलनि अछि। आधुनिक मैथिली कविता, राजकमलक साहित्य, मैथिली गद्य आ कथा, 'पाँच-पद' आदिपर हिनक आलोचना विशेष उल्लेखनीय अछि। □

श्री प्रभास कुमार चौधरी

नवीन पीढ़ीक विशिष्ट कथाकार ओ उपन्यासकारलोकनिमे श्री प्रभास कुमार चौधरी अग्रगण्य छथि।

१९५७ ई०मे हिनक पहिल कथा प्रकाशित भेलनि—'प्रतीक्षा'। तहिया सँ ई धुरझाड़ कथा लिखऽ लगलाह आ आब तँ हिनक लगभग गोटेक सय कथा प्रकाशित अछि जे सुचर्चित आ प्रशंसित भेल अछि। हिनक पाँच गोट उपन्यास अद्यावधि छपल अछि जे मैथिलीक उपन्यास-साहित्यमे उल्लेखनीय स्थान रखैत अछि। एकर अतिरिक्त ई किछु रेडियो-रूपक सेहो लिखने छथि आ से खूब रुचिपूर्वक सुनल गेल अछि। 'वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः'—मिथिला मिहिरमे एहि स्तम्भक अन्तर्गत चारि अंकमे मैथिली कथापर लगाओल गेल 'स्टेगनेशन'क आरोपक सप्रमाण खण्डनमे जे ई तर्क देने छथि से हिनक अध्ययनक गम्भीरता आ समालोचनात्मक क्षमताकेँ प्रदर्शित करैत अछि। स्वान्तःसुखाय कविता सेहो पहिने ई लिखैत छलाह। हिन्दीमे प्रकाशित हिनक कथा प्रशंसित भेल अछि।

दरभंगा जिलाक पिण्डारुछ गाममे २ जनवरी १९४१ केँ हिनक जन्म भेल छनि। एम० ए० कयलाक बाद ई किछु दिन धरि राजनीति विज्ञानक प्राध्यापक रहलाह तथा जीवन बीमा निगमक परीक्षामे सफल भऽ ओकर एक गोट वरीय पदाधिकारी भऽ गेलाह। सम्प्रति ई ओही विभागमे उच्चपदस्थ छथि।

१९६४ मे हिनक एक टा कथा-संग्रह छपलनि—'नव घर उठय, पुरान घर खसय'। अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब ?, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी—ई पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित छनि। समाधान (कथासंग्रह) आ संकेत (कवितासंग्रह)क सम्पादनमे हिनक सेहो विशेष योगदान रहल अछि। 'कथा-दिशा' (कथा-प्रधान मासिक)क सम्पादन, डॉ० गंगेश गुंजनक संग कऽ, ई यशस्वी भेल छथि।

'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' राँचीक विद्यापति-स्मारक समितिक 'वैदेही-पुरस्कार' सँ सम्मानित अछि।

हिनक कथाक विषय-वस्तु मुख्यतः ग्रामीण जनजीवनसँ संयुक्त रहैत अछि। सामाजिक अत्याचार, पारिवारिक कटुता, वर्ग-संघर्ष, सम्बन्धक टूटन—आदि हिनक कथाक मुख्य विषय थिक, किन्तु एकमात्र विषय नहि। एहि प्रकारक हिनक कथामे बाबी, युद्ध-विराम आ पिता विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। तहिना देशक राजनीतिक परिस्थितिपर आधारित हिनक कथा, यथा ठेप ओ मलाहक टोल आदि अनेक दृष्टिएँ स्थायी महत्त्वक अछि।

हिनक कथामे वातावरण एकदम जीवन्त भऽ जाइछ—पाठक ओहि वातावरणमे स्वयंकेँ उपस्थित अनुभव करैछ। हिनक गाम-घरक वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक भेल अछि। भाषापर लेखकक विलक्षण अधिकार अछि। जाहि स्तरक पात्र रहैछ, ताहि स्तरक भाषा ई ओकरा मुँहसँ प्रयोग करबैत छथि जे कथाकेँ अधिक प्राणवान बना दैछ।

मैथिली अकादमी-प्रकाशित कथा-संग्रहमे हिनका विषयमे एकठाम यथार्थ कहल गेल अछि—"ग्रामीण मध्यवर्गीय चेतनाक कथाकार श्री प्रभास कुमार

चौधरीक कथाभूमि विस्तृत छनि। मध्य-वित्त परिवारक सुख-दुख, विघटन, आकांक्षाकेँ हिनक कथा बड़ सशक्त अभिव्यक्ति देलक अछि। गाम-घरक सजीव वातावरण, माटि-पानिक गन्ध आ कथा कहबाक सहज रोचक शैली हिनक कथाक अपन खास पहिचान बनबैत छनि। सामयिक बोध, परिवेशक गहन परिचिति तथा शिल्पगत प्रयोग हिनक विशेषता अछि। टूटैत कृषियुगीन आ नव औद्योगिक संस्कृतिक बीच संक्रांति-कालमे ठाढ़ 'पिता' कथाक गाम आ पिता तहन यथार्थ बिन्दु सभकेँ लऽकऽ बनल अछि जे ई सहजेँ कोनो भारतीय गाम आ गामसँ जुड़ल पिताक प्रतिनिधि चित्र भऽकऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। शिल्पक विशिष्टता कथाक अतिरिक्त गुण छैक। आर्थिक स्तरपर सामन्तवादी समाजक भेल अवमूल्यनक अत्यन्त मार्मिक चित्र हिनक 'धमकी'मे भेटैत अछि। 'बाबी'मे मध्यवर्गीय समाजक आत्मक टूटनक इतिहास भेटैछ तँ 'अरगनी'मे संक्रमणकालीन जीवनक द्वन्द्व। हिनक कथामे विषय-वस्तुक जतेक विविधता भेटैछ से हिनका समकालीन कथाकारसँ सहजेँ अलग कऽ दैत अछि। लेकिन केवल विषय-वस्तुक विविधताक कारणेँ नहि, ओहि 'विषयक आत्यन्तिक परिचय तथा विवरणक संयत रुखि'सँ हिनक कथाक स्वतन्त्र स्वरूप स्पष्ट होइत अछि।"

हिनक कथाक कथ्यक प्रसंग श्री जीवकान्तक मत अछि—"औद्योगीकरणक कारणेँ परिवार एक टा कटल द्वीप जकाँ मूनल पौती भऽ गेल अछि। आब एहि पौतीमे हड़बिड़रो आ छोटका रुम्बाहंच भऽ रहल अछि। कथा-नायक अपन पिता आ पत्नीक बीच चोरीचोंत भऽ रहल अछि, तकर चित्रण प्रभास कुमार चौधरी कयलनि अछि।"

डा० जयकान्त मिश्र गंगेश गुंजनक संग हिनको आधुनिक मैथिली कथाक महान स्तम्भ मानलनि अछि। हुनक शब्दमे—"Undoubtedly the two writers—Prabhas and Gunjan are the great pillars of recent Maithili short story which have raised it to very great heights indeed."

हिनक 'अभिशप्त' आ 'युगपुरुष' दुनू उपन्यासक प्रसंग डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क मत अछि जे एहि दुनू उपन्यासमे "वर्तमान युगजीवनमे पसरल दिशाहीनता, नैतिक ह्रास, अनास्था, खण्डित विश्वास, विक्षोभ आदिक चित्रण यथार्थ शैलीमे कयल गेल अछि। अतः हिनक ई दुनू यथार्थवादी उपन्यास थिक, जाहि मध्य कथावस्तुक सुनियोजित विकास ओ घटनाक्रमक विन्यास नहि, मनोविश्लेषण ओ चिन्तनक प्रधानता अछि। अभिशप्तमे दूह पीढ़ीमध्य निहित असंतुलन-वैषम्य, समाजमे पसरल भ्रष्टाचार ओ स्वार्थ, दू मित्रक बीच कृत्रिम सम्बन्ध, पति-पत्नी मध्य निहित व्यक्तिवादी भावनाक कारणेँ उपस्थित विभेद, कार्यालयक अनुशासनहीनता ओ साहित्य-क्षेत्रमे व्याप्त आडम्बर आदिक वर्णन कए उपन्यासकार वर्तमान पीढ़ीक अभिशप्त-आत्माकेँ उद्घाटित करबाक प्रयास कयने छथि। 'युग-पुरुष'मे उपन्यासकारक कथ्य अछि जे एहि खण्डित विश्वास ओ भ्रष्टाचारक युगमे अपनाकेँ जे तदनुकूल बनाए लैत छथि, सैह वस्तुतः युग-पुरुष थिकाह। 'युग-पुरुष'मे चम्पा ओ शोभाक प्रेम-प्रकरण बड़ मधुर आ अर्थगर्भित भेल अछि तथा रोजीक सन्दर्भमे चरित्रहीनताकेँ उदात्तीकरण करबामे सेहो उपन्यासकार सफल भेलाह अछि।"

हमरा लग रहब ?—ई श्री प्रभास कुमार चौधरीक तेसर उपन्यास थिक। एहि उपन्यासक नामेसँ ध्वनित भऽ जाइछ जे एहिमे एक टा मोहन लोकक व्यथा-

कथा वर्णित होयत जकरा लग क्यो रहैते नहि हो, टिकि नहि पबैत हो आ ओ लोकसभसँ पुछने फिरैत हो—हमरा लग रहब ? वास्तवमे, एहि उपन्यासक नायक प्रणव—जे मातृपितृहीन, गाम घरसँ वंचित, समाजक शासक-प्रशासक वर्गसँ तिरस्कृत, टूगर-टापर-बिलटल बटुक अछि—मामा-मामीक सघन आश्रय, किन्तु घटल आश्रममे पलल, पोसायल, बढ़ल। ज्ञान-प्रान होइते ई एकक बाद एक, एहिना अनेकोकेँ अपनाबऽ चाहलक, संगी बनबऽ चाहलक, मुदा सभ दूर भगैत गेलैक। एक दिस प्रणव जँ लगन आ प्रतिभाक धनी छल तँ दोसर दिस ई भाग्यक महादरिद्र छल।

मिथिलामे चिरपरिचित एक टा बाल-पिहानी अछि सुग्गी रानीक—

सुग्गीरानी सुग्गीरानी कतऽ जाइ छी ?
सायँ-पूत मारलकए रुसल जाइ छी
—हमरा लग रहब ?

रूसब आ मनायब, मान आ .जन—ई जेहने अनिवार्य आदिम कालमे छल; तेहने अपरिहार्य आइयो अछि। प्रेमक यैह तन्तु एहि उपन्यासक सम्पूर्ण कथा-विस्तारकेँ एकसूत्रता प्रदान करैछ।

सम्पूर्ण उपन्यास दू भागमे विभक्त अछि—पहिल, रूसल जाइत सुग्गी रानी वा दोसर, हमरा लग रहब ? एहि दोसरे भागक नामपर सम्पूर्ण उपन्यासक नामकरण भेल अछि।

एहि उपन्यासक कथानक सबल अछि। नायकक वाल्यकालसँ प्रारम्भ भऽ कऽ जीवनक विविध उत्थान-पतन देखैत ओकर युवावस्था पर्यन्त एकर कथा विस्तार पबैछ। मुख्य कथाक अन्तर्गत कतेको उपकथा अछि जे मुख्यकथाक गतिमे विशेष तीव्रता अनैत अछि।

एहि उपन्यासमे अनेको प्रकारक चरित्र उभड़िकऽ आयल अछि—सामन्ती समाजक प्रतीक कल्लू चौधरीक आतंवादी चरित्र, ममतामयी मामीक मात्सर्यपूर्ण चरित्र, समाज द्वारा दूषित कऽ देल गेल मायाक पतित किन्तु उदात्त चरित्र; स्वावलंबनक प्रयासमे लटपटाइत शीलाक सशक्त चरित्र, प्रणवक कर्मठ, लौह किन्तु प्रेम-पिपासित देवोपम चरित्र, अमितक युवकोचित जिज्ञासु आ अगुताह चरित्र।

स्वतन्त्रतापूर्व हमरालोकनिक सामाजिक व्यवस्था केहन छल, शोषक-शोषितक बीच कतेक दूरी छलैक, सामन्ती संस्कार कतेक दूषित छलैक, आ क्रमशः स्थितिमे कोना परिवर्तन अबैत गेलैक, स्वतन्त्रताक बाद आ-अन्ततः जयप्रकाशक आन्दोलनक बाद वातावरण कोना मोड़ लऽ लेलकैक, अर्चनाक विधि वैह रहलैक मुदा देवता कोना बदलि गेलैक—एहि सभक जीवन्त चित्र एहि उपन्यासमे आँखिक आगाँ नाचि जाइछ।

कथोपकथन जतऽ अछि, एकदम सजीव अछि। मामा आ नेना-भागिनक बीच नोक-झोंक, स्कूलमे प्रणव-माला-शीलाक बीच बालोचित बतकुट्टनि; प्रणव-कल्लू चौधरीक बीच उत्तेजक वार्तालाप, प्रणव-शीलाक संग अनेको ठाम भेल हृदय-स्पर्शी संवाद, मामी-प्रणवक बीच मर्मभेदी कथोपकथन, प्रो० झा आ प्रणवक बीच बौद्धिक तर्क-वितर्क, शीला आ गीआक बीच भेल वाद-विवाद, मणिकाक बंगला

आ प्रणवक मैथिलीमे भेल विचारक स्वाभाविक आदान-प्रदान आदि एहि उपन्यासक रोचकताक मूल उत्स थिक।

लेखन-शैली एकर तेहन विलक्षण अछि जे एक बेर प्रारम्भ कयलापर बिना अन्त कयने रहले नहि ज सकैछ। कथा अपना संग पाठकके सभ ठाम उत्सुकतापूर्वक लऽ चलबामे समर्थ अछि।

प्रेम-प्रसंग, सामाजिक दुरवस्था, राजनीतिक हलचल, व्यक्तिगत कुंठा, मामूहिक आक्रोश आदिकेँ अनेक ठाम झलका देब आ ताहूमे कतहु ओंज-गोंज नहि होबऽ देब उपन्यासक खास विशेषता थिक।

एतेक विस्तृत जनसंकुल समाजमे व्यक्ति कतेक एकसर भऽ जाइछ, स वक गाला कतेक मेंही सूतमे गाँथल रहैछ आ कनेको झमार पड़ने ओकर दाना स॰ कोना छिड़िया जाइछ, यैह देखायब प्रायः लेखकक उद्देश्य छनि।

हिनक एहि उपन्यासक मैथिली उपन्यास-साहित्यमे उच्च स्थान अछि।

'नवारम्भ' स्वातंत्र्यपूर्व मिथिलाक विश्रृंखलित होइत ग्रामीण परिवेशसँ शुरू होइत अछि तथा स्वातंत्र्योत्तर कालक राजनीतिक, आर्थिक आ सामाजिक परिवर्तनक दिशाकेँ इंगित करैत समाप्त होइत अछि। ग्राम्य वातावरणक सजीव चित्रण, ढहैत सामन्ती परिवारक चारित्रिक पतन, नारीक प्रति सकरुण दृष्टि आ कथा कहबाक विलक्षण शिल्पक कारणेँ प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यास सभ बहुत लोकप्रिय भेल अछि। नायकक अतिशय आदर्शवादिता, घटनाक्रमक कतहु-कतहु नाटकीयता तथा पूरक पात्रक अधिकता हिनक उपन्यासमे आलोचककेँ अखरैत अछि। 'नवारम्भ' हिनक सभ वैशिष्ट्य आ सभ कमजोरीसँ युक्त अछि। एकर वर्णन-कौशल एकर लोकप्रियताकेँ रखने अछि।

'राजा पोखरिमे कतेक मछरी'मे डॉ० 'श्रीश'क शब्दमे "वर्तमान राजनीतिक एवं प्रशासनिक सन्दर्भमे आदर्शवादक पराजयक कथा वर्णित अछि, विकृति ओ कामलोलुपताक कथा, ढहैत सामन्ती प्रतिष्ठाक कथा एवं ग्राम्य समाजमे गरीबक शोषण एवं तकर नृशंस प्रतिरोधक कथा। उपन्यासकार एहि मध्य भास्कर नामक एक एहन आदर्शवादी पात्रक अवतारणा कयल अछि जे अपन आदर्श जीवन-दृष्टिक कारणेँ नहि तँ अपन परिवार ओ गाम्य-समाजसँ आओर ने आइ० ए० एस० पदाधिकारीक रूपमे वर्तमान भ्रष्ट सरकारी प्रशासनसँ सामंजस्य स्थापित कऽ पबैत अछि।....भारतीक चित्रण द्वारा लेखक एक गोट एहन विलक्षण महिमामयी नारीक उदात्त ओ उज्वल पक्षकेँ संवेदनशील धरातलपर प्रतिष्ठित करबामे समर्थ भेलाह अछि जे यथार्थवादक घोर अन्धकारमे अलौकिक आदर्शवादी आलोक विकीर्ण करैत प्रतीत होइत अछि।"

मिथिलाक परम्परित प्रचलित लोकोक्तिकेँ वर्तमान सन्दर्भक संग जोड़ि कऽ ओहिमे नवीन अर्थवत्ता प्रदान करब प्रभासक विशेषता थिक। एहने कहबी 'हमरा लग रहब ?' तथा 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' मे कथा-वस्तुक आधार बनल अछि तथा ई मिथिला आ मैथिलक सनातन संस्कार आ विशेषताकेँ अखिल भारतीय सन्दर्भ प्रदान करैत अछि।

निश्चयतः प्रभासक कथा ओ उपन्यास मैथिली साहित्येतिहासमे एहि पीढ़ीक विशिष्ट कृतिक रूपमे समादृत रहत। □

श्री मार्कण्डेय प्रवासी

मार्कण्डेय प्रवासी विशुद्ध 'कवि' छथि—'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः'। ई मनीषी छथि, सम्पूर्ण पृथ्वीक हलचलकें देखबाक क्षमता रखैत छथि आ जन्मजात प्रतिभाशाली छथि—तें 'कवि'क उपाधिसँ विभूषित छथि। एहि परिभाषामे कविक अर्थ केवल कविते कर्यानिहारसँ नहि होइछ, अपितु अक्षर-जगतक चेतन प्राणीसँ लेल जाइछ—मार्कण्डेय प्रवासी ओही कोटिक कलाकार छथि, तें ई सभ छथि—उपन्यासकारो छथि, कथाकारो छथि, निबन्धकारो छथि, व्यंग्यकारो छथि, समालोचको छथि, किन्तु सभमे 'कवि' छथि।

ई ठोस महाकाव्यक रचना कयलनि—'अगस्त्यायनी', जाहिसँ 'यशसे अर्थकृते' दुनूक भागी भेलाह—१९८१क साहित्य अकादमीक पुरस्कार प्राप्त कयलनि; किछु तरल तदर्थ कविता टहलैत-बुलैत लिखलनि—'एतदर्थ'क प्रकाशनक संगहि एक नवीन 'वाद'क विधाता बनलाह; उपन्यासमे 'अभियान' तथा 'हम कालिदास' छनि, व्यंग्यक तँ स्तम्भे छथि—बहुत दिन धरि व्यंग्य-स्तम्भ लिखैत रहलाह—'मिथिला मिहिर'मे 'बहिरा नाचय अपने तालें', 'माटि-पानि'मे 'कहलनि गोनू झा'। 'आर्यावर्त'मे सम्पादनक पेशे छनि—'अक्षर-चेतना'क स्वयं सम्पादक छथि।

हिनक जन्म समस्तीपुर जिलाक गरुआर नामक गाममे, १ मइ १९४२ कें भेल छनि। हिन्दीमे एम० ए० कयलाक बाद किछु दिन एक उच्च विद्यालयमे शिक्षण-कार्य कयलनि, राजनीतिमे कुदलाह, पुनः 'आर्यावर्त' प्रेसमे उपसम्पादनक पेशा अपनौलनि। सम्प्रति ओही पत्रक सम्पादन-विभागक उच्च पदाधिकारीमे छथि।

'अगस्त्यायनी' (महाकाव्य) तथा 'एतदर्थ' (तदर्थ-कविता-संग्रह')—मौलिक कविता-पुस्तक यैह दू टा छनि सम्पादित छनि—'अक्षर-चेतना' (मैथिली कविता-संकलन)।

'अभियान' तथा खंड-रूपमे 'हम कालिदास'—ई दुनू उपन्यास मिथिला मिहिरमे धारावाही प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त अनेको ललित निबन्ध, गम्भीर निबन्ध, शोधनिबन्ध, कथा, समीक्षा आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल छनि। गीत आ गजलक ई माजल सर्जक छथि—एकरो संख्या पर्याप्त छनि। हिन्दी-कविक रूपमे सेहो प्रतिष्ठित छथि।

अगस्त्यायनी—अगस्त्यायनी दस सर्ग (जकरा कवि 'मुद्रा'क संज्ञा देलनि अछि)मे विभाजित ऋषि-अगस्त्यक जीवन साधनापर आधारित राष्ट्रिय चेतनाक सफल महाकाव्य थिक, जनिक गाथा वर्तमान परिप्रेक्ष्योमे एक रंग सार्थक अछि। अगस्त्य उत्तर आ दक्षिणकें एक सूत्रमे बन्हनिहार महान ऋषि छलाह। आइयो अखिल भारतीयताक भावनाक विखण्डनक आशंका उत्पन्न भऽ गेल अछि, फलतः कवि अगस्त्यक जीवनकें पुनः स्मरण कयलनि अछि।

कविक हृदयमे भारतकें एक बेर फेर खण्डित होयबाक आशंका जखन चोट कयलक, तखन ओ अपन समाजकें अपन इतिहास मन पाड़ि देब अपन काव्यदायित्व बुझलक।

१९७७क महानिर्वाचनक परिणाम (जखन कि राजनीतिक विचारधाराक दृष्टिसँ देश स्पष्टतः दू भागमे बँटि गेल छल) कविकें एकर सर्जनक प्रेरणा-बिन्दु बनल। अगस्त्य आ लोपामुद्राक त्यागगाथा भारतक जनताकें किछु सोचबाक लेल आइयो बाध्य कऽ दैत अछि, नेताकें कर्तव्यबोध करबैत अछि, समाजकें दिशा-निर्देश करैत अछि।

योग आ भोग सृष्टिक सामान्य नियम थिक। योग माने साधना, तपस्या, त्याग, अलौकिक सामर्थ्य, अनिर्वचनीय उत्कर्ष। भोग माने विलासिता, शृंगार, राग, आलस्य, अपकर्ष। दुनूक द्वन्द्वे थिक जीवन। जीवन—सृष्टिक संचालनक एकमात्र अपरिहार्य अंग। जँ जीवने नहि तँ संसार की? आ, जँ उल्लास-संतापे नहि तँ जीवने की? प्रकृति आ पुरुष जीवनक जीवन्तता आ निरन्तरता लेल जहिना अनिवार्य, भोग आ योग सेहो तहिना अपरिहार्य। ने योगे पूर्ण, ने भोगे पूर्ण, दुनूक सामंजस्येसँ जीवन सम्पूर्ण। यैह कारण थिक जे जीवनक सम्पूर्णता लेल योगी-सम्राट् मुनि अगस्त्य विलासिता-पालिता, राजपुत्री, भोगवती, सती लोपामुद्राकें त्यागक सदुपदेश दैत छथिन, राजसी वस्त्राभूषणक प्रति विराग जगबैत छथिन।

वस्तुतः समाज-कल्याण; आनक चिन्ता लोक तखने करत जखन 'स्व'क प्रति हृदयमे विरक्ति-भाव जगतैक। जँ अपने टा सुखलेल सभ अपस्यांत रहत, तँ परस्पर सौमनस्यक भावना स्वतः समाप्त भऽ जयतैक। लोक एक ठाम नहि रहि सकत। तें, जँ सभकें संग लऽकऽ चलबाक हो तँ अपने टा सुख-सुविधा तकबाक भावनाकें तिलाजलि दऽ देबहि टा पड़त। आजुक राजनेतापरसँ लोकक विश्वास जे हिलि गेलैक अछि, तकर पाछाँ ओकरालोकनिक यैह दुर्बलता थिकैक, आ ओकर ई दुर्बलता कतहु-ने-कतहुसँ देशोकें दुर्बल बनबिते छैक। प्रायः कविक यैह चिन्ता प्रस्तुत महाकाव्यमे त्यागक महत्ताकें सभसँ पहिने बखान करबौलक अछि। बिना उदार-भावक देशक कल्याण संभवे कोना?—

परिवर्तन चाहि रहल अछि—
जीवन-दर्शनमे
निर्माण-पथक कल्याण-काम।
औदात्य मङै अछि
डेग-डेगपर लक्ष्य-सिद्धि!

सम्पूर्ण रूपें प्रस्तुत महाकाव्य एक स्फूर्तिक कथा थिक; देशप्रेमोद्भावक भव्य उपाख्यान थिक. सांस्कृतिक एकता तथा भौगोलिक अखण्डताक संदेशवाहक गाथा थिक। एहिमे, अगस्त्यक चरित्रमे एहन उच्च विचारवान, वीर्यवान, त्यागी, सदुपदेशक आ समयकें चीन्हऽबला एहन उदार आदर्शकें प्रस्तुत कयल गेल अछि, जकरे क्षमता आ विद्वत्ताक बलें; प्रतिभा आ दूरदृष्टिक बलें, त्याग आ तपस्याक बलें, नेतृत्व आ कूटनीतिक बलें देशक जहाज निर्विघ्नपूर्वक आगाँ बढ़ि सकैत अछि। नायककें, राजनेताकें अगस्त्ये जकाँ 'वज्रादपि कठोरपाणि, मृदूनि कुसुमादपि' होयबाक चाही—स्वयं बज्री जतऽ परास्त भऽ जाथि एहन कठोर; जनताक अभाव देखिकऽ जकर हृदय पिघलि जाइक, तेहन कोमल। योग आ भोग—दुनू क्षेत्रमे समान रूपें पारंगत भेनहिं शासक बुते देशकें एकता-सूत्रमे जोड़ने रहब संभव छैक, अन्यथा छिन्न-भिन्न भऽ जायब अवश्यंभावी। एकके पहियाक बलें गाड़ी गुड़कब असंभव।

दोसर पहियाक आदर्श लोपा छथि। स्त्रीकें हुनके जकाँ पतिपरायणा, त्यागमूर्त्ति सेविका आ वत्सला होयब आवश्यक। तखनहि देशक उन्नति संभव।

अपन देश जनतांत्रिक पद्धति अपनौने अछि तें लऽकऽ प्रत्येक जनताकें ई बोध रहब जरूरी छैक जे केहन नेता ओकर देशकें आगाँ बढ़यबामे समर्थ भऽ सकैत छैक, कारण चुनावो ओकरे करबाक छैक। आ, योग्यसँ योग्य व्यक्तिकें चुनल गेलोपर जनताक दृष्टि सतत सतर्क रहबाक चाही। ओ कखनो शासकक कार्यकलापसँ निरपेक्ष नहि होअय। तखने शासनमे पवित्रता बनल रहब संभव छैक—प्रायः ई संदेश अगस्त्यायनीमे निहित अछि।

एकर भाषा तत्सम-बहुल अछि, से स्वाभाविको। सांस्कृतिक चेतना-वाहक उदात्त महाकाव्यकें संस्कृतनिष्ठ होयबेक चाही। कवि पहिने मुक्त छन्दमे अपन काव्य-चेतनाकें क्रीड़ा करबा ले' छोड़ि देलनि, किन्तु लगले ओहिमे लगाम लगा देबऽ पड़लनि। तखन, छन्दक इन्द्रधनुषी आभा महाकाव्यकें प्रदीप्त कऽ देलक। वर्णन-वैभवसँ ई कृति सर्वथा उद्भासित अछि।

देवता जखन अपन दायित्वसँ स्खलित भऽ जाय, तखन मानवेकें देवता बनऽ पड़तैक। अगस्त्यक ई हुंकार एहि परिप्रेक्ष्यमे कतेक सार्थक अछि। ऋषि-राजनीतिज्ञक ई चेतावनी अजुको देवताकें सावधान करैत अछि—

उपजत नहि यदि गगनक उरमे संभ्यता-शील
ऊर्ध्वमुख करब पातालक जल हम ठोकि कील
मानवतासँ दुष्टता करत तँ देव-तत्त्व
मानव अपनेमे आरोपित करतै सुरत्व

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार "एकर प्रमुख विशेषता थिक ललित कोमल शब्द-संघटन, प्रवाहपूर्ण आधुनिक छन्दविन्यास, लाक्षणिक अभिव्यक्ति-भंगिमा एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण। एहि महाकाव्यक अंगीरस थिक शान्त, जकर परिपुष्टिक हेतु कवि आरम्भहिसँ निर्वेदात्मक भावभूमिक परिचय दैत रहैत छथि, परन्तु एहि काव्य मध्य श्रेष्ठ स्थान वैह थिक जतऽ कवि अपन दार्शनिक भंगिमाकें त्यागि सहजात मानवीय मूल भाव-वृत्तिक कवित्वपूर्ण चित्र प्रस्तुत कयने छथि।"

एतदर्थं—एहि लघु पुस्तिकामे कविक तीस टा तदर्थ कविता संगृहीत अछि। एकर प्रकाशनक संगहि ई 'तदर्थवाद' नामक नव वादक जनक भऽ गेलाह। 'तदर्थ'कें यद्यपि ई वाद नहि, विधा मानने छथि, आ एकरा कविताक पूर्वक स्थिति कहने छथि, कविता नहि। किन्तु, हमरा जनैत कविता बनबा लेल अपेक्षित तत्त्वमे एकरा आर कथूक प्रयोजन नहि रहैत अछि, ई विशुद्ध मिनी कविता थिक, कविताक पूर्वरूप नहि। दृष्टान्त रूपमे दू टा कविता द्रष्टव्य। विष-क्रिया—

उदासीक पराकाष्ठा पर पहुँचि गाम
नगर बनि रहल लगैछ।
कालिह् धरि
जे धैर्य अमृत छल
आइ 'जहर' बनि रहल लगैछ।

'मशीनीकरण'क पंक्ति देखल जा सकैछ—

मशीनक संग दैत-दैत
मशीने बनि गेल लगै छी हम
मशीनकें माथपर नचैत छोड़ि
सूतै छी
आ मशीनेसँ जगै छी हम।
लगैछ जेना
मशीनक एहि युगमे
भऽ गेलैक अछि मनुक्खेक मशीनीकरण।

नवगीतक प्रचुर रचना कऽ ई ओहू दिशासे नव-नव प्रयोग कयलनि अछि। नवगीतकारक त्रिमूर्त्तिमे डॉ० गंगेश गुंजन ओ बुद्धिनाथ मिश्रक संग हिनको गणना होइत छनि।

हिनक गीतमे शब्द-लालित्य तथा भावक प्रवाह दुनू ध्यान आकृष्ट करैत अछि। किन्तु, प्रतीक कतहु-कतहु अस्पष्ट रहि जाइत अछि, जे शीघ्र भाववोधमे बाधा उत्पन्न करैछ। हिनक एक गीतक निम्नलिखित पंक्ति एहि दृष्टिएँ द्रष्टव्य—

सिन्धुमे तरंगक जँ
रक्तचाप जाँची
मोतीसँ चान धारे
हीरेक कथा बाँची

ठानल अछि अहाँक नाम ज्योतित संग्राम
स्वयं भोर भैरवीक साज-सरंजाम
आकुल दृगमे मनक
बिम्ब नहि अँटैछ
ठरल कमलिनीक खबरि
नागफनी दैछ
अखरै अछि दू हृदयक मध्यमे विराम
गुमसुम नहि रहू सजग रहय काव्य-प्राण

'अभियान' हिनक प्रथम उपन्यास थिक। डॉ० श्रीशक मत अछि—"एहि उपन्यासक भावात्मक तत्त्व थिक उपन्यासकारक कथाशैलीक रोचकता, अन्यथा एहिमे ने तँ यथार्थ जीवनक उत्थान-पतन भेल अछि आ ने कथाक एहन सुनियोजित विकासे उपनिबद्ध भेल अछि जाहिसँ युगजीवनक व्यापक सरल ट चित्रक औपन्यासिक अभिव्यक्ति भऽ सकय।" हिनक दोसर उपन्यास 'हम कालिदास' कालिदासक जीवनपर आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल रोचक उपन्यास थिक, किन्तु अद्यावधि ई अपूर्ण अछि।

हिनक गद्य-रचनोमे काव्यक लालित्य सभसँ पहिने ध्यान आकृष्ट करैछ। कोनो प्रकारक गद्य हो—ललित निबन्धसँ समीक्षा धरि, सभटा काव्य-व्यंजनासँ पूर्ण रहैछ। व्यंग्य-स्तम्भक ई सिद्धहस्त लेखक थिकाह। हिनक व्यंग्य, मुदा, चुट्टी कटबाक बदलामे, कतहु-कतहु हथौड़ा सेहो चला दैत अछि।

डा० श्री गंगेश गुंजन

गंगेश गुंजन सातम दशकक प्रारम्भमे कथाकारक रूपमे मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयल। ने आ बड़ कम समयमे, अपन प्रतिभाक बलें, एहिमे चर्चित, स्थापित भऽ गेलाह—से कथाकार-रूपमे तँ सहजहिं, कविक रूपमे, उपन्यासकारक रूपमे एकांकीकारक रूपमे सेहो। हिनक किछु समालोचनात्मक निबन्धो प्रकाशित अछि, जाहिमे साहित्यक प्रसंग हिनक मौलिक विचार अभिव्यक्त भेल अछि। हिन्दी-जगतमे सेहो ई अपन स्थान बना लेने छथि, कवि-कथाकारक रूपमे ओहू भाषामे चीन्हल-जानल जाइत छथि। साहित्यकारक अतिरिक्त ई संगीतज्ञ आ चित्रकारो छथि।

हिनक पैतृक-वासस्थान मधुबनी जिलान्तर्गत पिलखवाड़ थिकनि। हिनक जन्म १५ जुलाइ १९४२कें भेल छनि, मूल नाम थिकनि—गंगेश्वर झा। हिन्दी आ मैथिलीमे ई एम० ए० कयने छथि। आकाशवाणीक सेवामे अध्ययनेक समयसँ संलग्न छथि। सम्प्रति हिन्दीक प्रोड्यूसर पदपर कार्यरत छथि। पटना विश्व-विद्यालय द्वारा मैथिली रेडियो-रूपकसँ सम्बद्ध शोध-प्रबन्धपर हिनका पी-एच० डी०क उपाधि प्राप्त भेल छनि।

हिनक पुस्तक विभिन्न विधामे प्रकाशित अछि। अन्हार-इजोत (कथा-संग्रह), हम : एक टा मिथ्या परिचय (दीर्घ कविता), लोक सुनू (कविता-संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास) बुधिबधिया (चौबटिया नाटक)। 'आइ भोर' नाटक मिथिला मिहिरमे छपल अछि।

हिनक कथा—वस्तु ओ शिल्प—दुनू स्तरपर क्रमशः सूक्ष्म होइत गेल अछि। एम्हरुका हिनक कथासभ मानव-मनक ततेक सूक्ष्म तन्तुकें छुबैत अछि जे ओ सामान्य-पाठकक पकड़सँ बाहर भऽ जाइछ। तहिना, बहुतो पाठक हिनक कथाक शिल्पमे तेना ने ओझरा जाइत अछि जे मूल विषय ओकरा छूटि जाइत छैक। तें ई कहब जे हिनक कथाकें बुझबा लेल एक विशेष मानसिकता चाही, कोनो अत्युक्ति नहि होयत। हिनक एम्हरुका कथा ततेक बौद्धिक भऽ गेल अछि जकर सम्यक् रसास्वादन एक विशेषे वर्गक पाठक कऽ सकैछ। किन्तु एकर तात्पर्य ई नहि थिक जे हिनक कथामे कथातत्त्वक अभाव रहैछ, ओ कथा नहि भऽ कऽ दार्शनिक व्याख्यान भऽ जाइछ। एकर विपरीत, ओहिमे कथा-तत्त्व पर्याप्त रहैछ तथा नव्यतम शिल्प-शैलीक रसिक साकांक्ष पाठककें नीक मानसिक खोराक जुटबैछ।

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहमे हिनक कथाक विश्लेषण करैत उचिते कहल गेल अछि "सातम दशकमे समस्त भारतीय साहित्यमे जे कुंठा, अजन-बीपन, निरर्थकताबोध आदिक लहरि आयल, तकर मैथिलीमे ई सफल प्रयोक्ता भेलाह। व्यक्तिक अन्तरतमक कोमल तन्तुक ई कथाकार थिकाह। सामाजिक विसंगतिक कारणें आन्तरिक स्तरपर उत्पन्न खौंझ आ तकरा बाट नहि भेटबाक औक्षरीटक कारणें जन्म लैत दिशाहीनताक सूक्ष्म अभिव्यक्ति हिनक कथा दैत अछि। मुदा कतहु-कतहु हिनक कथामे सम्प्रेषणक समस्या अनुभूतिक स्फीत चित्रणमे बाधक सिद्ध होइत अछि।"

किन्तु, हिनक 'अन्हार-इजोत'क कथासभ पढ़बाक अछि, जे सकल आलम्बन धर्मोन्मुख अछि तथा एम्हरुका हिनक कथामे काव्य आ शिल्पगत वैशिष्ट्याक आरोप लगाओल गेल अछि, ताहिसँ सर्वथा मुक्त अछि। अभिनय, अन्हार-इजोत, चन्द्रमा : एक टा टूटल कुर्सी, दुर्गक निर्माण, एक टा गुलाब झारिपर तथा सन्देह—ई छौ टा कथा उक्त कथासंग्रहमे संकलित अछि।

एकर भूमिकामे आधुनिक कथाक मूल तत्त्वकें एक ठाम संग्रहीत सुधांशु 'शेखर' चौधरी लिखने छथि—"आधुनिक मैथिली कथा सूक्ष्मसँ सूक्ष्म स्थितिक परिवेशमे, क्षणिकसँ क्षणिक मानसिक ऊहापोहमे, क्षुद्रसँ क्षुद्र अनुभूतिक आवेगमे चोसल स्वरूप ग्रहण करबाक क्षमता रखैत अछि। आधुनिक मैथिली कथाकारक सैह सफलता छनि सैह विशेषता छनि, सैह मौलिकता छनि। आधुनिक मैथिली कथा-विकासक एहि पृष्ठभूमिकें दृष्टिमे राखि यदि गंगेश गुंजनक कथापर विचार कयल जाय तँ ई स्वीकार करऽ पड़त जे हिनक कथासभमे ओ सभ तत्त्व विद्यमान छनि, जकरा लऽकऽ आजुक कथा 'आधुनिक कथा' कहबैत अछि।"

उल्लिखित कथाक अतिरिक्त धूप महँक भोंटा, देह, मित्र, झाँही, कथकारि आदि हिनक किछु प्रसिद्ध कथा अछि। "कथकारिमे वर्तमान जीवनक विसंगति आ मानसिक छपकें उघारिकऽ राखल गेल अछि। नकली प्रतिष्ठा आ झूठि भावुकताक बीच एक टा जीवन्त क्षणकें कथा पकड़बाक चेष्टा करैछ। हिनक 'देह' कथामे दाम्पत्य जीवनक एकान्तसँ एकान्त क्षणमे मनुष्य कतेक कुंठित एवं आर्थिक रूपें अशक्त-विवश रहैछ तकर अत्यन्त मार्मिक आ स्वाभाविक चित्रण भेटैत अछि।"

मैथिलीमे हिनक कथाक विशिष्ट अवदानकें स्वीकार करैत डॉ० जयकान्त मिश्र हिनका प्रभास कुमार चौधरी संग आधुनिक मैथिली कथाक महान स्तम्भ मानलनि अछि।

पहिल लोक - हिनक उपन्यास 'पहिल लोक' पहिने मिथिला मिहिरमे धारावाही रूपें १९७३ ई०मे बादमे, १९८२मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। एहि उपन्यासक प्रसंग डॉ० 'श्रीश'क मत उल्लेख्य अछि—"एहिमे एक एहन शिक्षित नवयुवक राजूक कथा कहल गेल अछि जे समाजमे व्याप्त विसंगति एवं असंतुलनक संवेदनशील द्रष्टा बनल तथा अपन अन्तस्तलमे सुनगैत विक्षोभ ओ कुण्ठाक उत्पीड़नकें विवश भावें सहैत ओ साम्प्रतिक विवशताक शिकार बनैत थाकल हारल ओ निष्क्रिय बनल रहैत अछि। एहि मध्य प्रलाप-शैलीमे उपन्यासकारक विचार-धाराक प्रतिपादन अधिक अछि, कथाक सम्यक् विकास कम। उपन्यासक अन्तमे करुणाक राजूक ओहि ठाम साहस पूर्वक जयबाक तथा ब्राह्मण द्वारा हर जोतबाक वर्णन उपन्यासक नामकरणकें सार्थक करैत अछि। 'पहिल लोक'क महत्त्व एक नवीन रीतिक प्रयोगक दृष्टिएँ अवश्य अछि।"

वस्तुतः गंगेश गुंजनक पात्र बुद्धिजीवी होइछ, जे कमो पढ़ल-लिखल रहैछ, जनो-मजूर रहैछ—ओहो बुद्धिजीवी होइछ। ओकर विचार-तन्तु, सोचबाक प्रक्रिया, क्रिया-कलाप, सोझ-साझ नहि भऽकऽ चक्राकार रहैत अछि। गुंजन अपन पात्रक वाह्य व्यवहारक कम, ओकर मानसिकताक विश्लेषण बेसी करैत छथि।

एहिमे भाषाक सहज कल्लोलक अनुगूंज सुनबाक अभिलाषा रखनिहार

पाठकके प्रायः निराश होबऽ पड़लनि। एहि प्रकारक चिन्तन-प्रधान उपन्यासक मैथिलीमे अभाव अछि। निस्सन्देह 'पहिल लोक' मैथिली उपन्यास-भण्डारक उल्लेखनीय निधि थिक।

आइ भोर—एहि एकांकीमे ई नव्यतम शिल्पक प्रयोग कयलनि अछि जे मैथिलीमे अभिनव वस्तु थिक। रोटी आ कविता—एहि समस्याकें उजागर करबा लेल लेखक मानक नीक मनोविश्लेषण कयलनि अछि। किन्तु जे तत्त्व हिनक आधुनिक कथाकें सर्वसाधारण लग नहि पहुँचऽ दैत अछि, सैह तत्त्व एहिमे अछि, जाहि कारणें ई बहुत लोकप्रिय नहि भऽ सकल—यद्यपि एकर महत्त्वमे एहिसँ बट्टा नहि लगलैक। दोसर, एकर मंचन लेल विशिष्ट प्रकारक आधुनिक रंगमंच चाही जकर मिथिलामे एखन धरि अभाव अछिए।

ई एकालाप (मोनोलोग) सेहो लिखने छथि। एहिमे सम्पूर्ण नाटकमे एक्के टा पात्र रहैछ। एकर रचना बड़ जटिल मानल जाइछ।

बुधिबधिया—बुधिबधिया मैथिलीक पहिल फुट-पाथ नाटक थिक। एहि शिल्पक गुंजन पहिल प्रयोग-कर्ता थिकाह। चौबटिया नाटकक विशेषताक प्रसंग लेखक कहैत छथि—"चौबटिया नाटकक मूल विशेषता एकर युगीन कथ्य आ सहजहि सुलभ प्रस्तुति योग्य होयब थिक। बिना कोनो लम्फ-लम्फा, बिना कोनो अतिरिक्त प्रसाधन वेश-भूषा तथा मंच-व्यवस्था कयने, बड़ सस्त आ थोड़ व्यवस्थामे नाटक तैयारी कऽकऽ ओकरा बाटपर, बजार जाइत कि कार्यालयसँ घर घुरैत, कि रिक्शावला-ठेलावला, मजूर आ चिनियाँबदाम आ सातु बेचनिहार जनसाधारण प्रेक्षक-दर्शकके अनायासहिँ सड़कक कातमे, बीच चौबट्टीपर वा कोनो नुक्कड़पर उपलब्ध कराओल जाइक—सामान्य जनक बीचमे अभिनीत भऽ जयबाक से विशिष्ट क्षमता नुक्कड़ वा चौबटिया नाटकमे रहैत छैक। एहि नाटकक सम्वाद सोझा-सोझी साधारण वर्गक लोक-चेतना धरि अनेरे उतरि सकबामे सहजहि सक्षम होइत छैक।"

बधिबधियामे देशमे घुमैत समसामयिक घटना-चक्रकें बिटियाकऽ देखल गेल अछि आ आमजनताक प्रतिक्रिया जनाओल गेल अछि! बेकारी, भ्रष्टाचार, नेता आ जनताक बीच बढ़ैत दूरी, आम जनताक दिमागमे सुनगैत क्रान्तिक चिनगी आदि अनेक विन्दु एहिमे सिनेमाक रील जकाँ, एक-पर-एक, अबैत चलैत अछि। मैथिली नाटकमे ई प्रयोग स्वागतयोग्य अछि।

हम : एक टा मिथ्या परिचय—ई हिनक दीर्घ कविता थिक। मैथिलीमे एहि प्रकारक कविताक ई पहिल संग्रह थिक। कविताक ई नवीन शैली थिक जाहिमे कवि कथ्यकें व्यापकता प्रदान करैत अछि। महाकाव्य, खण्डकाव्यक युग रहल नहि। किन्तु, आधुनिक युगक कथ्य सभ टा लघुए हो, सेहो आवश्यक नहि। छोट-छोट मुक्तकमे कविक सम्पूर्ण कथ्यक समावेश जखन असंभव भऽ जाइछ तँ ओ एहि प्रकारक कविता लिखैछ। डॉ० 'श्रीश' एकर चर्चा करैत कहैत छथि "एहिमे गुंजन जी व्यक्ति-व्यक्तिमे आछन्न संत्रास ओ वास्तविकताकें अति यथार्थवादी रीतिएँ चित्रित करैत नवीन काव्यक्षेत्रमे एक नूतन मानदण्ड प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल।"

एहि पुस्तकक प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्रक विचार अछि "Gangesh Gunjan's free verse poem 'Ham : Ekata Mithya Parichaya' seeks to be a profound examination of the modern man. The poet partly suceeds in presenting a picture of a common man in the modern age but his free verse is not rhythmic and poetic enongh, it lacks gravity and elegance"

ई मुक्तको कविताक रचना पर्याप्त कयने छथि, गीत आ गजल सेहो कम नहि लिखने छथि। हिनक मुक्तक कविता गूढ़ अर्थ लेने रहैछ, तेँ कतहु-कतहु अस्पष्टताक दोष सेहो ओहिमे चल अबैछ, किन्तु गीत हिनक बड़ कोमल, बड़ स्पष्ट ओ बड़ हृदयग्राही होइछ। हिनक चिन्तन हिनक कवितामे ताकल आ सकैछ, हिनक भावना हिनक कोमल गीतमे। कवितामे गुंजनक उर्वर मस्तिष्क क्रियाशील भऽ जाइछ, गीतमे हिनक प्रेममय हृदय आगाँ आबि जाइछ। हिनक गीतमे प्रेम-प्रदर्शन, बिरह-मान मनकें मोहि लैछ तँ हिनक कवितामे ओकर मूल तत्त्वकें पकड़बा लेल मस्तिष्कके पूरा व्यायाम करऽ पड़ैछ। किन्तु हिनक किछु एहनो कविता अवश्य अछि, जाहिमे शैलीक नव्यता रहितो कथ्य सहज-तरल भऽकऽ आयल अछि। 'लोक सुनू'मे हिनक २० गोट आधुनिक कविता संगृहीत अछि, जे हिनक कवि-व्यक्तित्वक उपर्युक्त गुणकें उद्घाटित करैछ। उदाहरणक रूपमे हिनक 'कविता-मनकथा'क निम्नलिखित पाँतीकें राखल जा सकैछ—

सड़कपर जाइत काल पाछूसँ
हमर अन्वेषी आँखि चौंकि गेल-ए ओकरा
हम कहैत छिऐक—दही हाक
हम हाक नहि दऽ पबैत छिऐक—
ओकर यात्रामे विघ्न होयतैक।
ई केहन अपनत्व जागल-ए हमरामे
आब हमर ओकर यात्रा
फराक-फराक
सफल-विफल होबऽ लागल-ए।

तहिना, 'भोर'क चित्रमे आधुनिक दृष्टि द्रष्टव्य थिक—

चारू कात अन्हार,
जलाप्लावित बाध—अन्हार
हेरायल आरिपर
दू टा थर-थर डेग
भगजजोगनी सन आँखि,
शेष संभावित भोरपर
खतरनाक सर्प-फुफकार
चतरल अन्हारमे एक टा
उज्जर दप-दप भूर।

एही संगे, हिनक प्रसिद्ध गीतक निम्नलिखित पंक्तिमे भाव-प्रणवता, मोहक कल्पनाशीलता आ गेयधर्मिताक गुणकें स्पष्ट देखल जा सकैछ—

हमरा नहि सोर करू, हमर बाट काटल अछि
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि

सीपीमे बन्द मणि अहँक स्नेह
भोर किरिन सूर्यमुखी अहँक देह

करिया पहाड़ तर प्राण हमर जाँतल अछि

एक गोट पारिजत अहँक नाम
एक टा बबूर-बोन हमर गाम

दुनू गोटेक बीच समय निरतासँ मातल अछि
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि

अकालक सदर्भमे लिखल प्रस्तुत गीत अकालक भीषणताक उद्‌घाटनक संगहि मोनक इतिहासकेँ उधेसि दैत अछि—

बालुपर लिखल हमर मोनक इतिहास

सुनसान बाटपर एक ठुठ्ठ गाछ ठाढ़

असकर चुनमुन्नी सन समय ई उदास

भरि धरती प्राणपर पसरल अकाल आइ

मुट्ठी भरि अन्न नऽहि, भूख एतेक रास

घामे नहायल अपात्याँत सभ समाज आइ

रक्त-धारमे बहय मनोरथक लहास

गुंजन एतबो लिखिकऽ मैथिली साहित्यमे अमर रहताह, किन्तु हिनक प्रतिभा-प्रसूनक मादक-मोहक सुवाससँ मैथिली-उद्यान दिनानुदिन अधिकाधिक महमहाइत जायत, ओकर मकरन्दसँ पाठकक मन-प्राण तृप्त होइत चलत, ओकर फलक स्वादपर व्यापक चर्चा चलैत रहत।

